सीरत

रसूले अकरम ﷺ

तालिफ

हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी रह

हिन्दी अनुवाद

मौलाना जीलानी कासमी

सीरत रसूले अकरम

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली
हसनी नदवी रह०

नसीर बुक डिपो
1-अज़ीज़िया बिल्डिंग, हज़रत निज़ामुद्दीन, न्यू देहली-13, इन्डिया
फ़ोन: (शॉप) 65652620, फ़ैक्स: 26827731
E-mail: nasirbookdepot@yahoo.com

नाम किताब : सीरत रसूले अक्रम सल्ल०
मुसन्निफ़ : हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०
हिंदी कम्पोज़िंग : मुहम्मद रैहान
सन्ने तबाअत : 2013
बएहतिमाम : मुहम्मद हारिस
तादाद : 1100
क़ीमत :
नाशिर : नसीर बुक डिपो, हज़रत निज़ामुद्दीन नई दिल्ली–13
सफ़हात : 392
साइज़ : 23X36X16

नसीर बुक डिपो
1-अलीमिया बिल्डिंग, हज़रत निज़ामुद्दीन, न्यू देहली-13, इन्डिया
फ़ोन: (शॉप) 65652620, फ़ैक्स: 26827731
E-mail: nasirbookdepot@yahoo.com

फ़ेहरिस्त

मुक़द्दमा

अज़:- हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी मद्दज़िल्लुहुल आली, नाज़िम दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى رَسُوْلِهٖ مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ،

रसूले करीम ख़ातिमुल मुर्सलीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० की खुसूसियात को कहीं कुर्आन मजीद में "هُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَیُزَکِّیْهِمْ وَیُعَلِّمُهُمُ الْکِتٰبَ وَالْحِکْمَةَ وَاِنْ کَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ"[1] फ़रमाया गया "कि वह अल्लाह तआला की किताब यअ़नी उसकी फ़रमाई हुई बातों की तअ़लीम देते हैं, और दानाई की बातें बताते हैं, और अख़्लाक़ की दुरुस्तगी सिखाते हैं" और कहीं फ़रमाया गया, "وَاِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیْمٍ"[2] "कि आप सल्ल० अज़ीम अख़्लाक़ व किर्दार के हामिल हैं।" और कहीं फ़रमाया गया "لَقَدْ کَانَ لَکُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ کَانَ یَرْجُوا اللّٰهَ وَالْیَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَکَرَ اللّٰهَ کَثِیْرًا"[3] "कि तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल में अच्छा नमूना है यह उसके लिये है जो अल्लाह से उम्मीद करता हो, और आख़िरत के दिन

(1) सूरए जुमुआ, आयत-2

(2) सूरए क़लम, आयत-4

(3) सूरए अहज़ाब, आयत-21

से उम्मीद रखता हो, और जिसने अल्लाह को बहुत याद किया हो।" अलग़र्ज़ यह कि मोमिन के लिये अल्लाह के आख़िरी और बरगुज़ीदा रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० रौशनी का मीनार हैं, अपनी ज़िंदगी के लिये उनसे रौशनी हासिल करना, उनके नक़्शे क़दम पर चलना, और ज़िंदगी के किर्दार व अख़्लाक़ व सिफ़ात में उनको अपने लिये नमूना बनाना हर मुसलमान का फ़र्ज़ है, इसी में सलाह व फ़लाह है, और यही मर्दे मोमिन का वतीरा व तरीक़ा है, और जब और जिसने इस वतीरा और तरीक़ा से इंहिराफ़ किया या तग़ाफ़ुल बरता, वह सही रास्ता से दूर हुआ और उसकी ज़िंदगी जादए मुस्तक़ीम से हट गई।

हुज़ूर सल्ल० के उस्वा को समझने और उनकी पैरवी करने के लिये दो अहम शर्तें हैं, एक तो यह कि आप सल्ल० से वफ़ादाराना और मुहिब्बाना तअ़ल्लुक़ हो, और वह ऐसा हो कि उस ज़ाते अज़ीम पर सब कुछ क़ुर्बान किया जा सकता हो, सिर्फ़ ज़बान से मुहब्बत का इज़हार न हो, बल्कि वह हक़ीक़त हो, और उसमें इख़्लास हो, जैसा कि सहाबए किराम को था, कि इस्लाम की वफ़ादारी की सज़ा में क़त्ल किये जा रहे हैं, और उनसे पूछने वाला पूछता है कि बताओ कि क्या तुम इसको क़बूल करोगे कि तुम्हारी जगह इस वक़्त तुम्हारे नबी मुहम्मद सल्ल० होते और तुम बच जाते? वह जवाब देते हैं कि मैं तो इसके लिये भी तैयार नहीं कि आप सल्ल० के क़दम मुबारक में कांटा चुभे और मैं उसके

इवज़ में मौत से बच जाऊं। हज़रत हस्सान बिन साबित अंसारी रज़ि० अपने एक मदहिया शेअ्र में कहते हैं-

فَإِنَّ أَبِي وَوَالِدَهُ وَعِرْضِي   لِعِرْضِ مُحَمَّدٍ مِنْكُمْ وِقَاءُ

(कि मेरे बाप और दादा और खुद मेरी इज़्ज़त व आबरू सब हज़रत मुहम्मद सल्ल० की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त के लिये निशाना और ढाल है)

बल्कि एक और जंग से वापस होने वालों से एक ख़ातून पूछती हैं कि हमारे हुज़ूर सल्ल० ख़ैरियत से हैं? जवाब देने वाला कहता है, मगर तुम्हारे वालिद शहीद हो गए, वह पूछती हैं कि हमारे हुज़ूर सल्ल० ख़ैरियत से हैं? वह जवाब देते हैं कि तुम्हारे शौहर भी काम आ गए, वह पूछती हैं कि यह बताओ कि हुज़ूर सल्ल० ख़ैरियत से हैं? वह कहते हैं कि हां आप सल्ल० ख़ैरियत से हैं, वह कहती हैं "हुज़ूर सल्ल० रहें तो हर मुसीबत कमतर है।" अगर मोमिन में ऐसी या इसी से क़रीब तर मुहब्बत न हो तो हुज़ूर सल्ल० की सच्ची और मुख़्लिसाना पैरवी, ताबेदारी और वफ़ादारी नहीं हो सकती।

दूसरी शर्त यह है कि हुज़ूर सल्ल० की सीरते तय्यिबा यअ़नी अख़्लाक़ व सिफ़ात, बंदगाने खुदा से आप सल्ल० की हमदर्दी, आप सल्ल० का हुस्ने मुआमला, अपने से बुरा चाहने वालों के साथ आप सल्ल० का हुस्ने सुलूक, रज़ाए इलाही की आप सल्ल० की तलब, आख़िरत की फ़िक्र, हर एक के लिये हमदर्दी और ख़ैर तलबी, दुन्या व दीन में

उसकी कामियाबी की फ़िक्र, उसके सलाह व फ़लाह का ख़्याल, यह सब जानने की कोशिश की जाए, और मअ़लूम किया जाए कि आप सल्ल० इंसानों के साथ अख़्लाक़ व मुहब्बत का क्या बरताव करते थे, अपने अह्ल व अयाल के साथ कैसी शफ़्क़त करते थे, ग़ैरों और दूसरों के साथ कैसी मुलातफ़्त व हमदर्दी करते थे, लोगों की दीनी इस्लाह और उनमें ख़ुदा तलबी का जज़्बा किस तरह पैदा करने की कोशिश करते थे, आप सल्ल० परवरदिगार की रज़ा के हुसूल और उसकी नाराज़गी के कामों से बचने के लिये कैसी तरबियत व तलक़ीन करते थे।

यह दो शर्तें हैं जिनके ज़रीआ़ एक मोमिन को अपनी ज़िंदगी संवारना, और अपने ईमान को सच्चा बनाना होता है, यह शर्तें पूरी हों तो यह मक़्सद हासिल होता है, और यह शर्तें पूरी न हों तो मक़्सद हासिल नहीं होता, हुज़ूर सल्ल० की सीरते तय्यिबा मअ़लूम करके उसकी पैरवी न करना और यह दावा करना कि हम हुज़ूर सल्ल० के ताबेदार हैं जोड़ नहीं खाता।

बअ़ज़ वक़्त आदमी यह दावा करता है कि उसको हुज़ूर सल्ल० से बड़ी मुहब्बत है, लेकिन आप सल्ल० की सीरते तय्यिबा को जानने की कोई फ़िक्र नहीं करता, और इस सीरते तय्यिबा के मुतालआ़ से हासिल होने वाले अख़्लाक़ व सिफ़ात को अपनाने की कोशिश नहीं करता, ऐसे आदमी का दावा कैसे सच्चा माना जाएगा।

लेकिन हुज़ूर सल्ल0 की सीरते तय्यिबा की बातें हर शख़्स को किताबों में तलाश करना मुश्किल होता है, इसके लिये उलमा की तक़रीरें और हुज़ूर सल्ल0 की सीरत पर लिखी गई किताबें सबसे बड़ा ज़रीआ हैं, हर मोमिन को इनकी तरफ़ रुजूअ करना चाहिये, लेकिन बअूज़ किताबें बड़ी आलिमाना हैं, बअूज़ बहुत सी ऐसी तफ़सीलात पर मुशतमल हैं जिनको जानने के लिये वक़्त चाहिये, इसलिये हर कस व ना कस के लिये आसानी नहीं पैदा होती है।

हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन हसनी नदवी रह0 ने तबलीग़ी मराकिज़ के हफ़्तावारी इज्तिमाअ में पढ़ने के लिये सीरते तय्यिबा के वाक़िआत, अख़्लाक़ व सिफ़ात, दावती व इस्लाही तर्ज़ पर मुशतमल हिस्सों को आप सल्ल0 की सीरते तय्यिबा की बड़ी किताबों से निकाल कर एक मुस्तक़िल किताब तरतीब दी थी जो तबलीग़ी मराकिज़ में क़लमी मसौवदा से पढ़ी जाती थी, इससे हाज़िरीन को बहुत फ़ाएदा होता था, सीरते तय्यिबा के यह वाक़िआत ज़िंदगियों को सुधारने, उनमें ईमानी जज़्बा पैदा करने का बड़ा काम देते थे, यह सिलसिला चलता रहा, हत्ता कि अज़ीज़ी सय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी सल्लमहू ने जो हज़रत मौलाना के मुसव्वदात से वाक़िफ़ थे, वह मुसव्वदा निकाला, और उसको क़ाबिले तबाअ़त व इशाअ़त बनाने का ज़रूरी काम अंजाम दिया, अब यह किताब प्रेस से जल्द बाहर आने वाली है, किताब की ज़ख़ामत न ज़्यादा है न कम है,

वह न महज़ फ़ज़ाइल व मोजिज़ात की हामिल है, और न ही तारीख़ी वाक़िआत का दफ़्तर है, वह ईमानी तरबियत, अख़्लाकी दुरुस्तगी, ख़ुदा तलबी, इंसानी हमदर्दी, ख़ुदा की बंदगी और मख़्लूके ख़ुदा की ख़िदमत के वाक़िआत पर मुशतमल है, और इस तरह वह एक मोमिन के किर्दार को संवारने और बानाने वाली है, ज़रूरत है कि इसको बहुत आम किया जाए, ताकि वसीअ़ फ़ाएदा हो। अज़ीज़ी मौलवी बिलाल हसनी सल्लमहू, ने मुझको भी इस सआ़दत में शरीक करने के लिये दीबाचा की फ़रमाइश की, जो मैं अपने कम कीमत अलफ़ाज़ और कमतर हैसियत की इबारत में इस शर्फ़ में शिर्कत की ग़र्ज़ से लिख रहा हूं, अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाए। (आमीन)

मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी

नदवतुल उलमा लखनऊ।

11/मुहर्रमुल हराम 1418 हि०

अ़र्ज़े हाल

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ، مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ، اَمَّا بَعْدُ:

राक़िम आसिम खुदा के सामने सर बसुजूद है और उसकी ज़बान हम्द व सना बयान करने से क़ासिर है कि आज सीरते नबवी सल्ल० पर ऐसी किताब पेश करने की सआ़दत हासिल हो रही है जो तक़रीबन पचास साल क़ब्ल अल्लाह के एक मुख़्लिस व महबूब बंदे के हाथों मुरत्तब हुई थी और एक अर्सा तक दावती इज्तिमाआत में पढ़ के सुनाई जाती रही, लेकिन ज़ेवरे तब्अ़ से आरास्ता नहीं हो सकी।

दस साल क़ब्ल हमारे शैख़ व मुर्शिद हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह० महफ़ूज़ ख़ानदानी मख़्तूतात व नवादिरात मुलाहज़ा फ़रमा रहे थे कि अचानक यह किताब सामने आई जो मुसव्वदा की शक्ल में थी, इस सिलसिला में हज़रते वाला रह० ने फ़रमाया कि जब हमारा क़याम मस्जिद मर्कज़े तबलीग़ व दावत लखनऊ में था उस वक़्त यह एहसास पैदा हुआ कि सीरते नबवी सल्ल० पर कोई मज्मूआ मुरत्तब होना चाहिये जो तबलीग़ी व दावती इज्तिमाआत में भी पढ़कर सुनाया जा सके, इसके लिये अल्लामा शिब्ली रह० की "सीरतुन्नबी सल्ल०[1]" और

(1) यह मलहूज़ रहे कि बेशतर हिस्सा "सीरतुन्नबी सल्ल०" से माख़ूज़ है।

क़ाज़ी सुलैमान साहब मंसूर पूरी रह० की "रहमतुल लिल आलमीन" को सामने रखकर मुअस्सिर वाक़िआत का इंतिख़ाब किया गया जो दावत का काम करने वालों के लिये रहनुमा हों, और साथ साथ दिल को हरारते ईमानी और जोशे इस्लामी से मअ़मूर करने वाले हों।

उस वक़्त नाकारा के दिल में यह दाइया पैदा हुआ कि इसकी तबाअ़त का इंतिज़ाम होना चाहिये, लेकिन इसके इज़हार की हिम्मत न हुई, "وَكَانَ أَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرًا"

रमज़ानुल मुबारक में अर्सा से हज़रत का क़याम दाइरए शाह इल्मुल्लाह तकिया कलां में रहता है, हज़रत से तअ़ल्लुक़ रखने वालों की एक तअ़दाद रमज़ानुल मुबारक यक्सूई से गुज़ारने के लिये मौजूद रहती है, जिनकी तअ़लीम व तरबियत की ख़ातिर दुरूस का एहतिमाम होता है, और मुख़्तलिफ़ दीनी व दावती किताबें भी पढ़कर सुनाई जाती हैं,[1] दो साल क़ब्ल अम्मे मख़्दूम व मुअ़ज़्ज़म मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ साहब नदवी मद्दज़िल्लुहुल आली ने फ़रमाया कि सीरत पर भी कोई मुख़्तसर किताब होनी चाहिये, इस आजिज़ का ज़ेहन इसी किताब की तरफ़ गया जो अभी तक मख़्तूता थी, बिरादरे अक्बर, मुशफ़िक़ व मुकर्रम मौलाना अब्दुल्लाह हसनी साहब नदवी मद्दज़िल्लहुल आली ने भी किताब मुलाहज़ा फ़रमा कर इसकी ताईद फ़रमाई और

(1) हज़रते वाला नौवरल्लाहु मरक़दहू की वफ़ात के बाद भी हज़रत के जानशीन हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ साहब हसनी नदवी मद्दज़िल्लहुल आली की सरपरस्ती में अलहम्दु लिल्लाह यह सिलसिला जारी है।

किताब पढ़ी जाने लगी। इसका मज्मा पर ऐसा असर हुआ कि हर तरफ़ से इसकी तबाअ़त का तक़ाज़ा शुरू हो गया, हज़रते वाला रह० से अ़र्ज़ किया गया तो हज़रत ने इजाज़त मरहमत फ़रमा दी, और इस नाकारा को इसकी मुराजअ़त का हुक्म फ़रमाया, दूसरी एक मुश्किल यह भी दरपेश थी कि दर्मियानी कई सफ़्हात ग़ाइब थे, ख़ास तौर पर वफ़ात का पूरा वाक़िआ उसमें मज़्कूर न था। मगर महज़ अल्लाह का फ़ज़्ल था कि उसने मुराजअ़त की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, और यह एहतिमाम भी किया गया कि सिहाह की किताबों में अगर हवाला मिल सके तो दर्ज किया जाए, जो नक़्स रह गया था वह अल्लामा शिब्ली रह० की "सीरतुन्नबी" और हज़रत रह० की "नबीये रहमत सल्ल०" को सामने रखकर पूरा कर दिया गया, उन्वानात नबीये रहमत को सामने रखकर क़ाइम कर दिये गये, अब अलहम्दु लिल्लाह! यह मुकम्मल किताब नाज़िरीन के सामने है, अल्लाह तबारक व तआला इसको क़बूल फ़रमाए, इसके नफ़ा को आम करे, इसको नजात व मग़फ़िरत का वसीला बनाए।

यहां पर यह बात अ़र्ज़ कर देना भी ज़रूरी है कि यह सीरत की एक मुख़्तसर और मुअस्सिर किताब है और आम लोगों के लिये मुफ़ीद तर है, और इस क़ाबिल है कि मसाजिद व मजामेअ़ में पढ़कर सुनाई जाए, लेकिन मुहक़्क़िक़ीन व बाहिसीन और सीरत का तफ़सील से मुतालआ़ करने वालों के लिये ख़ुद मुसन्निफ़े किताब ने "अस्सीरतुन्नबवीया"

के नाम से ज़खीम किताब तसनीफ़ फ़रमाई, जिसमें हज़रत रह0 ने सीरत के बअ़ूज़ ऐसे पहलू बयान किये हैं जिनकी तरफ़ आम सीरत निगारों की निगाह नहीं जाती, आलमी जाहिलीयत पर तफ़सील से मग़रिबी मआख़िज़ को सामने रखकर रौशनी डाली गई है, इसका उर्दू में तर्जुमा राक़िम के वालिद माजिद मौलाना सय्यद मुहम्मद अल हसनी साहब रह0 ने किया है और किताब "नबीये रहमत" के नाम से मक़बूले आम है और उसके कई एडीशन मुख़्तलिफ़ ज़बानों में शाए हो चुके हैं।

अख़ीर में उन तमाम हज़रात का शुक्रिया आदा किया जाता है जिन्होंने किसी भी शक्ल में इस सिलसिला में तआ़वुन फ़रमाया, अम्मे मख़्दूम व मुअ़ज़्ज़म मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ साहब हसनी नदवी मद्दज़िल्लुहु ने किताब पर मुक़द्दमा तहरीर फ़रमा कर इस नाचीज़ की हिम्मत अफ़ज़ाई फ़रमाई।

अज़ीज़िलक़द्र मौलवी मुख़्तार अहमद नदवी ने तहरीर व किताबत और मुक़ाबला में बड़ा तआ़वुन किया और मोहतरम व मुअ़ज़्ज़म मौलाना मुहम्मद रिज़वान साहब नदवी रह0 ने तबाअ़त के मरहला पर बड़ी मदद फ़रमाई, अल्लाह तबारक व तआला इन हज़रात को जज़ाए ख़ैर मरहमत फ़रमाए और इस अमल को क़बूल फ़रमा कर ज़ख़ीरए हसनात बनाए।[1]

(1) मोहतरमी मौलवी सय्यद मुहम्मद सलमान नदवी साहब और मोहतरमी मास्टर ख़ुरशीद अख़्तर साहब मुदर्रिसे मदरसा ज़ियाउल उलूम भी शुक्रिया के मुस्तहिक़ हैं कि किताबत जैसे दुशवार गुज़ार मरहला में इन दोनों ने तआ़वुन किया।

وَمَا تَوْفِيْقِيْ إِلَّا بِاللّٰهِ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيْبُ، وَلَهُ الْحَمْدُ وَالْمِنَّةُ، وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِيْنَ.

बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

दारे अरफ़ात, दाइरए शाह इल्मुल्लाह राए बरेली।

मुक़द्दमा तब्ए दोम

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

उस करीम रब का शुक्र अदा नहीं हो सकता जिसकी तौफ़ीक़ से तीन चार साल क़ब्ल यह किताब ज़ेवरे तब्अ़ से आरास्ता हुई थी, यह उसी रब्बे करीम का इन्आ़म है कि किताब को क़बूलियत मिली और बहुत से अल्लाह के बंदों को इससे नफ़ा पहुंचा, यह भी महज़ उसका फ़ज़्ल था कि हज़रत मुसन्निफ़ नौवरल्लाहु मरक़दहू की हयाते मुबारका में यह किताब शाए हुई और हज़रत रह० इसको देखकर मसरूर हुए।

किताब का दूसरा एडीशन नई उर्दू कम्पोज़िंग और तस्हीहात के साथा शाए किया गया था, अब इसको हिंदी कम्पोज़िंग कराकर नए तरीक़े से शाए किया जा रहा है, अल्लाह तआला इसकी क़बूलियत और इफ़ादियत को और ज़्यादा करे, और इस नाकारा की मग़फ़िरत व नजात का ज़रीआ़ फ़रमाए।

इस एडीशन के लिये ख़ास तौर पर अज़ीज़ान अज़ीज़ुल

कदर मौलवी मुख़्तार अहमद नदवी सल्लमहुल्लाहु तआला (मुदर्रिस मदरसा ज़ियाउल उलूम), मौलवी मलिक अनवर कमाल नदवी और मौलवी रहमतुल्लाह नदवी (मुदर्रिस मदरसा फ़लाहुल मुस्लिमीन) का शुक्रिया अदा किया जाता है, जिन्होंने पुरूफ़ की तस्हीह की और किताब की इशाअत के लिये मेहनत की थी (उर्दू एडीशन के लिये), और साथ ही साथ जनाब मुहम्मद रैहान का भी शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने इस किताब की हिंदी कम्पोज़िंग को अपनी नज़रे सानी से नवाज़ा और पुरूफ़ की तस्हीह की, अल्लाह तआला इन सबको अज्र अता फ़रमाए।

बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

दारे अरफ़ात, दाइरए शाह इल्मुल्लाह राए बरैली।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वलादत बा सआदत

हमारे नबी सल्ल0 मौसमे बहार में दो शंबा के दिन 9/रबीउल अव्वल[1], सन्ने आमुल फ़ील[2], अप्रेल 571 ई0 बअ़द अज़ सुब्ह व क़ब्ल अज़ तुलूए आफ़ताब पैदा हुए, हुज़ूर सल्ल0 अपने वालिदैन के अक्लौते फ़रज़ंद थे[3], वालिद बुज़ुर्गवार का आंहज़रत सल्ल0 की पैदाइश से पहले इंतिक़ाल हो गया था।[4]

अब्दुल मुत्तलिब आंहज़रत सल्ल0 के दादा ने खुद भी यतीमी का ज़माना देखा था, अपने 24/साला नौजवान प्यारे

(1) इब्ने इस्हाक़ ने 12 रबीउल अव्वल की तारीख़ नक़्ल की है, इब्ने हिशाम जि01, स0171, सहीह रिवायात में दो शंबा के दिन की सराहत मौजूद है सहीह मुस्लिम किताबुस सियाम, बाब इस्तिहबाब सियामि सलासति अय्यामिन कुल्लि शह्र।

(2) सीरत इब्ने हिशाम जि01, स0171, आमुल फ़ील की रिवायत तिर्मिज़ी ने सुनन की किताबुल मनाक़िब में नक़्ल की है और इसकी तहसीन भी फ़रमाई है।

(3) "रहमतुल लिलआलमीन" क़ाज़ी सुलैमान साहब मंसूरपूरी रह0।

(4) मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ जि05, स0317, मुस्तदरक हाकिम2,5,6 हाकिम ने इस रिवायत को मुस्लिम की शर्त पर क़रार दिया है और इमाम ज़हबी ने तौसीक़ फ़रमाई है।

फरज़ंद अब्दुल्लाह की इस यादगार के पैदा होने की ख़बर सुनते ही घर में आए और बच्चा को ख़ानए कअ़बा में ले गए और दुआ मांग कर वापस लाए,[1] सातवें दिन क़ुर्बानी की और तमाम क़ुरैश की दावत की, दावत खाकर लोगों ने पूछा कि आपने बच्चे का नाम क्या रखा, अब्दुल मुत्तलिब ने कहा "مُحَمَّد" लोगों ने तअ़ज्जुब से पूछा कि आपने अपने ख़ानदान के सब मुरव्वजा नामों को छोड़ कर यह नाम क्यों रखा? कहा मैं चाहता हूं कि मेरा बच्चा दुन्या भर की सताइश और तअ़रीफ़ का शायान क़रार पाए।[2]

अय्यामे रज़ाअ़त

सबसे पहले आंहज़रत सल्ल0 को आपकी वालिदा ने और दो तीन रोज़ के बाद सुवैबा ने दूध पिलाया, जो अबू लहब की लौंडी थी[3] उस ज़माना में दस्तूर था कि शहर के रुअसा और शुरफ़ा शीर ख़्वार बच्चों को अतराफ़ के क़स्बात और देहात में भेज देते थे, यह रिवाज इस ग़र्ज़ से था कि बच्चे बद्दुओं में पल कर फसाहत का जौहर पैदा करते थे, और अरब की ख़ालिस ख़ुसूसीयात महफ़ूज़ रहती थीं आंहज़रत सल्ल0 की वलादत के चंद रोज़ बाद क़बीलए हवाज़िन की चंद औरतें बच्चों की तलाश में आईं, उनमें हज़रत हलीमा सअ़दिया भी थीं, इत्तिफ़ाक़ से उनको कोई

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-160, तबक़ाते इब्ने सअ़द 1-103, तहज़ीब तारीख़े दमिश्क़ 1-284

(2) तहज़ीब तारीख़े दमिश्क़ 1-282, अलबिदाया वन्निहाया 2-264

(3) सहीह बुख़ारी किताबुन निकाह, बाब ला यतज़व्वज अक्सर मिन अरबअ़ के बाद वाला बाब

बच्चा हाथ न आया, आंहज़रत सल्ल0 की वालिदा ने उनको मुकर्रर करना चाहा, तो उनको ख़्याल आया कि यतीम बच्चा को लेकर क्या करूंगी, लेकिन ख़ाली हाथ भी न जा सकती थीं, इसलिये हज़रत आमिना की दरख़्वास्त कबूल की और आंहज़रत सल्ल0 को लेकर गई, दो बरस के बाद हलीमा आप सल्ल0 को मक्का में लाई और आपकी वालिदा माजिदा के सिपुर्द किया, लेकिन चूंकि उस ज़माना में वबा फैली हुई थी, आपकी वालिदा ने फ़रमाया कि वापस ले जाओ, दोबारा घर में लाई[1] हज़रत हलीमा के साथ आंहज़रत सल्ल0 को बेइंतिहा मुहब्बत थी, हज़रत हलीमा के शौहर यअ़नी आंहज़रत सल्ल0 के रज़ाई बाप का नाम हारिस बिन अब्दुल उज़्ज़ा है वह आंहज़रत सल्ल0 की बेअ़सत के बाद मक्का आए, आंहज़रत सल्ल0 से मुलाकात की और कहा यह तुम क्या कहते हो? आपने फ़रमाया हां वह दिन आएगा कि मैं आपको दिखाऊंगा कि मैं सच कहता था, हारिस मुसलमान हो गए।[2]

वालिदा और दादा की वफ़ात और चचा अबू तालिब की किफ़ालत

आंहज़रत सल्ल0 की उम्र जब छः बरस की हुई तो

(1) सीरतुन्नबी जि01, स0172-173, हज़रत हलीमा सअ़दिया की रज़ाअ़त का ज़िक्र मशहूरे आम है। अस्हाबे सियर ने इसका तज़किरा किया है, इसके अलावा हाकिम ने मुस्तदरक 2-216 में, इमाम अहमद ने मुस्नद 4-184 में, दारमी ने सुनन 1-8 में, तबरानी ने मोअ़जम में और इब्ने हब्बान ने मवारिदुज़्ज़म्आन में हज़रत हलीमा की रज़ाअ़त बयान फ़रमाई है। और शक़्क़े सद्र का मशहूर वाक़िआ जो तुफ़ूलत में पेश आया, बनू सअ़द में क़्याम के दौरान पेश आया था। इस वाक़िआ को इमाम मुस्लिम रह0 ने अपनी सहीह में बयान फ़रमाया है। किताबुल ईमान बाबुल इस्रा बेरसूलिल्लाह सल्ल0। (2) अल इसाबा इब्ने हजर असक़लानी जि01, स0 283

आपकी वालिदा आपको लेकर मदीना गईं, चूंकि आंहज़रत सल्ल0 के दादा का ननिहाल ख़ानदाने नज्जार में था, वहीं ठहरीं, इस सफ़र में उम्मे ऐमन भी साथ थीं, जो आंहज़रत सल्ल0 की दाया थीं, एक महीना तक मदीना में मुक़ीम रहीं, वापस आते वक़्त जब मक़ामे अबवा पहुंचीं तो उनका इंतिक़ाल हो गया और यहीं मदफ़ून हुईं, उम्मे ऐमन आंहज़रत सल्ल0 को लेकर मक्का आईं।[1]

वालिदा माजिदा के इंतिक़ाल के बाद अब्दुल मुत्तलिब ने आंहज़रत सल्ल0 को अपने दामने तरबियत में लिया हमेशा आपको साथ रखते थे।[2] अब्दुल मुत्तलिब ने 82/ बरस की उम्र में वफ़ात पाई, उस वक़्त आंहज़रत सल्ल0 की उम्र आठ बरस की थी।[3] अब्दुल मुत्तलिब का जनाज़ा उठा तो आंहज़रत सल्ल0 भी साथ थे, और फ़र्ते मुहब्बत से रोते थे, अब्दुल मुत्तलिब ने मरने के वक़्त अपने बेटे अबू तालिब को आंहज़रत सल्ल0 की तरबियत सिपुर्द की, अबू तालिब आंहज़रत सल्ल0 से इस क़दर मुहब्बत रखते थे कि आप के मुक़ाबला में अपने बच्चों की परवाह नहीं करते थे, सोते तो आंहज़रत सल्ल0 को साथ लेकर सोते और बाहर जाते तो साथ लेकर जाते।[4]

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-155, तबक़ाते इब्ने सअद 1-116, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 1-188

(2) मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ 5-318

(3) दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहक़ी जि02, स022-अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स025

(4) सीरतुन्नबी जि01, स0177

ग़ालिबन जब आपकी उम्र दस बारह बरस की हुई तो आप सल्ल० ने बकरियां चराईं।[1] यह आलम की गल्ला बानी का दीबाचा था, ज़मानए रिसालत में आप सल्ल० इस सादा और पुर लुत्फ़ मशग़ला का ज़िक्र फ़रमाया करते थे, एक दफ़ा आप सल्ल० सहाबा रज़ि० के साथ जंगल में तशरीफ़ ले गए, सहाबा बेरियां तोड़कर खाने लगे, आपने फ़रमाया जो ज्यादा सियाह हो जाती हैं ज़्यादा मज़े की होती हैं। यह मेरा उस ज़माना का तजर्बा है जब मैं बचपन में यहां बकरियां चराया करता था।[2]

अबू तालिब तिजारत का कारोगार करते थे, क़ुरैश का दस्तूर था, साल में एक दफ़ा तिजारत की ग़र्ज़ से शाम जाया करते थे, आंहज़रत सल्ल० की उम्र तक़रीबन बारह बरस की होगी कि अबू तालिब ने हसबे दस्तूर शाम का इरादा किया, सफ़र की तकलीफ़ या किसी और वजह से वह आंहज़रत सल्ल० को साथ नहीं ले जाना चाहते थे, लेकिन आंहज़रत सल्ल० को अबू तालिब से इस क़दर मुहब्बत थी कि जब अबू तालिब चले तो आप सल्ल० उनसे लिपट गए और अबू तालिब ने आप सल्ल० की दिल शिकनी गवारा न की और साथ ले लिया।[3]

हरबुल फ़ुज्जार और हलफ़ुल फ़ुज़ूल में शिर्कत

अरब में इस्लाम के आग़ाज़ तक लड़ाइयों का जो

(1) सहीहुल बुख़ारी किताबुल इजारा, बाब रअ़युल ग़नम अला क़रारीत।
(2) तबक़ाते इब्ने सअ़द जि०1, स080
(3) सुनन तिर्मिज़ी बाबुल मनाक़िब, बाब मा जाअ़ फ़ी बदइन्नुबूव्वा सल्ल०।

मुतवातिर सिलसिला चला आता है, उनमें जंगे फुज्जार सबसे ज़्यादार मशहूर और ख़तरनाक थी, यह लड़ाई क़ुरैश और क़ैस के क़बीला में हुई थी। चूंकि क़ुरैश इस जंग में बरसरे जंग थे इसलिये रसूलुल्लाह सल्ल0 ने भी शिर्कत फ़रमाई लेकिन आप सल्ल0 ने किसी पर हाथ नहीं उठाया।[1]

लड़ाइयों के मुतवातिर सिलसिला ने सैकड़ों घराने बर्बाद कर दिये थे और क़त्ल व सफ़्फ़ाकी मौरूसी अख़्लाक़ बन गए थे, यह देखकर बअ़्ज़ तबीअ़तों में इस्लाह की तहरीक पैदा हुई, जंगे फुज्जार से लोग वापस फिरे तो ज़ुबैर बिन अब्दुल मुत्तलिब ने जो रसूलुल्लाह सल्ल0 के चचा और ख़ानदान के सरकर्दा थे, यह तज्वीज़ पेश की, चुनांचे ख़ानदाने हाशिम, ज़हरा और तीम, अब्दुल्लाह बिन जदआ़न के घर में जमा हुए और मुआहदा हुआ कि हम में से हर शख़्स मज़लूम की हिमायत करेगा और कोई ज़ालिम मक्का में न रहने पाएगा।[2] आँहज़रत सल्ल0 इस मुआहदा में शरीक थे, और अहदे नुबूव्वत में फ़रमाया करते थे कि मुआहदा के मुक़ाबला में अगर मुझको सुर्ख़ रंग के ऊंट भी दिये जाते तो मैं न बदलता और आज भी ऐसे मुआहदा के लिये कोई बुलाए तो मैं हाज़िर हूं।[3]

अबू तालिब के साथ आप सल्ल0 बचपन में भी बअ़्ज़

---

(1) सीरत इब्न हिशाम 1-195 - अरौंजुल अन्फ सुहैली1,120

(2) तबक़ाते इब्ने सअ़द जि01, स082

(3) मुस्तदरक हाकिम 2,219-220 - इमाम ज़हबी ने इस रिवायत की तस्हीह की है। इमाम बुख़ारी ने अल अदबुल मुफ़्रिद और बैहक़ी ने सुनन में इसकी तख़्रीज की है।

तिजारती सफ़र कर चुके थे हर क़िस्म का तजर्बा हासिल हो चुका था और आप के हुस्ने मुआमला की शोहरत हर तरफ़ फैल चुकी थी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबिल हम्साअ् एक सहाबी रज़ि० बयान करते हैं कि बेअ्सत से पहले मैंने आंहज़रत सल्ल० से ख़रीद फ़रोख़्त का कोई मुआमला किया था कुछ मुआमला हो चुका था कुछ बाक़ी था, मैंने वादा किया कि फिर आऊंगा, इत्तिफ़ाक़ से तीन दिन तक मुझको अपना वादा याद न आया, तीसरे दिन जब वादा गाह पर पहुंचा तो आंहज़रत सल्ल० को उसी जगह मुंतज़िर पाया, लेकिन इस वादा ख़िलाफ़ी से आपकी पेशानी पर बल तक न आया, सिर्फ़ इस क़दर फ़रमाया कि तुमने मुझे ज़हमत दी, मैं इसी मक़ाम पर तीन दिन से मौजूद हूं।[1]

हज़रत ख़दीजा रज़ि० से रिश्तए इज़्दिवाज

मक्का में निहायत शरीफ़ ख़ानदान की एक बेवा औरत ख़दीजा थीं, वह बहुत मालदार थीं, अपना रूपया तिजारत में लगाए रखती थीं, उन्होंने आंहज़रत सल्ल० की ख़ूबियां और औसाफ़ सुनकर और आप सल्ल० की सच्चाई, दियानतदारी, सलीक़ा शिआरी का हाल मअ्लूम करके ख़ुद दरख़्वास्त कर दी कि उनके रूपया से तिजारत करें, आंहज़रत सल्ल० उनका माल लेकर तिजारत को गए, इस तिजारत में बड़ा नफ़ा हुआ, इस सफ़र में हज़रत ख़दीजा रज़ि० का ग़ुलाम मैसरा भी था, उसने आंहज़रत सल्ल० की उन तमाम ख़ूबियों

(1) सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल वअ्द,

और बुजुर्गियों का ज़िक्र ख़दीजा रज़ि० को सुनाया जो सफ़र में खुद देखी थीं, इन औसाफ़ को सुन कर ख़दीजा रज़ि० ने दरख़्वास्त करके आंहज़रत सल्ल० से निकाह कर लिया, हालांकि हज़रत ख़दीजा रज़ि० इससे पहले बड़े बड़े सरदारों की दरख़्वास्ते निकाह रद्द कर चुकी थीं।[1]

कअ़्बा की तअ़्मीरे नौ और एक बड़े फ़ित्ने का सद्दे बाब

उन दिनों लोगों के दिलों पर आंहज़रत सल्ल० की नेकी और बुजुर्गी का इतना असर था कि वह आंहज़रत सल्ल० को नाम लेकर नहीं बुलाते थे बल्कि सादिक़ या अमीन कहकर पुकारते थे, आंहज़रत सल्ल० की उम्र मुबारक 35/साल की थी जब कुरैश ने कअ़्बा की इमारत को (जिसकी दीवारें सैलाब के सदमे से फट गई थीं) अज़सरे नौ तअ़्मीर कराया[2] इमारत के बनाने में तो सब ही शामिल थे मगर जब हजरे अस्वद के क़ाइम करने का मौक़ा आया तो सख़्त इख़्तिलाफ़ हुआ, क्योंकि हर एक यही चाहता था कि यह काम उसी के हाथ सर अंजाम पाए, नौबत यहां तक पहुंची कि तलवारें खिंच गईं, अरब में दस्तूर था कि जब कोई शख़्स जान दने की क़स्म खाता था तो प्याला में खून

(1) हज़रत ख़दीजा रज़ि० के तिजारती माल को लेकर सफ़रे शाम का तज़्किरा हाकिम ने मुस्तदरक में किया है 3,182, और इमाम ज़हबी ने इसकी तसहीह की है। निकाह का भी इमाम हाकिम ने ज़िक्र किया है। और ज़रक़ानी ने इसके हालात तफ़सील से बयान फ़रमाए हैं। सहीह बुख़ारी में ज़बाने नुबूव्वत से इनके फ़ज़ाइल का तज़्किरा मौजूद है,

(2) मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक 5-102, इमाम ज़हबी ने इसकी सनद को सही क़रार दिया है।

भरे कर उसमें उंगलियां डुबो लेता था, इस मौक़ा पर भी बअ़ज़ दअ़वेदारों ने यह रस्म अदा की, चार दिन तक यह झगड़ा बरपा रहा, पांचवें दिन अबू उमय्या बिन मुग़ीरा ने जो क़ुरैश में सबसे ज़्यादा मुअम्मर था राए दी कि कल सुब्ह को जो शख़्स सबसे पहले हरम में आए वही सालिस क़रार दे दिया जाए, सबने यह राए तस्लीम की, ख़ुदा की क़ुदरत इत्तिफ़ाक़न आंहज़रत सल्ल० तशरीफ़ ले आए, आंहज़रत सल्ल० को देखना था कि "هٰذَا الأَمِيْنُ رَضِيْنَاه" के नअ़रे लग गए (अमीन आ गया हम सब उसके फ़ैसले पर रज़ामंद हैं) आंहज़रत सल्ल० ने अपनी ज़ीरकी और मुआमला फ़ह्मी से ऐसी तदबीर की कि सब ख़ुश हो गए, आंहज़रत सल्ल० ने एक चादर बिछाई उस पर पत्थर अपने हाथ से रख दिया फिर हर एक क़बीला के सरदार को कहा कि चादर को पकड़ कर उठाएं, इसी तरह उस पत्थर को वहां तक लाए जहां क़ाइम करना था, आंहज़रत सल्ल० ने फिर उसे उठाकर कोने पर और तवाफ़ के सिरे पर लगा दिया[1] आंहज़रत सल्ल० ने इस मुख़्तसर तदबीर से एक ख़ूंख़्वार जंग का इंसिदाद कर दिया, वर्ना उस वक़्त के अह्ले अरब में रेवड़ के पानी पिलाने, घोड़ों के दौड़ाने, अशआ़र में एक क़ौम से दूसरी क़ौम को अच्छा बताने, जैसी ज़रा ज़रा सी बातों पर ऐसी जंग होती कि बीसियों बरस तक ख़त्म होने में न आती थी।

(1) मुस्नदे अहमद 3,425, मुस्तदरक, हाकिम 3-458 व कुतुबे सियर

आसमानी तरबियत

आप सल्ल० बचपन और शबाब में भी जबकि मंसबे नुबूव्वत से मुम्ताज़ नहीं हुए थे, मरासिमे शिर्क से हमेशा मुजतनिब रहे, एक दफ़ा कुरैश ने आप सल्ल० के सामने खाना लाकर रखा, यह खाना बुतों के चढ़ावे का था, जानवर जो ज़िब्ह किया गया था किसी बुत के नाम पर ज़िब्ह किया गया था, आप सल्ल० ने खाने से इंकार कर दिया[1] आप सल्ल० ने नुबूव्वत से पहले बुत परस्ती की बुराई शुरू कर दी थी और जिन लोगों पर आप सल्ल० को एतिमाद था उनको इस बात से मना फ़रमाते थे।[2]

रसूलुल्लाह सल्ल० जिस ज़माने में पैदा हुए, मक्का बुत परस्ती का मर्कज़े अअ़ज़म था, खुद ख़ानए कअ़बा में तीन सौ साठ बुत थे, रसूलुल्लाह सल्ल० के ख़ानदान का तमग़ए इम्तियाज़ सिर्फ़ इस कदर था कि इस बुत कदा के मुतवल्ली और कलीद बरदार थे, बई हमा आंहज़रत सल्ल० ने कभी बुतों के आगे सर नहीं झुकाया, दीगर रुसूमे जाहिलीयत में भी कभी शिर्कत नहीं की, कुरैश ने इस बिना पर कि इनको आम लोगों से हर बात में मुम्ताज़ रहना चाहिये, यह क़ाएदा क़रार दिया था कि अय्यामे हज में कुरैश के लिये अरफ़ात जाना ज़रूरी नहीं और वह लोग जो बाहर से आएं वह कुरैश का लिबास इख़्तियार करें, वर्ना उनको बरहना होकर

(1) सहीह बुख़ारी में इस तरह के वाक़िआत मज़कूर हैं, किताबुल मनाक़िब, मनाक़िबे ज़िक्र ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-216, मोअ़जमे कबीर तबरानी 5-88

कअूबा का तवाफ़ करना होगा, चुनांचे इसी बिना पर तवाफ़े बरहना का आम रिवाज हो गया था। लेकिन आंहज़रत सल्ल० ने इन बातों में कभी अपने ख़ानदान का साथ न दिया।[1]

अरब में अफ़साना गोई का आम रिवाज था, रातों को लोग तमाम अशग़ाल से फ़ारिग़ होकर किसी मक़ाम में जमा होते थे, एक शख़्स जिसको इस फ़न में कमाल होता था दासतान शुरू करता, लोग बड़े ज़ौक़ व शौक़ से रात रात भर सुनते थे। बचपन में एक दफ़ा आंहज़रत सल्ल० ने भी इस जलसा में शरीक होना चाहा था लेकिन इत्तिफ़ाक़ से राह में एक शादी का कोई जलसा था देखने के लिये खड़े हो गए वहीं नींद आ गई, उठे तो सुब्ह हो चुकी थी, एक दफ़ा और ऐसा ही इत्तिफ़ाक़ हुआ उस दिन भी यही वाक़िआ पेश आया, चालीस बरस की मुद्दत में सिर्फ़ दो दफ़ा इस क़िस्म का इरादा किया लेकिन दोनों दफ़ा तौफ़ीक़े इलाही ने बचा लिया[2] कि "तेरी शान इन मशाग़िल से बालातर है।"

इंसानियत की सुब्हे सादिक़ और बेअूसते मुबारक

बेअ़सत का ज़माना जिस क़दर क़रीब होता गया, आंहज़रत सल्ल० के मिज़ाज में ख़ल्वत गुज़ीनी की आदत बढ़ती जाती थी, आंहज़रत सल्ल० अक्सर पानी और सत्तू लेकर शहर से कई कोस परे सुनसान जगह कोहे हिरा के

(1) इसका ज़िक्र भी बुख़ारी में मौजूद है।

(2) अर्रोज़ुल अनफ़ सहेली, 1,112

एक ग़ार में जा बैठते, इबादत किया करते, इस इबादत में अल्लाह का ज़िक्र भी शामिल था, और कुदरते इलाहीया पर ग़ौर व फ़िक्र भी, जब तक पानी और सत्तू ख़त्म न हो जाए शहर न आया करते, अब आंहज़रत सल्ल0 को ख़्वाब नज़र आने लगे, ख़्वाब ऐसे सच्चे होते थे कि जो कुछ रात को ख़्वाब में देख लिया करते, दिन में वैसा ही ज़ुहूर में आ जाता, एक दिन जब कि आप सल्ल0 ने हसबे मअ़मूल ग़ारे हिरा में थे कि फ़रिशता नज़र आया, उसने कहा पढ़िये, आप सल्ल0 ने फ़रमाया मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं। उसने आप सल्ल0 को इस ज़ोर से दबोचा कि आपकी सारी ताक़त सर्फ़ हो गई, फिर उसने आप सल्ल0 को छोड़ दिया और कहा कि पढ़िये, आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं, फिर उसने आप सल्ल0 को पूरी ताक़त से दबोचा फिर छोड़ दिया और कहा कि पढ़िये, आप सल्ल0 ने कहा कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं, उसने फिर पूरी कूव्वत से दबोचा और छोड़ दिया और कहा कि पढ़िये, आप सल्ल0 ने फिर वही जवाब दिया, उसने यह आयतें पढ़ीं:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ، خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ، اِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ، الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ، عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَالَمْ يَعْلَمْ ۔

"शुरू है अल्लाह के नाम से जो कमाले रहमत और निहायत रहम वाला है। पढ़िये अपने

परवरदिगार के नाम से जिसने (सब कुछ) पैदा किया, जिसने इंसान को पानी के कीड़े से बनाया, (हां) पढ़ते चले जाइये आपका परवरदिगार तो बहुत करम वाला है, जिसने कलम के ज़रीआ से तअ़लीम दी (जिसने) इंसान को सब कुछ सिखाया जो वह नहीं जानता था।"

इस वाक़िआ के बाद नबी करीम सल्ल0 फ़ौरन घर आए और लेट गए, बीवी से कहा कि मुझ पर कपड़ा डाल दो, जब तबीअ़त में ज़रा सुकून हुआ तो बीवी से फ़रमाया कि मैं ऐसे वाकिआत देखता हूं कि मुझे अपनी जान का डर हो गया है, हज़रत ख़दीजतुल कुब्रा रज़ि0 ने कहा, नहीं आप को डर काहे का, मैं देखती हूं कि आप अक़रबा पर शफ़क़त फ़रमाते हैं, सच बोलते हैं, रांडों, यतीमों, बेकसों की दस्तगीरी करते हैं, मेहमान नवाज़ी फ़रमाते हैं, अस्ल मुसीबत ज़दों से हमदर्दी करते हैं, ख़ुदा आप सल्ल0 को कभी ग़मगीन न फ़रमाएगा, अब ख़दीजतुल कुब्रा रज़ि0 को ख़ुद भी अपने इत्मीनाने क़ल्ब की ज़रूरत हुई, इसलिये वह नबी करीम सल्ल0 को साथ लेकर अपने रिशता के चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़ल के पास गईं, जो इब्रानी ज़बान जानते थे और तौरेत व इंजील के माहिर थे, हज़रत ख़दीजा रज़ि0 की दरख़्वास्त पर नबी करीम सल्ल0 ने वरक़ा बिन नौफ़ल के सामने जिब्रईल अलै0 के आने, बात करने का वाक़िआ बयान फ़रमाया, वरक़ा झट बोल उठे यही वह नामूस है जो

हज़रत मूसा अलै0 पर उतरा था, काश मैं जवान होता, काश मैं उस वक़्त तक ज़िंदा रहता, जब क़ौम आपको निकाल देगी, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने पूछा, क्या क़ौम मुझको निकाल देगी? वरक़ा बोले हां! इस दुन्या में जिस किसी ने ऐसी तअ़लीम पेश की उससे शुरू में अदावत ही होती रही, काश मैं हिज्रत तक ज़िंदा रहूं और हुज़ूर की नुमायां ख़िदमत करूं।[1]

एक दिन रूहुल अमीन नबी करीम सल्ल0 को दामने कोह में लाए, नबी करीम सल्ल0 के सामने ख़ुद वुज़ू किया और आंहज़रत सल्ल0 ने भी वुज़ू किया फिर दोनों ने मिल कर नमाज़ पढ़ी, रूहुल अमीन ने नमाज़ पढ़ाई।[2]

इस्लाम की तबलीग़ व दावत

नबी करीम सल्ल0 ने तबलीग़ शुरू कर दी, ख़दीजा रज़ि0 (बीवी) अली रज़ि0 (भाई उम्र आठ साल) अबू बक्र रज़ि0 (दोस्त) ज़ैद बिन हारसा रज़ि0 (मौला) पहले ही दिन मुसलमान हो गए, उन अशख़ास का ईमान लाना जो आंहज़रत सल्ल0 की चालीस साला ज़रा ज़रा सी हरकात व सकनात से वाक़िफ़ थे, नबी करीम सल्ल0 की अअ़्ला सदाक़त और रास्तबाज़ी की रौशन दलील है, बिलाल, अम्र बिन अ़ब्सा, ख़ालिद बिन सअ़द बिन आ़स भी चंद रोज़ के

(1) पूरा वाकिआ सहीह बुख़ारी के बाब बदउल वह्य और सहीह मुस्लिम के किताबुल ईमान बाब बदउल वह्य में मुफ़स्सल मज़कूर है, इसकी भी सराहत है कि उस वक़्त आप सल्ल0 की उम्र शरीफ़ चालीस साल थी।

(2) अल अंसाब लिलबलाज़री 1-111

बाद ही मुसलमान हो गए, अबू बक्र रज़ि० बड़े मालदार थे, तिजारत करते थे, मक्का में उनकी दुकान बज़्ज़ाज़ी की थी, लोगों से उनका बहुत मेल मिलाप था, उनकी तबलीग़ से उस्मान ग़नी रज़ि०, ज़ुबैर रज़ि०, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि०, तलहा रज़ि०, सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० मुसलमान हुए, फिर अबू उबैदा आमिर बिन अब्दुल्लाह इब्नुल जर्राह रज़ि०, (जिनका लक़ब बाद में अमीनुल उम्मा हुआ) अब्दुल असद बिन बिलाल, उस्मान बिन मज़ऊन, आमिर बिन हैरा अज़्दी, अबू हुज़ैफ़ा बिन उत्बा, साइब बिन उस्मान बिन मज़ऊन और अरक़म मुसलमान हुए, औरतों में उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ि० के बाद नबी सल्ल० के चचा अब्बास की बीवी उम्मुल फ़ज़्ल रज़ि०, अस्मा बिंते उमैस रज़ि०, अस्मा बिंते अबू बक्र रज़ि० और फ़ातिमा ख़्वाहर उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने इस्लाम कबूल किया।[1]

उन दिनों मुसलमान पहाड़ की घाटी में जाकर नमाज़ पढ़ा करते थे, एक दफ़ा आप सल्ल० हज़रत अली रज़ि० के साथ किसी दर्रा में नमाज़ पढ़ रहे थे, इत्तिफ़ाक़ से आप सल्ल० के चचा अबू तालिब आ निकले, उनको इस जदीद तरीक़ए इबादत पर तअ़ज्जुब हुआ, खड़े हो गए और बग़ौर देखते रहे, नमाज़ के बाद पूछा यह कौनसा दीन है? आप सल्ल०

(1) सहीह बुख़ारी, सुनन तिर्मिज़ी, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़, मुस्तदरक हाकिम और मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा की सहीह रिवायात में इन हज़रात के इस्लाम में सबक़त का ज़िक्र मौजूद है।

ने फ़रमाया कि हमारे दादा इब्राहीम का यही दीन था, अबू तालिब ने कहा मैं इसको इख़्तियार तो नहीं कर सकता लेकिन तुमको इजाज़त है और कोई शख़्स तुम्हारा मुज़ाहिम न हो सकेगा।[1]

तीन बरस तक आंहज़रत सल्ल० ने निहायत राज़दारी के साथ फ़र्ज़े तबलीग़ अदा किया, लेकिन अब आफ़ताबे रिसालत बुलंद हो चुका था साफ़ हुक्म आया "فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ" और तुझको जो हुक्म दिया गया है, साफ़ साफ़ कह दे" और नीज़ यह हुक्म आया "وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ" (और अपने नज़दीक के ख़ानदान वालों को ख़ुदा से डरा)[2]

एक रोज़ आप सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया कि दावत का सामान करो, यह दरहक़ीक़त तबलीग़े इस्लाम का पहला मौक़ा था, तमाम ख़ानदाने अब्दुल मुत्तलिब मदऊ किया गया। हम्ज़ा, अबू तालिब, अब्बास सब शरीक थे, आंहज़रत सल्ल० ने खाने के बाद खड़े होकर फ़रमाया कि मैं वह चीज़ लेकर आया हूं जो दीन व दुन्या दोनों की कफ़ील है, इस बारे गिरां के उठाने में कौन मेरा साथ देगा, तमाम मजलिस में सन्नाटा था, दफ़अतन हज़रत अली रज़ि० ने उठकर कहा "गो मुझको आशोबे चश्म है, गो मेरी टांगें पतली हैं और गो मैं सबसे नौ उम्र हूं, ताहम मैं आप का साथ दूंगा" क़ुरैश के लिये यह एक हैरत अंगेज़

(1) सीरतुन्नबी 1-206
(2) सीरतुन्नबी 1-210

मंज़र था कि दो शख़्स (जिनमें एक तेरह साल का नौजवान है) दुन्या की किस्मत का फ़ैसला कर रहे हैं, हाज़िरीन को बेसाख़्ता हंसी आ गई, लेकिन आगे चल कर ज़माना ने बता दिया कि यह लफ़्ज़ बलफ़्ज़ सच था।[1]

एक रोज़ नबी करीम सल्ल0 ने कोहे सफ़ा पर चढ़ के लोगों को पुकारना शुरू किया, जब सब जमा हो गए तो नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "तुम मुझे बताओ कि तुम मुझे सच्चा समझते हो या झूटा जानते हो?" सबने एक आवाज़ से कहा कि "हमने कोई बात ग़लत या बेहूदा आपके मुंह से नहीं सुनी, हम यक़ीन करते हैं कि आप सादिक़ और अमीन हैं।" नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया: देखो मैं पहाड़ की चोटी पर खड़ा हूं और तुम उसके नीचे हो, मैं पहाड़ के इधर भी देख रहा हूं और उधर भी नज़र कर रहा हूं, अगर मैं कहूं कि रहज़नों का एक मुसल्लह गिरोह दूर से नज़र आ रहा है जो मक्का पर हमला आवर होगा क्या तुम इसका यक़ीन कर लोगे? लोगों ने कहा बेशक! क्योंकि हमारे पास आप जैसे रास्त बाज़ आदमी के झुटलाने की कोई वजह नहीं, ख़ुसूसन जबकि वह ऐसे बुलंद मकाम पर खड़ा है कि दोनों तरफ़ देख रहा है। नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया: यह सब कुछ समझाने के लिये एक मिसाल थी,

(1) सीरतुन्नबी 1-210, तारीख़े तबरी व तफ़्सीरे तबरी और अल्लामा शिब्ली रह0 ने यह वज़ाहत भी कर दी है कि यह रिवायत ज़ोअफ़ से ख़ाली नहीं, इमाम अहमद ने मुस्नद में, इब्ने कसीर ने तफ़सीर में, इब्ने सअ़द ने तबक़ात में और दूसरे अस्हाबे सियर ने भी इस रिवायत को ज़िक्र किया है, लेकिन इसकी कोई सनद ज़ोअफ़ से ख़ाली नहीं है।

अब यकीन कर लो कि मौत तुम्हारे सर पर आ रही है और तुम्हें खुदा के सामने हाज़िर होना है और मैं आलमे आख़िरत को भी ऐसा ही देख रहा हूं जैसा कि दुन्या पर तुम्हारी नज़र है, इस दिल नशीं वअ़ज़ से मतलब नबी करीम सल्ल० का यह था कि नुबूव्वत के लिये एक मिसाल पेश करें कि किस तरह एक शख़्स आलमे आख़िरत को देख सकता है, जबकि हज़ारों अशख़ास नहीं देख सकते।[1]

तौहीद की बाज़ गश्त और मुश्रिकीन की ईज़ा रसानी

अब मुसलमानों की मुअ़तद बेहजमाअत तैयार हो गई थी जिनकी तअ़दाद चालीस से ज़्यादा थी, आपने हरमे कअ़्बा में जाकर तौहीद का एलान किया, कुफ़्फ़ार के नज़दीक यह हरम की सबसे बड़ी तौहीन थी, इसलिये दफ़अ़तन एक हंगामा बरपा हो गया और हर तरफ़ से लोग आप सल्ल० पर टूट पड़े, हारिस इब्ने अबी हाला (जो पहले शौहर से हज़रत ख़दीजा रज़ि० के साहबज़ादे थे) घर में थे, उनको ख़बर हुई दौड़े आए और आंहज़रत सल्ल० को बचाना चाहा लेकिन हर तरफ़ से उन पर तलवारें पड़ीं और वह शहीद हो गए, इस्लाम की राह में यह पहला ख़ून था जिससे ज़मीन रंगीन हुई।[2]

अब नबी करीम सल्ल० ने सबको आम तौर पर समझाना शुरू किया, हर एक मेले में, हर एक गली कूचे में जा जा कर लोगों को तौहीद की ख़ूबी बताते, बुतों, पत्थरों,

(1) यह रिवायत इज्माल के साथ सहीहैन में मौजूद है।
(2) अल इसाबा लिइब्ने हजर, ज़िक्रे हारिस बिन अबी हाला।

दरख़्तों की पूजा से रोकते, आप लोगों को तलक़ीन फ़रमाते कि ख़ुदा की ज़ात को नक़्स से, ऐब से, आलूदगी से पाक समझें, इस बात का पुख़्ता एतिक़ाद रखें कि ज़मीन, आसमान, चांद, सूरज, छोटे, बड़े सबके सब ख़ुदा के पैदा किये हुए हैं, सब उसी के मुहताज हैं, दुआ कबूल करना, बीमार को सिहत व तंदुरुस्ती देना, मुरादें पूरी करना अल्लाह के इख़्तियार में है, अल्लाह की मर्ज़ी और हुक्म के बग़ैर कोई भी कुछ नहीं कर सकता, फ़रिश्ते और नबी भी उसके हुक्म के ख़िलाफ़ कुछ नहीं करते, अरब में उकाज़, उयैना और ज़िल मजाज़ के मेले बहुत मशहूर थे, दूर दूर से लोग वहां आया करते थे, नबी करीम सल्ल0 इन मक़ामात पर जाते और मेले में आए हुए लोगों को इस्लाम की और तौहीद की दावत फ़रमाया करते थे।[1]

जब आंहज़रत सल्ल0 ने एलाने दावत किया और बुत परस्ती की एलानिया मज़म्मत शुरू की तो क़ुरैश के चंद मुअ़ज़्ज़ज़ों ने अबू तालिब से आकर शिकायत की, अबू तालिब ने नर्मी से समझाकर रुख़्सत कर दिया, लेकिन चूंकि बिनाए निज़ाअ़ क़ाइम थी, यअ़नी आंहज़रत सल्ल0 अदाए फ़र्ज़ से बाज़ न आ सकते थे, इसलिये यह सिफ़ारत दोबारा अबू तालिब के पास आई, इसमें तमाम रुअसाए क़ुरैश यअ़नी उत्बा बिन रबीआ़, शैबा, अबू सुफ़यान, आस बिन

(1) इमाम तिर्मिज़ी ने सुनन में, इमाम हाकिम ने मुस्तदरक में, इमाम अहमद ने मुस्नद में और अस्हाबे सियर ने अपनी किताबों में इसका तज़किरा किया है, इमाम तिर्मिज़ी और इमाम ज़हबी ने हदीस की तस्हीह की है।

हिशाम, अबू जहल, वलीद बिन मुग़ीरा, आस बिन वाइल वग़ैरा शरीक थे, इन लोगों ने अबू तालिब से कहा कि तुम्हारा भतीजा हमारे मअ़बूदें की तौहीन करता है, हमारे आबा व अज्दाद को गुमराह कहता और हमको अहमक ठहराता है, इसलिये या तो तुम बीच से हट जाओ या तुम भी मैदान में आओ कि हम दोनों में से एक का फैसला हो जाए, अबू तालिब ने देखा कि अब हालत नाजुक हो गई है, कुरैश अब तहम्मुल नहीं कर सकते और तन्हा कुरैश का मुक़ाबला नहीं कर सकता, आंहज़रत सल्ल0 से मुख़्तसर लफ़्ज़ों में कहा कि "जाने अम्म मेरे ऊपर इतना बार न डाल कि मैं उठा न सकूं।"

रसूलुल्लाह सल्ल0 के ज़ाहिरी पुश्त पनाह जो कुछ थे अबू तालिब थे, आंहज़रत सल्ल0 ने देखा कि अब उनके पाए सिबात में भी लग़ज़िश है, आपने आबदीदा होकर फ़रमाया कि खुदा की कसम! अगर यह लोग मेरे एक हाथ में सूरज और दूसरे हाथ में चांद लाकर रख दें तब भी मैं अपने फ़र्ज़ से बाज़ न आऊंगा, खुदा या तू इस काम को पूरा करेगा या मैं खुद इस पर निसार हो जाऊंगा, आपकी पुर असर आवाज़ ने अबू तालिब को सख़्त मुतअस्सिर किया, रसूलुल्लाह सल्ल0 से कहा "जा कोई शख़्स तेरा बाल बीका नहीं कर सकता।"[1]

आंहज़रत सल्ल0 बदस्तूर दावते इस्लाम में मसरूफ़ रहे, कुरैश अगर्चे आंहज़रत सल्ल0 के क़त्ल का इरादा न कर सके

(1) अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी 86,87, मुस्तदरक हाकिम 3-577

लेकिन तरह तरह की अज़ीयतें देते थे, राह में कांटे बिछाते थे, नमाज़ पढ़ने में जिस्म मुबारक पर नजासत डाल देते थे, बद ज़बानियां करते थे।[1]

अब्दुललाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० का चश्म दीद बयान है कि एक रोज़ नबी करीम सल्ल० ख़ानए कअ़बा में नमाज़ पढ़ रहे थे, उक़बा बिन अबी मुईत आया, उसने अपनी चादर को लपेट देकर रस्सी जैसा बनाया और जब नबी करीम सल्ल० सज्दा में गए तो चादर को हुज़ूर सल्ल० की गर्दन में डाल दिया और पेच पर पेच देने शुरू किये, गर्दने मुबारक बहुत भिंच गई थी ताहम हुज़ूर उसी इत्मीनाने क़ल्ब से सज्दा में पड़े हुए थे, इतने में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने धक्के देकर उक़्बा को हटाया और ज़बान से यह आयत पढ़ कर सुनाई: "اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّىَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ" क्या तुम एक बुज़ुर्ग आदमी को मारते हो और सिर्फ़ इस जुर्म में कि वह अल्लाह को अपना परवरदिगार कहता है और तुम्हारे पास रौशन दलाइल लेकर आया है।" चंद शरीर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० से लिपट गए और उनको बहुत ज़द व कूब किया।[2]

एक दूसरी दफ़ा का ज़िक्र है कि नबी करीम सल्ल० ख़ानए कअ़बा में नमाज़ पढ़ने लगे, कुरैश भी सिहने कअ़बा में जा बैठे, अबू जह्ल बोला कि आज शहर में फ़लां जगह

(1) सीरतुन्नबी 1-221

(2) सहीहुल बुख़ारी बाब बुन्यानुल कअ़बा, बाब ज़िक्रे मा लक़ियन्नबीय्यु सल्ल० व अस्हाबुहू मिन कुरैश बिमक्का

ऊंट ज़िब्ह हुआ है, ओझड़ी पड़ी हुई है, कोई जाए उठा लाए और इस (नबी करीम सल्ल0) के ऊपर धर दे, शकी उक्बा उठा, नजासत भरी ओझड़ी उठा लाया, जब नबी करीम सल्ल0 सज्दा में गए तो पुश्ते मुबारक पर रख दी, आंहज़रत सल्ल0 तो रब्बुल इज़्ज़त की जानिब मुतवज्जेह थे, कुछ ख़बर भी न हुई, कुफ़्फ़ार हंसी के मारे लोटे जाते थे और एक दूसरे पर गिरे जाते थे, इब्ने मसऊद सहाबी रज़ि0 भी मौजूद थे, काफ़िरों का हुजूम देखकर उनका हौसला न पड़ा, मगर मअ़सूम सय्यिदा फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि0 आ गईं, उन्होंने बाप की पुश्त से ओझड़ी को परे फेंक दिया और उन संग दिलों को सख़्त सुस्त भी कहा।[1]

एक मर्तबा यह तै करने के लिये मज्लिस मुंअकिद हुई कि मुहम्मद सल्ल0 के मुतअ़ल्लिक़ क्या बात कही जाए कि मक्का में बाहर से आने वाले उनसे बचें और दूर ही दूर रहें, एक ने कहा हम बतलाया करेंगे कि वह काहिन है, वलीद बिन मुग़ीरा (जो एक खुर्राट बुड्ढा था) बोला मैंने बहुतेरे काहिन देखे हैं लेकिन कहां तो काहिनों की तुक बंदियां और कुजा मुहम्मद (सल्ल0) का कलाम, हमको ऐसी बात न कहनी चाहिये जिससे कबाइले अरब यह समझ लें कि हम झूट बोलते हैं, एक ने कहा हम इसे दीवाना बताया करेंगे, वलीद बोला, मुहम्मद (सल्ल0) को दीवानगी से क्या निस्बत है, एक बोला हम कहेंगे वह शाइर है, वलीद ने कहा हम

(1) सहीह बुख़ारी बाब बुनयानुल कअ़्बा, बाब ज़िक्र मा लकियन्नबीयु सल्ल0 व अस्हाबुहू मिन क़ुरैश बिमक्का

जानते हैं कि शेअ़र क्या होता है, अस्नाफ़े सुख़न हमको बख़ूबी मअ़लूम हैं, मुहम्मद (सल्ल0) के कलाम को शेअ़र से ज़रा मुशाबहत नहीं, एक बोला हम बताया करेंगे कि वह जादूगर है, वलीद ने कहा जिस तहारत व लताफ़त व नफ़ासत से मुहम्मद (सल्ल0) रहता है वह जादूगरों में कहां होती है, जादूगरों की मनहूस सूरतें और नजिस आदतें अलग ही होती हैं, अब सबने आजिज़ होकर कहा चचा तुम ही बताओ कि फिर क्या किया जाए? वलीद ने कहा सच तो यह है कि मुहम्मद (सल्ल0) के कलाम में अजीब शीरीनी है, उसकी गुफ़्तगू नौरस हलावत है, कहने को तो बस यही कह सकते हैं कि उसका कलाम ऐसा है जिससे बाप बेटे, भाई भाई, शौहर व ज़न में जुदाई हो जाती है, इसलिये उससे परहेज़ करना चाहिये, तमाम लोगों ने वलीद की इस तज्वीज़ को पसंद किया, अब उनका मअ़मूल था कि मक्का के रास्तों पर बैठ जाते और आने जाने वालों को रसूलुल्लाह सल्ल0 के पास जाने से डराते।[1]

उत्बा का आंहज़रत सल्ल0 से मुकालमा

जब मक्का के काफ़िरों ने देखा कि मुहम्मद सल्ल0 किसी तरह दावत व तबलीग़ तर्क नहीं फ़रमाते, तो उन्होंने कहा कि आओ पहले मुहम्मद सल्ल0 को लालच दें, फिर धमकी दें, किसी तरह तो मान ही जाएंगे, मक्का के एक मशहूर सरदार उत्बा ने कहा देखो मैं जाता हूं और तस्फ़िया

(1) अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स0 89, 90

करके आता हूं, वह रसूलुल्लाह सल्ल० के पास आया और यूं तक्रीर कीः

"मेरे भतीजे मुहम्मद (सल्ल०)! अगर तुम इस कार्रवाई से माल व दौलत जमा करना चाहते हो तो हम ख़ुद ही तेरे पास इतनी दौलत जमा कर देते हैं कि तू मालामाल हो जाए, अगर तुम इज़्ज़त के भूके हो तो अच्छा हम सब तुम को अपना रईस मान लेते हैं, अगर हुकूमत की ख़्वाहिश है तो हम तुमको बादशाहे अरब बना देते हैं, जो चाहो सो करने को हाज़िर हैं, मगर तुम अपना यह तरीक़ छोड़ दो, और अगर तुम्हारे दिमाग़ में कुछ ख़लल आ गया है तो बता दो कि हम तुम्हारा इलाज करा दें।"

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमायाः "तुमने जो कुछ मेरी बाबत कहा वह ज़रा भी सही नहीं, मुझे माल, इज़्ज़त, दौलत, हुकूमत कुछ दरकार नहीं और मेरे दिमाग़ में ख़लल भी नहीं, मेरी हक़ीक़त तुमको क़ुर्आन के इस कलाम से मअ़लूम होगी, फिर आप सल्ल० ने यह आयात तिलावत फ़रमाईः

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ، تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ، كِتَابٌ فُصِّلَتْ اٰيَاتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ، بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ، وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ

إِلَيْهِ......الخ

"यह कुर्आन खुदा के हुज़ूर से आया है, वह बड़ी रहमत वाला और निहायत रहम वाला है। यह बराबर पढ़ी जाने वाली किताब है अरबी ज़बान में समझदारों के लिये, इसमें सब बातें खुली खुली दर्ज हैं, जो लोग खुदा का हुक्म मानते हैं, उनके वास्ते इस फ़रमान में बशारत है, और जो इंकार करते हैं उनको खुदा के अज़ाब से डराता है, ताहम बहुत से लोगों ने इस फ़रमान से मुंह मोड़ लिया है, वह इसे सुनते ही नहीं और कहते हैं कि इसका हमारे दिल पर कोई असर नहीं और हमारे कान इससे शुनवा नहीं और हम में और तुम में एक तरह का पर्दा पड़ा है, तुम अपनी (तदीबर) करो हम अपनी (तदबीर) कर रहे हैं। ऐ नबी इन लोगों से कह दीजिये कि मैं भी तुम जैसा बशर हूं, मगर मुझ पर वह्य आती है, और खुदा के फ़रिशते ने यह बता दिया है कि सब लोगों का मअ़बूद सिर्फ़ एक है, उसी की तरफ़ मुतवज्जेह होना है और उसी से गुनाहों की मुआफी मांगना लाज़िम है, उन लोगों पर अफ़सोस है जो शिर्क करते हैं और सदका नहीं देते और आख़िरत का इंकार करते हैं, लेकिन जो खुदा पर ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये, उनके लिये आख़िरत में बड़ा दर्जा है।"

(हामीम सज्दा, आयत 1-5)

कलामे पाक के सुनने से उत्बा पर एक महवियत का आलम तारी हो गया, वह हाथों से सहारा दिये, गर्दन पुश्त पर डाले सुनता रहा और बिलआख़िर चुपचाप उठकर चला गया। उत्बा वापस गया तो वह उत्बा न था, कुरैश के सरदारों ने देखा तो कहा कि देखो उत्बा का वह चेहरा नहीं है, जो यहां से जाते वक़्त था, उन्होंने पूछा क्या देखा, क्या कहा, क्या सुना? उत्बा बोला, कुरैश! मैं ऐसा कलाम सुन कर आया जो न कहानत है, ने शेअ़र है न जादू है, न मंतर है। तुम मेरा कहा मानो तो मेरी राए पर चलो, मुहम्मद (सल्ल0) को अपने हाल पर छोड़ दो, लोगों ने यह राए सुन कर कहा, लो उत्बा पर भी मुहम्मद (सल्ल0) की ज़बान का जादू चल गया।[1]

सरदाराने कुरैश की आंहज़रत सल्ल0 से बातचीत

इस नाकामी के बाद कुरैश ने मशवरा किया कि मुहम्मद सल्ल0 को क़ौम के सामने बुला कर समझाना चाहिये, इस मशवरा के बाद उन्होंने नबी करीम सल्ल0 के पास कहला भेजा कि सरदाराने क़ौम आपसे कुछ बातचीत करना चाहते हैं और कअ़बा के अंदर जमा हैं, नबी करीम सल्ल0 खुशी खुशी वहां गए, क्योंकि हुज़ूर सल्ल0 को उनके ईमान ले आने की बड़ी आरज़ू थी, जब आंहज़रत सल्ल0 वहां जा बैठे तो उन्होंने गुफ़्तगू का आग़ाज़ इस तरह किया:

(1) अस्सीरतुन्नबवीया 1-486,487, मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा 14-295, अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स0 91-92

"ऐ मुहम्मद (सल्ल0)! हमने तुझे यहां बात करने के लिये बुलाया है, बखुदा हम नहीं जानते कि कोई शख़्स अपनी क़ौम पर इतनी मुश्किलात लाया हो, जिस क़दर तूने अपनी कौम पर डाल रखी है, कोई ख़राबी ऐसी नहीं जो तेरी वजह से हम पर न आ चुकी हो, अब तुम यह बताओ कि अगर तुम अपने इस नए दीन से माल जमा करना चाहते हो तो हम तुम्हारे लिये माल जमा कर दें, इतना कि हम में से किसी के पास इतना रूपया न निकले और अगर शर्फ़ व इ़ज़्ज़त के ख़्वास्तगार हो तो हम तुम्हें अपना सरदार बना लें और अगर तुम सलतनत के तालिब हो तो तुम्हें अपना बादशाह मुकर्रर कर लें और अगर तुम समझते हो कि जो चीज़ तुम्हें दिखाई देती है वह कोई जिन्न है जो ग़ालिब आ गया है तो हम टोने टोटकों के लिये माल सर्फ़ कर दें ताकि तुम तंदुरुस्त हो जाओ, या क़ौम के नज़दीक मअ़ज़ूर समझे जाओ।"

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः

"तुमने जो कुछ भी कहा, मेरी हालत के ज़रा भी मुताबिक़ नहीं, जो तअ़लीम लेकर मैं आया हूं वह न तलबे अम्वाल के लिये है, न जल्बे शर्फ़ या हुसूले सलतनत के वास्ते है, बात यह है कि खुदावंद ने मुझे तुम्हारी तरफ़ रसूल बना कर भेजा है, मुझ पर किताब उतारी है, मुझे अपना बशीर व

नज़ीर बनाया है, मैंने अपने रब के पैग़ामात तुमको पहुंचा दिये हैं और तुम्हें बख़ूबी समझा दिया है, अगर तुम मेरी तअ़लीमात को क़बूल करोगे तो वह तुम्हारे लिये दुन्या वा आख़िरत का सरमाया है, और अगर रद्द करोगे तब मैं अल्लाह के हुक्म का इंतिज़ार करूंगा, वह मेरे लिये और तुम्हारे लिये क्या हुक्म भेजता है।"

क़ुरैश ने कहाः

"अच्छा मुहम्मद (सल्ल0)! अगर तुम हमारी बातों को नहीं मानते तो एक बात सुनो, तुमको मअ़लूम है कि हम किस क़दर सख़्ती व तंगी से दिन काट रहे हैं, पानी हमारे पास सबसे कम है और गुज़रान हमारी सबसे ज़्यादा तंग है, अब तुम ख़ुदा से यह सवाल करो कि इन पहाड़ों को हमारे सामने से हटा दे ताकि हमारे शहर का मैदान खुल जाए, नीज़ हमारे लिये ऐसी नहरें जारी कर दे जैसी शाम व इराक़ में जारी हैं, नीज़ हमारे बाप, दादों को ज़िंदा कर दे, उन ज़िंदा होने वालों में क़ुसैय् बिन किलाब ज़रूर हो, क्योंकि वह हमारा सरदार था और सच बोला करता था हम उससे तेरी बाबत भी पूछ लेंगे, अगर उसने तेरी बातों को सच मान लिया और तूने हमारे सवालों को भी पूरा कर दिया, तब हम भी तुझे सच्चा जान लेंगे और मान लेंगे कि हां ख़ुदा के यहां तेरा भी कोई दर्जा है

और उसने फिल हक़ीक़त तुझे रसूल बना कर भेजा है जैसा कि तू कह रहा है।"

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया:

"मैं इन कामों के लिये रसूल बना कर नहीं भेजा गया, मैं तो तअ्लीम के लिये रसूल बना कर भेजा गया हूं और मैंने खुदा के पैग़ामात तुम्हें सुना दिये हैं, अगर तुम इसको क़बूल कर लोगे तो यह तुम्हारी दुन्या व आख़िरत के लिये सरमाया है और अगर रद्द करोगे तो मैं खुदा के हुक्म का इंतिज़ार करूंगा, जो कुछ उसे मेरा और तुम्हारा फ़ैसला करना होगा फ़रमाएगा।"

क़ुरैश ने कहा:

"अच्छा अगर तुम हमारे लिये कुछ नहीं करते तो खुद अपने ही लिये खुदा से सवाल करो, यह कि वह एक फ़रिश्ते को तुम्हारे साथ मुक़र्रर कर दे, जो यह कहता रहे कि यह शख़्स सच्चा है और हम को तुम्हारी मुख़ालफ़त से मना भी कर दे, हां तुम अपने लिये यह भी सवाल करो कि बाग़ लग जाएं, बड़े बड़े महल बन जाएं, ख़ज़ाना सोना चांदी जमा हो जाए, जिसकी तुम्हें ज़रूरत भी है, अब तक तुम खुद ही बाज़ार में जाते और अपनी मआश तलाश किया करते हो, ऐसा हो जाने के बाद ही हम तुम्हारी फ़ज़ीलत और शर्फ़ की पहचान हासिल कर सकेंगे।"

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः

"मैं ऐसा न करूंगा और न खुदा से कभी ऐसा सवाल करूंगा और इन बातों के लिये मैं मबऊस भी नहीं हुआ, मुझे तो अल्लाह ने बशीर व नज़ीर बनाया है, तुम मान लो तो तुम्हारे लिये ज़खीरए दारैन है वर्ना मैं सब्र करूंगा और खुदा के फैसला का मुंतज़िर रहूंगा।"

कुरैश ने कहाः

"अच्छा तुम आसमान का टुक्ड़ा तोड़कर हम पर गिरा दो, क्योंकि तुम्हारा ज़ोअ्म यह है कि अगर खुदा चाहे तो ऐसा कर सकता है, पस जब तक तुम ऐसा न करोगे हम ईमान नहीं लाने के।"

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः

"यह खुदा के इख़्तियार में है वह अगर चाहे तो ऐसा करे।"

कुरैश ने कहाः

"मुहम्मद (सल्ल0)! यह तो बताओ कि तेरे खुदा ने तुझे पहले से यह न बताया कि हम तुझे बुलाएंगे, ऐसे ऐसे सवाल करेंगे, यह चीज़ें तलब करेंगे, हमारी बातों का यह जवाब है और खुदा का मंशा ऐसा ऐसा करने का है? चूंकि तेरे खुदा ने ऐसा नहीं किया, इसलिये हम समझते हैं कि जो कुछ हमने सुना है वह सही है कि यमामा में एक शख़्स रहता है, उसका नाम रहमान है, वही तुझको

ऐसी बातें सिखाता है, हम तो रहमान पर कभी नहीं ईमान लाने के, देखो आज हम ने अपने सारे उज़्र सुना दिये हैं, अब हम तुझ से क़समीया यह भी कहे देते हैं कि हम तुझे इस तअ़लीम की इशाअ़त कभी न करने देंगे, हत्ता कि हम मर जाएं या तू मर जाए।"

यहां तक बातचीत हुई कि एक उनमें से बोलाः "हम मलाइका की इबादत करते हैं जो ख़ुदा की बेटियां हैं।" दूसरा बोलाः "हम तेरी बात का यक़ीन नहीं करेंगे जब तक कि ख़ुदा और फ़रिशते हमारे सामने न आ जाएं।"

नबी करीम सल्ल0 आख़िरी बात सुनकर उठ खड़े हुए, नबी करीम सल्ल0 के साथ अब्दुल्लाह बिन अबू उमय्या बिन मुग़ीरा भी उठ खड़ा हुआ, यह आप सल्ल0 का फूफी ज़ाद भाई (आतिका बिंते अब्दुल मुत्तलिब का बेटा) था, उसने कहाः

"मुहम्मद (सल्ल0)! देखो तुम्हारी क़ौम ने अपने लिये कुछ चीज़ों का सवाल किया वह भी तुमने न माना, फिर उन्होंने यह चाहा कि तुम अपने ही लिये ऐसी अलामात का इज़हार करो जिससे तुम्हारी क़दर व मंज़िलत का सुबूत हो सकता हो, उसे भी तुमने क़बूल न किया, फिर उन्होंने अपने लिये थोड़ा सा अज़ाब भी चाहा जिसका तुम ख़ौफ़ दिलाया करते थे, तुमने उसका भी इक़रार न किया, बस अब मैं तुम पर कभी ईमान नहीं लाने

का, अगर्चे तुम मेरे सामने आसमान को ज़ीना लगाकर ऊपर को चढ़ जाओ और मेरे सामने उस ज़ीना से उतरो और तुम्हारे साथ चार फ़रिशते भी आएं और वह तुम्हारी शहादत भी दें, मैं तो तब भी तुम पर ईमान नहीं लाऊंगा।[1]

नबी सल्ल0 इस रद्द व इंकार पर भी बराबर कुरैश को इस्लाम की हिदायत किया करते और फ़रमाया करते कि मेरी तअ़लीम ही में सब कुछ तुम्हारे लिये मौजूद है, जिन दानिशमंदों ने ईमान क़बूल किया और तअ़लीमे नबवी सल्ल0 पर कारबंद हुए, उन्हें इससे भी ज़्यादा मआरिफ़ व फ़वाइद हासिल हो गए जिसका कुफ़्फ़ार ने सवाल किया था।

कुरैश के हाथों मुसलमानों पर मज़ालिम

कुरैश ने जब देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल0 से बस नहीं चलता तो उन्होंने ग़रीबों पर अपना गुस्सा उतारना शुरू किया, जिन्होंने इस्लाम कबूल किया था, जब ठीक दोपहर हो जाती तो वह ग़रीब मुसलमानों को पकड़ते, अरब की तेज़ धूप रेतीली ज़मीन को दोपहर के वक़्त जलता तवा बना देती है, वह उन ग़रीबों को उसी तवे पर लिटाते, छाती पर भारी पत्थर रख देते कि करवट न बदलने पाएं, बदन पर गर्म बालू बिछाते, लोहे को आग पर गर्म करके उससे दाग़ते, पानी में डुबकियां देते।

---

(1) अस्सीरतुल हलबीया 1-496

यह मुसीबतें अगर्चे तमाम बेकसों पर आम थीं लेकिन उनमें जिन लोगों पर कुरैश ज़्यादा मेहरबान थे, उनके नाम यह हैं।[1]

हज़रत खब्बाब बिन अलअरित रज़ि०: तमीम के क़बीला से थे, जाहिलीयत में गुलाम बनाकर फ़रोख़्त कर दिये गए और उम्मे अन्मार ने ख़रीद लिया था, उस ज़माना में इस्लाम लाए जब आंहज़रत सल्ल० हज़रत अरक़म रज़ि० के घर में मुक़ीम थे और सिर्फ़ छः सात शख़्स इस्लाम लाए थे, कुरैश ने उनको तरह तरह की तकलीफ़ें दीं, एक दिन कोयले जलाकर ज़मीन पर बिछाए, उस पर चित लिटाया, एक शख़्स छाती पर पांव रखे रहा कि करवट न बदलने पाएं, यहां तक कि कोयले पीठ के नीचे पड़े पड़े ठंडे हो गए।[2] हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने मुद्दतों के बाद जब यह वाक़िआ हज़रत उमर रज़ि० के सामने बयान किया तो पीठ खोल कर दिखाई कि बर्स के दाग़ की तरह बिल्कुल सपेद थी।

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० जाहिलीयत में लोहारी का काम करते थे, इस्लाम लाए तो बअूज़ लोगों के ज़िम्मा उनकी बक़ाया थी, मांगते तो जवाब मिलता, जब तक मुहम्मद (सल्ल०) का इंकार न करोगे, एक कौड़ी न मिलेगी, यह कहते कि नहीं! तुम मर मर कर ज़िंदा हो जाओ, तब भी यह मुम्किन नहीं।[3]

(1) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअमानी 1-228,231 (2) अलकामिल लिइब्ने असीर जि02-स067 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल इजारा, बाब हल युवाजरुर्रजुलु नफ़्सहू मिन मुश्रिकिन फ़ी अरज़िल हर्ब

हज़रत बिलाल रज़ि0: यह वही हज़रत बिलाल रज़ि0 हैं जो मुअज़्ज़िन के लक़ब से मशहूर हैं, हब्शीयुन्नस्ल और उमय्या बिन ख़लफ़ के गुलाम थे, जब ठीक दोपहर हो जाती तो उमय्या इनको जलती बालू पर लिटाता और पत्थर की चट्टान उनके सीने पर रख देता कि जुंबिश न करने पाएं, उनसे कहता कि इस्लाम से बाज़ आ, वर्ना यूं ही घुट घुट कर मर जाएगा, लेकिन उस वक़्त भी उनकी ज़बान से "أحد" का लफ़्ज़ निकलता। जब यह किसी तरह मुतज़लज़ल न हुए तो गले में रस्सी बांधी और लौंडों के हवाला किया, वह उनको शहर के इस सिरे से उस सिरे तक घसीटते फिरते थे, लेकिन अब भी वही रट थी "أحد أحد"[1]

हज़रत अम्मार रज़ि0: यमन के रहने वाले थे, उनके वालिद "यासिर रज़ि0" मक्का में आए, अबू हुज़ैफ़ा मख़्ज़ूमी ने अपनी कनीज़ से जिसका नाम सुमय्या था शादी कर दी, अम्मार रज़ि0 उसी के पेट से पैदा हुए, यह जब इस्लाम लाए तो इनसे पहले सिर्फ़ तीन शख़्स इस्लाम ला चुके थे, कुरैश उनको जलती हुई ज़मीन पर लिटाते और इस क़दर मारते कि बेहोश हो जाते, उनके वालिद और वालिदा के साथ यही सुलूक किया जाता था।[2]

हज़रत सुमय्या रज़ि0: हज़रत अम्मार रज़ि0 की वालिदा थीं, इनको अबू जह्ल ने इस्लाम लाने के जुर्म में बर्छी मारी और वह शहीद हो गईं।

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-284, मुस्नद अहमद-404

(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-319

हज़रत यासिर रज़ि0: हज़रत अम्मार के वालिद थे, यह भी काफ़िरों के हाथ से अज़ीयत उठाते उठाते शहीद हो गए।[1]

हज़रत सुहैब रूमी रज़ि0: आंहज़रत सल्ल0 ने जब दावते इस्लाम शुरू की तो यह और अम्मार रज़ि0 बिन यासिर रज़ि0 एक साथ आंहज़रत सल्ल0 के पास आए, आप सल्ल0 ने इस्लाम की तरग़ीब दी और यह मुसलमान हो गए, क़ुरैश इनको इस क़दर अज़ीयत देते कि इनके हवास मुख़्तल हो जाते थे। जब इन्होंने मदीना को हिज्रत करनी चाही तो क़ुरैश ने कहा कि अपना सारा माल व मताअ़ छोड़ जाओ तो जा सकते हो, इन्होंने निहायत ख़ुशी से मंज़ूर किया, हज़रत उमर रज़ि0 जब नमाज़ पढ़ाने में ज़ख़्मी हुए तो अपने बजाए इन्हीं को इमामत दी थी।[2]

अबू फ़ुकैहा रज़ि0: सफ़वान बिन उमय्या के गुलाम थे, हज़रत बिलाल रज़ि0 के साथ इस्लाम लाए, उमय्या को जब मअ़लूम हुआ तो उनके पांव में रस्सी बांधी और आदमियों से कहा कि घसीटते हुए ले जाएं और तपती हुई ज़मीन पर लिटाएं, एक "गबरीला" राह में जा रहा था उमय्या ने उनसे कहा: "तेरा ख़ुदा यही तो नहीं है?" उन्होंने कहा: "मेरा और तेरा दोनों का ख़ुदा अल्लाह तआला है।" एक दफ़ा उनके सीने पर इतना भारी बोझ रख दिया कि उनकी ज़बान निकल पड़ी।[3]

(1) अल कामिल 2-67 (2) मुस्तदरक हाकिम, मनाक़िबे सुहैब 3-449
(3) अल कामिल 2-69

हज़रत लुबैना रज़ि0: यह बेचारी एक कनीज़ थीं, हज़रत उमर इस बेकस को मारते मारते थक जाते तो कहते "मैं तुझ पर रहम की बिना पर नहीं, बल्कि इस वजह से छोड़ दिया है कि थक गया हूं।" वह निहायत इस्तिक्लाल से जवाब देतीं कि "अगर तुम इस्लाम न लाओगे तो खुदा इसका इंतिक़ाम लेगा।"[1]

हज़रत ज़िन्नीरा रज़ि0: हज़रत उमर रज़ि0 के घराने की कनीज़ थीं और इस वजह से हज़रत उमर रज़ि0 (इस्लाम से पहले) इनको जी खोल कर सताते, अबू जह्ल ने इनको इस क़दर मारा कि इनकी आंखें जाती रहीं।[2]

हज़रत नहदीया रज़ि0 और उम्मे उबैस रज़ि0: यह दोनों भी कनीज़ें थीं, और इस्लाम लाने के जुर्म में सख़्त से सख़्त मुसीबतें झेलती थीं।[3]

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के फ़ज़ाइल का यह पहला बाब है कि उन्होंने इन मज़लूमों में से अक्सर की जान बचाई, हज़रत बिलाल रज़ि0, आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ि0, लुबैना रज़ि0, ज़िन्नीरा रज़ि0, नहदीया रज़ि0, उम्मे उबैस रज़ि0, सबको भारी भारी दामों पर ख़रीदा और आज़ाद कर दिया।

यह वह लोग हैं जिनको कुरैश ने निहायत सख़्त जिस्मानी अज़ीयतें पहुंचाईं, इनसे कम दर्जा पर वह लोग थे,

(1) अलकामिल 2-69

(2) अलकामिल 2-69, 70

(3) मुस्तदरक हाकिम 3-284, मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा 12-10, हज़रत बिलाल रज़ि0 के आज़ाद करने का ज़िक्र सहीहुल बुख़ारी में भी मौजूद है।

जिनको और तरह तरह से सताते थे।

हज़रत उस्मान रज़ि०: जो कबीरुस्सिन्न और साहिबे जाह व एज़ाज़ थे, जब इस्लाम लाए, तो दूसरों ने नहीं बल्कि खुद उनके चचा ने रस्सी बांध कर मारा।[1]

हज़रत अबू ज़र रज़ि०: जो सातवें मुसलमान हैं, जब मुसलमान हुए और कअ़बा में अपने इस्लाम का एलान किया, तो कुरैश ने मारते मारते उनको लिटा दिया।[2]

हज़रत ज़ुबैर बिन अलअव्वाम रज़ि०: इनका मुसलमान होने में पांचवां नम्बर था, जब इस्लाम लाए तो इनके चचा इनको चटाई में लपेट कर इनकी नाक में धूनी देते थे।[3]

हज़रत उमर रज़ि० के चचाज़ाद भाई **सईद बिन ज़ैद रज़ि०** जब इस्लाम लाए तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनको रस्सियों से बांध दिया।[4]

हज़रत सअ़द बिन अबी वक्क़ास रज़ि० फ़ातिहे ईरान: अगर्चे निहायत मुअ़ज़्ज़ज़ और अपने क़बीला में निहायत मुक़्तदर थे, ताहम कुफ़्फ़ार के सितम से महफ़ूज़ न थे, बनू असद इस्लाम के जुर्म पर इनको सख़्त सज़ाएं देते, उस वक़्त तक हरमे कअ़बा में कोई शख़्स बुलंद आवाज़ से कुर्आन नहीं पढ़ सकता था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० जब इस्लाम लाए तो उन्होंने कहा मैं इस फ़र्ज़ को

---

(1) रहमतुल लिल आलमीन, क़ाज़ी सुलैमान मंसूरपूरी 1-55 (2) सहीहुल बुख़ारी, बाब इस्लामु अबी ज़र रज़ि० (3) सीरतुन्नबी सल्ल०, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी रह०, बहवाला रियाज़ुन्नुज़रह (4) सहीहुल बुख़ारी किताबुल इकराह, बाब मन इख़्तारज़्ज़र्ब वल क़त्ल वल हवान अलल कुफ़्र

ज़रूर अदा करूंगा, लोगों ने मना किया, लेकिन वह बाज़ न आए, हरम में गए और मक़ामे इब्राहीम अलै0 के पास खड़े होकर सूरए रहमान पढ़नी शुरू की, कुफ़्फ़ार हर तरफ़ से टूट पड़े और उनके मुंह पर तमांचे मारने शुरू किये, अगर्चे उनको जहां तक पढ़ना था, पढ़ कर दम लिया, लेकिन वापस गए तो चेहरा पर ज़ख़्म के निशान लेकर गए।[1]

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के साथ कुफ़्फ़ारे कुरैश का मुआमला

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 अगर्चे मक्का के ज़ी वजाहत और आबरू दार लोगों में थे, लेकिन इस्लाम लाने के बाद कुरैश की ईज़ाओं और इहानतों से बच न सके, एक दिन लोगों ने उनको गिराकर पांव से रौंदा और बहुत ज़द व कूब किया, उत्बा बिन रबीआ ने उनको दो ऐसे जूतों से मारा जिसमें जाबजा पैवंद लगे हुए थे, उनके चेहरा पर इतनी ज़र्ब आई कि सारे चेहरे पर वरम हो गया, अअ्ज़ा का पता नहीं चलता था, उनके कबीला के लोग उनको एक कपड़े में लपेट कर उठा ले गए और घर पहुंचा दिया, सबको यक़ीन था कि अबू बक्र रज़ि0 बचने वाले नहीं हैं, शाम को जब बोलने की सकत हुई तो कहा कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ख़ैरियत से हैं? उनके ख़ानदान वालों ने उनको बड़ी मलामत की कि अब भी इनको रसूलुल्लाह सल्ल0 की फ़िक्र है, जब मज्मा हटा तो फिर उन्होंने अपनी वालिदा से पूछा रसूलुल्लाह सल्ल0 का क्या हाल है? उन्होंने कहा कि मुझे

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-314, असदुल ग़ाबा 3-282

बिल्कुल खबर नहीं है, आपने कहा कि उम्मे जमील से पूछ कर आओ, उम्मे जमील आपको देखने आई, उन्होंने यह हाल देखकर कहा कि जिन लोगों ने आपके साथ यह सुलूक किया है वह बड़े फ़ासिक़ व काफ़िर हैं, मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला उनसे इंतिक़ाम लेगा, आपने कहा कि रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़ैरियत कहो, उन्होंने कहा कि आप सल्ल० बख़ैरियत हैं, फ़रमाया कहां हैं, उन्होंने कहा कि इब्ने अरक़म के घर में, आपने कहा कि उस वक़्त तक मुझे खाना पीना हराम है जब तक कि मैं आप सल्ल० को देख न लूं, रात को जब आमद व रफ़्त मौक़ूफ़ हुई और सन्नाटा हो गया तो आप की वालिदा और उम्मे जमील आपको पकड़ा कर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में लाईं और आप ज़ियारत व मुलाक़ात से मुशर्रफ़ हुए।[1]

मुसलमानों की हब्शा की तरफ़ हिज्रत और नजाशी के सामने हज़रत जअ़फ़र की तक़रीर

जब कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को बेहद सताना शुरू किया तो नबी सल्ल० ने सहाबए किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम को इजाज़त दे दी कि जो चाहे वह अपनी जान व ईमान के बचाव के लिये हबश को चला जाए।

इस इजाज़त के बाद एक छोटा सा क़ाफ़िला ग्यारह मर्द, चार औरतों का रात की तारीकी में निकला और बंदरगाह शुऐबा से जहाज़ में सवार होकर हबश को रवाना हो गया।[2]

(1) अल इसाबा 1-42 (2) फ़ुतुहुल बारी सिइब्ने हजर 7-188,189

इस मुख़्तसर क़ाफ़िला के सरदार हज़रत उस्मान रज़ि० बिन अफ़्फ़ान थे, सय्यदा रुक़य्या रज़ि० (बिन्तुन्नबी सल्ल०) उनके साथ थीं, नबी करीम सल्ल० ने फ़रमायाः "इब्राहीम अलै० के बाद यह पहला जोड़ा है जिसने राहे खुदा में हिज्रत की है।"[1]

उनके पीछे और भी मुसलमान (83/मर्द, 18 औरतें) मक्का से निकले और हबश को रवाना हुए, उनमें नबी सल्ल० के चचेरे भाई जअ़फ़र तय्यार रज़ि० भी थे, कुरैश ने समंदर तक उनका तआ़क़ुब किया मगर यह कश्तियों में बैठ कर रवाना हो चुके थे।[2]

हबश का बादशाह ईसाई था, मक्का के काफ़िर भी उसके पास तोहफ़े तहाइफ़ लेकर गए और जाकर कहा कि इन लोगों को जो हमारे मुल्क से भाग आए हैं हमारे सिपुर्द किया जाए, मुसलमान दरबार में बुलाए गए, तब नबी सल्ल० के चचेरे भाई जअ़फ़र रज़ि० ने दरबार में यह तक़रीर कीः

"ऐ बादशाह! हम जिहालत में मुब्तला थे, बुतों को पूजते थे, नजासत में आलूदा थे, मुर्दार खाते थे, बेहूदा बका करते थे, हम में इंसानियत और सच्ची मेहमानदारी का निशान न था, हमसाया की रिआयत न थी, कोई क़ाएदा व क़ानून न था, ऐसी हालत में खुदा ने हम में से एक बुज़ुर्ग को मबऊस

(1) तबक़ात इब्ने सअ़द 1-203

(2) फ़ुतुहुल बारी 7-189

किया जिसके हसब व नसब, सच्चाई, दियानतदारी तक़्वा, पाकीज़गी से हम खूब वाक़िफ़ थे, उसने हमको तौहीद की दावत दी और समझाया कि उस अकेले खुदा के साथ किसी को शरीक न जानें, उसने हमको पत्थरों की पूजा से रोका, उसने फ़रमाया कि हम सच बोला करें, वादा पूरा किया करें, गुनाहों से दूर रहें, बुराइयों से बचें, उसने हुक्म दिया कि हम नमाज़ पढ़ा करें, सदक़ा दिया करें और रोज़े रखा करें, हमारी क़ौम हमसे इन बातों पर झगड़ बैठी है, क़ौम ने जहां तक हो सका हमको सताया ताकि हम वहदहू ला शरीक की इबादत करना छोड़ दें और लकड़ी और पत्थर की मूर्तों की पूजा करने लग जाएं, हमने उनके हाथों बहुत ज़ुल्म और तकलीफ़ें उठाई हैं और जब मजबूर हो गए, तब तेरे मुल्क में पनाह लेने आए हैं।"

बादशाह ने यह तक़रीर सुन कर कहा मुझे क़ुर्आन सुनाओ! जअ्फ़र तय्यार रज़ि० ने उसे सूरए मरयम सुनाई, बादशाह पर ऐसी तअसीर हुई कि वह रोने लगा और उसने कहा "मुहम्मद तो वही रसूल हैं जिनकी ख़बर यसूअ़ मसीह अलै० ने दी थी।" अल्लाह का शुक्र है कि मुझे उस रसूल का ज़माना मिला, फिर बादशाह ने मक्का के काफ़िरों को दरबार से निकलवा दिया।

दूसरे दिन अम्र बिन अलआ़स रज़ि० ने फिर दरबार में

रसाई हासिल की और नजाशी से कहा हुज़ूर! आपको यह भी मअ़लूम है कि यह लोग हज़रत ईसा अलै0 की निस्बत क्या एतिक़ाद रखते हैं? नजाशी ने मुसलमानों को बुला भेजा कि इस सवाल का जवाब दें, उन लोगों को तरद्दुद हुआ कि अगर हज़रत ईसा अलै0 के इब्नुल्लाह होने का इंकार करते हैं, नजाशी ईसाई है नाराज़ हो जाएगा, हज़रत जअ़फ़र रज़ि0 ने कहा कुछ भी हो हमको सच बोलना चाहिये।

ग़र्ज़ यह लोग दरबार में हाज़िर हुए, नजाशी ने कहा तुम लोग ईसा बिन मरयम अलै0 के मुतअ़ल्लिक़ क्या एतिक़ाद रखते हो? हज़रत जअ़फ़र रज़ि0 ने कहा "हमारे पैग़म्बर सल्ल0 ने बताया कि ईसा अलै0 खुदा का बंदा और पैग़म्बर कलिमतुल्लाह है" नजाशी ने ज़मीन से एक तिंका उठा लिया और कहा, वल्लाह जो तुमने कहा ईसा अलै0 इस तिंके के बराबर भी या इससे ज़्यादा नहीं हैं, बितरीक़ जो दरबार में मौजूद थे निहायत बरहम हुए, नथनों से ख़रख़राहट की आवाज़ आने लगी, नजाशी ने उनके ग़ुस्सा की कुछ परवाह न की और कुरैश के सफ़ीर बिल्कुल नाकामियाब आए।[1]

हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 का क़बूले इस्लाम

हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 आंहज़रत सल्ल0 के चचा थे, उनको आप सल्ल0 से मुहब्बत थी, और आप सल्ल0 से दो, तीन बरस बड़े थे और साथ खेलते थे, दोनों ने सुवैबा का दूध पिया था और इस रिश्ते से भाई भाई थे, वह अभी तक

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-335,336, मुस्नद अहमद 1-202, 5-290

इस्लाम नहीं लाए थे, लेकिन आप सल्ल0 की हर अदा को मुहब्बत की नज़र से देखते थे, उनका मज़ाके तबीअत सिपहगरी और शिकार अफ्गनी था, मअमूल था कि मुंह अंधेरे तीर कमान लेकर निकल जाते, तमाम दिन शिकार में मसरूफ रहते, शाम को वापस आते तो पहले हरम में जाते तवाफ करते, कुरैश के रुअसा सिहने हरम में अलग अलग दरबार जमा कर बैठा करते थे, हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 उन लोगों से साहब सलामत करते, कभी कभी किसी के पास बैठ जाते, इस तरीक़ा से सबसे याराना था और सब लोग उनकी क़दर व मंज़िलत करते थे।

आंहज़रत सल्ल0 के साथ मुख़ालिफ़ीन जिस बेरहमी से पेश आते थे बेगानों से भी न देखा जा सकता था, एक दिन अबू जह्ल ने रू दर रू आप सल्ल0 के साथ निहायत गुस्ताख़ियां कीं, एक कनीज़ देख रही थी, हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 शिकार से आए तो उसने तमाम माजिरा कहा, हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 गुस्सा से बेताब हो गए, तीर व कमान हाथ में लिये हरम में आए और अबू जह्ल से कहा "मैं मुसलमान हो गया हूं"[1]

हज़रत उमर रज़ि0 का क़बूले इस्लाम

हज़रत उमर रज़ि0 का सत्ताईसवां साल था कि आंहज़रत सल्ल0 मबऊस हुए, हज़रत उमर रज़ि0 के घराने में ज़ैद की वजह से तौहीद की आवाज़ नामानूस नहीं रही

(1) असीरतुन्नबवीया लिल्फ़ज़्ली 101, मुस्तदरक हाकिम 3-213 ज़िक्रे इस्लाम हम्ज़ा रज़ि०

थी, चुनांचे सबसे पहले ज़ैद के बेटे सईद इस्लाम लाए, सईद का निकाह हज़रत उमर रज़ि0 की बहन फ़ातिमा से हुआ था, इस तअ़ल्लुक़ से फ़ातिमा भी मुसलमान हो गई थीं, इसी ख़ानदान में एक और मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स नुऐम बिन अब्दुल्लाह ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया था, लेकिन हज़रत उमर रज़ि0 अभी तक इस्लाम से बेगाना थे, उनके कानों में जब यह सदा पहुंची तो सख़्त बरहम हुए, यहां तक कि क़बीला में जो लोग इस्लाम ला चुके थे उनके दुशमन बन गए, लुबैना उनके ख़ानदान की कनीज़ थी जिसने इस्लाम क़बूल कर लिया था, उसको बेतहाशा मारते और मारते मारते थक जाते तो कहते कि दम ले लूं तो फिर मारूंगा, लुबैना के सिवा और जिस पर काबू चलता था ज़द व कूब से दरेग़ नहीं करते थे, लेकिन इस्लाम का नशा ऐसा था कि जिस पर चढ़ जाता था उतरता न था, इन तमाम सख़्तियों पर एक शख़्स को भी वह बद दिल न कर सके, आख़िर मजबूर होकर (नऊज़ु बिल्लाह) ख़ुद बानिये इस्लाम के क़त्ल का इरादा किया, तलवार कमर से लगा कर सीधे रसूलुल्लाह सल्ल0 की तरफ़ चले, कारकुनाने क़ज़ा ने कहा

आमद आं यारे कि मा मीख़्वास्तम

राह में इत्तिफ़ाक़न नुऐम बिन अब्दुल्लाह मिल गए, उनके तेवर देख कर पूछा ख़ैर है? बोले कि मुहम्मद (सल्ल0) का फ़ैसला करने जाता हूं, उन्होंने कहा पहले अपने घर की ख़बर लो, ख़ुद तुम्हारे बहन बहनोई इस्लाम ला चुके

हैं, फ़ौरन पलटे और बहन के यहां पहुंचे, वह कुर्आन पढ़ रही थीं, उनकी आहट पाकर चुप हो गईं, और अज्ज़ा छिपा लिये, लेकिन आवाज़ उनके कानों में पड़ चुकी थी, बहन से पूछा कि यह क्या आवाज़ थी? बोलीं कुछ नहीं, उन्होंने कहा मैं सुन चुका हूं तुम दोनों मुर्तद हो गए, यह कहकर बहनोई से दस्त व गिरेबां हो गए और जब उनकी बहन बचाने को आईं तो उनकी भी ख़बर ली, यहां तक कि उनका जिस्म लहू लुहान हो, गया लेकिन इस्लाम की मुहब्बत इससे बालातर थी, बोलीं कि "उमर जो बन आए करो, लेकिन इस्लाम अब दिल से नहीं निकल सकता" इन अलफ़ाज़ ने हज़रत उमर रज़ि० के दिल पर भी ख़ास असर किया, बहन की तरफ़ मुहब्बत की निगाह से देखा, उनके जिस्म से ख़ून जारी था, यह देखकर और भी रिक़्क़त हुई, बहन से कहा कि जो किताब पढ़ी जा रही थी ज़रा मुझे देना, देखूं कि मुहम्मद (सल्ल०) क्या लाए हैं, बहन ने कहा, मुझे ख़तरा है कि कहीं तुम इस किताब की बेअदबी न करो, उन्होंने जवाब दिया कि डरो नहीं और अपने मअ़बूदों की क़सम खाई कि पढ़कर ज़रूर वापस कर देंगे, उनकी यह बात सुनकर उनकी बहन को कुछ उम्मीद हुई कि शायद उनकी हिदायत का वक़्त आ गया है, उन्होंने कहा तुम मुश्रिक और नापाक हो और इसको सिर्फ़ पाक आदमी ही छू सकता है, उमर रज़ि० गए और ग़ुस्ल कर के आए, बहन ने उनको कुर्आन मजीद के औराक़ दिये, उमर रज़ि० ने औराक़ लिये

तो सूरए ताहा सामने थी, उसका इब्तिदाई हिस्सा पढ़ा और कहा कि यह कलाम किस क़दर उम्दा और इ़ज़्ज़त वाला है, हज़रत ख़ब्बाब रज़ि0 जो छिपे हुए थे, यह सुनकर बाहर निकल आए और उनसे कहा ऐ उमर! मुझे उम्मीद है कि अल्लाह ने अपने नबी सल्ल0 की दुआ क़बूल की, मैंने कल ही आप सल्ल0 को यह दुआ करते हुए सुना है कि "ऐ अल्लाह हकम बिन हिशाम (अबू जह्ल) या उमर बिन अलख़त्ताब के ज़रीआ़ इस दीन की मदद फ़रमा "उमर! इस नेअ़मत की क़दर करो, उमर रज़ि0 ने कहा, ख़ब्बाब मुझे मुहम्मद (सल्ल0) की जगह का पता दो कि मैं हाज़िर होकर इस्लाम क़बूल करूं, ख़ब्बाब रज़ि0 ने पता बतलाया, यह वह ज़माना था कि रसूलुल्लाह सल्ल0 हज़रत अरक़म रज़ि0 के मकान में जो कोहे सफ़ा की तली में वाक़ेअ़ था पनाह गुज़ीं थे, हज़रत उमर रज़ि0 ने आसतानए मुबारक पर पहुंच कर दस्तक दी, चूंकि शमशीर बकफ़ थे, सहाबा रज़िअल्लाहु अ़न्हुम को तरद्दुद हुआ, लेकिन हज़रत अमीर हम्ज़ा रज़ि0 ने कहा "आने दो, वह मुख़्लिसाना आया है तो बेहतर, वर्ना उसी की तलवार से उसका सर कलम कर दूंगा" हज़रत उमर रज़ि0 ने अंदर क़दम रखा तो रसूलुल्लाह सल्ल0 ख़ुद आगे बढ़े और उनका दामन पकड़ के फ़रमाया, क्यों उमर! किस इरादा से आया है? नुबूव्वत की पुर जलाल आवाज़ ने उनको कपकपा दिया, निहायत ख़ुज़ूअ़ के साथ अ़र्ज़ किया कि "ईमान लाने के लिये" आंहज़रत सल्ल0 बेसाख़्ता

अल्लाहु अक्बर! पुकार उठे और साथ ही तमाम सहाबा रज़ि० ने मिल कर इस ज़ोर से अल्लाहु अक्बर का नअ़रा मारा कि मक्का की तमाम पहाड़ियां गूंज उठीं।[1]

हज़रत उमर रज़ि० के ईमान लाने से इस्लाम की तारीख़ में नया दौर पैदा हो गया, उस वक़्त तक अगर्चे चालीस पचास आदमी इस्लाम ला चुके थे, अरब के मशहूर बहादुर हज़रत हम्ज़ा सय्यदुश शोहदा रज़ि० ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया था, ताहम मुसलमान अपने फ़राइज़े मज़हबी एलानिया नहीं अदा कर सकते थे और कअ़बा में नमाज़ पढ़ना तो बिल्कुल नामुम्किन था, हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम के साथ दफ़अ़तन यह हालत बदल गई, उन्होंने एलानिया इस्लाम ज़ाहिर किया, काफ़िरों ने अव्वल अव्वल बड़ी शिद्दत की, लेकिन वह साबित क़दमी से मुक़ाबला करते रहे, यहां तक कि मुसलमानों की जमाअत के साथ कअ़बा में जाकर नमाज़ अदा की।[2]

हबश में कम व बेश 83/ मुसलमान हिज्रत करके गए थे, चंद रोज़ आराम से गुज़रने पाए थे कि यह ख़बर मशहूर हुई कि कुफ़्फ़ार ने इस्लाम क़बूल कर लिया है, यह सुनकर अक्सर सहाबा रज़ि० ने मक्का मुअ़ज़्ज़मा का रुख़ किया लेकिन शहर के क़रीब पहुंचे तो मअ़लूम हुआ कि ग़लत ख़बर है, इसलिये बअ़ज़ लोग वापस चले गए और अक्सर

(1) अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स० 102-103, सहीहुल बुख़ारी किताब बुनयानुल कअ़बा बाब इस्लामु उमर

(2) तबक़ाते इब्ने सअ़द 3-370

छिप छिप कर मक्का में आ गए।[1]

हज़रत उस्मान रज़ि0 बिन मज़ऊन की हब्शा से वापसी और मुश्रिकीने मक्का की ईज़ा रसानी

इस ग़लत इत्तिलाअ़ पर आने वालों में हज़रत उस्मान रज़ि0 बिन मज़ऊन भी थे, वह अरब के क़ाएदे के मुताबिक़ वलीद बिन मुग़ीरा के ज्वार और पनाह में दाख़िल हुए, उन्होंने जब देखा कि दूसरे मुसलमान जिनको किसी क़ुरैशी सरदार की पनाह हासिल नहीं थी, क़ुरैश की ज़्यादतियों का निशाना बने हुए थे और वह वलीद की पनाह की वजह से आज़ादी और अम्न व अमान के साथ चलते फिरते थे, तो उनकी ग़ैरत ने यह गवारा नहीं किया, उन्होंने कहा कि मेरे साथी क़ुरैश की हर तरह की ज़्यादतियों का हदफ़ बने हुए हैं और मैं एक मुश्रिक की पनाह की वजह से आज़ाद फिर रहा हूं और अपने साथियों का उनकी मुसीबत में शरीक नहीं हूं, यह मेरी एक बड़ी दीनी कमज़ोरी और बेग़ैरती है, वह वलीद के पास गए और कहा कि आपने अपनी ज़िम्मादारी पूरी कर दी, मैं आपका ज्वार आपको वापस करता हूं, अब आप पर मेरी कोई ज़िम्मादारी नहीं है, वलीद ने कहा कि मेरे अज़ीज़! क्या मेरी क़ौम में से किसी ने तुमको कुछ तकलीफ़ पहुंचाई? हज़रत उस्मान ने कहा कि नहीं, लेकिन अब मुझे अल्लाह के ज्वार के सिवा किसी का ज्वार गवारा नहीं, वलीद ने कहा कि अच्छा बैतुल्लाह के

(1) अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स0 113

पास जाकर एलान कर दो कि तुम अब मेरे ज्वार में नहीं हो, और अब मैं बरियुज़्ज़िम्मा हूं, ताकि मुझ पर तुम्हारी हिफ़ाज़त की कोई ज़िम्मादारी बाक़ी न रहे, चुनांचे दोनों बैतुल्लाह की तरफ़ गए, वलीद ने कहा कि साहिबो! उस्मान मेरा ज्वार मुझे वापस करते हैं, हज़रत उस्मान ने कहा कि यह सही है, मैंने वलीद को पूरा वफ़ादार और शरीफ़ पाया और मुझे उनके ज्वार की कोई शिकायत नहीं, लेकिन मेरा जी चाहता है कि मैं अल्लाह के सिवा और किसी की हिमायत में न रहूं, हज़रत उस्मान रज़ि० बिन मज़ऊन वहां से चले तो कुरैश की एक मजलिस गर्म थी, अरब का एक मशहूर शाइर लबीद अपना एक क़सीदा सुना रहा था, उसके एक शेअ़र का पहला मिस्रअ़ था أَلَا كُلُّ شَيْءٍ مَا خَلَا اللهَ بَاطِلُ यअ़नी "अल्लाह के सिवा हर चीज़ बे हक़ीक़त है" हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा सच है, लबीद ने दूसरा मिस्रअ़ पढ़ा: "وَكُلُّ نَعِيمٍ لَا مُحَالَةَ زَائِلُ" "और हर ऐश एक न एक दिन फ़ना हाने वाला है।" हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा कि यह ग़लत है, जन्नत का ऐश फ़ना होने वाला नहीं, अरब के सिवा और मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमान उसकी तर्दीद के आदी न थे, लबीद ने कहा कि ऐ सरदाराने कुरैश! इससे पहले तो हमारी मज्लिस में ऐसी बातें नहीं होती थीं, इस तरह के लोग कब से पैदा हो गए हैं, (जो बर्मला तर्दीद करते हैं) एक शख़्स ने कहा कि कुछ दिनों से हमारे यहां कम समझ लोगों की एक जमाअत पैदा हो गई है, जिन्होंने

हमारे दीन को तर्क कर दिया है, आप कुछ ख़्याल न कीजिये, हज़रत उस्मान रज़ि० ने इस पर कुछ कहा और बात बढ़ी, एक शख़्स ने उनके मुंह पर एक तमांचा मारा जिससे उनकी एक आंख जाती रही, वलीद यह सब बैठा देख रहा था, उसने कहा मेरे अज़ीज़! तुमने ख़्वाहमख़्वाह अपनी आंख खोई, अगर तुम मेरी हिमायत में रहते तो क्यों इसकी नौबत आती, हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा कि मेरी दूसरी आंख को भी इस आंख पर रश्क आ रहा है और इसको भी इसकी तमन्ना है, वलीद ने कहा कि अब भी मौका है अगर चाहो तो मेरे ज्वार में आ जाओ, हज़रत उस्मान ने साफ़ इंकार कर दिया।[1]

कुरैश की जानिब से बनी हाशिम का मुहासरा व मुकातआ

कुरैश देखते थे कि इस रोक टोक पर भी इस्लाम का दाइरा फैलता जाता है, उमर रज़ि० और हम्ज़ा रज़ि० जैसे लोग ईमान ला चुके हैं, नजाशी ने मुसलमानों को पनाह दी, सुफरा बे नैले व मराम वापस आए, मुसलमानों की तअ़दाद में इज़ाफ़ा होता जाता है, इसलिये अब यह तदबीर सोची कि आंहज़रत सल्ल० और आपके ख़ानदान को महसूर करके तबाह कर दिया जाए, चुनांचे तमाम क़बाइल ने एक मुआहदा मुरत्तब किया कि कोई शख़्स ख़ानदाने बनी हाशिम से न क़राबत करेगा, न उनके हाथ ख़रीद व फ़रोख़्त करेगा, न उनसे मिलेगा, न उनके पास खाने पीने का सामान जाने

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-370

देगा, जब तक कि वह आंहज़रत सल्ल0 को कत्ल के लिये हवाला न कर दें, यह मुआहदा दरे कअ़बा पर आवेज़ां किया गया।[1]

अबू तालिब मजबूर होकर तमाम ख़ानदाने बनी हाशिम के साथ शिअ़बे अबी तालिब में पनाह गुज़ीं हुए, तीन साल तक बनू हाशिम ने इस हिसार में ज़िंदगी बसर की, यह ज़माना ऐसा सख़्त गुज़रा कि तलह के पत्ते खा खाकर रहते थे, हदीसों में जो सहाबए किराम रज़ि0 की ज़बान से मज़कूर है कि हम तलह की पत्तियां खा खाकर बसर करते थे, यह उसी ज़माना का वाक़िआ है, हज़रत सअ़द बिन अबी वक्क़ास रज़ि0 का बयान है कि एक रात को सूखा हुआ चमड़ा हाथ आ गया, मैंने उसको पानी से धोया फिर आग पर भूना और पानी मिलाकर खाया, इब्ने सअ़द ने रिवायत की है कि बच्चे जब भूक से रोते थे तो बाहर आवाज़ आती थी, कुरैश सुन सुनकर ख़ुश होते थे, लेकिन बअ़ज़ रहम दिलों को तरस भी आता था।[2] एक दिन हकीम बिन हिज़ाम ने जो हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के भतीजे थे, थोड़े से गेहूं अपने गुलाम के हाथ हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के पास भेजे, राह में अबू जहल ने देख लिया और छीन लेना चाहा, इत्तिफ़ाक़ से अबुल बोह्तरी कहीं से आ गया, वह अगर्चे काफ़िर था, उसको रहम आया और कहा कि एक शख़्स अपनी फूफी को कुछ खाने के लिये भेजता है, तू क्यों रोकता है।[3]

(1) ज़ादुल मआद 3-29 (2) अर्रौज़ुल अन्फ़ 1-220 (3) सीरत इब्ने हिशाम 1-354, सीरत ज़हबी, स0-142

अहद नामा की तन्सीख़ और मुक़ातआ का ख़ातमा

मुत्तसिल तीन बरस तक आंहज़रत सल्ल० और तमाम आले हाशिम ने यह मुसीबतें झेलीं, बिल आख़िर दुशमनों को ही रहम आया और ख़ुद उन्हीं की तरफ़ से इस मुआहदा के तोड़ने की तहरीक नश्च हुई, हिशाम मख़्ज़ूमी ख़ानदाने बनी हाशिम का क़रीबी रिश्तादार और अपने क़बीले में मुम्ताज़ था, वह चोरी छिपे बनू हाशिम को ग़ल्ला वग़ैरा भेजता रहता था, एक दिन वह ज़ुबैर के पास जो अब्दुल मुत्तलिब के नवासे थे गया और कहा, क्यों ज़ुबैर तुमको यह पसंद है कि तुम खाओ पियो, हर क़िस्म का लुत्फ़ उठाओ और तुम्हारे नानिहाल वालों को एक दाना तक नसीब न हो, ज़ुबैर ने कहा क्या करूं तन्हा हूं, एक शख़्स भी मेरा साथ दे तो मैं ज़ालिमाना मुआहदा को फाड़ कर फेंक दूं, हिशाम ने कहा मैं मौजूद हूं, दोनों मिलकर मुत्इम बिन अदी के पास गए, बोहतरी इब्ने हिशाम, ज़म्आ बिन अल अस्वद ने भी साथ दिया, दूसरे दिन सब मिलकर हरम गए, ज़ुबैर ने सब लोगों को मुख़ातब करके कहाः ऐ अह्ले मक्का यह क्या इंसाफ़ है, हम लोग आराम से बसर करें और बनू हाशिम को आब व दाना नसीब न हो, ख़ुदा की क़सम जब तक यह ज़ालिमाना मुआहदा चाक न कर दिया जाएगा मैं बाज़ न आऊंगा, अबू जह्ल बराबर से बोला, हरगिज़ मुआहदा को कोई हाथ नहीं लगा सकता, ज़म्आ ने कहा तू झूट कहता है जब यह लिखा गया था उस वक़्त भी हम राज़ी न थे।[1]

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-374, 375, 376

उधर आंहज़रत सल्ल० ने अबू तालिब को इत्तिला दी थी कि मुआहदा को दीमक खा गई है, जब लोगों ने उसको देखा तो ऐसा ही था, सिर्फ "بِاسْمِكَ اللّٰهُمَّ" बाक़ी रह गया था।[1]

हज़रत अबू बक्र रज़ि० के साथ कुफ़्फ़ारे कुरैश का मुआमला

कुफ़्फ़ार की ईज़ा रसानी अब कमज़ोरों और बेकसों पर ही महदूद न थी, हज़रत अबू बक्र रज़ि० का क़बीला मुअ़ज़्ज़ज़ और ताक़तवर कबीला था, उनके यार और अंसार भी कम थे, ताहम वह कुफ़्फ़ार के ज़ुल्म से तंग आ गए और बिलआख़िर हबश की तरफ़ हिज्रत का इरादा किया, बरकुल ग़िमाद जो मक्का मुअ़ज़्ज़मा से यमन की सिम्त पांच दिन की राह पर है, वहां तक पहुंचे थे कि इब्नुद्दुग़ुन्ना से मुलाक़ात हो गई जो कबीला क़ारा का रईस था, उसने पूछा कहां? हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा "मेरी क़ौम मुझको रहने नहीं देती, चाहता हूं कि कहीं अलग जाकर ख़ुदा की इबादत करूंगा।" इब्नुद्दुग़ुन्ना ने कहा "यह नहीं हो सकता कि तुम जैसा शख़्स मक्का से निकल जाए, मैं तुम को अपनी पनाह में लेता हूं।" तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० उसके साथ वापस आए, इब्नुद्दुग़ुन्ना मक्का पहुंच कर तमाम सरदाराने क़ुरैश से मिला और कहा: ऐसे शख़्स को निकालते हो जो मेहमान नवाज़ है, मुफ़्लिसों का मददगार है, रिशता-

(1) ज़ादुल मआद 8-30, सहीह बुख़ारी में इस मुहासरा का ज़िक मौजूद है, मुलाहज़ा हो कितावुल मनासिक बाब नुज़ूलुन्नबी सल्ल० मक्का, व बाब बुन्यानुल कअ़्बा, बाब तक़ासुमुल मुश्रिकीन अलन्नबी सल्ल०

-दारों को पालता है, मुसीबतों में काम आता है, कुरैश ने कहा लेकिन शर्त यह है कि अबू बक्र (रज़ि०) नमाज़ों में चुपके जो चाहें पढ़ें, आवाज़ से कुर्आन पढ़ते हैं तो हमारी औरतों और बच्चों पर असर पड़ता है, हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने चंद रोज़ यह पाबंदी इख़्तियार की, लेकिन आख़िर उन्होंने घर के पास एक मस्जिद बना ली और उसमें ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ बआवाज़ कुर्आन पढ़ते थे, वह निहायत रक़ीकुल क़ल्ब थे, कुर्आन पढ़ते तो बेइख़्तियार रोते, औरतें और बच्चे उनको देखते और मुतअस्सिर होते, कुरैश ने इब्नुद्दुगुन्ना से शिकायत की, उसने हज़रत अबू बक्र रज़ि० से कहा कि अब मैं तुम्हारी हिफ़ाज़त का ज़िम्मादार नहीं हो सकता, हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा "मुझको ख़ुदा की हिफ़ाज़त बस है, मैं तुम्हारे ज्वार से इस्तीअ़फ़ा देता हूं।[1]

एक रोज़ नबी सल्ल० मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए, वहां मुश्रिक सरदार बैठे हुए थे, अबू जह्ल ने नबी सल्ल० को देखा और तमस्ख़ुर से कहा "अब्दे मनाफ़ वालो! देखो तुम्हारा नबी आ गया।"

उत्बा बिन रबीआ बोलाः हमें क्या इंकार है, हम में से कोई नबी बन बैठे, कोई फ़रिशता कहलाए, नबी सल्ल० यह बातें सुन कर लौटे और उनके पास आए।

पहले उत्बा से फ़रमाया "उत्बा तूने ख़ुदा और रसूल (सल्ल०) की हिमायत कभी न की, तू अपनी ही बात की पिच पर अड़ा रहा।"

(1) सहीह बुख़ारी किताबुल फ़ज़ाइल बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल० व अस्हाबुहू इलल मदीना 1-552

फिर कुरैश से फ़रमायाः "तुम्हारे लिये वह साअ़त नज़दीक आ रही है कि जिस दीन का तुम इंकार करते हो, आख़िरश उसी में दाख़िल हो जाओगे।"

नाज़िरीन इसी किताब में देखेंगे कि यह पेशगोई क्योंकर पूरी हुई।[1]

अबू तालिब और हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात

10 हि० नुबूव्वत में नबी सल्ल० के चचा अबू तालिब का जो हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० के वालिद थे, इंतिक़ाल हो गया।[2]

अबू तालिब ने लड़कपन से नबी सल्ल० की तरबियत की थी और जब से आंहज़रत सल्ल० ने नुबूव्वत की दावत और मुनादी शुरू कर दी थी वह बराबर मददगार रहे थे, इसलिये नबी सल्ल० को उनके मरने का सदमा हुआ।[3]

इनसे तीन दिन पीछे नबी सल्ल० की प्यारी बीवी हज़रत ताहिरा ख़दीजतुल कुब्रा रज़ि० ने इंतिक़ाल फ़रमाया।[4] इस बीवी ने अपना सारा माल व ज़र नबी सल्ल० की ख़ुशी पर क़ुर्बान और राहे ख़ुदा में सर्फ़ कर दिया था, यह सबसे पहले इस्लाम लाई थीं, जिब्रईल अलै० ने इन बीवी को ख़ुदा का सलाम पहुंचाया था, इनकी बीवी के गुज़र जाने का रंज नबी सल्ल० को बहुत हुआ।[5]

(1) रहमतुल लिल आलमीन 1-65 बहवाला तारीख़े तबरी (2) फ़ुत्हुल बारी 7-194 (3) सहीहैन में अबू तालिब की नुस्रत व इआनत का ज़िक्र मौजूद है। (4) फ़ुत्हुल बारी 7-224 (5) सहीहुल बुख़ारी किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब तज़ीवुजुन्नबी सल्ल० ख़दीजा व फ़ज़्लुहा, मुस्नद अहमद 6-118

अब कुरैश ने नबी सल्ल० को ज़्यादातर सताना शुरू कर दिया, एक दफ़ा एक शरीर ने नबी सल्ल० के सर पर कीचड़ फेंक दिया, आंहज़रत सल्ल० उसी तरह घर में दाख़िल हुए, नबी सल्ल० की बेटी उठीं, वह सर धुलाती जाती थीं और रोती जाती थीं, नबी सल्ल० ने फ़रमाया "प्यारी बेटी तुम क्यों रोती हो, तुम्हारे बाप की हिफ़ाज़त खुदा खुद फ़रमाएगा।[1]

अगर्चे अबू तालिब का सहारा जाता रहा, अगर्चे ख़दीजा जैसी बीवी जो मुसीबतों में और तकलीफ़ों में निहायत ग़मगुसार थीं जुदा हो गईं, नबी सल्ल० ने अब ज़्यादा जोश से वअ़ज़ का काम शुरू किया।

ताइफ़ का सफ़र और सख़्त अज़ीयतों का सामना

चुनांचे थोड़े ही दिनों बाद नबी सल्ल० मक्का से निकले और वअ़ज़ के लिये ताइफ़ तशरीफ़ ले गए, नबी सल्ल० के साथ इस सफ़र में ज़ैद बिन हारसा रज़ि० थे, मक्का और ताइफ़ के दर्मियान जितने क़बीले थे सबको वअ़ज़ सुनाते, तौहीद की मुनादी करते हुए नबी सल्ल० प्यादा पा ताइफ़ पहुंचे, ताइफ़ में बनू सक़ीफ़ आबाद थे, सर सब्ज़ मुल्क और सर्द पहाड़ पर रहने की वजह से उनके गुरूर की कोई हद न थी, अब्द या लैल, मसऊद, हबीब, तीनों भाई वहां के सरदार थे, नबी सल्ल० पहले उन्हीं से मिले और उन्हें इस्लाम की दावत फ़रमाई, उनमें से एक बोलाः "मैं कअ़बा के सामने दाढ़ी मुंडवा दूंगा अगर तुझे अल्लाह ने रसूल बनाया हो।"

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-416

दूसरा बोला: "क्या ख़ुदा को तेरे सिवा और कोई भी रसूल बनाने को न मिला, जिसे चढ़ने की सवारी भी मुयस्सर नहीं......उसे रसूल बनाना था तो किसी हाकिम या सरदार को बनाया होता।" तीसरा बोला: "मैं तुझसे बात ही नहीं करने का, क्योंकि अगर तू खुदा का रसूल है जैसा कि तू कहता है, तब तो यह बहुत ख़तरनाक बात है कि मैं तेरे कलाम को रद्द करूं और अगर तू ख़ुदा पर झूट बोलता है तो मुझे शायां नहीं कि तुझसे बात करूं।"

नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: "अब मैं तुम से सिर्फ़ यह चाहता हूं कि अपने ख़्यालात अपने ही पास रखो, ऐसा न हो कि यह ख़्यालात दूसरे लोगों के ठोकर खाने का सबब बन जाएं।"

नबी सल्ल0 ने वअ़ज़ कहना शुरू फ़रमाया, उन सरदारों ने अपने गुलामों और शहर के लड़कों को सिखा दिया, वह वअ़ज़ के वक़्त नबी सल्ल0 पर इतने पत्थर फेंकते कि हुज़ूर सल्ल0 लहू में तर बतर हो जाते, ख़ून बह बह कर जूतों में जम जाता और वुज़ू के लिये पांव से जूता निकालना मुश्किल हो जाता।

एक दफ़ा बदमआशों और औबाशों ने नबी सल्ल0 को इस क़दर गालियां दीं, तालियां बजाईं, चीख़ें लगाईं कि ख़ुदा के नबी सल्ल0 एक मकान के इहाते में जाने पर मजबूर हो गये, यह जगह उत्बा व शैबा फ़रज़ंदाने रबीआ़ की थी, उन्होंने दूर से इस हालत को देखा और नबी सल्ल0 पर

तरस खाकर अपने गुलाम अ़द्दास को कहा कि एक प्लेट में अंगूर रखकर उस शख़्स को दे आओ, गुलाम ने अंगूर नबी सल्ल0 के सामने लाकर रख दिये, नबी सल्ल0 ने अंगूरों की तरफ़ हाथ बढ़ाया और ज़बान से फ़रमाया "بسم الله" और फिर अंगूर खाने शुरू किये।

अ़द्दास ने हैरत से नबी सल्ल0 की तरफ़ देखा और फिर कहा "यह ऐसा कलाम है कि यहां के बाशिंदे नहीं बोला करते।"

नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "तुम कहां के हो और तुम्हारा मज़हब क्या है?" अ़द्दास ने जवाब दिया "मैं ईसाई हूं और नैनवा का बाशिंदा हूं।"

नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "क्या मर्दे सालेह यूनुस अलै0 बिन मत्ता के शहर के बाशिंदे हो? अ़द्दास ने कहाः "आपको क्या ख़बर है कि यूनुस बिन मत्ता कौन था और कैसा था? नबी सल्ल0 ने फ़रमाया "वह मेरा भाई है वह भी नबी था और मैं भी नबी हूं, अ़द्दास यह सुनते ही झुक पड़ा और उसने नबी सल्ल0 का सर, हाथ, क़दम चूम लिये। उत्बा और शैबा ने दूर से गुलाम को ऐसा करते देखा और आपस में कहने लगे, लो गुलाम तो हाथ से गया, जब अ़द्दास अपने आक़ा के पास लौट कर गया तो उन्होंने कहा "कम्बख़्त तुझे क्या हो गया था कि उस शख़्स के हाथ, पांव, सर चूमने लग गया था।"

अ़द्दास ने कहा "हुजूरे आली! आज उस शख़्स से

बेहतर रूए ज़मीन पर कोई नहीं, उन्होंने मुझे ऐसी बात बताई जो सिर्फ़ नबी ही बता सकता है।" उन्होंने अद्दास को डांट दिया कि ख़बरदार! कहीं अपना दीन न छोड़ बैठना तेरा दीन तो उसके दीन से बेहतर है।

उसी मक़ाम पर एक दफ़ा वअ़ज़ करते हुए ख़ुदा के रसूल सल्ल0 के इतनी चोटें लगीं कि हुज़ूर सल्ल0 बेहोश होकर गिर पड़े, ज़ैद ने आप सल्ल0 को अपनी पीठ पर उठाया, आबादी से बाहर ले गए, पानी के छींटे देने से होश आया।

इस सफ़र में इतनी तकलीफ़ों और ईज़ाओं के बाद और एक शख़्स तक के मुसलमान न होने के रंज और सदमा के वक़्त भी नबी सल्ल0 का दिल ख़ुदा की अज़मत और मुहब्बत से भरपूर था और उस वक़्त जो दुआ हुज़ूर सल्ल0 ने मांगी उसके अलफ़ाज़ यह हैं:

"اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَشْكُوْ ضَعْفَ قُوَّتِىْ، وَقِلَّةَ حِيْلَتِىْ، وَهَوَانِىْ عَلَى النَّاسِ، يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ، اَنْتَ رَبُّ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ، وَاَنْتَ رَبِّىْ، اِلٰى مَنْ تَكِلُنِىْ، اِلٰى بَعِيْدٍ يَتَجَهَّمُنِىْ، اَوْ اِلٰى عَدُوٍّ مَلَّكْتَهٗ اَمْرِىْ، اِنْ لَّمْ يَكُنْ عَلَىَّ غَضَبٌ فَلَا اُبَالِىْ، وَلٰكِنْ عَافِيَتُكَ هِىَ اَوْسَعُ لِىْ، اَعُوْذُ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِىْ اَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ، وَصَلُحَ عَلَيْهِ اَمْرُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، مِنْ اَنْ يُّنْزِلَ بِىْ غَضَبُكَ اَوْ يَحِلَّ عَلَىَّ سَخَطُكَ، لَكَ الْعُتْبٰى حَتّٰى تَرْضٰى، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ."

"इलाही अपनी कमज़ोरी, बे सर व सामानी और लोगों की तहक़ीर की बाबत तेरे सामने फ़रयाद करता हूं, तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है, दरमांदा आजिज़ों का मालिक तू ही है और मेरा मालिक भी तू ही है, मुझे किस के सिपुर्द किया जाता है, क्या बेगाना, तुर्शरू के या उस दुश्मन के जो काम पर क़ाबू रखा है, लेकिन जब मुझ पर तेरा ग़ज़ब नहीं तो मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं, क्योंकि तेरी आफ़ियत मेरे लिये ज़्यादा वसीअ़ है, मैं तेरी ज़ात के नूर से पनाह चाहता हूं, जिससे सब तारीकियां रौशन हो जाती हैं और दीन व दुन्या के काम उससे ठीक हो जाते हैं, कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर उतरे या तेरी नाराज़गी वारिद हो, मुझे तेरी रज़ामंदी और ख़ुशनूदी दरकार है और नेकी करने और बदी से बचने की ताक़त मुझे तेरी ही तरफ़ से मिलती है।"

नबी सल्ल0 ने ताइफ़ से वापस होते हुए यह भी फ़रमाया मैं इन लोगों की तबाही के लिये क्यों दुआ करूं अगर यह लोग ख़ुदा पर ईमान नहीं लाए तो क्या हुआ? उम्मीद है कि आइंदा नस्लें ज़रूर एक ख़ुदा पर ईमान लाने वाली होंगी।[1]

(1) इस वाक़िआ को इमाम बुख़ारी रह0 ने अपनी सहीह में इख़्तिसार के साथ ज़िक्र फ़रमाया है। इमाम ज़हबी रह0 ने अस्सीरतुन्नबवीया 185 ता 188 में, और इब्ने हिशाम ने अस्सीरतुन्नबवीया 1-419 ता 421 में तफ़सील से इसको बयान किया है, इमाम हैसमी ने भी मज्मउज़्ज़वाइद 6-35 में इसका तज़किरा किया है, इमाम तबरानी ने भी सहीह सनद के साथ इसको बयान फ़रमाया है।

क़बाइले अरब को दावते इस्लाम

मक्का में वापस आकर नबी सल्ल0 ने अब ऐसा करना शुरू किया कि मुख़्तलिफ़ क़बीलों की सुकूनत गाहों में तशरीफ़ ले जाते या मक्का से बाहर चले जाते और जो कोई मुसाफ़िर आता या मिल जाता उसे ईमान और ख़ुदा तर्सी का वअ़ज़ फ़रमाते।[1]

उन्ही अय्याम में क़बीलए बनू किंदा में तशरीफ़ ले गए सरदारे क़बीला मुलीह था और क़बीला बनू अब्दुल्लाह के यहां भी पहुंचे उनसे फ़रमाया कि तुम्हारे बाप का नाम अब्दुल्लाह था तुम भी इस्म बा मुसम्मा हो जाओ, क़बीला बनू हनीफ़ा के घरों में तशरीफ़ ले गए उन्होंने सारे अरब में सबसे बदतर तरीक़ पर नबी सल्ल0 का इंकार किया, क़बीला बनू आमिर बिन सअ़सआ़ के पास गए, सरदारे क़बीला का नाम बुहैरा बिन फ़िरास था और उसने दावते इस्लाम सुन कर नबी सल्ल0 से पूछा भला अगर हम तेरी बात मान लें और तू मुख़ालिफ़ीन पर ग़ालिब आ जाए तो क्या वादा करता है कि तेरे बाद यह अम्र मुझसे मुतअ़ल्लिक़ होगा? नबी सल्ल0 ने फ़रमाया "यह तो ख़ुदा के इख़्तियार में है, वह जिसे चाहेगा मेरे बाद उसे मुक़र्रर करेगा" बुहैरा बोलाः ख़ूब इस वक़्त तो अरब के सामने सीना सिपर हम बनें और जब तेरा काम बन जाए तो मज़े कोई और उड़ाए, जा! हमको तेरे साथ कोई सरोकार नहीं, क़बाइल के सफ़र

(1) अम्ताउल अस्माअ लिल मक़रीज़ी 1-30

में हुजूर सल्ल0 के रफ़ीके तरीक़ अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 थे।[1]

उन्हीं अय्याम में नबी सल्ल0 को सुवैद बिन सामित मिला, उसका लक़ब अपनी क़ौम में कामिल था, नबी सल्ल0 ने उसे दावते इस्लाम फ़रमाई, वह बोला शायद आपके पास वही कुछ है जो मेरे पास है, नबी सल्ल0 ने पूछा, तुम्हारे पास क्या है? वह बोलाः "हिक्मते लुक़्मान" नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः बयान करो, उसने कुछ उम्दा अशआर सुनाए, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः यह अच्छा कलाम है, लेकिन मेरे पास क़ुर्आन है जो इससे अफ़ज़ल तर है और हिदायत व नूर है" इसके बाद नबी सल्ल0 ने उसे क़ुर्आन सुनाया और वह बे तअम्मुल इस्लाम ले आया, जब यसरिब लौट कर गया तो क़ौमे ख़ज़रज ने उसे क़त्ल कर डाला।[2]

उन्ही अय्याम में अबुल हैसर अनस बिन राफ़ेअ़ मक्का आया और उसके साथ बनी अब्दुल अश्हल के भी चंद नौजवान थे जिनमें अयास बिन मुआज़ भी था, यह लोग क़ुरैश के साथ अपनी क़ौम ख़ज़रज की तरफ़ से मुआहदा करने आए थे, नबी सल्ल0 उनके पास गए और जाकर फ़रमायाः

"मेरे पास ऐसी चीज़ है जिसमें तुम सबकी बहबूद है क्या तुम्हें कुछ रग़बत है" वह बोले ऐसी क्या चीज़ है? आपने फ़रमाया "अल्लाह का रसूल हूं, मख़्लूक़ की तरफ़

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-424, 425

(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-426, 427

मबऊस हूं, बंदगाने खुदा को दावत देता हूं कि वह खुदा ही की इबादत करें और शिर्क न करें, मुझ पर खुदा ने किताब नाज़िल की है" फिर उनके सामने इस्लाम के उसूल बयान फ़रमाए और कुर्आन भी पढ़ कर सुनाया, अयास बिन मुआज़ अभी जवान था सुनते ही बोलाः "ऐ मेरी क़ौम! बख़ुदा यह तुम्हारे लिये इस मक़सद से बेहतर है जिसके लिये तुम यहां आए हो।"

अनस बिन राफ़ेअ़ ने कंकरियों की मुट्ठी भर कर उठाई और अयास के मुंह पर फेंक मारी और कहा बस चुप रह, हम इस काम के लिये तो नहीं आए, रसूलुल्लाह सल्ल0 उठकर चले गए, यह वाक़िआ जंगे बुआस से जो औस व ख़ज़रज में हुई, पहले का है, अयास वापस जाकर चंद रोज़ के बाद मर गया, मरते वक़्त उसकी ज़बान पर तस्बीह व तह्मीद व तह्लील व तक्बीर जारी थे, मरहूम के दिल में नबी सल्ल0 के इसी वअ़ज़ से इस्लाम का बीज बो गया था जो मर्गे वक़्त फल फूल ले आया था।[1]

उन्ही अय्याम में ज़िमाद अज़्दी मक्का में आया यह यमन का बाशिंदा था और अरब का मशहूर जादूगर था, जब उसने सुना कि मुहम्मद (सल्ल0) पर जिन्नात का असर है तो उसने कुरैश से कहा कि मैं मुहम्मद (सल्ल0) का इलाज अपने मंतर से कर सकता हूं, यह नबी सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा "मुहम्मद (सल्ल0) आओ

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-427, 428, मुस्नद अहमद 5-427, इब्ने हजर ने इसकी सनद की तौसीक़ फ़रमाई है, अल इसाबा 1-146

तुम्हें मंतर सुनाऊं, नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि पहले मुझसे सुन लौं, फिर आंहज़रत सल्ल० ने उसे सुनायाः

”اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِیْنُهٗ مَنْ یَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ، وَمَنْ یُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ، وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْکَ لَهٗ، وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَمَّا بَعْدُ:“

“सब तअ़रीफ़ अल्लाह के वास्ते है, हम उसकी नेअ़मतों का शुक्र करते हैं, और हर काम में उसकी इआनत चाहते हैं, जिसे खुदा राह दिखाता है उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे खुदा ही रास्ता न दिखाए उसकी कोई रहबरी नहीं कर सकता, मेरी शहादत यह है कि खुदा के सिवा इबादत के लाइक़ कोई भी नहीं, वह यक्ता है, उसका कोई शरीक नहीं, मैं यह भी ज़ाहिर करता हूं कि मुहम्मद (सल्ल०) खुदा का बंदा और रसूल है, उसके बाद मुद्दआ यह है।”

ज़िमाद ने इस क़दर सुना था कि बोल उठा कि इन्हीं कलिमात को फिर सुना दीजिये, वही तीन दफ़ा उसने इन्ही कलिमात को सुना फिर बेइख़्तियार बोल उठा, मैंने बहुतेरे काहिन देखे और साहिर देखे, शाइर सुने, लेकिन ऐसा कलाम तो मैंने किसी से भी न सुना, यह कलिमात तो एक अत्थाह समंदर जैसे हैं, मुहम्मद (सल्ल०)! खुदारा हाथ बढ़ाइये कि मैं इस्लाम की बैअ़त कर लूं।[1]

उन्ही दिनों तुफ़ैल बिन अम्र मक्का में आया यह

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुआ, बाब तख़फ़ीफ़ुस्सलात वलख़ुत्बा

कबीलए दौस का सरदार था और नवाहिये यमन में उनके ख़ानदान में रईसाना हुकूमत थी, तुफ़ैल बज़ाते ख़ुद शाइर, दानिशमंद शख़्स था, अह्ले मक्का ने आबादी से बाहर जाकर उसका इस्तिक़बाल किया और अअ़ला पैमाना पर उसकी ख़िदमत और तवाज़ोअ़ की, तुफ़ैल का बयान है:

"मुझे अह्ले मक्का ने यह भी बताया कि यह शख़्स जो हम में से निकला है इससे ज़रा बचना, इसे जादू आता है, जादू से बाप बेटे, ज़न व शौहर, भाई भाई में जुदाई डाल देता है, हमारी जमईयत को परेशान और हमारे काम अबतर कर दिये हैं, हम नहीं चाहते हैं, कि तुम्हारी कौम पर भी ऐसी ही कोई मुसीबत पड़े, इसलिये हमारी ज़ोर से यह नसीहत है कि न उसके पास जाना, न उसकी बात सुनना और न ख़ुद बातचीत करना।"

"यह बातें उन्होंने ऐसी उम्दगी से मेरे ज़ेहन नशीन कर दीं कि जब मैं कअ़बा में जाना चाहता तो कानों को रूई से बंद कर लेता कि मुहम्मद (सल्ल0) की आवाज़ की भनक मेरे कान में न पड़ जाए, एक रोज़ मैं सुब्ह ही ख़ानए कअ़बा में गया, नबी सल्ल0 नमाज़ पढ़ रहे थे, चूंकि ख़ुदा की मशीय्यत यह थी कि उनकी आवाज़ मेरी समाअ़त तक ज़रूर पहुंचे, इसलिये मैंने सुना कि एक अजीब कलाम वह पढ़ रहे हैं उस वक़्त मैं अपने आपको मलामत करने लगा कि मैं ख़ुद शाइर हूं, बा इल्म

हूं, अच्छे बुरे की तमीज़ रखता हूं, फिर क्या वजह है? और कौनसी रोक है कि मैं उनकी बात न सुनूं? अच्छी बात होगी तो मानूंगा, वर्ना नहीं मानूंगा, मैं यह इरादा करके ठहर गया, जब नबी सल्ल0 वापस घर को चले तो मैं भी पीछे पीछे हो लिया और जब मकान पर हाज़िर हुआ तो नबी सल्ल0 को अपना वाक़िआ मक्का में आने, लोगों के बहकाने और कानों में रूई लगाने और आज हुज़ूर सल्ल0 की ज़बान से कुछ सुन पाने का सुनाया और अ़र्ज़ किया कि मुझे अपनी बात सुनाइये, नबी सल्ल0 ने क़ुर्आन पढ़ा, बख़ुदा मैंने ऐसा पाकीज़ा कलाम कभी सुना ही न था जो इस क़दर नेकी और इंसाफ़ की हिदायत करता हो।"

अलग़र्ज़ तुफ़ैल उसी वक़्त मुसलमान हो गए, जिसे क़ुरैश बात बात में मख़्दूम व मुताअ़ कहते थे वह बात की बात में मुहम्मद सल्ल0 का दिल व जान से ख़ादिम और मुतीअ़ बन गया, क़ुरैश को ऐसे शख़्स का मुसलमान होना निहायत ही शाक़ व नागवार गुज़रा।[1]

अबू ज़र रज़ि0 अपने शहर यसरिब ही में थे कि उन्होंने नबी सल्ल0 के मुतअ़ल्लिक़ कुछ उड़ती सी ख़बर सुनी उन्होंने अपने भाई से कहा तुम जाओ मक्का में उस शख़्स से मिल कर आओ।

अनीस बिरादरे अबू ज़र एक मशहूर फ़सीह शाइर,

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़िस्सा दौस वत्तुफ़ैल बिन अम्र में बहुत इख़्तिसार से यह वाक़िआ मरवी है, तफ़सील इब्ने सअ़द 1-353, और शर्हुल मवाहिब 4-37 में मुलाहज़ा हो।

ज़बान आवर था वह मक्का में आया, नबी सल्ल० से मिला, फिर भाई को जा बताया कि मैंने मुहम्मद (सल्ल०) को एक ऐसा शख़्स पाया जो नेकियों के करने का और शर से बचने का हुक्म देता है।

अबू ज़र रज़ि० बोले इतनी सी बात से कुछ तसल्ली नहीं होती, आख़िर ख़ुद पैदल चलकर मक्का पहुंचे, हज़रत अबू ज़र रज़ि० को नबी सल्ल० की शनाख़्त न थी और किसी से दरयाफ़्त करना भी वह पसंद न करते थे, ज़मज़म का पानी पी कर कअ़बा ही में लेट रहे, अली मुर्तज़ा रज़ि० आए, उन्होंने पास खड़े होकर कहा कि यह तो कोई मुसाफ़िर मअ़लूम होता है, बोले हां! अली मुर्तज़ा रज़ि० ने कहा अच्छा मेरे यहां चलो, यह रात वहीं रहे, न अली मुर्तज़ा रज़ि० ने कुछ पूछा, न अबू ज़र रज़ि० ने कुछ कहा, सुब्ह हुई, अबू ज़र रज़ि० फिर कअ़बा में आ गए, दिल में आंहज़रत सल्ल० की तलाश थी, मगर किसी से दरयाफ़्त न करते थे, अली मुर्तज़ा रज़ि० फिर आ पहुंचे उन्होंने फ़रमाया कि शायद तुम्हें अपना ठिकाना न मिला, अबू ज़र रज़ि० बोले हां! अली मुर्तज़ा रज़ि० फिर साथ ले गए, अब उन्होंने पूछा, तुम कौन हो और क्यों यहां आए हो? अबू ज़र रज़ि० ने कहा राज़ रखो तो मैं बता देता हूं, अली रज़ि० ने वादा किया।

अबू ज़र रज़ि० ने कहा मैंने सुना है कि इस शहर में एक शख़्स है जो अपने को नबीयल्लाह बताता है......मैंने

अपने भाई को भेजा था, वह यहां से कुछ तसल्ली बख़्श बात लेकर न गया, इसलिये खुद आया हूं।

अली मुर्तज़ा रज़ि0 ने कहा तुम खूब आए और खूब हुआ कि मुझसे मिले, देखो मैं उन्हीं की ख़िदमत में जा रहा हूं मेरे साथ चलो, मैं अंदर जाकर देख लूंगा, अगर उस वक़्त मिलना मुनासिब न होगा तो मैं दीवार से लग कर खड़ा हो जाऊंगा, गोया जूता दुरुस्त कर रहा हूं।

अलग़र्ज़ अबू ज़र रज़ि0, अली मुर्तज़ा रज़ि0 के साथ ख़िदमते नबवी सल्ल0 में पहुंचे और अर्ज़ किया मुझे बताया जाए कि इस्लाम क्या है?

नबी सल्ल0 ने फ़रमाया "अबू ज़र! तुम अभी इस बात को छिपाए रखो और अपने वतन को चले जाओ, जब तुम्हें हमारे ज़ुहूर की ख़बर मिल जाए तब आ जाना, हज़रत अबू ज़र रज़ि0 बोले बख़ुदा मैं तो इन दुश्मनों में एलान करके जाऊंगा, अब अबू ज़र रज़ि0 कअ्बा की तरफ़ आए, क़ुरैश जमा थे, उन्होंने सबको सुनाकर बआवाज़े बुलंद कलिमए शहादत पढ़ा, क़ुरैश ने कहा इस बेदीन को मारो, लोगों ने मार डालने के लिये मुझे मारना शुरू किया, अब्बास रज़ि0 आ गए, उन्होंने मुझे झुक कर देखा कहा कम्बख़्तो! यह तो कबीलए ग़िफ़ार का आदमी है, जहां तुम तिजारत को जाते और खजूरें लाते हो, लोग हट गए, अगले दिन उन्होंने फिर सबको सुनाकर कलिमा पढ़ा, फिर लोगों ने मारा और अब्बास रज़ि0 ने उनको छुड़ाया और यह अपने वतन को

चले आए।[1]

बैअते उक़्बा और इशाअते इस्लाम

11 हि० नुबूव्वत के मौसमे हज का ज़िक्र है कि नबी सल्ल० ने रात की तारीकी में शहरे मक्का से चंद मील परे मक़ामे उक़्बा पर लोगों को बातें करते सुना, उस आवाज़ पर ख़ुदा का नबी सल्ल० उन लोगों के पास पहुंचा, यह छः आदमी यसरिब से आए थे, उनके सामने नबी सल्ल० ने ख़ुदा की अज़्मत व जलाल का बयान शुरू किया, उनकी मुहब्बत को ख़ुदा के साथ गर्माया, बुतों से उनको नफ़रत दिलाई, नेकी व पाकीज़गी की तअ्लीम देकर गुनाहों और बुराइयों से मना फ़रमाया, क़ुर्आन की तिलावत फ़रमाकर उनके दिलों को रौशन फ़रमाया, यह लोग अगर्चे बुत परस्त थे लेकिन उन्होंने अपने शहर के यहूदियों को बारहा ज़िक्र करते सुना था कि एक नबी अंक़रीब ज़ाहिर होने वाला है......इस तअ्लीम से वह उसी वक़्त ईमान ले आए और जब अपने वतन लौट कर गए तो दीने हक़ के सच्चे दाई बन गए।[2]

वह हर एक को ख़ुशख़बरी सुनाते थे कि वह नबी सल्ल० जिसका तमाम आलम को इंतिज़ार था आ गया......हमारे कानों ने उसका कलाम सुना, हमारी आंखों ने उसका दीदार किया और उसने हमको उस ज़िंदा रहने वाले

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब इस्लाम अबी ज़र रज़ि०, सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइलुस्सहाबा रज़ि०, बाब मिन फ़ज़ाइले अबी ज़र रज़ि०

(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-428, 429

खुदा से मिला दिया है कि दुन्या की ज़िंदगी और मौत उसके सामने हेच है।[1]

उन लोगों के बशारत ले जाने का नतीजा यह हुआ कि यसरिब के घर घर में आंहज़रत सल्ल० का ज़िक्र होने लगा, और अगले साल 12 हि० नुबूव्वत में यसरिब के बाशिंदे मक्का में हाज़िर हुए और नबी सल्ल० के फ़ैज़ान से दौलते ईमान हासिल की।

उन लोगों ने जिन बातों पर नबी सल्ल० से बैअ़त की थी वह यह हैं:

(1) हम खुदाए वाहिद की इबादत किया करेंगे और किसी को उसका शरीक नहीं बनाएंगे।

(2) हम चोरी और ज़िना नहीं करेंगे।

(3) हम अपनी औलाद (लड़कियों) को क़त्ल नहीं करेंगे।

(4) हम किसी पर झूटी तोहमत नहीं लगाएंगे और न किसी की चुग़ली किया करेंगे।

(5) हम नबी सल्ल० की इताअत हर एक अच्छी बात में किया करेंगे।[2]

जब यह लोग वापस जाने लगे तो आंहज़रत सल्ल० ने उनकी तअ़लीम के लिये मुसअ़ब बिन उमैर रज़ि० को साथ कर दिया, मुसअ़ब बिन उमैर रज़ि० अमीर घराने के लाडिले बेटे थे, जब घोड़े पर सवार होकर निकलते थे तो आगे पीछे ग़ुलाम चला करते थे, बदन पर दो सौ रूपये से कम की

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-428, 429

(2) सहीहुल बुख़ारी किताबुल ईमान, बाब हद्दसना अबुल यमान, इब्ने हिशाम ने सीरत में सहीह सनद से पूरा वाक़िआ तफ़सील से बयान किया है। 1-431 ता 434

कभी पोशाक नहीं पहनते थे, मगर जब उनको इस्लाम के तुफैल रूहानी ऐश हासिल हुआ तो इन जिस्मानी आराइशों को उन्होंने बिल्कुल छोड़ दिया था, जिन दिनों यह मदीना में दीन की मुनादी करते और इस्लाम की तबलीग़ किया करते थे उन दिनों उनके कंधे पर सिर्फ़ कम्बल का एक छोटा सा टुक्ड़ा होता था जिसे अगली तरफ़ से कांटों से अटका लिया करते थे।[1]

हज़रत मुसअ़ब रज़ि० मदीना में अस्अद बिन ज़ुरारा के घर जाकर उतरे थे और उनको मदीना वाले अल मुक़्री (पढ़ाने वाला, उस्ताद) कहा करते थे, एक दिन मुसअ़ब रज़ि० व अस्अद रज़ि० और चंद मुसलमान बीरे मर्क़ पर जमा हुए, यह ग़ौर करने के लिये कि बनी अब्दुल अशहल और बनी ज़फ़र में क्योंकर इस्लाम की मुनादी की जाए।

सअ़द बिन मआ़ज़ और उसैद बिन हुज़ैर इन क़बाइल के सरदार थे और अभी मुसलमान न हुए थे, उन्हें भी ख़बर हुई सअ़द बिन मआ़ज़ ने उसैद बिन हुज़ैर से कहाः

तुम किस ग़फ़लत में पड़े हो, देखो! यह दोनों हमारे घरों में आकर हमारे बेवक़ूफ़ों को बहकाने लगे, तुम जाओ उन्हें झिड़क दो और यह कह दो कि हमारे मुहल्लों में फिर कभी न आएं, मैं ख़ुद ऐसा करता, मैं इसलिये ख़ामोश हूं कि अस्अद मेरी ख़ाला का बेटा है।

उसैद बिन हुज़ैर अपना हथियार लेकर रवाना हुआ,

(1) असदुल ग़ाबा 4-406 ज़िक्रे मुसअ़ब बिन उमैर रज़ि०

अस्अद रज़ि० ने मुसअ़ब रज़ि० को कहा देखो यह कबीले का सरदार आ रहा है खुदा करे वह तेरी बात मान जाए, मुसअ़ब रज़ि० ने कहा वह अगर आकर बैठ गया तो मैं उससे ज़रूर कलाम करूंगा, इतने में आ पहुंचा और खड़ा खड़ा गालियां देता रहा और यह भी कहा कि तुम हमारे अहमक़, नादान लोगों को फुस्लाने आए हो।

मुसअ़ब रज़ि० ने कहा काश आप बैठ कर कुछ सुन लें अगर पसंद आए तो कबूल फ़रमाएं, नापसंद हो तो उसे छोड़ जाएं, उसैद ने कहा ख़ैर क्या मुज़ाइक़ा है, मुसअ़ब रज़ि० ने समझाया कि इस्लाम क्या है और फिर उसे कुर्आन मजीद भी पढ़कर सुनाया, उसैद ने सब कुछ चुपचाप सुना बिलआख़िर कहा, हां! यह तो बताओ कि जब कोई तुम्हारे दीन में दाख़िल होना चाहता है तो क्या करते हो?

उन्होंने कहा नहला कर पाक कपड़े पहनाकर कलिमए शहादत पढ़ा देते हैं और दो रकअ़त नफ़्ल पढ़वा देते हैं, उसैद उठा कपड़े धोए, कलिमए शहादत पढ़ा और नफ़्ल अदा की, फिर कहा मेरे पीछे एक और शख़्स है अगर वह तुम्हारा पैरू हो गया तो फिर कोई तुम्हारा मुख़ालिफ़ न रहेगा और मैं अभी जाकर उसे तुम्हारे पास भेजता हूं, उसैद यह कहकर चला गया, उधर सअ़द बिन मआज़ उसके इंतिज़ार में था, दूर से चेहरा देखते ही बोला, देखो उसैद का चेहरा वह नहीं जो जाते वक़्त था, जब उसैद आ बैठा तो सअ़द ने पूछा कि क्या हुआ? उसैद बोला मैंने उन्हें समझा

दिया है और वह कहते हैं कि हम तुम्हारी मंशा के ख़िलाफ़ न करेंगे, मगर वहां तो एक और हादसा पेश आया, बनू हारसा वहां आ गए थे और वह अस्अद बिन ज़ुरारा को इसलिये क़त्ल करने पर आमादा हैं कि वह तेरा भाई है, यह सुनकर सअ़द बिन मआ़ज़ गुस्सा में भर गया और अपना हर्बा संभाल कर खड़ा हो गया, उसे डर था कि बनू हारसा उसके भाई को मार न डालें, उसने चलते वक़्त यह भी कहा कि उसैद! तुम कुछ भी काम न बना कर आए, सअ़द वहां पहुंचा, देखा कि मुसअ़ब रज़ि० व अस्अद रज़ि० दोनों बइत्मीनान बैठे हुए हैं, सअ़द ने समझा कि उसैद ने मुझे उनकी बातें सुनने के लिये भेजा है, यह ख़्याल आते ही उन्हें गालियां देने लगा और अस्अद को यह भी कहा कि अगर मेरे और तुम्हारे दर्मियान क़राबत न होती तो तुम्हारी क्या मजाल थी कि हमारे मुहल्ला में चले आते, अस्अ़द रज़ि० ने मुसअ़ब रज़ि० से कहा देखो यह बड़े सरदार हैं और अगर इनको समझा दो तो फिर कोई दो आदमी भी तुम्हारे मुख़ालिफ़ न रह जाएंगे, मुसअ़ब ने सअ़द से कहा आइये बैठ जाइये कोई बात करें, हमारी बात पसंद आए तो क़बूल फ़रमाइये वर्ना इंकार कर दीजिये, सअ़द हर्बा रखकर बैठ गए, हज़रत मुसअ़ब ने उनके सामने इस्लाम की हक़ीक़त बयान की और क़ुर्आन भी पढ़ कर सुनाया, आख़िर सअ़द ने वही सवाल किया जो उसैद ने किया था, अलग़र्ज़ सअ़द उठे और नहाये, कपड़े धोए, कलिमा पढ़ा, नफ़्ल अदा की और हथियार लेकर अपनी मजलिस में वापस आए, आते ही

अपने कबीले के लोगों को पुकार कर कहा:

ऐ बनी अब्दुल अशहल! तुम लोगों की मेरे बारे में क्या राए है? सबने कहा, तुम हमारे सरदार हो, तुम्हारी राए, तुम्हारी तलाश, बेहतर और अऊला होती है, हज़रत सअद बोले सुनो! ख़्वाह कोई मर्द हो या औरत मैं उससे बात करना हराम समझता हूं जब तक कि वह खुदा और रसूल पर ईमान न लाए।

इस कहने का असर यह हुआ कि बनी अब्दुल अशहल में शाम तक कोई मर्द इस्लाम से ख़ाली न रहा और तमाम क़बीला एक दिन में मुसलमान हो गया।[1]

बैअ़ते अ़क़्बा सानिया

हज़रत मुसअ़ब रज़ि० की तअ़लीम से इस्लाम का चर्चा इसी तरह तमाम अंसार के क़बीलों में फैल गया और इसका नतीजा यह हुआ कि अगले साल 13 हि० नुबूव्वत में 73 मर्द और 2 औरतें यसरिब के क़ाफ़िला में मिलकर मक्का आए, उनको यसरिब के अहूले ईमान ने इसलिये भेजा था कि रसूलुल्लाह सल्ल० को अपने शहर में आने की दावत दें और नबी सल्ल० से मंज़ूरी हासिल करें।

यह रास्त बाज़ों का गिरोह उसी मुतबर्रक मक़ाम पर जहां दो साल से इस शहरे यसरिब के मुशताक़ हाज़िर हुआ करते थे रात की तारीकी में पहुंच गया, और खुदा के बरगुज़ीदा रसूल भी अपने चचा अब्बास को साथ लिये हुए वहां जा पहुंचे।

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-435 ता 437

हज़रत अब्बास ने (जो अभी मुसलमान न हुए थे) उस वक़्त एक काम की बात कही, उन्होंने कहा लोगो! तुम्हें मअलूम है कि कुरैशे मक्का मुहम्मद के जानी दुशमन हैं अगर तुम उनसे कोई अहद व इकरार करने लगो तो पहले समझ लेना कि यह नाजुक और मुशिकल काम है, मुहम्मद से अहद व पैमान करना सुर्ख़ व सियाह लड़ाइयों को दावत देना है, जो कुछ करो सोच समझकर करो, वर्ना बेहतर है कि कुछ भी न करो।

उन रास्तबाज़ों ने अब्बास को कुछ जवाब न दिया, हां रसूलुल्लाह सल्ल0 से अर्ज़ किया कि हुजूर कुछ इर्शाद फ़रमाएं।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने उनको कलामे इलाही पढ़ कर सुनाया जिसके सुनते ही वह ईमान व ईकान के नूर से भरपूर हो गए।

उन सब ने अर्ज़ की कि खुदा के नबी सल्ल0 हमारे शहर चल बसें ताकि हमें पूरा पूरा फ़ैज़ हासिल हो सके।

नबी सल्ल0 ने फ़रमाया:

1- क्या तुम दीने हक़ की इशाअत में मेरी पूरी पूरी मदद करोगे?

2- और जब मैं तुम्हारे शहर में जा बसूं क्या तुम मेरी और मेरे साथियों की हिमायत अपने अह्ल व अयाल के मानिंद करोगे?

ईमान वालों ने पूछा ऐसा करने का हमको मुआवज़ा

क्या मिलेगा?

नबी सल्ल० ने फ़रमाया बहिश्त (जो नजात और खुशनूदी का महल है) ईमान वालों ने अर्ज़ किया ऐ खुदा के रसूल सल्ल० यह तो हमारी तसल्ली फ़रमा दीजिये कि हुजूर सल्ल० हमको कभी न छोड़ेंगे?

नबी सल्ल० ने फ़रमाया नहीं! मेरा जीना, मेरा मरना तुम्हारे साथ होगा, इस आख़िरी फ़िक़रे को सुनना था कि आशिक़ाने सदाक़त अजब सुरूर व नशात के साथ जांनिसारी की बैअ़ते इस्लाम करने लगे, बराअ् बिन मअ़रूर रज़ि० पहले बुजुर्ग हैं जिन्होंने इस शब सबसे पहले बैअ़त की थी।

एक शैतान ने पहाड़ की चोटी से यह नज़ारा देखा और चीख़ कर अह्ले मक्का को पुकार कर कहा लोगो! आओ देखो कि मुहम्मद और उसके फ़िर्क़े के लोग तुमसे लड़ाई के मशवरे कर रहे हैं।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया तुम इस आवाज़ की परवाह न करो, अब्बास बिन उबादा ने कहा अगर हुजूर की इजाज़त हो तो हम कल ही मक्का वालों को अपनी तलवार के जौहर दिखा दें, रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया नहीं! मुझे जंग की इजाज़त नहीं, इसके बाद नबी सल्ल० ने उनमें से बारह शख़्सों का इंतिख़ाब किया और उनका नाम नक़ीब रखा और यह फ़रमाया कि जिस तरह ईसा बिन मरयम अलै० ने अपने लिये बारह शख़्सों को चुन लिया था उसी

तरह मैं तुम्हें इंतिख़ाब करता हूं, ताकि तुम अह्ले यसरिब में जाकर दीन की इशाअ़त करो, मक्का वालों में मैं ख़ुद यह काम करूंगा।

उनके नाम यह हैं:–

क़बीला ख़ज़्रज के 9–अस्अद बिन ज़ुरारा, राफ़ेअ़ बिन मालिक, उबादा बिन सामित (यह तीनों उक़्बा ऊला में भी थे) सअ़द बिन रबीअ़, मुंज़िर बिन अ़म्र, अब्दुल्लाह बिन रवाहा, बराअ् बिन मअ़रूर, अब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन हराम, सअ़द बिन उबादा।

क़बीलए औस के तीन - उसैद बिन हुज़ेर, सअ़द बिन ख़ैसमा, अबुल हैसम बिन तीहान।[1]

कुरैश को दिन निकलने के बाद कुछ भनक सी मअ़लूम हुई, वह अह्ले यसरिब की तलाश में निकले, लेकिन उनका क़ाफ़िला सुब्ह ही रवाना हो चुका था, कुरैश ने सअ़द बिन उबादा और मुंज़िर बिन अम्र को वहां पाया, हज़रत मुंज़िर रज़ि० तो निकल गए और उनके हाथ न आए, मगर सअ़द बिन उबादा रज़ि० को उन्होंने पकड़ लिया, उनकी सवारी के ऊंट का तंग खोल कर उसकी मशकें बांध दीं, मक्का में लाकर उन्हें मारते और उनके सर के लम्बे लम्बे बालों को खींचते थे, यह सअ़द बिन उबादा वही हैं जिनको नबी सल्ल० ने उन 12/अशख़ास में से एक नक़ीब ठहराया था, उनका अपना बयान है कि जब कुरैश उन्हें ज़द व कूब कर

(1) मुस्नद अहमद 3-322-339 मुस्तदरक हाकिम 2-624, 625, इमाम ज़हबी ने हाकिम की रिवायत को सही क़रार दिया है, तफ़सील के लिये मुलाहज़ा हो, सीरत इब्ने हिशाम 1-438 ता 448, नीज़ फ़त्हुल बारी 7-219 ता 223

रहे थे तो एक सुर्ख व सफेद शीरीं शमाइल शख़्स उन्हें अपनी तरफ़ आता हुआ नज़र आया, मैंने अपने दिल में कहा कि अगर इस कौम में किसी से मुझे भलाई हासिल हो सकती है तो वह यही होगा, जब वह मेरे पास आ गया तो उसने निहायत ज़ोर से मुंह पर तमांचा लगाया, उस वक़्त मुझे यकीन आ गया कि इनमें कोई भी ऐसा शख़्स नहीं जिससे खैर की उम्मीद की जा सके, इतने में एक और शख़्स आया, उसने मेरे हाल पर तरस खाया और कहा क्या कुरैश के किसी भी शख़्स के साथ तुझे हक़्क़े हमसाइगी हासिल नहीं और किसी से भी तेरा अहद व पैमान नहीं? मैंने कहा हां! जुबैर बिन मुतइम और हारिस बिन हर्ब जो अब्दे मनाफ़ के पोते हैं वह तिजारत के लिये हमारे यहां जाया करते हैं, और मैंने बारहा उनकी हिफ़ाज़त की है, उसने कहा कि फिर उन्ही दोनों के नाम की दुहाई तुझे देनी और अपने तअ़ल्लुक़ात का इज़हार करना चाहिये, मैंने ऐसा ही किया फिर वही शख़्स उन दोनों के पास पहुंचा और उन्हें बताया कि ख़ज़रज का एक आदमी पिट रहा है और वह तुम्हरा नाम लेकर तुम्हें पुकार रहा है, उन दोनों ने पूछा वह कौन है उसने बताया कि सअ़द बिन उबादा, वह बोले हां, उसका हम पर एहसान भी है, उन्होंने आकर सअ़द बिन उबादा को छुड़ाया और यह साबित कदम बुजुर्ग यसरिब को तशरीफ़ ले गए।[1]

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-449, 450 रहमतुल लिलआलमीन 1-81

हिज्रत करने की इजाज़त

उक़्बा सानिया की बैअ़त के बाद नबी सल्ल0 ने उन मुसलमानों को जो अभी मक्का से बाहर नहीं गए थे लेकिन जिन पर इतने ज़ुल्म व सितम होने लगे थे कि प्यारा वतन उनके लिये आग का पहाड़ बन गया, यसरिब चले जाने की इजाज़त फ़रमा दी, उन ईमान वालों को घर बार, ख़ेश व अक़ारिब, बाप, भाई, ज़न व फ़रज़ंद के छोड़ने का ज़रा ग़म न था, बल्कि ख़ुशी यह थी कि यसरिब जाकर ख़ुदाए वह्दहू ला शरीक की इबादत पूरी आज़ादी से कर सकेंगे।[1]

हिज्रत करने वालों और घर छोड़ने वालों को क़ुरैशे मक्का की सख़्त मुज़ाहमत का मुक़ाबला करना पड़ा।

हज़रत सुहैब रूमी रज़ि0 जब हिज्रत करके जाने लगे तो कुफ़्फ़ार ने उन्हें आ घेरा, कहा सुहैब! जब तू मक्का में आया था तो मुफ़्लिस व क़ल्लाश था, यहां ठहर कर तूने हज़ारों कमाए, आज यहां से जाता है और चाहता है सब माल व ज़र लेकर चला जाए, यह तो कभी नहीं होने का, हज़रत सुहैब रज़ि0 ने कहा, अच्छा अगर मैं अपना सारा माल व मताअ़ तुम्हें दे दूं तब तुम मुझे जाने दोगे? क़ुरैश बोले हां! हज़रत सुहैब रज़ि0 ने सारा माल उन्हें दे दिया और यसरिब को रवाना हो गए। नबी सल्ल0 ने यह क़िस्सा सुनकर फ़रमाया कि उस सौदे में सुहैब रज़ि0 ने नफ़ा कमाया।[2]

---

(1) ज़ादुल मआद 3-49 रह्मतुल लिल आलमीन 1-82

(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-477 दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 2-522

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 कहती हैं मेरे शौहर अबू सलमा रज़ि0 ने हिज्रत का इरादा किया, मुझे ऊंट पर चढ़ाया, मेरी गोद में मेरा बच्चा सलमा था, जब हम चल पड़े तो बनू मुग़ीरा ने आकर अबू सलमा रज़ि0 को घेर लिया, कहा, कि तू जा सकता है मगर हमारी लड़की नहीं ले जा सकता, अब बनू अब्दुल असद भी आ गए, उन्होंने अबू सलमा से कहा, तू जा सकता है मगर बच्चा को जो हमारे क़बीला का बच्चा है तू नहीं ले जा सकता, ग़र्ज़ उन्होंने अबू सलमा रज़ि0 से ऊंट की महार लेकर ऊंट बिठा दिया, बनू अब्दुल असद तो मां की गोद से बच्चा को छीन कर ले गए और बनू मुग़ीरा उम्मे सलमा को ले आए, अबू सलमा जो दीन के लिये हिज्रत करना फ़र्ज़ समझते थे ज़न व बच्चा के बग़ैर रवाना हो गए, उम्मे सलमा रज़ि0 शाम को उसी जगह जहां बच्चा और शौहर से जुदा की गई थीं पहुंच जातीं और घंटों रो धोकर वापस आ जातीं, एक साल इसी तरह रोते चिल्लाते गुज़र गया, आख़िर उनके चचेरे भाई को रहम आया और हर दो क़बाइल से कह सुन कर उम्मे सलमा को इजाज़त दिला दी कि अपने शौहर के पास चली जाएं, बच्चा भी उनको वापस दे दिया गया, उम्मे सलमा रज़ि0 एक ऊंट पर सवार होकर मदीना को तने तन्हा चल दीं, ऐसी मुश्किलात का सामना तक़रीबन हर एक सहाबी को करना पड़ा था।[1]

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-467, 468

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० का बयान है कि हज़रत अयाश रज़ि० बिन रबीआ और हज़रत हिशाम सहाबी भी उनके साथ मदीना चलने को तैयार हुए थे, हज़रत अयाश रज़ि० तो रवानगी के वक़्त जाए मुक़र्ररा पर पहुंच गए, मगर हिशाम रज़ि० बिन आस की बाबत कुफ़्फ़ार को ख़बर लग गई तो उनको क़ुरैश ने क़ैद कर दिया, हज़रत अयाश रज़ि० मदीना जा पहुंचे कि अबू जहल मअ़ अपने बिरादर हारिस के मदीना पहुंचा, अयाश रज़ि० उनके चचेरे भाई थे और तीनों की मां एक थी, अबू जहल व हारिस ने कहा कि तुम्हारे बाद वालिदा की बुरी हालत हो रही है, उसने क़सम खा ली है कि अयाश रज़ि० का मुंह देखने तक न सर में कंघी करूंगी, न साया में बैठूंगी, इसलिये भाई तुम चलो और मां को तस्कीन दे कर आ जाना।

उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने कहा अयाश! मुझे तो फ़रेब मअ़लूम होता है, तुम्हारी मां के सर में कोई जूं गई तो वह ख़ुद ही कंघी कर लेगी और मक्का की धूप ने ज़रा ख़बर ली तो वह ख़ुद ही साया में जा बैठेगी, मेरी राए तो यह है कि तुम को जाना नहीं चाहिये, अयाश रज़ि० बोले नहीं मैं वालिदा की क़सम पूरी करके वापस आ जाऊंगा।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने फ़रमायाः अच्छा अगर यही राए है तो सवारी के लिये मेरा नाक़ा ले जाओ, यह बहुत तेज़ रफ़्तार है, अगर रास्ता में ज़रा भी उनसे शुब्हा गुज़रे तो तुम इस नाक़ा पर बआसानी उनकी गिरफ़्त से बच

कर आ सकोगे।

हज़रत अयाश रज़ि० ने नाक़ा ले लिया, यह तीनों चल पड़े, एक रोज़ राह में (मक्का) के क़रीब अबू जह्ल ने कहा, भाई हमारा ऊंट तो नाक़ा के साथ चलता चलता रह गया, बेहतर है कि तुम मुझे अपने साथ सवार कर लो, अयाश रज़ि० बोले बेहतर है, जब अयाश रज़ि० ने नाक़ा बिठाया तो दोनों ने उन्हें पकड़ लिया, मशकें कस लीं और मक्का में इसी तरह ले कर दाख़िल हुए, यह दोनों बड़े फ़ख़्र से कहते थे कि देखो कि बेवक़ूफ़ों और अहमक़ों को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं, अब अयाश रज़ि० को भी हिशाम बिन आस रज़ि० के साथ क़ैद कर दिया गया, जब नबी सल्ल० मदीना मुनव्वरा पहुंच गए तब हुज़ूर सल्ल० की तमन्ना पूरी करने के लिये वलीद बिन मुग़ीरा मक्का आए और क़ैदख़ाने से दोनों को रातों रात निकाल कर ले गए।[1]

रसूलुल्लाह सल्ल० के ख़िलाफ़ क़ुरैश की साज़िश और नाकामी और आप सल्ल० की हिज्रते मदीना

क़ुरैश ने देखा कि अब मुसलमान मदीना में जाकर ताक़त पकड़ते जाते हैं और वहां इस्लाम फैलता जाता है, इस बिना पर उन्होंने दारुन्नदवा जो दारुश्शूरा था, में इजलासे आम किया, हर क़बीला के रुअसा शरीक थे, लोगों ने मुख़्तलिफ़ राएं पेश कीं, एक ने कहा "मुहम्मद सल्ल० के हाथ पांव में ज़ंजीरें डालकर मकान में बंद कर दिया जाए,

(1) मुस्तदरक हाकिम 2-235, इमाम ज़हबी ने रिवायत की तस्दीक़ फ़रमाई है।

दूसरे ने कहा "जिला वतन कर देना काफी है" अबू जह्ल ने कहा कि हर क़बीले से एक एक शख़्स का इंतिख़ाब हो और पूरा मज्मा एक साथ मिलकर तलवारों से उनका ख़ातमा कर दे, इस सूरत में उनका ख़ून तमाम क़बाइल में बट जाएगा, और आले हाशिम अकेले तमाम क़बाइल का मुक़ाबला न कर सकेंगे, इस अख़ीर राए पर इत्तिफ़ाक़े आम हो गया और झट पटे से आकर रसूल सल्ल० के आस्तानए मुबारक का मुहासरा कर लिया गया, अह्ले अरब ज़नाना मकान के अंदर घुसना मअ़यूब समझते थे, इसलिये बाहर ठहरे रहे कि आंहज़रत सल्ल० निकलें तो यह फ़र्ज़ अदा किया जाए।[1]

रसूलुल्लाह सल्ल० से क़ुरैश को इस दर्जा अ़दावत थी, ताहम आप सल्ल० की दियानत पर यह एतिमाद था कि जिस शख़्स को कुछ माल या अस्बाब अमानत रखना होता था आप सल्ल० ही के पास लाकर रखता था, उस वक़्त भी बहुत सी अमानतें जमा थीं, आप सल्ल० को क़ुरैश के इरादे की पहले से ख़बर हो चुकी थी, इस बिना पर हज़रत अली रज़ि० को बुलाकर फ़रमाया कि "मुझको हिज्रत का हुक्म हो चुका है, मैं आज मदीना रवाना हो जाऊंगा[2] तुम मेरे पलंग पर मेरी चादर ओढ़ कर सो रहो, सुब्ह सब की अमानतें वापस दे आना, हज़रत अली रज़ि० तो उन तलवारों

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-480

(2) हिज्रत का हुक्म आप सल्ल० को अल्लाह तबारक व तआ़ला की तरफ़ से हुआ था, जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में सराहत है। किताबुल मनाक़िब, बाबु हिज्रतिन्नबी सल्ल० व अस्हाबिही इलल मदीना।

के साए में निहायत बेफ़िक्री से मज़े की नींद सो रहे और खुदा का रसूल (सल्ल0) खुदा की हिफ़ाज़त में बाहर निकला और उन दिल के अंधों की आंखों में ख़ाक डालता हुआ और सूरए "यासीन" पढ़ता हुआ साफ़ निकल गया, किसी ने नबी सल्ल0 को जाते न देखा,[1] यह वाक़िआ 27/सफ़र 13 हि0 नुबूव्वत सल्ल0 रोज़ पंजशंबा (12/सितम्बर 621 ई0) का है।[4]

हिज्रत से दो तीन दिन पहले रसूलुल्लाह सल्ल0 दोपहर के वक़्त हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के घर पर गए दस्तूर के मुताबिक़ दरवाज़ा पर दस्तक दी, इजाज़त के बाद घर में तशरीफ़ ले गए, हज़रल अबू बक्र रज़ि0 से फ़रमाया कि "कुछ मशवरा करना है सब को हटा दो" बोले कि "यहां आप की हरम के सिवा और कोई नहीं है (उस वक़्त हज़रत आइशा रज़ि0 से शादी हो चुकी थी) आप सल्ल0 ने फ़रमाया "मुझको हिज्रत की इजाज़त हो गई है" हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने निहायत बेताबी से कहा "मेरा बाप आप पर फ़िदा हो, क्या मुझको भी हमराही का शर्फ़ होगा?" इर्शाद हुआ "हां" हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने हिज्रत के लिये चार महीने से दो ऊंटनियां बबूल की पत्तियां खिला खिलाकर तैयार की थीं, अर्ज़ की कि इनमें से एक आप पसंद फ़रमाएं, मोहसिने आलम को किसी का एहसान गवारा नहीं हो सकता था, इर्शाद हुआ "अच्छा, मगर बक़ीमत"

(1) मुस्नद अहमद 1-348, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक 5-389

(2) सीरतुन्नबी सल्ल0 1, 270, रहमतुल लिल आलमीन 1-85

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने मजबूरन कबूल किया, हज़रत आइशा रज़ि० उस वक्त कम्सिन थीं, उनकी बड़ी बहन हज़रत अस्मा ने जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की मां थीं, सफ़र का सामान किया, दो तीन दिन का खाना नाश्ता दान में रखा, निताक (जिसको औरतें कमर से लपेटती हैं) फाड़ कर उससे नाश्ता दान का मुंह बांधा, यह वह शर्फ़ था जिसकी बिना पर आज तक उनको "ज़ातुन्निताकैन" के लक़ब से याद किया जाता है।[1]

आपने कअ्बा पर वदाई निगाह डाली और फ़रमाया "मक्का! तू मुझको तमाम दुन्या से ज़्यादा अज़ीज़ है लेकिन तेरे फ़रज़ंद मुझको रहने नहीं देते।[2] शब की तारीकी में दोनों बुज़ुर्गवार चल पड़े, मक्का से चार पांच मील के फ़ासिले पर कोहे सौर है उसकी चढ़ाई सर तोड़ है, रास्ता संगलाख़ था, नुकीले पत्थर नबी सल्ल० के पाए नाज़ुक को ज़ख़्मी कर रहे थे और ठोकर लगने से भी तकलीफ़ होती थी, अबू बक्र रज़ि० ने नबी सल्ल० को अपने कंधे पर उठा लिया, आख़िर एक ग़ार तक पहुंचे, अबू बक्र रज़ि० ने नबी सल्ल० को बाहर ठहराया, ख़ुद अंदर जाकर ग़ार को साफ़ किया, तन के कपड़े फाड़ कर ग़ार के रोज़न बंद किये और

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल० व असहाबिही इलल मदीना

(2) इमाम तिर्मिज़ी, इमाम दारमी और इब्ने माजा ने "والله إنك لخير أرض الله وأحب أرض الله إلى ولولا أني أخرجت منك ما خرجت" के अलफ़ाज़ कहे हैं, और इमाम तिर्मिज़ी ने हदीस को हसन ग़रीब सहीह कहा है।

फिर अर्ज़ किया कि हुजूर (सल्ल0) भी तशरीफ़ ले आएं।[1]

सुब्ह हुई, हज़रत अली रज़ि0 हसबे मअमूल ख़्वाब से बेदार हुए, कुरैश ने करीब जाकर उन्हें पहचाना, पूछा मुहम्मद (सल्ल0) कहां हैं? हज़रत अली रज़ि0 ने जवाब दिया मुझे क्या खबर, क्या मेरा पहरा था? तुम लोगों ने उन्हें निकल जाने दिया और वह निकल गए, कुरैश गुस्सा और नदामत से अली रज़ि0 पर पिल पड़े, उनको मारा और खानए कअ़बा तक पकड़ लाए और थोड़ी देर हब्स में रखा आख़िर छोड़ दिया।[2]

अस्मा बिंते अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 कहती हैं कि मेरे वालिद जाते हुए घर से नक़्द रूपया सब उठा ले गए, यह पांच छः हज़ार रूपये थे, वालिद के चले जाने के बाद मेरे दादा अबू कुहाफ़ा ने कहा कि बेटी मैं समझता हूं कि अबू बक्र (रज़ि0) ने तुमको दोहरी तकलीफ़ में डाल दिया, वह खुद भी चले गए और नकद व माल भी साथ ले गए, हज़रत अस्मा रज़ि0 बोलीं, दादा जान! वह हमारे लिये काफ़ी रूपया छोड़ गए हैं, अस्मा रज़ि0 ने एक पत्थर लिया और उस पर एक कपड़ा लपेटा और जिस घड़े में रूपया हुआ करता था वहां रख दिया और फिर दादा का हाथ पकड़ कर ले गई, अबू कुहाफ़ा की आंखें जाती रही थीं, कहा दादाजान! हाथ लगा कर देखो कि माल मौजूद है, बूढ़े ने उसे टटोला और

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-6, दलाइलुन्नुबूव्वा 2-477, अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स0 221, रहमतुल लिल आलमीन 1-85

(2) तारीख़े तबरी 1-586

फिर कहा ख़ैर जब तुम्हारे पास सरमाया काफ़ी है तो अबू बक्र (रज़ि0) के जाने का चंदाँ ग़म नहीं, यह अबू बक्र रज़ि0 ने अच्छा किया और मैं समझता हूं कि तुम्हारे लिये काफ़ी इंतिज़ाम कर गए हैं, हज़रत अस्मा रज़ि0 कहती हैं कि यह तदबीर मैंने बूढ़े दादा साहब के इत्मीनाने क़ल्ब के लिये की थी, वर्ना वालिद बुज़ुर्गवार तो सब कुछ (नबी सल्ल0 की ख़िदमत के लिये) साथ ले गए थे।[1]

यह चांद और सूरज दोनों तीन रोज़ तक उसी ग़ार में रहे, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के बेटे अब्दुल्लाह रज़ि0 नौ ख़ेज़ जवान थे, शब को ग़ार में साथ सोते, सुब्ह मुंह अंधेरे शहर चले जाते और पता लगाते कि कुरैश क्या मशवरे कर रहे हैं? जो कुछ ख़बर मिलती, शाम को आकर आंहज़रत सल्ल0 से अर्ज़ करते, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 का गुलाम कुछ रात गए बकरियां चरा कर लाता, आप सल्ल0 और हज़रत अबू बक्र रज़ि0 उनका दूध पी लेते, तीन दिन तक सिर्फ़ यही ग़िज़ा थी।[2]

कुरैश आंहज़रत सल्ल0 की तलाश में निकले, ढूंढते ढूंढते ग़ार के दहाना तक आ गए, आहट पाकर हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ग़मज़दा हुए और आंहज़रत सल्ल0 से अर्ज़ की अब दुशमन इस क़दर क़रीब आ गए कि अगर अपने क़दम पर उनकी नज़र पड़ जाए तो हमको देख लेंगे, आप सल्ल0

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-488

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल0

ने फ़रमाया "لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا" घबराओ नहीं खुदा हमारे साथ है।[1]

चौथे दिन आप ग़ार से निकले अब्दुल्लाह बिन उरैकित एक काफ़िर, जिस पर एतिबार था रहनुमाई के लिये उज्रत पर मुकर्रर कर लिया गया था, वह आगे आगे रस्ता बताता जाता था, एक रात दिन बराबर चलते गए, दूसरे दिन दोपहर के वक़्त धूप सख़्त हो गई तो हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने चाहा कि रसूलुल्लाह सल्ल0 साया में आराम फ़रमा लें, चारों तरफ़ नज़र डाली, एक चट्टान के नीचे साया नज़र आया, सवारी से उतर कर ज़मीन झाड़ी, फिर अपनी चादर बिछा दी, आंहज़रत सल्ल0 ने आराम फ़रमाया तो तलाश में निकले कि कहीं खाने को कुछ मिल जाए तो लाएं, पास ही एक चरवाहा बकरियां चरा रहा था उससे कहा एक बकरी का थन गर्द व गुबार से साफ़ कर दे, फिर उसके हाथ साफ़ कराए और दूध दुहाया, बर्तन के मुंह पर कपड़ा लपेट दिया कि गर्द न पड़ने पाए, दूध लेकर आंहज़रत सल्ल0 के पास आए और थोड़ा सा पानी मिला कर पेश किया, आप सल्ल0 ने पीकर फ़रमाया कि "क्या चलने का वक़्त नहीं आया? आफ़ताब ढल चुका था, इसलिये आप वहां से रवाना हुए।[2]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी सल्ल0, बाब मनाक़िबुल मुहाजिरीन व फ़ज़लिहुम, सहीह मुस्लिम, फ़ज़ाइलुस सहाबा, फ़ज़ाइल अबू बक्र अस्सिद्दीक़ रज़ि0
(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब फ़ी हदीसिल हिज्रह, सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुह्द वर्रक़ाइक़, बाब फ़ी हदीसिल हिज्रह

सुराक़ा का तआकुब

कुरैश ने इश्तिहार दे दिया था कि जो शख़्स मुहम्मद (सल्ल०) या अबू बक्र को गिरफ़्तार कर लाएगा उसको एक ख़ून बहा के बराबर (यअ़नी सौ ऊंट) इन्आम दिया जाएगा, सुराक़ा ने सुना तो इन्आम की उम्मीद में निकला, ऐन उस हालत में कि आप सल्ल0 रवाना हो रहे थे, उसने आपको देख लिया और घोड़ा दौड़ा कर क़रीब आ गया, लेकिन घोड़े ने ठोकर खाई वह गिर पड़ा, तर्कश से फ़ाल के तीर निकाले कि हमला करना चाहिये या नहीं? जवाब में ''नहीं'' निकला, लेकिन सौ ऊंटों का गिरां बहा मुआवज़ा ऐसा न था कि तीर की बात मान ली जाती, दोबारा घोड़े पर सवार हुआ और आगे बढ़ा, नबी सल्ल0 कुर्आन मजीद की तिलावत करते हुए और मालिक से लौ लगाए हुए बढ़े चले जाते थे, अब की घोड़े के पांव घुटनों तक ज़मीन में धंस गए, घोड़े से उतर पड़ा और फिर फ़ाल देखी, अब भी वही जवाब था, लेकिन मुकर्रर तजर्बा ने उसकी हिम्मत पस्त कर दी और यक़ीन हो गया कि यह कुछ और आसार हैं, आंहज़रत सल्ल0 के पास आकर कुरैश के इश्तिहार का वाक़िआ सुनाया और अपना सामान आप सल्ल0 की ख़िदमत में पेश किया यह क़बूल हो, आप सल्ल0 ने मअ़ज़िरत की और सिर्फ़ यह ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि आप सल्ल0 का पता निशान छिपाया जाए, सुराक़ा ने दरख़्वास्त की कि मुझको अम्न की तहरीर लिख दीजिये, हज़रत अबू

बक्र रज़ि० के गुलाम आमिर बिन फुहैरा ने चमड़े के एक टुकड़े पर फ़रमाने अम्न लिख दिया।[1]

मुबारक शख़्स

ग़ार से निकल कर पहले ही दिन इस मुबारक क़ाफ़िला का गुज़र उम्मे मअ़्बद के ख़ेमा पर हुआ, यह औरत क़ौमे ख़ुज़ाआ से थीं, मुसाफ़िरों की ख़बरगीरी और उनकी तवाज़ोअ़ के लिये मशहूर थीं, सरे राह पानी पिलाया करती थीं और मुसाफिर वहां ठहर कर सुस्ताया करते थे, यहां पहुंच कर बुढ़िया से पूछा कि उसके पास खाने की कोई चीज़ है, वह बोलीं नहीं, अगर कोई शैय मौजूद होती तो दरयाफ़्त करने से पहले मैं ख़ुद हाज़िर कर देती, नबी सल्ल० ने ख़ेमा के गोशा में एक बकरी देखी, पूछा यह बकरी क्यों खड़ी है? उम्मे मअ़्बद ने कहा कि कमज़ोर है, रेवड़ के साथ नहीं चल सकती, नबी सल्ल० ने फ़रमाया "इजाज़त है कि हम उसे दूह लें? उम्मे मअ़्बद ने कहा कि अगर हुज़ूर (सल्ल०) को दूध मअ़्लूम होता है तो दूह लीजिये, नबी सल्ल० ने बिस्मिल्लाह कह कर बकरी के थनों को हाथ लगाया, बर्तन मांगा वह ऐसा भर गया कि दूधर उछल कर ज़मीन पर भी गिर गया, यह दूध आंहज़रत सल्ल० और हमराहियों ने पी लिया। दूसरी दफ़ा फिर बकरी को दूहा गया, बर्तन फिर भर गया, यह भी हमराहियों ने पिया, तीसरी दफ़ा बर्तन फिर भर गया और वह उम्मे मअ़्बद के लिये छोड़ दिया गया और आगे को रवाना हो गए।

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल०, सीरत इब्ने हिशाम 1-489, 490

कुछ देर बाद उम्मे मअ़्बद के शौहर आए, ख़ेमा में दूध का बर्तन भरा देखकर हैरान हो गए कि यह कहां से आया, उम्मे मअ़्बद ने कहा कि एक बाबरकत शख़्स यहां आए थे और यह दूध उनके कुदूम का नतीजा है, वह बोले कि यह तो वही साहिबे कुरैश मअ़्लूम होते हैं जिनकी मुझे तलाश थी, अच्छा ज़रा उनकी तौसीफ़ तो करो, उम्मे मअ़्बद बोलीं:

"मैंने एक शख़्स को देखा जिसकी नज़ाफ़त नुमायां, जिसका चेहरा ताबां, और जिसकी साख़्त में तनासुब था, पाकीज़ा रू और पसंदीदा ख़ू, न फ़रबही का ऐब, न लाग़री का नक़्स, न पेट निकला हुआ, न सर के बाल गिरे हुए, चेहरा वजीह, जिस्म तनोमंद और क़द मौज़ूं था, आंखें सुर्मगीं, फ़राख़ और सियाह थीं, पुतलियां काली थीं, ढेले बहुत सफ़ेद थे, पलकें घनी और लम्बी थीं, पुरवक़ार ख़ामोश दिलबस्तगी लिये हुए, कलाम शीरीं और वाज़ेह, न कम सुख़न, न बिस्यार गो, गुफ़्तगू इस अंदाज़ की जैसे पिरोए हुए मोती, दो नर्म व नाज़ुक शाख़ों के दर्मियान एक शाख़े ताज़ा जो देखने में ख़ुश मंज़र, रफ़ीक़ उनके गिर्द व पेश रहते हैं, जो कुछ वह फ़रमाते हैं वह सुनते हैं, जब हुक्म देते हैं तो तअ़्मील के लिये झपटते हैं, मख़्दूम व मुताअ़् न कोताह सुख़न न फ़ुज़ूल गो।"

यह सिफ़त सुनकर वह बोला कि यह तो ज़रूर साहिबे कुरैश हैं और मैं इनसे ज़रूर जा मिलूंगा।[1]

---

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-9,10, तबक़ाते इब्ने सअ़्द 1-230, ज़ादुल मआद 3-56

नबी सल्ल0 यसरिब जा रहे थे कि अस्नाए राह में बुरैदा असलमी मिला, यह अपनी क़ौम का सरदार था, कुरैश ने आंहज़रत सल्ल0 की गिरफ़्तारी पर एक सौ ऊंट इन्आम मुश्तहर किया था और बुरैदा इसी लालच में आंहज़रत की तलाश में निकला, जब नबी सल्ल0 के सामने हुआ और हुज़ूर सल्ल0 से हम कलाम होने का मौक़ा मिला तो बुरैदा सत्तर आदमियों समेत मुसलमान हो गया, अपनी पगड़ी उतार कर नेज़ा पर बांध ली जिस का सफ़ेद फरेरा हवा में लहराता और बशारत सुनाता कि अम्न का बादशाह, सुल्ह का हामी, दुन्या को अदालत और इंसाफ़ से भरपूर करने वाला तशरीफ़ ला रहा है,[1] रास्ता में नबी सल्ल0 को ज़ुबैर बिन अल अव्वाम मिले, यह शाम से आ रहे थे और मुसलमानों का तिजारत पेशा गिरोह भी उनके साथ था, उन्होंने नबी सल्ल0 और अबू बक्र रज़ि0 के लिये सफ़ेद पार्चा जात पेश किये।[2]

नबीये अकरम सल्ल0 का मदीना में इस्तिक़बाल

तशरीफ़ आवरी की ख़बर मदीना में पहले पहुंच चुकी थी, तमाम शहर हमा चश्म इंतिज़ार था, मअ़सूम बच्चे फ़ख़्र और जोश में कहते फिरते थे कि पैग़म्बर सल्ल0 आ रहे हैं, लोग हर रोज़ तड़के से निकल निकल कर शहर के बाहर जमा होते और दोपहर तक इंतिज़ार करके हसरत के साथ वापस चले आते, एक दिन इंतिज़ार करके वापस जा चुके थे

(1) अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स0 228

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल0

कि एक यहूदी ने किला से देखा और क़राइन से पहचान कर पुकारा कहा "अह्ले अरब लो! तुम जिसका इंतिज़ार करते थे वह आ गया" तमाम शहर तकबीर की आवाज़ से गूंज उठा, अंसार हथियार सज धज कर बेताबाना घरों से निकल आए, अक्सर मुसलमान ऐसे थे जिन्होंने हुनूज़ दीदारे पुर अनवार से चश्मे ज़ाहिर बीं को रौशन किया था, उन्हें नबी सल्ल0 और उनके रफ़ीक़ अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 की शनाख़्त में इश्तिबाह हो जाता था, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 इस ज़रूरत को ताड़ गए और सरे मुबारक पर साया करके खड़े हो गए, मदीना मुनव्वरा से तीन मील के फ़ासिले पर जो बालाई आबादी है उसको आलिया और कुबा कहते हैं, यहां अंसार के बहुत से ख़ानदान आबाद थे, इनमें सबसे ज़्यादा मुम्ताज़ अम्र बिन औफ़ का ख़ानदान था और कुल्सूम बिन अल हदम ख़ानदान के अफ़सर थे, आंहज़रत सल्ल0 यहां पहुंचे तो तमाम ख़ानदान ने जोशे मुसर्रत में "अल्लाहु अक्बर" का नअ़रा मारा, यह फ़ख़्र उनकी क़िस्मत में था कि मेज़बाने दो आलम ने उनकी मेहमानी कबूल की, अंसार हर तरफ़ से जूक़ दर जूक़ आते और जोशे अक़ीदत के साथ सलाम अ़र्ज़ करते।[1]

मस्जिदे कुबा की तअ़मीर

यहां आप सल्ल0 का पहला काम मस्जिद तअ़मीर कराना था, कुल्सूम की एक उफ़्तादा ज़मीन थी जहां खजूरें

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल0, सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुह्द वर्रकाइक़, बाब फ़ी हदीसिल हिज्रह, तबक़ात इब्ने सअ़द 1-233

सुखाई जाती थीं, यहीं दस्ते मुबारक से मस्जिद की बुन्याद डाली, यही मस्जिद है जिसकी शान में कुर्आन मजीद में है:

لَمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ، فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ

"वह मस्जिद जिसकी बुन्याद पहले ही दिन परहेज़गारी पर रखी गई है, वह इस बात की ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि तुम उसमें खड़े हो, उसमें ऐसे लोग हैं जिनको सफ़ाई बहुत पसंद है और खुदा साफ़ रहने वालों को दोस्त रखता है।

(सूरए तौबा-108)

मस्जिद की तअ़मीर में मज़दूरों के साथ आप सल्ल0 खुद भी काम करते थे, भारी भारी पत्थरों के उठाते वक़्त जिस्म मुबारक ख़म हो जाता था, अकीदतमंद आते और अ़र्ज़ करते कि "हमारे मां बाप आप सल्ल0 पर फ़िदा हों, आप छोड़ दें हम उठा लेंगे, आप सल्ल0 उनकी दरख़्वास्त कबूल फरमाते, लेकिन फिर उसी वज़न का दूसरा पत्थर उठला लेते,[1] हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 बिन रवाहा शाइर थे वह भी मज़दूरों के साथ शरीक थे और जिस तरह मजूदर काम करते वक़्त थकन मिटाने को गाते जाते हैं, वह यह अशआर पढ़ते जाते थे-

أَفْلَحَ مَنْ يُعَالِجُ الْمَسَاجِدَا　　وَيَقْرَأُ الْقُرْآنَ قَائِمًا وَقَاعِدًا

وَلَا يَبِيتُ اللَّيْلَ عَنْهُ رَاقِدًا

(1) वफ़ाउल वफ़ा बहवाला तबरानी कबीर 1-180

"वह कामियाब है जो मस्जिद दुरुस्त करता है और उठते बैठते कुर्आन पढ़ता है और रात को जागता रहता है।"

आंहज़रत सल्ल0 भी हर हर काफ़िया के साथ आवाज़ मिलाते जाते थे।[1]

मदीना का पहला जुमुआ

12/ रबीउल अव्वल 1 हि0 को जुमुआ का दिन था, नबी सल्ल0 कुबा से सवार होकर बनी सालिम के घरों तक पहुंचे कि जुमुआ का वक़्त हो गया, यहां सौ आदमियों के साथ जुमुआ पढ़ा, यह इस्लाम में पहला जुमुआ था,[2] आप सल्ल0 ने खुत्बा में फ़रमायाः

"हम्द व सताइश खुदा के लिये है, मैं उसकी की हम्द करता हूं, मदद व बख़्शिश और हिदायत उसी से चाहता हूं, मेरा ईमान उसी पर है, मैं उसकी नाफ़रमानी नहीं करता और नाफ़रमानी करने वालों से अदावत रखता हूं, मेरी शहादत यह है कि खुदा के सिवा इबादत के लाइक़ कोई भी नहीं, वह यक्ता है, उसका कोई शरीक नहीं, मुहम्मद (सल्ल0) उसका बंदा और रसूल है, उसी ने मुहम्मद को हिदायत, नूर और नसीहत के साथ ऐसे ज़माने में भेजा जबकि मुद्दतों से कोई रसूल दुन्या पर न आया, इल्म घट गया और गुमराही बढ़ गई थी, उसे आख़िरी ज़माना में क़यामत के क़रीब और मौत की नज़दीकी के वक़्त भेजा गया

(1) वफ़ाउल वफ़ा 1-181 बहवाला इब्न अबी शैबा

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 2-500, ज़ादुल मआद 3-59

है, और जिसने उनका हुक्म माना वह भटक गया, दर्जा से गिर गया और सख़्त गुमराही में फंस गया है, मुसलमानो! मैं तुम्हें अल्लाह से तक़्वा की वसीयत करता हूं, बेहतरीन वसीयत जो मुसलमान, मुसलमान को कर सकता है यह है कि उसे आख़िरत के लिये आमादा करे और अल्लाह से तक़्वा के लिये कहे, लोगो! जिन बातों से ख़ुदा ने तुम्हें परहेज़ करने को कहा है उनसे बचते रहो, इससे बढ़ कर न कोई नसीहत है और न इससे बढ़कर कोई ज़िक्र है, याद रखो! कि उमूरे आख़िरत के बारे में उस शख़्स के लिये जो ख़ुदा से डर कर काम कर रहा है, तक़्वा बेहतरीन मददगार साबित होगा और जब कोई शख़्स अपने और ख़ुदा के दर्मियान का मुआमला बातिन व ज़ाहिर में दुरुस्त कर लेगा और ऐसा करने में उसकी नीयत ख़ालिस हुई तो ऐसा करना उसके लिये दुन्या में ज़िक्र और मौत के बाद (जब इंसान को अअ़्माल की ज़रूरत व क़दर मअ़्लूम होगी) ज़ख़ीरा बन जाएगा, लेकिन अगर कोई ऐसा नहीं करता (तो उसका ज़िक्र इस आयत में है) कि इंसान पसंद करेगा कि उसके अअ़्माल उससे दूर ही रखे जाएं, ख़ुदा तुम को अपनी ज़ात से डराता है और ख़ुदा तो अपने बंदों पर निहायत मेहरबान है, और जिस शख़्स ने ख़ुदा के हुक्म को सच जाना और उसके वादों को पूरा किया तो इसकी बाबत इर्शादे इलाही मौजूद है, "हमारे यहां

बात नहीं बदलती और हम अपने नाचीज़ बंदों पर जुल्म नहीं करते," मुसलमानो! अपने मौजूदा और आइंदा, ज़ाहिर और खुफिया कामों में अल्लाह से तक़्वा को पेश नज़र रखो क्योंकि तक़्वा वालों की बदियां छोड़ दी जाती हैं और अज्र बढ़ा दिया जाता है, तक़्वा वाले वह हैं जो बहुत बड़ी मुराद को पहुंच जाएंगे, यह तक़्वा ही है जो अल्लाह की बेज़ारी, अज़ाब और गुस्सा को दूर कर देता है, यह तक़्वा ही है जो चेहरा को दरख़्शां, परवदरिगार को खुशनूद और दर्जा को बुलंद करता है, मुसलमानो! हज़्ज़ उठाओ, मगर हुकूके इलाही में फ़रो गुज़ाश्त न करो, खुदा ने इसी लिये तुमको अपनी किताब सिखाई और अपना रस्ता दिखाया है कि रास्त बाज़ों और काज़िबों को अलग अलग कर दिया जाए, लोगो! खुदा ने तुम्हारे साथ उम्दा बरताव किया है, तुम भी लोगों के साथ ऐसा ही करो, और जो खुदा के दुशमन हैं उन्हें दुशमन समझो, और अल्लाह के रस्ता में पूरी हिम्मत और तवज्जोह से कोशिश करो, उसी ने तुमको बरगुज़ीदा बनाया और तुम्हारा नाम मुसलमान रखा, ताकि हलाक होने वाला भी रौशन दलाइल पर हलाक हो और ज़िंदगी पाने वाला भी रौशन दलाइल पर ज़िंदगी पाए, और सब नेकियां अल्लाह की मदद से हैं, लोगो! अल्लाह का ज़िक्र करो और आइंदा ज़िंदगी के लिये अमल करो, क्योंकि जो शख़्स अपने और

खुदा के दर्मियान मुआमला को दुरुस्त कर लेता है, अल्लाह तआला उसके और लोगों के दर्मियान मुआमला को दुरुस्त कर देता है, हां! खुदा बंदों पर हुक्म चलाता है और उस पर किसी का हुक्म नहीं चलता, खुदा बंदों का मालिक है और बंदों को उस पर कुछ इख़्तियार नहीं, खुदा सब से बड़ा है और हमको नेकी करने की ताक़त उसी अज़मत वाले से मिलती है।[1]

मदीना में हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० के घर में क्याम

मदीना तय्यिबा में जब तशरीफ़ आवरी की ख़बर मअ़लूम हुई तो हर तरफ़ से लोग जोशे मुसर्रत से पेशक़दमी के लिये दौड़े, कुबा से मदीना तक दो रूया जां निसारों की सफ़ें थीं, राह में अंसार के ख़ानदान आते थे, हर क़बीला सामने आकर अर्ज़ करता "हुज़ूर (सल्ल0) यह घर है, यह माल है, यह जान है" आप सल्ल0 मिन्नत का इज़हार फ़रमाते और दुआए ख़ैर देते और फ़रमाते कि मेरी ऊंटनी का रास्ता छोड़ दो, उसको खुदा की तरफ़ से हुक्म है, इसी तरह मदीना के पांच बड़े बड़े क़बीलों के सरदार मिलते रहे और यही अर्ज़ करते रहे "हुज़ूर (सल्ल0) यह घर है, यह माल है, यह जान है" आप सल्ल0 यही फ़रमाते "इसका रास्ता छोड़ दो जहां अल्लाह का हुक्म होगा वहीं जाएगी।"[2]

(1) तारीखे तबरी 2-807 (2) दलाइलुन्नबुव्वा 2-503, 504

शहर करीब आ गया तो जोश का यह आलम था कि बच्चियां छतों पर निकल आईं और गाने लगीं-

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا   مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ
وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا   مَا دَعَى لِلّٰهِ دَاعِ

"चांद निकल आया है, कोहे वदाअ़ की घाटियों से, हम पर ख़ुदा का शुक्र वाजिब है, जब तक दुआ मांगने वाले दुआ मांगें"[1]

बनू नज्जार की लड़कियां दफ़ बजा बजा कर गाती थीं-

نَحْنُ جَوَارٍ مِنْ بَنِي النَّجَّارِ   يَا حَبَّذَا مُحَمَّدًا مِنْ جَارِ

"हम ख़ानदाने नज्जार की लड़कियां हैं, मुहम्मद सल्ल० क्या अच्छे हमसाया हैं"

आप सल्ल० ने लड़कियों की तरफ़ ख़िताब करके फ़रमाया "क्या तुम मुझको चाहती हो? बोलीं हां! "फ़रमाया मैं भी तुम को चाहता हूं।"[2]

जहां अब मस्जिदे नबवी (सल्ल०) है उससे मुत्तसिल हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० का घर था, ऊंटनी वहां पहुंच कर ठहर गई, हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० का मकान दो मंज़िला था, उन्होंने बालाई मंज़िल पेश की, लेकिन आप सल्ल० ने ज़ाइरीन की आसानी के लिये नीचे का हिस्सा पसंद फ़रमाया।[3]

(1) दलाइलुन्नुबूव्वा 2-506, 507
(2) दलाइलुन्नुबूव्वा 2-508, फ़त्हुल बारी 7-261
(3) मुस्तदरक हाकिम 3-460, इमाम ज़हबी ने हदीस को सही क़रार दिया है, सीरत इब्ने हिशाम, 1-498

हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० दोनों वक़्त आप सल्ल० की ख़िदमत में खाना भेजते और आप सल्ल० जो छोड़ देते अबू अय्यूब रज़ि० और उनकी ज़ौजा के हिस्सा में आता, खाने में जहां हुज़ूर सल्ल० की उंगलियों का निशान पड़ा होता अबू अय्यूब रज़ि० तबर्रुकन वहीं उंगलियां डालते।[1]

एक दिन इत्तिफ़ाक़ से बालाई मंज़िल में पानी का बर्तन टूट गया, अंदेशा हुआ कि पानी बहकर नीचे जाए और आंहज़रत सल्ल० को तकलीफ़ हो, घर में ओढ़ने का सिर्फ़ एक लिहाफ़ था, हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० ने उसको डाल दिया कि पानी जज़्ब होकर रह जाए।[2]

मस्जिदे नबवी सल्ल० और मकानात की तअमीर

मदीना में क़याम के बाद सबसे पहला काम एक ख़ानए ख़ुदा की तअमीर थी, अब तक यह मअमूल था कि मवेशी ख़ाना में आप सल्ल० नमाज़ पढ़ा करते थे, दौलत कदा के क़रीब ख़ानदाने नज्जार की ज़मीन थी, जिसमें कुछ क़ब्रें थीं, कुछ खजूर के दरख़्त थे, आप सल्ल० ने उन लोगों को बुलाकर फ़रमाया "कि मैं यह ज़मीन बक़ीमत लेना चाहता हूं" वह बोले कि "हम क़ीमत लेंगे लेकिन आप से नहीं बल्कि ख़ुदा से" चूंकि अस्ल में वह ज़मीन दो यतीम बच्चों की थी, आप सल्ल० ने ख़ुद उन यतीमों को बुला भेजा, उन यतीमों ने भी अपनी काइनात नज़्र करना चाही लेकिन आप सल्ल० ने गवारा न किया, हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० ने

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-499
(2) मुस्तदरक हाकिम 3-360

कीमत अदा की, कब्रें उखड़वा कर ज़मीन हमवार कर दी गई और मस्जिद की तअमीर शुरू कर दी गई, शंहशाहे दो आलम (सल्ल0) फिर मज़दूरों के लिबास में था, सहाबए किराम रज़ि0 पत्थर उठा उठा कर लाते थे और रिज्ज़ पढ़ते जाते थे, आंहज़रत सल्ल0 भी उनके साथ आवाज़ मिलाते और यह पढ़तेः

اللّٰهُمَّ لَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرُ الْآخِرَةِ فَارْحَمِ الْأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةَ

"ऐ खुदा! कामियाबी सिर्फ़ आख़िरत की कामियाबी है, ऐ खुदा! मुहाजिरीन और अंसार पर रहम फ़रमा।"[1]

यह मस्जिद हर किस्म की तकल्लुफ़ात से बरी और इस्लाम की सादगी की तस्वीर थी, यअनी कच्ची ईंटों की दीवारें, बर्गे ख़ुर्मा का छप्पर, खजूर के सुतून थे, क़िब्ला बैतुल मक़्दिस की तरफ़ रखा गया,[2] लेकिन जब क़िब्ला बदल कर कअ़्बा की तरफ़ हो गया तो शुमाली जानिब एक नया दरवाज़ा क़ाइम कर दिया गया, फ़र्श चूंकि बिल्कुल ख़ाम था बारिश में कीचड़ हो जाता था, एक दफ़ा सहाबए किराम रज़ि0 नमाज़ के लिये आए तो कंकरियां लेते आए और अपनी अपनी नशिस्त गाह पर बिछा लीं, आंहज़रत सल्ल0 ने पसंद फ़रमाया और संगरेज़ों का फ़र्श बनवा दिया, मस्जिद के एक सिरे पर एक मुसक़्क़फ़ चबूतरा था जो सुफ़्फ़ा कहलाता था, यह उन लोगों के लिये था जो इस्लाम

(1) सीरतुन्नबी 1-280, 281, बहवाला सहीहुल बुख़ारी व सुनन अबी दाऊद
(2) ज़ादुल मआद 3-63

लाते थे और घर बार नहीं रखते थे, मस्जिदे नबवी सल्ल० जब तअमीर हो चुकी तो मस्जिद से मुत्तसिल ही आप सल्ल० ने अज़्वाजे मुतह्हरात के लिये मकान बनवाए, उस वक़्त तक हज़रत सौदा रज़ि० और हज़रत आइशा रज़ि० अक़्दे निकाह में आ चुकी थीं, इसलिये दो ही हुज्रे बने, जब और अज़्वाज आती गईं तो और मकानात बनते गए, यह मकानात कच्ची ईंटों के थे, इनमें से पांच खजूर की टट्टियों से बने थे, जो हुज्रे ईंटों के थे उनके अंदुरूनी हुज्रे भी टट्टियों के थे, तरतीब यह थी कि उम्मे सलमा रज़ि०, उम्मे हबीबा रज़ि०, ज़ैनब रज़ि०, जुवैरिया रज़ि०, मैमूना रज़ि०, ज़ैनब बिंते जह्श के मकानात शामी जानिब थे और हज़रत आइशा रज़ि०, सफ़ीया रज़ि०, सौदा रज़ि० मुक़ाबिल जानिब थीं, यह मकानात मस्जिद से इस क़दर मुत्तसिल थे कि जब आप सल्ल० मस्जिद में एतिकाफ़ में होते तो मस्जिद से सर निकाल देते और अज़्दवाजे मुतह्हरात घर में बैठे बैठे आप सल्ल० के बाल धो देती थीं, यह मकानात छः छः सात सात हाथ चौड़े और दस हाथ लम्बे थे, छत इतनी ऊंची थी कि आदमी खड़ा होकर छत को छू लेता था और दरवाज़ों पर कम्बल का पर्दा पड़ा रहता था।[1]

रातों को चराग़ नहीं जलते थे।[2] आंहज़रत सल्ल० के हमसाया में जो अंसार रहते थे उनमें सअ़द बिन उबादा

(1) सीरतुन्नबी सल्ल०, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-261, 282 बहवाला तबक़ाते इब्ने सअ़द नीज़ वफ़ाउल वफ़ा

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाबुस्सलात अलल फ़िराश

रज़ि0, सअ़द बिन मआज़ रज़ि0, उमारा बिन हरम रज़ि0, और अबू अय्यूब रज़ि0 रईस और दौलतमंद थे, यह लोग आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में दूध भेज दिया करते थे और इसी पर आप सल्ल0 बसर किया करते थे, सअ़द बिन उबादा रज़ि0 ने इल्तिज़ाम कर लिया था कि रात के खाने पर हमेशा अपने यहां से एक बड़ा बादिया भेजा करते थे जिसमें कभी सालन, कभी दूध, कभी घी होता था,[1] हज़रत अनस रज़ि0 की मां उम्मे अनस ने अपनी जाइदाद आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में पेश की, आंहज़रत सल्ल0 ने क़बूल फ़रमाकर अपनी दाया उम्मे ऐमन को दे दिया और खुद फ़क्र व फ़ाक़ा इख़्तियार फ़रमाया।[2]

अज़ान की मशरुइयत

इस्लाम की तमाम इबादात का अस्ली मर्कज़ वहदत व इज्तिमाअ़ है उस वक़्त तक किसी ख़ास अलामत के न होने की वजह से नमाज़े जमाअ़त का कोई इंतिज़ाम न था, लोग आगे पीछे आते और जो जिस वक़्त आता नमाज़ पढ़ लेता, आंहज़रत सल्ल0 को यह पसंद न था, आपने इरादा फ़रमाया कि लोग मुक़र्रर कर दिये जाएं जो वक़्त पर लोगों को घरों से बुला लाएं, लेकिन इसमें ज़हमत थी, सहाबा को बुलाकर मशवरा किया, लोगों ने मुख़्तलिफ़ राएं दीं, किसी ने कहा कि नमाज़ के वक़्त मस्जिद पर एक अलम खड़ा कर दिया जाए लोग देख कर आते जाएंगे, आप सल्ल0 ने यह तरीक़ा

(1) तबक़ाते इब्ने सअ़द, किताबुन्निसा, स0116

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हिबा, बाब फ़ज़्लुल मनीहा

नापसंद फ़रमाया, ईसाइयों और यहूदियों के यहां एलाने नमाज़ के जो तरीक़े हैं वह भी आप सल्ल0 की ख़िदमत में अर्ज़ किये गए, लेकिन आप सल्ल0 ने हज़रत उमर रज़ि0 की राए पसंद की, और हज़रत बिलाल रज़ि0 को हुक्म दिया कि अज़ान दें,[1] इससे एक तरफ़ तो नमाज़ की इत्तिला आम हो जाती थी दूसरी तरफ़ दिन में पांच दफ़ा दावते इस्लाम का एलान हो जाता था।

मुहाजिरीन व अंसार में भाई चारा का मुआहदा

मुहाजिरीन मक्का मुअज़्ज़मा से बिल्कुल बेसर व सामान आए थे, गो उनमें दौलतमंद और ख़ुशहाल भी थे लेकिन काफ़िरों से छिप कर निकले थे, इसलिये कुछ साथ न ला सके थे, अगर्चे मुहाजिरीन के लिये अंसार का घर मेहमानख़ानए आम था ताहम एक मुस्तक़िल इंतिज़ाम की ज़रूरत थी, मुहाजिरीन नज़्र और ख़ैरात पर सब्र करना पसंद नहीं करते थे, वह दस्त व बाज़ू से काम लेने के ख़ूगर थे, ताहम चूंकि बिल्कुल ख़ाली हाथ थे और एक हब्बा भी पास न था इसलिये आंहज़रत सल्ल0 ने ख़्याल फ़रमाया कि अंसार और उनमें रिश्तए उख़ूव्वत क़ाइम कर दिया जाए, जब मस्जिदे नबवी सल्ल0 की तअ़मीर क़रीबे ख़त्म हुई तो आप सल्ल0 ने अंसार को तलब फ़रमाया, हज़रत अनस रज़ि0 बिन मालिक जो उस वक़्त दस साला थे, उनके मकान में लोग

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब बद्उल अज़ान, सहीह मुस्लिम और दूसरी सिहाह की किताबों में भी यह वाक़िआ मज़कूर है।

जमा हुए[1] मुहाजिरीन की तअ्दाद 45 थी, आंहज़रत सल्ल0 ने अंसार की तरफ़ ख़िताब करके फ़रमाया "यह तुम्हारे भाई हैं" फिर मुहाजिरीन और अंसार में दो दो शख़्स को बुला कर फ़रमाते गए कि येह और तुम भाई भाई हो, और अब वह दरहक़ीक़त भाई भाई थे, अंसार ने मुहाजिरीन को साथ ले जाकर घर की एक एक चीज़ का जाइज़ा दे दिया कि आधा आप का और आधा हमारा है।[2] सअ्द रज़ि0 बिन अर्रबीअ् जो अब्दुर्रहमान रज़ि0 बिन औफ़ के भाई क़रार पाए थे उनकी दो बीवियां थीं, अब्दुर्रहमान से कहा कि एक को में तलाक़ दे देता हूं आप उससे निकाह कर लीजिये लेकिन उन्होंने एहसान मंदी के साथ इंकार किया।[3]

अंसार का माल व दौलत जो कुछ था नख़्लिस्तान थे, रूपये पैसे तो उस ज़माने में थे नहीं, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल0 से दरख़्वास्त की कि यह बाग़ हमारे भाईयों में बराबर तक़सीम कर दिये जाएं, मुहाजिरीन तिजारत पेशा थे और इसी वजह से खेती के फ़न से बिल्कुल नाआशना थे, इस बिना पर आंहज़रत सल्ल0 ने उनकी तरफ़ से इंकार किया, अंसार ने कहा सब कारोबार हम ख़ुद अंजाम दे लेंगे जो कुछ पैदावार होगी उसमें निसफ़ हिस्सा मुहाजिरीन का होगा, मुहाजिरीन ने उसको मंज़ूर किया,[4] यह रिशता बिल्कुल हक़ीक़ी रिशता बन गया, कोई अंसारी मरता तो

(1) ज़ादुल मआद 3-63

(2) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली 1-245, इब्ने हिशाम 1-504 ता 507

(3) व (4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब इख़ाउन्नबी सल्ल0

उसकी जाइदा और माल मुहाजिरीन को मिलता था और भाई बंद महरूम रहते, यह इस फ़रमाने इलाही की तअ़मील थी:

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ

"जो लोग ईमान लाए और हिज्रत की और खुदा की राह में माल व जान से जिहाद किया और वह लोग जिन्होंने इन लोगों को पनाह दी और उनकी मदद की, यह लोग बाहम भाई भाई हैं।"[1]

जंगे बदर के बाद जब मुहाजिरीन को इआनत की ज़रूरत न रही तो यह आयत उतरी:

وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ

"अरबाबे क़राबत एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं।[2] (अन्फ़ाल आयत 75)

दुन्या अंसार के इस ईसार पर हमेशा नाज़ करेगी लेकिन यह भी देखो कि मुहाजिरीन ने क्या किया? सअ़द रज़ि० बिन अर्रबीअ़ ने जब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को एक एक चीज़ का जाइज़ा देकर निस्फ़ ले लेने की दरख़्वास्त की तो उन्होंने कहा "खुदा यह सब आपको मुबारक करे मुझको सिर्फ़ बाज़ार का रास्ता बता दीजिये" उन्होंने कैनक़ाअ़ का जो मशहूर बाज़ार था जाकर रास्ता बता दिया, उन्होंन कुछ घी और कुछ पनीर ख़रीदा और शाम तक

(1) अन्फ़ाल, आयत 72

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर, बाब "وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ۔ الخ"

ख़रीद व फ़रोख़्त की, चंद रोज़ में इतना सरमाया हो गया कि शादी कर ली,[1] रफ़्ता रफ़्ता उनकी तिजारत को यह तरक़्क़ी हुई कि ख़ुद उनका क़ौल है कि ख़ाक पर हाथ डालता हूं तो सोना बन जाती है, उनका अस्बाबे तिजारत सात सात सौ ऊंटों पर लदा करता था और जिस दिन मदीना में पहुंचता तमाम शहर में धूम मच जाती थी,[2] बअूज़ सहाबा रज़ि० ने दुकानें खोल लीं, हज़रत अबू बक्र रज़ि० का कारख़ाना मक़ामे सुख़ में था, जहां वह कपड़े की तिजारत करते थे[3] हज़रत उस्मान रज़ि० बनू कैन्काअ़ के बाज़ार में खजूर की ख़रीद व फ़रोख़्त करते थे, हज़रत उमर रज़ि० भी तिजारत में मशग़ूल हो गए थे और शायद उनकी इस तिजारत की वुस्अत ईरान तक पहुंच गई थी,[4] और सहाबए किराम रज़ि० ने भी उसी क़िस्म की छोटी बड़ी तिजारत शुरू कर दी थी, सहीह बुख़ारी में रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० पर लोगों ने जब कसरते रिवायत की बिना पर एतिराज़ किया कि और सहाबा रज़िअल्लाहु अन्हुम तो इस क़दर रिवायत नहीं करते तो उन्होंने कहा "इसमें मेरा क्या क़ुसूर है, और लोग बाज़ार में तिजारत करते थे और मैं रात दिन बारगाहे नुबूव्वत में हाज़िर रहता था।[5]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब इख़ाउन्नबी सल्ल०

(2) असदुल ग़ाब्बा 3-314, 315

(3) तबक़ाते इब्ने सअ़द, 2-120

(4) मुस्नद अहमद में इन वाक़िआत का ज़िक्र मौजूद है।

(5) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब हिफ़्ज़ुल इल्म।

फिर जब ख़ैबर फ़त्ह हुआ तो तमाम मुहाजिरीन ने यह नख़्लिस्तान अंसार को वापस कर दिये, सहीह मुस्लिम बाबुल जिहाद में है "आंहज़रत सल्ल0 जब जंगे ख़ैबर से फ़ारिग़ हुए और मदीना वापस हुए तो मुहाजिरीन ने अंसार के अतीये जो नख़्लिस्तान की सूरत में थे वापस कर दिये" मुहाजिरीन के लिये मकानात का यह इंतिज़ाम हुआ कि अंसार ने अपने घरों के आसपास जो उफ़्तादा ज़मीनें थीं उनको दे दीं और जिनके पास ज़मीन न थी उन्होंने अपने मस्कूना मकानात दे दिये,[1] अंसार ने मुहाजिरीन की मेहमानी और हमदर्दी का जो हक़ अदा किया, दुन्या की तारीख़ में उसकी नज़ीर नहीं मिल सकती, बहरैन जब फ़त्ह हुआ तो आंहज़रत सल्ल0 ने अंसार को बुला कर फ़रमाया कि "मैं इसको अंसार में तक़सीम कर देना चाहता हूं" उन्होंने अर्ज़ की कि "पहले हमारे भाई मुहाजिरों को इतनी ही ज़मीनें इनायत फ़रमा दीजिये तब हम लेना मंज़ूर करेंगे।"[2]

एक दफ़ा एक फ़ाक़ा ज़दा शख़्स आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में आया कि सख़्त भूका हूं, आप सल्ल0 ने घर में दरयाफ़्त फ़रमाया कि कुछ खाने को है? जवाब आया कि "सिर्फ़ पानी" आप सल्ल0 ने हाज़िरीन की तरफ़ मुख़ातब होकर फ़रमाया "कोई है? जो इनको आज मेहमान बनाए।"

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब रद्दुल मुहाजिरीन इलल अंसार मुनाकिहहुम

(२) सहीहुल बुख़ारी, किताबु मनाक़िबिल अंसार, बाब क़ौलुन्नबी सल्ल0 "इस्बिरूनी हत्ता तलक़ूनी अलल हौज़"

अबू तलहा रज़ि० ने अर्ज़ की "मैं हाज़िर हूं" ग़र्ज़ वह अपने घर ले गए लेकिन वहां भी बरकत थी, बीवी ने कहा सिर्फ़ बच्चों का खाना मौजूद है, उन्होंने बीवी से कहा चराग़ बुझा दो, और वही खाना मेहमान के सामने लाकर रख दो, तीनों साथ खाने पर बैठे, मियां बीवी भूके बैठे रहे और इस तरह हाथ चलाते रहे कि गोया खा रहे हैं इसी वाक़िआ के बारे में यह आयत उतरी है:

وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ

"और गो उनको तंगी हो, ताहम अपने ऊपर दूसरों को तर्जीह देते हैं।"[1]

सुफ्फ़ए नबवी सल्ल०

एक साइबान था जो मस्जिदे नबवी सल्ल० के किनारे पर मस्जिद से मिला हुआ तैयार किया गया था,[2] सहाबए किराम रज़ि० में से अक्सर तो मशाग़िले दीनी के साथ हर क़िस्म के कारोबार यअ़नी तिजारत या ज़राअ़त भी करते थे लेकिन चंद लोगों ने अपनी ज़िंदगी सिर्फ़ इबादत और आंहज़रत सल्ल० की तरबियत पज़ीरी पर नज़्र कर दी थी, इन लोगों के बाल बच्चे न थे, और जब शादी कर लेते थे तो इस हल्क़ा से निकल आते थे, उनमें एक टोली दिन को जंगल से लकड़ियां चुन लाती और बेच कर अपने भाईयों के लिये कुछ खाना मुहय्या करती, यह लोग दिन में बारगाहे

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब क़ौलुल्लाह अज़्ज़ व जल्ल "وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ" फ़त्हुल बारी 7-119

(2) वफ़ाउल वफ़ा 1-321

नुबूव्वत में हाज़िर रहते और हदीसें सुनते और रात को उसी चबूतरा (सुफ़्फ़ा) पर पड़ रहते।[1]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 भी उन्ही लोगों में थे उनमें से किसी के पास चादर और तहमद दोनों चीज़ें साथ मुहय्या न हो सकीं, चादर को गले से इस तरह बांध लेते कि रानों तक लटक आती[2] अक्सर अंसार खजूर की फली हुई शाखें तोड़ कर लाते और छत में लगा देते, खजूरें जो टपक टपक कर गिरतीं यह उठाकर खा लेते, कभी दो दो दिन खाने को नहीं मिलता, अक्सर ऐसा होता कि रसूलुल्लाह सल्ल0 मस्जिद में तशरीफ़ लाते और नमाज़ पढ़ाते, यह लोग आकर नमाज़ में शरीक होते लेकिन भूक और ज़ोअ्फ़ से ऐन नमाज़ की हालत में गिर पड़ते, बाहर के लोग आते और उनको देखते तो समझते कि दीवाने हैं[3] आंहज़रत सल्ल0 के पास जब कहीं से सदक़ा का खाना आता तो मुसल्लम उनके पास भेज देते, और जब दावत का खाना आता तो उनको बुला लेते और उनके साथ बैठ कर खाते[4] अक्सर ऐसा होता कि रातों को आंहज़रत सल्ल0 उनको मुहाजिरीन और अंसार पर तक़सीम कर देते यअ़नी अपने मक़्दूर के मुवाफ़िक़ हर शख़्स एक एक, दो दो को अपने साथ ले जाए और उनको खाना खिलाए[5] हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ि0 निहायत फ़य्याज़ और दौलतमंद थे, वह कभी अस्सी अस्सी मेहमानों को

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारह, बाब सुबूतुल जन्ना लिश्शहीद (2) सहीहुल बुख़ारी 1-114, हिलयतुल औलिया 1-341 (3) सुनन तिर्मिज़ी, अबवाबुज़्ज़ोह्द मा जाआ फ़ी मईशति असहाबिन्नबी सल्ल0 (4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुर्रक़ाइक़, बाब कैफ़ा कान ऐशुन्नबी सल्ल0 व अस्हाबहु (5) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मवाक़ीत, बाब मअ़्ज़ैफ वल अह्ल, अस्सहर

लेकर जाते, आंहज़रत सल्ल0 उन लोगों का इस क़दर ख़्याल रखते थे कि जब एक दफ़ा आंहज़रत सल्ल0 से हज़रत फ़ातिमा ज़ुहरा रज़ि0 ने दरख़्वास्त की कि मेरे हाथों में चक्की पीसते पीसते नील पड़ गए हैं, मुझको एक कनीज़ इनायत हो, तो फ़रमाया यह नहीं हो सकता कि तुम को दूं और सुफ़्फ़ा वाले भूके मरें।[1] रातों को उमूमन यह लोग इबादत करते और कुर्आन मजीद पढ़ा करते, उनके लिये एक मुअल्लिम मुक़र्रर था उसके पास जाकर पढ़ते इसी बिना पर उनमें से अक्सर क़ारी कहलाते थे, दावते इस्लाम के लिये कहीं भेजना होता तो यह लोग भेजे जाते थे, ग़ज़वए मऊना में इन्ही में से सत्तर आदमी इस्लाम सिखाने के लिये भेजे गए थे।[2]

ग़ज़्वए बद्र

कुरैश ने हिज्रत के साथ ही मदीना पर हमला की तैयारियां शुरू कर दी थीं, अब्दुल्लाह बिन उबैय को उन्होंने ख़त लिख भेजा था कि या मुहम्मद (सल्ल0) को क़त्ल कर दो, या हम आकर तुम्हारा भी फ़ैसला कर देते हैं।[3] कुरैश की छोटी छोटी टुकड़ियां मदीना की तरफ़ गश्त लगाती रहती थीं, कुर्ज़ फ़ेहरी मदीना की चरागाहों तक आकर ग़ारतगरी करता था, हमला के लिये सबसे ज़रूरी चीज़

(1) सुनन बैहक़ी 9-304, मुस्नद अहमद 1-79, 106

(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारा, बाब सुबूतुल जन्ना लिश्शहीद, सही बुख़ारी में भी इसका ज़िक्र है।

(3) सुनन अबी दाऊद 2-67, बाब ख़बरुन्नज़ीर

मसारिफ़े जंग का बंदोबस्त था, इसलिये अब के मौसम में कुरैश का जो कारवाने तिजारत शाम को रवाना हुआ तो मक्का की तमाम आबादी ने जिसके पास जो रक़म थी कुल की कुल दे दी, न सिर्फ़ मर्द बल्कि औरतें जो कारोबारे तिजारत में बहुत कम हिस्सा लेती थीं उनका भी एक एक फ़र्द उसमें शरीक था, क़ाफ़िला अभी शाम से रवाना नहीं हुआ था कि हज़रमी के क़त्ल का इत्तिफ़ाक़िया वाक़िआ पेश आ गया, जिसने कुरैश की आतिशे ग़ज़ब को और भी भड़का दिया, इसी अस्ना में यह ख़बर मक्का मुअज़्ज़मा में फैल गई कि मुसलमान क़ाफ़िला लूटने को आ रहे हैं, कुरैश के ग़ैज़ व ग़ज़ब का बादल बड़े ज़ोर व शोर से उठा और तमाम अरब पर छा गया।[1]

आंहज़रत सल्ल0 को इन हालात की इत्तिला हुई तो आप सल्ल0 ने सहाबा रज़िअल्लाहु अन्हुम को जमा किया और वाक़िआ का इज़हार फ़रमाया।[2] हज़रत अबू बक्र रज़ि0 वग़ैरा ने जांनिसाराना तक़रीरें कीं, लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल0 अंसार की तरफ़ देखते थे अंसार ने बैअ़त के वक़्त

(1) सीरतुन्नबी सल्ल0, अल्लामा शिब्ली जि01-315, कुर्ज़ फ़ेहरी का वाक़िआ तबक़ाते इब्ने सअ़द 2-9 में और हज़रमी का वाक़िआ सुनन बैहक़ी 9-11 में मौजूद है।

(2) यह वाज़ेह रहे कि यह वाक़िआ मदीना मुनव्वरा से निकलने के बाद का है, मदीना मुनव्वरा से आप सल्ल0 क़ाफ़िला अबू सुफ़यान के इरादा से चले थे, जबकि अहादीसे सहीहा में सराहत है कि मदीना मुनव्वरा से ख़ुरूज के बाद अचानक यह बात सामने आई कि कुरैश का लश्करे जर्रार क़ाफ़िला के दिफ़ाअ़ के लिये क़रीब पहुंच चुका है, उस वक़्त आप सल्ल0 ने सहाबए किराम रज़ि0 से मशवरा फ़रमाया......यह बात भी ज़ेहन में रहनी चाहिये कि क़ाफ़िला अबू सुफ़यान के इरादा से आपके निकलने का मक़सद उस ख़तरा को दूर करना था जो मदीना पर हमला की शक्ल में मंडला रहा था, तारीख़ में सराहत है कि कुरैश ने उस क़ाफ़िला को अस्लन सामाने जंग तैयार करने के लिये रवाना किया था।

सिर्फ़ यह इक़रार किया था कि वह उस वक़्त तलवार उठाएंगे जब दुश्मन मदीना पर चढ़ आएं, आप सल्ल0 ने दोबारा मश्वरा फ़रमाया, तीसरी बार अंसार समझे कि आंहज़रत सल्ल0 हमारे जवाब के मुंतज़िर हैं, सअ़द बिन मआज़ रज़ि0 ने अ़र्ज़ किया शायद हुज़ूर (सल्ल0) ने यह समझा है कि अंसार अपने शहर से निकल कर हुज़ूर सल्ल0 की इआनत करना अपना फ़र्ज़ नहीं समझते हैं, अंसार की तरफ़ से मैं यह अ़र्ज़ करता हूं कि हम तो हर हालत में हुज़ूर सल्ल0 के साथ हैं, किसी से मुआहदा फ़रमाइये किसी से मुआहदा को नामंजूर कीजिये, हमारे माल व ज़र से जिस क़दर मंशाए मुबारक हो लीजिये, हमको जो मर्ज़िये मुबारक हो अता कीजिये, माल का जो हिस्सा हुज़ूर (सल्ल0) हम से लेंगे हमें वह ज़्यादा पसंद होगा उस माल से जो हुज़ूर (सल्ल0) हमारे पास छोड़ देंगे, हमको जो हुज़ूर (सल्ल0) देंगे हम उसकी तअ़मील करेंगे, अगर हुज़ूर (सल्ल0) ग़िमाद के चश्मा तक चलेंगे तो हम साथ होंगे अगर हुज़ूर (सल्ल0) हमको समंदर में घुस जाने का हुक्म देंगे तो हुज़ूर सल्ल0 के साथ वहां भी चलेंगे।[1] हज़रत मिक़दाद रज़ि0 ने कहा या रसूलुल्लाह (सल्ल0) हम वह नहीं कि क़ौमे मूसा अलै0 की तरह فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا اِنَّا هٰهُنَا قَاعِدُوْنَ कह दें, हम तो हुज़ूर (सल्ल0) के दाएं बाएं, आगे पीछे क़िताल के लिये हाज़िर हैं, उनकी इस तक़रीर से रसूलुल्लाह सल्ल0 का चेहरा चमक उठा।[2]

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-625, फ़त्हुल बारी 7-287,288, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब ग़ज़्वए बद्र (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़ौलुह तआला "اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ الخ"

बद्र की तरफ़ कूच और लश्करे इस्लाम व लश्करे कुफ़्फ़ार में ज़बरदस्त तफ़ावुत

12 रमज़ान 2 हि0 को आप सल्ल0 तक़रीबन तीन सौ जानिसारों के साथ शहर से निकले, एक मील चलकर फ़ौज का जाइज़ा लिया, जो कम उम्र थे वापस कर दिये गए कि ऐसे पुरख़तर मौक़ा पर बच्चों का काम नहीं, उमैर बिन वक़्क़ास रज़ि0 एक कम्सिन बच्चा थे जब उनसे वापसी को कहा गया तो वह रो पड़े, आख़िर आंहज़रत सल्ल0 ने इजाज़त दे दी, उमैर के भाई सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि0 ने कम्सिन सिपाही के गले में तलवार हमाइल की, अब फ़ौज की कुल तअ़दाद 313 थी, जिसमें साठ मुहाजिर और बाक़ी अंसार थे।[1] लशकर में सिर्फ़ दो घोड़े थे, एक हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 की सवारी में था और एक मिक़्दाद रज़ि0 बिन अलअस्वद की, ऊंट कुल सत्तर थे, एक एक पर दो दो, तीन तीन आदमी बारी बारी से बैठते थे, ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ल0 हज़रत अली रज़ि0 और मरसद ग़नवी एक ऊंट पर बारी बारी बैठते थे[2] मक्का मुअ़ज़्ज़मा से क़ुरैश बड़े सर व सामान से निकले थे, हज़ार आदमी की जमइयत थी सौ सौ सवारों का रिसाला था, रुअसाए क़ुरैश सब शरीक थे, अबू लहब मजबूरी की वजह से न आ सका था, इसलिये अपनी तरफ़ से उस ने क़ाइम मक़ाम भेज दिया था, रसद का

(1) तफ़सील तबक़ाते इब्ने सअ़द में है, हज़रत उमैर रज़ि0 का वाक़िआ असदुल ग़ाबा में मज़्कूर है। (2) सीरत इब्ने हिशाम 1-613, ज़ादुल मआ़द 2-171, मुस्नद अहमद और मुस्तदरक हाकिम की सहीह रिवायात में मरसद ग़नवी के बजाए अबू लुबाबा का ज़िक्र है।

यह इंतिज़ाम था कि उमराए कुरैश यअ़नी अब्बास, उत्बा बिन रबीआ, हर्स बिन आमिर, नसर बिन अलहारिस, अबू जहल, उमय्या, वग़ैरा बारी बारी हर रोज़ दस दस ऊंट ज़िब्ह करते और लोगों को खिलाते थे, उत्बा बिन रबीआ जो कुरैश का सबसे मुअज़्ज़ज़ रईस था फ़ौज का सिपह सालार था।[1]

कुरैश को बद्र के क़रीब पहुंच कर जब मअ़लूम हुआ कि अबू सुफ़यान का क़ाफ़िला ख़तरा की ज़द से निकल गया है तो कबीला ज़ोहरा और अ़दी के सरदारान ने कहा "अब लड़ना ज़रूरी नहीं" लेकिन अबू जहल ने न माना, ज़ोहरा और अ़दी के लोग वापस चले गए, बाक़ी फ़ौज आगे बढ़ी।[2]

कुरैश चूंकि पहले पहुंच गए थे उन्होंने मुनासिब मौक़ो पर कब्ज़ा कर लिया था, बख़िलाफ़ इसके मुसलमानों की तरफ़ चश्मा या कुंवां तक न था, ज़मीन ऐसी रेतीली थी कि ऊंटों के पांव रेते में धंस धंस जाते थे, हुबाब बिन मुंज़िर ने आंहज़रत सल्ल0 से अ़र्ज़ की कि जो मक़ाम इंतिख़ाब किया गया है वह्य की रू से है या फ़ौजी तदबीर है? इर्शाद हुआ कि वह्य नहीं है, हुबाब रज़ि0 ने कहा तो बेहतर होगा कि आगे बढ़ कर चश्मा पर क़ब्ज़ा कर लिया जाए और आसपास के कुवें बेकार कर दिये जाएं, आप सल्ल0 ने यह

(1) सीरत इब्ने हिशाम, क़िस्सा ग़ज़वए बद्र, अलबिदाया वन्निहाया 3-360, मुस्नद अहमद 2-193 में लश्करे कुफ़्फ़ार की तअ़दाद का ज़िक्र है।
(2) मुस्तदरक हाकिम 3-426, सीरत इब्ने हिशाम 1-619

राए पसंद फ़रमाई और इसी पर अमल किया गया, ताईदे एज़्दी और हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से मेंह बरस गया, जिससे गर्द जम गई और जा बजा पानी को रोक कर छोटे छोटे हौज़ बना लिये गए, कि वुज़ू और गुस्ल के काम आएं, इस कुदरती एहसान का ख़ुदा ने क़ुर्आन मजीद में भी ज़िक्र किया है "وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ" "और जबकि ख़ुदा ने आसमान से पानी बरसाया कि तुम को पाक करे" पानी पर अगरचे क़ब्ज़ा कर लिया गया, लेकिन साक़िये कौसर का फ़ैज़ आम था, इसलिये दुश्मनों को भी पानी लेने की आम इजाज़त थी।[1]

यह रात का वक़्त था तमाम सहाबा रज़ि0 ने कमर खोल खोल कर रात भर आराम फ़रमाया, लेकिन सिर्फ़ एक ज़ात थी (ज़ाते नबवी सल्ल0) जो सुब्ह तक बेदार और मसरूफ़े दुआ रही, सुब्ह हुई तो लोगों को नमाज़ के लिये आवाज़ दी, बादे नमाज़ जिहाद पर वअ़ज़ फ़रमाया।[2]

जंग की तैयारी

कुरैश जंग के लिये बेताब थे, ताहम कुछ नेक दिल भी थे जिनके दिल ख़ूंरेज़ी से लरज़ते थे, उनमें हकीम बिन हिज़ाम (जो आगे चल कर इस्लाम लाए) ने सरदारे फ़ौज उत्बा से जाकर कहा "आप चाहें तो आज का दिन आपकी नेकनामी की अबदी यादगार रह जाए, उत्बा ने कहा क्योंकर? हकीम

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-620, 621, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 3-35, इमाम हाकिम ने मुस्तदरक 3-326 में हज़रत हुबाब रज़ि0 की राए का तज़किरा फ़रमाया है, लेकिन इमाम ज़हबी ने इस हदीस को मुन्कर क़रार दिया है। (2) ज़ादुल मआ़द 3-179, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 3-39, अस्सुननुल कुब्रा लिन्नसाई, किताबुस्सलात

ने कहा कुरैश का जो कुछ मुतालबा है वह सिर्फ़ हज़रमी का खून है वह आपका हलीफ़ था, आप उसका खून बहा अदा कर दीजिये" उत्बा नेक नफ़्स आदमी था, उसने निहायत खुशी से मंजूर कर लिया, लेकिन चूंकि अबू जह्ल का इत्तिफ़ाक़े राए ज़रूरी था, हकीम उत्बा का पैग़ाम लेकर गए, अबू जह्ल तरकश से तीर निकाल कर फैला रहा था, उत्बा का पैग़ाम सुनकर बोला "हां उत्बा की हिम्मत ने जवाब दे दिया" उत्बा के फ़रज़ंद अबू हुज़ैफ़ा रज़ि0 इस्लाम ला चुके थे और इस मअ्रके में आंहज़रत सल्ल0 के साथ आए थे इस बिना पर अबू जह्ल ने यह बदगुमानी की कि उत्बा इसलिये लड़ाई से जी चुराते हैं कि उसके बेटे पर आंच न आए।

अबू जह्ल ने हज़रमी के भाई आमिर को बुलाकर कहा देखते हो, तुम्हारा खून बहा तुम्हारी आंख के सामने आकर निकला जाता है, आमिर ने अरब के दस्तूर के मुताबिक़ कपड़े फाड़ डाले और गर्द उड़ा कर "واعمراه واعمراه" का नअ्रा मारना शुरू किया, इस वाक़िआ ने तमाम फ़ौज में आग लगा दी।

उत्बा ने अबू जह्ल का तअ्ना सुना तो ग़ैरत से सख़्त बरहम हुआ और कहा कि मैदाने जंग बता देगा कि नामर्दी का दाग़ कौन उठाता है? यह कहकर मिग़फ़र मांगा, लेकिन उसका सर इस क़दर बड़ा था कि कोई मग़फ़र उसके सर पर ठीक न उतरा, मजबूरन सर से कपड़ा लपेटा और लड़ाई

के हथियार सजे।[1]

चूंकि आंहज़रत सल्ल0 अपने हाथ को खून से आलूदा करना पसंद नहीं फ़रमाते थे, सहाबा रज़ि0 ने मैदान के किनारे एक छप्पर का साइबना तैयार किया कि आप सल्ल0 उसमें तशरीफ़ रखें, सअ़द बिन मआज़ रज़ि0 दरवाज़ा पर तेग़ बकफ़ खड़े हुए कि कोई इधर न बढ़ने पाए।[2]

अगर्चे बारगाहे इलाही से फ़त्ह व नुस्रत का वादा हो चुका था, अनासिरे आलम आमादए मदद थे, मलाइका की फ़ौजें हमरिकाब थीं, ताहम आलमे अस्बाब के लिहाज़ से आप सल्ल0 ने उसूले जंग के मुताबिक़ फ़ौजें मुरत्तब कीं, मुहाजिरीन, औस और ख़ज़्रज के तीन दस्ते क़ाइम किये, मुहाजिरीन का अलम मुसअ़ब बिन उमैर रज़ि0 को इनायत फ़रमाया, ख़ज़्रज के अलम बरदार हुबाब बिन मंज़िर रज़ि0 और औस के सअ़द बिन मआज़ रज़ि0 मुक़र्रर हुए।

सुब्ह होते ही आप सल्ल0 ने सफ़ आराई शुरू की, दस्ते मुबारक में एक तीर था, उसके इशारे से सफ़ें क़ाइम करते थे कि कोई शख़्स तिल भर आगे या पीछे न रहने पाए, लड़ाई में शोर व गुल आम बात है, लेकिन मना कर दिया गया कि किसी के मुंह से आवाज़ तक न निकलने पाए।[3]

इस मौक़ा पर जबकि दुश्मन की अज़ीमुश्शान तअ़दाद मुक़ाबिल थी, और मुसलमानों की तरफ़ एक आदमी भी बढ़ जाता तो कुछ न कुछ मुसर्रत होती, आंहज़रत सल्ल0

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-622, 623, ज़ादुल मआ़द 3-779 (2) ज़ादुल मआ़द 3-620
(3) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-320

हमातन वफ़ा थे, अबू हुज़ैफ़ा बिन अल यमान और अबू हुसैल दो सहाबी मक्का से आ रहे थे, राह में कुफ़्फ़ार ने रोका कि मुहम्मद (सल्ल0) की मदद को जा रहे हो? उन्होंने इंकार किया और अदमे शिर्कत का वादा किया, आंहज़रत सल्ल0 के पास आए तो सूरते हाल अर्ज़ की, फ़रमाया हम हर हाल में वादा वफ़ा करेंगे, हमको सिर्फ़ खुदा की मदद दरकार है।[1]

अब दो सफ़ें आमने सामने मुक़ाबिल थीं, हक़ व बातिल, नूर व ज़ुल्मत, कुफ़्र व इस्लाम।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ،

"जो लोग बाहम लड़े, उनमें तुम्हारे लिये इबरत की निशानियां हैं, एक खुदा की राह में लड़ रहा था और दूसरा मुन्किरे खुदा था।"

यह अजीब मंज़र था, इतनी बड़ी वसीअ़ दुन्या में तौहीद की किस्मत सिर्फ़ चंद जानों पर मुंहसिर थी, सहीह मुस्लिम में है "कि आंहज़रत सल्ल0 पर निहायत खुज़ूअ़ की हालत तारी थी, दोनों हाथ फैला कर फ़रमाते थे "खुदाया! तूने मुझसे वादा किया है, आज पूरा कर" महवीयत और खुदी के आलम में चादर कंधे पर से गिर गिर पड़ती थी और आपको ख़बर तक न होती थी, कभी सज्दे में गिरते थे और फ़रमाते थे "कि खुदाया अगर यह चंद नुफ़ूस आज मिट गए तो फिर रूए ज़मीन पर कोई तेरी इबादत करने वाला न होगा।"

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाबुल वफ़ा बिल अहद

इस बेक़रारी पर बंदगाने ख़ास को रिक़्क़त आ गई, हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने अ़र्ज़ की "हुज़ूर ख़ुदा अपना वादा वफ़ा करेगा।"[1] आख़िर रूहानी तस्कीन के साथ "سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ" (क़मर) "फ़ौज को शिकस्त दी जाएगी और वह पुश्त फेर देंगे" पढ़ते हुए लबे मुबारक मुज़्दए फ़त्ह की पेशीन गोई से आशना हुए।[2]

क़ुरैश की फ़ौजें अब बिल्कुल क़रीब आ गई, ताहम आप सल्ल० ने सहाबए किराम को पेशक़दमी से रोका और फ़रमाया कि जब दुशमन पास आ जाएं तो तीर से रोको।

आप सल्ल० ने सब्र व इस्तिक़ामत की फ़ज़ीलत, इसकी बिना पर अल्लाह की मदद, फ़त्ह व ज़फ़र और आख़िरत के सवाब का ज़िक्र फ़रमाया, आप सल्ल० ने फ़रमाया कि जो अल्लाह के रास्ते में शहीद होगा उसके लिये अल्लाह ने जन्नत वाजिब कर दी, यह सुनकर उमैर बिन अल हुमाम रज़ि० खड़े हो गए और कहने लगे कि या रसूलुल्लाह सल्ल०! ऐसी जन्नत जिसकी चौड़ाई ज़मीन व आसमान के बराबर हो? फ़रमाया कि "हां" कहा कि ऐसी बात है या रसूलुल्लाह सल्ल०? फ़रमाया ऐसी बात क्यों कहते हो? अ़र्ज़ किया कि नहीं या रसूलुल्लाह सल्ल०! यह मैं सिर्फ़ इस शौक़ में कह रहा हूं कि शायद मुझे भी वह नसीब हो, फ़रमाया "तुम्हें वह नसीब होगी" उन्होंने अपनी ढाल में से खजूर निकाल कर खाना शुरू किये फिर कहने लगे अगर मैं इन

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाबुल इम्दाद बिल मलाइका फ़ी ग़ज़वए बद्र

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़ौलुहू तआला "اذ تستغيثون ربكم"

खजूरों के ख़त्म होने का इंतिज़ार करूं तो यह बड़ी लम्बी ज़िंदगी हुई यह कहकर खजूर फेंके और आगे बढ़कर शहादत से सुर्ख़ रू हुए।[1]

यह मअ़रका ईसार व जाँ बाज़ी का सबसे बड़ा हैरत अंगेज़ मंज़र था, दोनों फ़ौजें सामने आईं तो लोगों को नज़र आया कि खुद उनके जिगर के टुक्ड़े तलवार के सामने हैं, हज़रत अबू बक्र रज़ि० के बेटे (जो अब तक काफ़िर थे) मैदाने जंग में बढ़े तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० तलवार खींच कर निकले,[2] उत्बा मैदान में आया तो हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० (उत्बा के फ़रज़ंद थे) उसके मुक़ाबला को निकले, हज़रत उमर रज़ि० की तलवार मामूं के खून से रंगीन थी।[3]

आग़ाज़े जंग

लड़ाई का आग़ाज़ यूं हुआ कि सबसे पहले आमिर हज़रमी जिसको भाई के खून का दावा था आगे बढ़ा, मुह्ज्जअ़ हज़रत उमर रज़ि० का गुलाम उसके मुक़ाबला को निकला और मारा गया[3] उत्बा जो सरदारे लशकर था, अबू जह्ल के तअ़ना से सख़्त बरहम था, सबसे पहले वही भाई और बेटे को लेकर मैदान में आया और मुबारज़त तलबी की। अरब में दस्तूर था कि नामवर लोग कोई इम्तियाज़ी निशान लगा कर मैदाने जंग में जाते थे, उत्बा के सीने पर शुतुर मुर्ग़

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारा, बाब सुबूतुल जन्ना लिश्शहीद

(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-238

(3) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-322

के पर थे, हज़रत औफ़ रज़ि०, हज़रत मआज़ रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० मुक़ाबला को निकले, उत्बा ने नाम व नसब पूछा और जब यह मअलूम हुआ कि अंसार हैं तो उत्बा ने कहा हमको तुम से ग़र्ज़ नहीं, फिर आंहज़रत (सल्ल०) की तरफ़ ख़िताब करके कहा कि मुहम्मद सल्ल०! यह लोग हमारे जोड़ के नहीं, आंहज़रत सल्ल० के इर्शाद के मुताबिक़ अंसार हट आए और हज़रत हम्ज़ा रज़ि०, हज़रत अली रज़ि०, और हज़रत अबू उबैदा रज़ि० मैदान में आए, चूंकि उन लोगों के चेहरों पर नक़ाब थी, उत्बा ने पूछा तुम कौन हो? सबने नाम व नसब बताए, उत्बा ने कहा "हां अब हमारा जोड़ है।"

उत्बा हज़रत हम्ज़ा रज़ि० से, और वलीद हज़रत अली रज़ि० से मुक़ाबिल हुआ, और दोनों मारे गए, लेकिन उत्बा के भाई शैबा ने हज़रत अबू उबैदा रज़ि० को ज़ख़्मी कर दिया, हज़रत अली रज़ि० ने बढ़कर शैबा को क़त्ल कर दिया और अबू उबैदा रज़ि० को कंधे पर उठाकर रसूल सल्ल० की ख़िदमत में लाए, हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने आंहज़रत सल्ल० से पूछा कि क्या मैं दौलते शहादत से महरूम रहा? आप सल्ल० ने फ़रमाया "नहीं तुमने शहादत पाई" अबू उबैदा रज़ि० ने कहा आज अबू तालिब ज़िंदा होते तो तस्लीम करते कि उनके इस शेअर का मुस्तहिक़ मैं हूं।[1]

(1) सुनन अबी दाऊद, किताबुल जिहाद, बाबुल मुबारज़ा मिन हदीसे अली, मुस्नद अहमद 1-117, तफ़सील से ज़रक़ानी ने अलमवाहिब में यह वाक़िआ बयान किया है, सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए बद्र में यह मज़कूर है कि هذان ـــــ اختصموا इसी सिलसिला में नाज़िल हुई।

وَنُسْلِمُهُ حَتَّىٰ نُصَرَّعَ حَوْلَهُ وَنَذْهَلُ عَنْ أَبْنَائِنَا وَالْحَلَائِلِ

"हम मुहम्मद (सल्ल0) को उस वक़्त दुशमनों के हवाला करेंगे जब उनके गिर्द लड़कर मर जाएं, और हम मुहम्मद (सल्ल0) के लिये अपने बेटों और बेटियों को भूल जाते हैं।"

सईद बिन अलआस का बेटा (उबैदा) सर से पांव तक लोहे में डूबा हुआ सफ़ से निकला और पुकार कर कहा कि "मैं अबू किरश हूं" हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 उसके मुक़ाबला को निकले और चूंकि सिर्फ़ उसकी आंखें नज़र आती थीं, ताक कर आंख में बर्छी मारी वह ज़मीन पर गिरा और मर गया, बर्छी इस तरह पैवस्त हो गई थी कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 ने उसकी लाश पर पांव अड़ा कर खींचा तो बड़ी मुश्किल से निकली, लेकिन दोनों सिरे ख़म हो गए, यह बर्छी यादगार रही, यअ़नी हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 से आंहज़रत सल्ल0 ने मांग ली, फिर चारों ख़ुलफ़ा के पास मुंतक़िल होती रही।[1] फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि0 के पास आई, हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 ने इस मअ़रका में कई कारी ज़ख़्म उठाए, शाना में जो ज़ख़्म था इतना गहरा था कि अच्छे हो जाने पर उसमें उंगली चली जाती थी, चुनांचे उनके बेटे उर्वा बचपन में इन ज़ख़्मों से खेला करते थे, जिस तलवार से लड़े थे वह लड़ते लड़ते गिर गई थी, चुनांचे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि0 शहीद हुए तो अब्दुल मलिक ने उर्वा से कहा तुम ज़ुबैर (रज़ि0) की तलवार पहचान लोगे? उन्होंने कहा हां!

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब शुहूदुल मलाइका बदरन

अब्दुल मलिक ने पूछा क्योंकर? बोले बद्र के मअ़रका में उसमें दंदाने पड़ गए थे, अब्दुल मलिक ने तस्दीक़ की और यह मिस्रअ़ पढ़ा-

"بِهِنَّ فُلُوْلٌ مِنْ قِرَاعِ الْكَتَائِبِ"[1]

अब्दुल मलिक ने तलवार उर्वा को दे दी, उन्होंने उसकी क़ीमत लगवाई तो तीन हज़ार ठहरी, उसके क़ब्ज़ा पर चांदी का काम था।[2] अब आम हमला शुरू हो गया, मुशिरकीन अपने बल बूते पर लड़ रहे थे, लेकिन इधर सरवरे आलम सल्ल0 सर बसज्दा, सिर्फ़ ख़ुदा की कूव्वत का सहारा ढूंढ रहा था।[3]

नामवर सरदाराने कुफ्फ़ार का क़त्ल

अबू जह्ल की शरारत और दुशमनीये इस्लाम का आम चर्चा था इस बिना पर अंसार में मुअ़व्विज़ और मुआ़ज़ दो भाईयों ने अहद किया था कि यह शक़ी जहां नज़र आ जाएगा या उसको मिटा देंगे या ख़ुद मिट जाएंगे, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0 का बयान है कि मैं सफ़ में था कि दफ़अ़तन मुझको दाएं बाएं दो नौजवान नज़र आए, एक ने मुझसे कान में पूछा कि अबू जह्ल कहां है? मैंने कहा बिरादर ज़ादा! अबू जह्ल को पूछकर क्या करेगा? बोला कि

---

(1) नाबिग़ा ज़ुबयानी के शेअ़र का एक मिस्रअ़ है जिसका पहला मिस्रअ़ "ولا عيب فيهم غير أن سيوفهم" है।

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी बाब क़त्लु अबी जह्ल

(3) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-324

मैंने खुदा से अहद किया है कि अबू जह्ल को जहां देख लूंगा, या उसे क़त्ल करूंगा या खुद लड़कर मारा जाऊंगा, मैं यह जवाब नहीं देने पाया था कि दूसरे नौजवान ने भी मुझसे कानों में यही बातें कीं, मैंने दोनों को इशारे से बताया कि अबू जह्ल वह है, मेरा यह बताना था कि दोनों बाज़ की तरह झपटे, और अबू जह्ल ख़ाक पर था, यह दोनों जवान अफ़राअ के बेटे थे (मअ़व्विज़ और मुआ़ज़)[1] अबू जह्ल के बेटे अकरमा ने अ़क़ब से आकर मआ़ज़ के बाएं शाना पर तलवार मारी, जिससे बाज़ू कट गया लेकिन तस्मा बाक़ी रहा, मुआज़ ने अकरमा का तआ़क़ुब किया, वह बचकर निकल गया, मुआ़ज़ उसी हालत में लड़ रहे थे, लेकिन हाथ लटकने से ज़हमत होती थी, हाथ को पांव के नीचे दबाकर खींचा कि तस्मा भी अलग हो गया और अब वह आज़ाद थे।[2] आंहज़रत सल्ल० ने लड़ाई से पहले इर्शाद फ़रमाया "कुफ़्फ़ार के साथ जो लोग आए हैं उनमें से ऐसे लोग भी हैं जो ख़ुशी से नहीं बल्कि क़ुरैश के जब्र से आए हैं" उन लोगों के नाम भी आपने बता दिये थे, उनमें अबुल बुख़्तरी भी था, मुहजज़्ज़र अंसारी की नज़र जब उस पर पड़ी तो मुहजज़्ज़र रज़ि० ने कहा चूंकि रसूलुल्लाह सल्ल० ने तेरे क़त्ल से मना फ़रमाया है इसलिये तुझको छोड़ देता हूं, अबुल बुख़्तरी के साथ उसका एक रफ़ीक़ भी था, अबुल बुख़्तरी ने

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल ख़ुम्स, बाब मन लम यख़्मुसिल असलाब, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब इस्तिह्क़ाक़ुल क़ातिल सलबुल क़तील,
(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-635, मुस्नद अहमद में तफ़सील से इसका तज़किरा है 1-444

कहा इसको भी, मुजज़्ज़र ने कहा नहीं, अबुल बुख़्तरी ने कहा तो मैं ख़ातूनाने अरब का यह तअ्ना नहीं सुन सकता कि अबुल बुख़्तरी ने अपनी जान बचाने के लिये रफ़ीक़ का साथ छोड़ दिया, यह कहकर अबुल बुख़्तरी यह रिज्ज़ पढ़ता हुआ मुजज़्ज़र पर हमला आवर हुआ और मारा गया।

لَنْ یَتْرُکَ ابْنُ حُرَّةٍ زَمِیْلَهٗ   حَتّٰی یَمُوْتَ اَوْیَرٰی سَبِیْلَهٗ

"शरीफ़ज़ादा अपने रफ़ीक़ को नहीं छोड़ सकता जब तक मर न जाए या मौत का रास्ता न देख ले।"[(1)]

उत्बा और अबू जह्ल के मारे जाने से कुरैश का पाए सिबात उखड़ गया और फ़ौज में बेदिली छा गई।

आंहज़रत सल्ल0 का शदीद दुशमन उमय्या बिन ख़लफ़ भी जंगे बद्र में शरीक था, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0 ने उससे किसी ज़माने में मुआहदा किया था कि वह मदीना में आएगा तो यह उसकी जान के ज़ामिन होंगे, बद्र में इस दुशमने ख़ुदा से इंतिक़ाम लेने का ख़ूब मौक़ा था, लेकिन चूंकि अहद की पाबंदी इस्लाम का शिआ़र है, हज़रत अब्दुर्रहमान ने चाहा कि वह बच कर निकल जाए उसको लेकर पहाड़ पर चले गए, इत्तिफ़ाक़ यह कि हज़रत बिलाल रज़ि0 ने देख लिया, अंसार को ख़बर कर दी, दफ़अ़तन लोग टूट पड़े, उन्होंने उमय्या के बेटे को आगे कर दिया, लोगों ने उसको क़त्ल कर दिया, लेकिन उस पर भी क़नाअ़त न की

(1) असदुल ग़ाबा 4-288, अलबिदाया वन्निहाया 3-285

और उमय्या की तरफ़ बढ़े, उन्होंने उमय्या से कहा तुम ज़मीन पर लेट जाओ, वह लेट गया तो यह उस पर छा गए कि लोग उसको मारने न पाएं, लेकिन लोगों ने उनकी टांगों के अंदर से हाथ डाल कर उसको क़त्ल कर दिया, हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० की भी एक टांग ज़ख़्मी हुई और ज़ख़्मों का निशान मुद्दतों तक क़ाइम रहा।[1] अबू जह्ल और उत्बा वग़ैरा के क़त्ल के बाद क़ुरैश ने सपर डाल दी और मुसलमानों ने उनको गिरफ़्तार करना शुरू कर दिया। हज़रत अब्बास, अक़ील (हज़रत अली रज़ि० के भाई), नौफ़ल, अस्वद बिन आमिर, अब्द बिन ज़म्आ और बहुत से बड़े बड़े मुअज़्ज़ज़ लोग गिरफ़्तार हुए।

आंहज़रत सल्ल० ने हुक्म दिया कि कोई शख़्स जाकर ख़बर लाए अबू जह्ल का क्या अंजाम हुआ? अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने जाकर लाशों में देखा तो ज़ख़्मी पड़ा हुआ दम तोड़ रहा था, बोले तू अबू जह्ल है? उसने कहा एक शख़्स को उसकी क़ौम ने क़त्ल कर दिया तो यह फ़ख़्र की क्या बात है, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० उसका सर काट लाए और आंहज़रत सल्ल० के क़दमों पर डाल दिया।[2]

फ़त्हे मुबीन

ख़ातमए जंग पर मअ़लूम हुआ कि मुसलमानों में से सिर्फ़ 14/ शख़्सों ने शहादत पाई, जिसमें 6/ मुहाजिर और बाक़ी अंसार थे।[3] लेकिन दूसरी तरफ़ क़ुरैश की अस्ली

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल वकाला, बाब इज़ा वक्कलल मुस्लिमु हरबीयन (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़त्लु अबी जह्ल (3) सीरत इब्ने कसीर 2-463

ताकत टूट गई, रुअसाए कुरैश जो शुजाअत में नामवर और कबाइल के सिपहसालार थे एक एक करके मारे गए, उनमें उत्बा, शैबा, अबू जहल, अबुल बुख़्तरी, ज़म्आ बिन अलअस्वद, आ़स बिन हिशाम, उमय्या बिन ख़लफ़, मुनब्बह बिन अलहज्जाज कुरैश के सरताज थे, तकरीबन 70 आदमी कत्ल और उसी कदर गिरफ़्तार हुए।[1] असीराने जंग में से उक्बा और नुज़र बिन हारिस रिहा कर दिये गए, बाकी गिरफ़्तार होकर मदीना आए, उनमें हज़रत अब्बास, अकील (हज़रत अली रज़ि0 के भाई), अबुल आ़स (आंहज़रत सल्ल0 के दामाद) भी थे।[2]

लड़ाइयों में आंहज़रत सल्ल0 का मअ़मूल था कि जहां कोई लाश नज़र आती थी आप सल्ल0 उसको वहीं दफ़्न कर देते थे, लेकिन इस मौका पर कुश्तों की तअ़दाद ज़्यादा थी इसलिये एक एक का अलग अलग दफ़्न कराना मुश्किल था, एक वसीअ़ कुंवां था, तमाम लाशें आपने उसमें डलवा दीं,[3] लेकिन उमय्या की लाश फूल कर इस काबिल नहीं रही थी, इसलिये वहीं ख़ाक में दबा दी गई।[4]

असीराने जंग के साथ सुलूक

असीराने जंग दो दो चार चार सहाबए किराम को तक्सीम कर दिये गए और इर्शाद हुआ कि आ़राम के साथ रखे जाएं, सहाबा रज़ि0 ने उनके साथ यह बरताव किया कि

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए बद्र
(2) तारीख़े तबरी 3-38, अलबिदाया वन्निहाया 3-297
(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब कत्लु अबी जह्ल
(4) तारीख़े तबरी 2-37

उनको खाना खिलाते और खुद खजूर खाकर रह जाते थे, उन कैदियों में अबू उज़ैज़ भी थे, जो हज़रत मस्अब बिन उमैर रज़ि० के भाई थे, उनका बयान है कि मुझको जिन अंसारियों ने अपने घर में कैद कर रखा था, जब सुब्ह या शाम का खाना लाते तो रोटी मेरे सामने रख देते और खुद खजूरें उठा लेते, मुझको शर्म आती और मैं रोटी उनके हाथ में दे देता लेकिन वह हाथ भी न लगाते और मुझी को वापस कर देते, यह इस बिना पर था कि आंहज़रत सल्ल० ने ताकीद की थी कि कैदियों के साथ अच्छा सुलूक किया जाए।[1]

कैदियों में एक शख़्स सुहैल बिन अम्र था जो निहायत फसीहुल लिसान था और आम मज्मओं में आंहज़रत सल्ल० के खिलाफ तकरीरें किया करता था, हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, या रसूलुल्लाह! इसके दो निचले दांत उखड़वा दीजिये कि फिर अच्छा न बोल सके, आंहज़रत सल्ल० ने फरमाया कि मैं अगर इसके उज़्व बिगाड़ दूंगा (मुस्ला) तो गो नबी हूं लेकिन खुदा इसकी जज़ा में मेरे अअ्ज़ा भी बिगाड़ेगा।[2] असीराने जंग के पास कपड़े न थे, आंहज़रत सल्ल० ने सब को कपड़े दिलवाए, लेकिन हज़रत अब्बास का कद इस कदर ऊंचा था कि किसी का कुर्ता उनके बदन पर ठीक न उतरता था, अब्दुल्लाह बिन उबैय (रईसुल मुनाफिकीन) ने जो हज़रत अब्बास का हम कद था अपना कुर्ता मंगवा कर

(1) तारीखे तबरी 2-39, तबकात इब्ने सअद 2-14

(2) सीरतुन्नबी 1-330 बहवाला तारीखे तबरी

दिया, सहीह बुख़ारी में है कि आंहज़रत सल्ल0 ने अब्दुल्लाह के कफ़न के लिये जो अपना कुर्ता इनायत फ़रमाया था वह इसी एहसान का मुआवज़ा था।[1]

असीराने जंग से चार चार हज़ार दिरहम फ़िदया लिया गया, लेकिन जो लोग नादारी की वजह से फ़िदया अदा नहीं कर सकते थे वह छोड़ दिये गए, उनमें से जो लिखना जानते थे उनको हुक्म हुआ कि दस दस बच्चों को लिखना सिखा दें तो छोड़ दिये जाएंगे।[2] हज़रत ज़ैद बिन साबित ने इसी तरह लिखना सीखा था।[3]

अंसार ने आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में अर्ज़ की कि हज़रत अब्बास हमारे भांजे हैं हम उनका फ़िदया छोड़ देते हैं लेकिन आंहज़रत सल्ल0 ने मुसावात की बिना पर गवारा नहीं फ़रमाया और उनको भी फ़िदया अदा करना पड़ा।[4] फ़िदया की आम मिक़्दार चार हज़ार दिरहम थी, लेकिन उमरा से ज़्यादा लिया गया, हज़रत अब्बास दौलतमंद थे इसलिये उनसे भी ज़्यादा रक़म वसूल की गई, उन्होंने आंहज़रत सल्ल0 से शिकायत की, लेकिन उनको क्या मअ़लूम कि इस्लाम ने जो मुसावात क़ाइम की उसमें क़रीब व बईद, अज़ीज़ व बेगाना, आम व ख़ास के तमाम तफ़रक़े मिट चुके थे, लेकिन एक तरफ़ तो अदाए फ़र्ज़ की यह

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब अल किस्वा लिल उसारा
(2) मुस्नद अहमद बिन हंबल 1-247
(3) सीरतुन्नबी, बहवाला तबक़ाते इब्ने सअ़द
(4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब शुहूदुल मलाइका बदरन

मुसावात थी, दूसरी तरफ मुहब्बत का तक़ाज़ा यह था कि हज़रत अब्बास की कराह सुनकर रात को अराम न फ़रमा सके, लोगों ने उनकी गिरह खोली तो आपने आराम फ़रमाया।[1]

हज़रत अबुल आस रज़ि० का इस्लाम लाना

आंहज़रत सल्ल० के दामाद अबुल आस रज़ि० भी असीराने जंग में आए थे, उनके पास फ़िदया की रक़म न थी, आंहज़रत सल्ल० की साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ि० को (जो उनकी ज़ौजा थीं और मक्का में थीं) कहला भेजा कि फ़िदया की रक़म भेज दें, हज़रत ज़ैनब रज़ि० का जब निकाह हुआ था तो हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने जहेज़ में उनको एक क़ीमती हार दिया था, हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने वही हार गले से उतार कर भेज दिया, आंहज़रत सल्ल० ने देखा तो 25 बरस पहले का मुहब्बत आमेज़ वाक़िआ याद आ गया, आप सल्ल० बेइख़्तियार रो पड़े, और सहाबा से फ़रमाया कि तुम्हारी मर्ज़ी हो तो बेटी को मां की यादगार वापस कर दो, सबने तस्लीम की, गर्दनें झुका दीं और हार वापस कर दिया।

अबुल आस रज़ि० रिहा होकर मक्का आए और हज़रत ज़ैनब रज़ि० को मदीना भेज दिया, अबुल आस बहुत बड़े ताजिर थे, चंद साल के बाद बड़े सर व सामान से शाम की तिजारत लेकर निकले, वापसी में मुसलमान दस्तों ने उनको

(1) अलबिदाया वन्निहाया 2-300

मअ़ तमाम माल व अस्बाब गिरफ़्तार कर लिया, अस्बाब एक एक सिपाही पर तक़सीम हो गया, यह छिपकर हज़रत ज़ैनब रज़ि० के पास पहुंचे, उन्होंने पनाह दी, आंहज़रत सल्ल० ने लोगों से फ़रमाया कि अगर मुनासिब समझो तो अबुल आ़स का अस्बाब वापस कर दो, फिर तस्लीम की गर्दनें झुक गईं और एक एक धागा तक सिपाहियों ने ला लाकर वापस कर दिया, अब यह वार ऐसा न था जो ख़ाली जाता, अबुल आ़स मक्का आए और तमाम शुरका को हिसाब समझा कर दौलते इस्लाम से फ़ाइज़ हुए, और यह कह दिया कि मैं इसलिये आकर हिसाब समझा कर वापस जा रहा हूं ताकि यह न कहो कि अबुल आ़स हमारा रूपया खा गया और तक़ाज़े के डर से मुसलमान हो गया।[1]

हज़रत उमैर बिन वह्ब रज़ि० का क़बूले इस्लाम

उमैर बिन वहब क़ुरैश में इस्लाम का एक सख़्त दुश्मन था वह और सफ़वान बिन उमय्या हुजरे में बैठे हुए मक़तूलीने बद्र का मातम कर रहे थे, सफ़वान ने कहा "ख़ुदा की क़सम अब जीने का मज़ा नहीं" उमैर ने कहा सच कहते हो अगर मुझ पर क़र्ज़ न होता और बच्चों का ख़्याल न होता तो मैं सवार होकर जाता और मुहम्मद (सल्ल०) को क़त्ल कर आता, मेरा बेटा वहां क़ैद है।

सफ़वान ने कहा तुम क़र्ज़ की और बच्चों की फ़िक्र न करो इन कामों का मैं ज़िम्मादार हूं, उमैर ने घर आकर

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-657, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 3-154 ता 157, तारीख़े तबरी 3-43, 44

तलवार ज़ह्र में बुझाई और मदीना पहुंचा, हज़रत उमर रज़ि0 ने उसके तेवर देख लिये, गला दबाए हुए उसको आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में लाए, आप सल्ल0 ने फ़रमाया उमर! छोड़ो, उमैर! क़रीब आ जाओ, पूछा किस इरादे से आए हो? जवाब दिया बेटे को छुड़ाने आया हूं, फ़रमाया फिर तलवार क्यों हमाइल है? उमैर ने कहा आख़िर तलवारें बद्र में किस काम आईं, फ़रमाया क्यों नहीं, तुमने और सफ़वान ने हुजरे में बैठ कर मेरे क़त्ल की साज़िश नहीं की? उमैर यह बात सुनकर सन्नाटे में आ गया, बेइख़्तियार बोला, मुहम्मद (सल्ल0) बेशक तुम पैग़म्बर हो, बख़ुदा मेरे और सफ़वान के सिवा इस मुआमला की किसी को ख़बर न थी। क़ुरैश जो आंहज़रत सल्ल0 के क़त्ल की ख़बर सुनने के मुंतज़िर थे उन्होंने उमैर के मुसलमान होने की ख़बर सुनी।

नबी सल्ल0 ने सहाबा से फ़रमाया अपने भाई को दीन सिखाओ, क़ुर्आन याद कराओ और इसके फ़रज़ंद को आज़ाद कर दो, उमैर ने अर्ज़ किया ऐ रसूले ख़ुदा सल्ल0! मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं मक्का ही वापस जाऊं और लोगों को इस्लाम की दावत दूं, मेरे दिल में आता है कि अब मैं बुत परस्तों को उसी तरह सताया करूं जिस तरह मुसलमानों को सताता रहा हूं, उमैर के मदीना जाने के बाद सफ़वान का यह हाल था कि सरदाराने क़ुरैश से कहा करता था। देखो चंद रोज़ में क्या गुल खिलने वाला है कि बद्र का सदमा भूल जाओगे, सफ़वान को ख़बर लगी कि उमैर

मुसलमान हो गया तो उसे सख़्त सदमा हुआ और उसने कसम खाई कि जब तक ज़िंदा हूं उमैर से बात न करूंगा, न उसे कोई फ़ाएदा पहुंचने दूंगा, उमैर मक्का में आया वह इस्लाम की मुनादी किया करता था और अक्सर लोग उसके हाथ पर मुसलमान हो गए थे।[1]

हज़रत फ़ातिमा रज़ि़अल्लाहु अन्हा का अक़्द

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० जो हुज़ूर की सबसे कम्सिन साहबज़ादी थीं, अब उनकी उम्र 18 बरस की हो चुकी थी और शादी के पैग़ाम आने लगे थे, हज़रत अली रज़ि० ने जब दरख़्वास्त की तो आप सल्ल० ने हज़रत फातिमा रज़ि० की मर्ज़ी दरयाफ़्त की, वह चुप रहीं, यह एक तरह का इज़हार था, आप सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० से पूछा कि तुम्हारे पास महर में देने के लिये क्या है? बोले कुछ नहीं, आप सल्ल० ने फ़रमाया "वह हतीया की ज़िरह क्या हुई" (बद्र में हाथ आई थी) अर्ज़ की वह तो मौजूद है, आप सल्ल० ने फ़रमाया "बस वह काफ़ी है।"

नाज़िरीन को ख़्याल होगा कि बड़ी कीमती चीज़ होगी, लेकिन अगर वह उसकी मिक़्दार जानना चाहते हैं तो जवाब यह है कि सिर्फ़ सवा सौ रूपये की ज़िरह के सिवा और जो कुछ हज़रत अली रज़ि० का सरमाया था वह एक भेड़ की खाल और एक बोसीदा यमनी चादर थी, हज़रत अली रज़ि० ने यह सब सरमाया हज़रत फातिमा ज़ोहरा रज़ि० के नज़्र

(1) दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 3-147 ता 149, सीरत इब्ने हिशाम 1-661

किया, हज़रत अली रज़ि० अब तक आंहज़रत सल्ल० के ही पास रहते थे, शादी के बाद ज़रूरत हुई कि अलग घर लें, हारिसा बिन नोअ्मान अंसारी के मुतअ्द्दद मकानात थे, जिनमें से वह कई आंहज़रत सल्ल० की नज़्र कर चुके थे, हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने आंहज़रत सल्ल० से कहा कि उन्ही से और मकान दिलवा दीजिये, आप सल्ल० ने फ़रमाया कहां तक, अब उनसे कहते कहते शर्म आती है। हारिसा रज़ि० ने सुना तो दौड़े हुए आए कि हुज़ूर (सल्ल०) मैं और मेरे पास जो कुछ है सब आपका है, ख़ुदा की क़सम जो मकान आप ले लेते हैं मुझको इससे ज़्यादा ख़ुशी होती है कि वह मेरे पास रह जाए, ग़र्ज़ उन्होंने अपना एक मकान ख़ाली कर दिया, हज़रत फ़ातिमा रज़ि० उसमें उठ गईं।

शहंशाहे कौनैन ने सय्यदए आलम को जो जहेज़ दिया वह बान की चारपाई, चमड़े का गद्दा जिसके अंदर रूई के बजाए खजूर के पत्ते थे, एक छागल, एक मशक, दो चक्कियां, दो मिट्टी के घड़े।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० जब नए घर में जा लीं तो आंहज़रत सल्ल० उनके पास तशरीफ़ ले गए, दरवाज़े पर खड़े होकर इज़्न मांगा, फिर अंदर आए एक बर्तन में पानी मंगवाया दोनों हाथ उसमें डाले और हज़रत अली रज़ि० के सीने और बाज़ुओं पर छिड़का, फिर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को बुलाया वह शर्म से लड़खड़ाती हुई आईं, उन पर भी पानी छिड़का और फ़रमाया कि मैंने अपने ख़ानदान में सबसे

अफ़ज़लतर शख़्स से तुम्हारा निकाह किया है।[1]

जाहिली हमीयत और जज़्बए इंतिक़ामे बद्र

अरब में सिर्फ एक शख़्स का क़त्ल लड़ाई का एक सिलसिला छेड़ देता था जो सैकड़ों बरस तक ख़त्म नहीं हो सकता था, तरफ़ैन में से जिसको शिकस्त होती थी वह इंतिक़ाम को ऐसा फ़र्ज़े मुअक्कद जानता था जिसके अदा किये बग़ैर उसकी हस्ती नहीं क़ाइम रह सकती थी, बद्र में कुरैश के सत्तर आदमी मारे गए जिनमें अक्सर वह थे जो कुरैश के ताज व अफ़सर थे, इस बिना पर तमाम मक्का जोशे इंतिक़ाम से लबरेज़ था।[2]

कुरैश का कारवाने तिजारत जो जंगे बद्र के जमाने में नफ़ए कसीर के साथ शाम को वापस आ रहा था उसका रासुल माल हिस्सादारों को तक़सीम कर दिया गया था लेकिन ज़रे मुनाफ़ा अमानत के तौर पर महफ़ूज़ था।

कुरैश को कुश्तगाने बद्र के मातम से फ़ुर्सत मिली तो इस फ़र्ज़ की अदाइगी का ख़्याल आया, चंद सरदाराने कुरैश जिनमें अबू जह्ल का बेटा अकरमा भी था, उन लोगों को जिनके अज़ीज़ व अक़ारिब जंगे बद्र में क़त्ल हो चुके थे साथ लेकर अबू सुफ़यान के पास गए और कहा मुहम्मद (सल्ल0) ने हमारी क़ौम का ख़ातमा कर दिया, अब इंतिक़ाम

(1) सुनन अबी दाऊद किताबुन निकाह, बाब अर्रजल यदख़ुल बअम्रअता, तफ़सीलात दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहक़ी 3-160, अलइसाबा और तबक़ात इब्ने सअद में मौजूद हैं, सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअ्मानी 1-366

(2) सीरतुन्नबी 1-369

का वक़्त है हम चाहते हैं कि माले तिजारत का जो नफ़ा अब तक जमा है व इस काम में सर्फ़ किया जाए, यह ऐसी दरख़्वास्त थी जो पेश होने से पहले क़बूल कर ली गई थी, लेकिन अब कुरैश को मुसलमानों की कूव्वत व ज़ोर का अंदाज़ा हो चुका था, वह जानते थे कि जंगे बद्र में जिस सामान से वह गए थे उससे अब कुछ ज़्यादा दरकार है, अरब में जोश फैलाने और दिलों को गर्माने का सबसे बड़ा आला शेअ्र था, कुरैश में दो शाइर शाइरी में मशहूर थे, अम्र जुम्ही और मसाफ़ेअ्। अम्र जुम्ही ग़ज़वए बद्र में गिरफ़्तार हो गया था लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इक़्तिज़ाए रहम से उसको रिहा कर दिया था, कुरैश की दरख़्वास्त पर वह और मसाफ़ेअ् मक्का से निकले और क़बाइले कुरैश में अपनी आतिश बयानी से आग लगा आए, लड़ाइयों में साबित क़दमी और जोशे जंग का बड़ा ज़रीआ ख़ातूनाने हरम थीं, जिस लड़ाई में ख़ातूनें साथ होती थीं, अरब जानों पर खेल जाते थे कि शिकस्त होगी तो औरतें बेहुर्मत होंगी, बहुत सी औरतें ऐसी थीं जिनकी औलाद जंगे बद्र में क़त्ल हो चुकी थी इसलिये वह खुद जोशे इंतिक़ाम से लबरेज़ थीं और उन्होंने मन्नतें मानी थीं कि औलाद के क़ातिलों का खून पी कर दम लेंगी, ग़र्ज़ फ़ौजें तैयार हुईं तो बड़े बड़े मुअ़ज़्ज़ज़ घरानों की औरतें भी फ़ौज में शामिल हुईं।[1]

हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 ने हिंदा के बाप उत्बा को बद्र में

(1) तारीख़े तबरी 9-58,59, सीरत इब्ने हिशाम 2-60,61

क़त्ल किया था, जुबैर बिन मुतइम का चचा भी हम्ज़ा रज़ि० के हाथ से मारा गया था, इस बिना पर हिंदा ने वह्शी को जो जुबैर का गुलाम और हरबा अंदाज़ी में कमाल रखता था, हज़रत हम्ज़ा रज़ि० के क़त्ल पर आमादा किया और यह इक़रार हुआ कि इस कारगुज़ारी के सिला में वह आज़ाद कर दिया जाए।[1]

हज़रत अब्बास रज़ि० रसूलुल्लाह सल्ल० के चचा गो इस्लाम ला चुके थे, लेकिन अब तक मक्का ही में मुक़ीम थे उन्होंने तमाम हालात लिखकर एक तेज़ रू क़ासिद के हाथ रसूलुल्लाह सल्ल० के पास भेजे और क़ासिद को ताकीद की कि तीन दिन रात में मदीना पहुंच जाए, आंहज़रत सल्ल० को यह ख़बरें पहुंचीं तो आपने पांचवीं शव्वाल 3 हि० को दो ख़बर रसां जिनके नाम अनस और मोनिस थे ख़बर लाने के लिये भेजे, उन्होंने आकर इत्तिला दी कि क़ुरैश का लशकर मदीना के क़रीब आ गया, और मदीना की चरागाह (उरैज़) को उनके घोड़ों ने साफ़ कर दिया।[2]

आप सल्ल० ने हब्बाब बिन मुंज़िर को भेजा कि फ़ौज की तअ़दाद की ख़बर लाएं, उन्होंने आकर सही तख़मीन से इत्तिला दी, चूंकि शहर पर हमला का अंदेशा था, हर तरफ़ पहरे बिठाये गए, हज़रत सअ़द बिन उबादा और सअ़द बिन मआज़ हथियार लगा कर तमाम रात मस्जिदे नबवी के दरवाज़ा पर पहरा देते रहे।[3]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़त्लु हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब

(2) व (3) सीरते हलबीया 2-490

सुब्ह को आप सल्ल0 ने सहाबा से मशवरा किया, मुहाजिरीन ने उमूमन और अंसार में से अकाबिर ने राए दी कि औरतें बाहर किलों में भेज दी जाएं और शहर में पनाह गीर होकर मुकाबला किया जाए, अब्दुल्लाह बिन उबैय बिन सलूल जो अब तक कभी शरीके मशवरा नहीं किया गया था उसने भी यही राए दी, लेकिन उन नौ खेज़ सहाबा ने जो जंगे बद्र में शरीक न हो सके थे इस बात पर इसरार किया कि शहर से निकल कर हमला किया जाए, आंहज़रत सल्ल0 घर में तशरीफ ले गए और ज़िरह पहन कर बाहर तशरीफ़ लाए, अब लोगों को नदामत हुई कि हमने रसूलुल्लाह सल्ल0 को ख़िलाफ़े मर्ज़ी निकलने पर मजबूर किया, सबने अ़र्ज़ की कि हम अपनी राए से बाज़ आते हैं, इर्शाद हुआ कि पैग़म्बर को ज़ेबा नहीं कि हथियार पहन कर उतार दे।[1]

उहुद के दामन में

कुरैश बुध के दिन मदीना के करीब पहुंचे और कोहे उहुद पर पड़ाव डाला, आंहज़रत सल्ल0 जुमुआ के दिन नमाज़े जुमुआ पढ़कर एक हज़ार सहाबा रज़ि0 के साथ शहर से निकले, अब्दुल्लाह बिन उबैय तीन सौ की जमईयत लेकर आया था, लेकिन यह कहकर वापस चला गया कि "मुहम्मद (सल्ल0) ने मेरी राए न मानी" आंहज़रत सल्ल0 के साथ अब सिर्फ सात सौ सहाबा रज़ि0 रह गये।[2] उनमें एक सौ ज़िरह

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल एअ़तिसाम, बाब कौलुल्लाह तआला وامرهم شورى بينهم मुस्नद अहमद 1-351, सुनन दारमी 2-129

(2) ज़ादुल मआद 3-194, सीरत इब्ने हिशाम 2-64

पोश थे, मदीना से निकल कर फौज का जाइज़ा लिया गया और जो लोग कम्सिन थे वापस कर दिये गए, उनमें हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि0, बराअ् बिन आज़िब रज़ि0, अबू सईद खुदरी रज़ि0, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 और अराबा उवैसी रज़ि0 भी थे, जांनिसारी का यह ज़ौक़ था कि नौजवानों में से जब राफ़ेअ़ बिन खुदैज से कहा गया, कि तुम उम्र में छोटे हो, वापस जाओ, तो वह अंगूठों के बल तन कर खड़े हो गए कि क़द ऊंचा नज़र आए, चुनांचे उनकी यह तरकीब चल गई और वह ले लिये गए, समुरा रज़ि0 एक नौजवान जवान के हमसिन थे उन्होंने यह दलील पेश की कि मैं राफ़ेअ़ को लड़ाई में पछाड़ लेता हूं, इसलिये अगर उनको इजाज़त मिलती है तो मुझको भी मिलनी चाहिये, दोनों का मुक़ाबला कराया गया और समुरा ने राफ़ेअ़ को ज़मीन पर दे मारा, इस बिना पर उनको इजाज़त मिल गई।[1]

आंहज़रत सल्ल0 ने उहुद को पुश्त पर रखकर सफ़ आराई की, मस्अ़ब बिन उमैर रज़ि0 को अलम इनायत किया, जुबैर बिन औव्वाम रज़ि0 रिसाला के अफ़सर मुक़र्रर हुए, हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 को उस हिस्सए फौज की कमान मिली जो ज़िरह पोश न थे,[2] पुश्त की तरफ़ एहतिमाल था कि दुशमन उधर से आएं इसलिये पचास तीर अंदाज़ों का एक दस्ता मुअ़य्यन फ़रमाया और हुक्म दिया

(1) तारीख़े तबरी 3-61, सीरत इब्ने कसीर 3-30, सीरत इब्ने हिशाम 2-66

(2) तारीख़े तबरी 3-61, 62

कि गो लड़ाई में फ़त्ह हो जाए ताहम वह जगह से न हटें, अब्दुल्लाह बिन जुबैर उन तीर अंदाज़ों के अफ़सर मुक़र्रर हुए।[1]

कुरैशी को बद्र में तजर्बा हो चुका था, इसलिये उन्होंने निहायत तरतीब से सफ़ आराई की, मैमना पर ख़ालिद बिन वलीद को मुक़र्रर किया, मैसरा अकरमा को दिया जो अबू जहल के फ़रज़ंद थे, सवारों का दस्ता सफ़वान बिन उमय्या की कमान में था जो कुरैश का मशहूर रईस था, तीर अंदाज़ों के दस्ते अलग थे जिनका अफ़सर अब्दुललाह बिन रबीआ़ था, तल्हा अलमबरदार था, दो सौ घोड़े ख़रीदे थे कि ज़रूरत के वक़्त काम आएं[2] सबसे पहले तबले जंग के बजाए ख़ातूने कुरैश दफ़ पर अशआ़र पढ़ती हुई बढ़ीं, जिनमें कुश्तगाने बद्र का मातम और इंतिक़ामे ख़ून के रिज्ज़ थे, हिंदा (अबू सुफ़यान की बीवी) आगे आगे और चौदह औरतें साथ साथ थीं, अशआ़र यह थे-

نَحْنُ بَنَاتُ طَارِقِ　　نَمْشِيْ عَلَى النَّمَارِق

اِنْ تُقْبِلُوْا نُعَانِقُ　　اَوْتُدْبِرُوْا نُفَارِق

"हम आसमान के तारों की बेटियां हैं, हम क़ालीनों पर चलने वालियां हैं, अगर तुम बढ़कर लड़ोगे तो तुम से गले मिलेंगे और अगर पीछे क़दम हटाया तो हम तुम से अलग हो जाएंगे।"[3]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद (2) तारीख़े तबरी 3-62, 63 (3) सीरत इब्ने कसीर 3-31, सीरत इब्ने हिशाम स0 27, 28, इन अशआ़र का ज़िक्र मुस्तदरक में हाकिम ने किया है और इस हदीस को इमाम ज़हबी ने सहीह क़रार दिया है 3-256

लड़ाई का आग़ाज़

लड़ाई का आग़ाज़ इस तरह हुआ कि अबू आमिर जो मदीना का एक मकबूले आम शख़्स था डेढ़ सौ आदमियों के साथ मैदान में आया, इस्लाम से पहले ज़ुह्द और पारसाई की बिना पर तमाम मदीना उसकी इ़ज़्ज़त करता था, चूंकि उसको ख़्याल था कि अंसार जब उसको देखेंगे तो रसूलुल्लाह सल्ल0 का साथ छोड़ देंगे, मैदान में आकर पुकारा "मुझको पहचानते हो? मैं अबू आमिर हूं "अंसार ने कहा हां ओ बदकार! हम तुझको पहचानते हैं, खुदा तेरी आरज़ू बर न लाए।[1]

कुरैश का अलमबरदार तलहा ने सफ़ से निकल कर पुकारा, क्यों मुसलमानों में कोई है? जो मुझको जल्द दोज़ख़ में पहुंचाए या खुद मेरे हाथों बहिश्त में पहुंच जाए," अली मुर्तज़ा रज़ि0 ने सफ़ से निकल कर कहा "मैं हूं" यह कहकर तलवार मारी और तलहा की लाश ज़मीन पर थी,[2] तलहा के बाद उसके बेटे उस्मान ने जिसके पीछे पीछे औरतें अशआ़र पढ़ती आती थीं, अलम हाथ में लिया और रिज्ज़ पढ़ता हुआ हमला आवर हुआ-

إِنَّ عَلَىٰ أَهْلِ اللِّوَاءِ حَقًّا أَنْ تَخْضِبَ الصَّعْدَ أَوْ تَنْدَقَّا

"नेज़ा बरदार का फ़र्ज़ है कि वह नेज़ा खून में रंग दे या टकरा कर टूट जाए।"

---

(1) मुस्नद अहमद 4-46, मुस्तदरक हाकिम 2-107,108

(2) तारिख़े तबरी 3-63

हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 मुकाबला को निकले और शाना पर तलवार मारी कि कमर तक उतर आई, साथ उनकी ज़बान से निकला कि "मैं साकिये हुज्जाज का बेटा हूं" अब आम जंग शुरू हो गई[1] हज़रत हम्ज़ा रज़ि0, हज़रत अली रज़ि0, अबू दुजाना रज़ि0 फ़ौजों के दल में घुसे और सफ़ें की सफ़ें साफ़ कर दीं[2] अबू दुजाना अरब के मशहूर पहलवान थे, आंहज़रत सल्ल0 ने दस्ते मुबारक में तलवार लेकर फ़रमाया "कौन इसका हक़ अदा करता है" इस सआदत के लिये दफ़अतन बहुत से हाथ बढ़े, लेकिन यह फ़ख़्र अबू दुजाना रज़ि0 के नसीब में था, इस ग़ैर मुतवक़्क़ेअ इज़्ज़त ने उनको मग़रूर कर दिया, सर पर सुर्ख़ रूमाल बांधा और अकड़ते व तनते हुए फ़ौज से निकले, आंहज़रत सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि "यह चाल ख़ुदा को सख़्त नापसंद है लेकिन इस वक़्त पसंद है" अबू दुजाना रज़ि0 फ़ौजों को चीरते, लाशों पर लाशे गिराते, बढ़ते चले जाते थे, यहां तक कि हिंदा सामने आ गई, उसके सर पर तलवार रखकर उठा ली कि रसूलुल्लाह सल्ल0 की तलवार इस क़ाबिल नहीं है कि औरत पर आज़माई जाए।[3] हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 दो दस्ती तलवार मारते थे और जिसकी तरफ़ बढ़ते थे सफ़ें की सफ़ें साफ़ हो जाती थीं, इसी हालत में निबाअ़ ग़बशानी सामने आ गया पुकारे कि "ओ ख़त्तानतुन्निसाअ् के बच्चे! कहां जाता है?"

(1) सीरत इब्ने कसीर 3-34, सीरत इब्ने हिशाम 2-74 (2)तारीख़े तबरी (3)मुस्तदरक हाकिम 3-256, ज़हबी ने तौसीक़ फ़रमाई है, तारीख़े तबरी 3-63, सीरत इब्ने कसीर 3-30,31 इस वाक़िआ के बअ्ज़ हिस्से इमाम मुस्लिम और इमाम अहमद ने भी नक़्ल फ़रमाए हैं।

यह कह कर तलवार मारी, वह ख़ाक पर ढेर था, वह्शी जो एक गुलाम था और जिससे जुबैर बिन मुत्इम उसके आक़ा ने वादा किया था कि अगर वह हम्ज़ा को क़त्ल कर दे तो आज़ाद कर दिया जाएगा वह हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 की ताक में था, हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 बराबर आए तो उसने छोटा सा नेज़ा जिसको हिर्बा कहते हैं और जो हब्शियों का ख़ास हथियार है फेंक कर मारा जो नाफ़ में लगा और पार हो गया।[1] हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 ने उस पर हमला करना चाहा लेकिन लड़खड़ा कर गिर पड़े और रूह परवाज़ कर गई।[2]

मुसलमानों के खिलाफ़ जंग का पांसा कैसे पलटा

कुफ़्फ़ार के अलम बरदार लड़ लड़ कर क़त्ल हो जाते थे ताहम अलम गिरने नहीं पाता था, एक के गिरने से दूसरा जांबाज़ बढ़कर अलम को हाथ में ले लेता था, एक शख़्स ने जिसका नाम सवाब था जब अलम हाथ में लिया तो किसी ने बढ़ कर इस ज़ोर से तलवार मारी कि दोनों हाथ कट कर गिर पड़े लेकिन वह क़ौमी अलम को अपनी आंखों से ख़ाक पर नहीं देख सकता था, अलम के गिरने के साथ सीना के बल ज़मीन पर गिरा और अलम को सीना से दबा लिया, उसी हालत में यह कहता हुआ मारा गया कि "मैंने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया" अलम देर तक पड़ा रहा, आख़िर एक बहादुर ख़ातून (उम्रह बिंते अलक़मा) दिलेराना

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़त्लु हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब

(2) सीरत इब्ने कसीर 3-34

बढ़ी और अलम को हाथ में लेकर बुलंद किया, यह देखकर हर तरफ़ से कुरैश सिमट आए और उखड़े हुए पांव फिर जम गए।[1]

अबू आमिर कुफ़्फ़ार की तरफ़ से लड़ रहा था, लेकिन उसके साहबज़ादे हज़रत हंज़ला रज़ि0 इस्लाम ला चुके थे उन्होंने आंहज़रत सल्ल0 से बाप के मुकाबला में लड़ने की इजाज़त मांगी, लेकिन रहमते आलम ने यह गवारा न किया कि बेटा अपने बाप पर तलवार उठाए, हज़रत हंज़ला रज़ि0 ने कुफ़्फ़ार के सिपहसालार (अबू सुफ़यान) पर हमला किया और करीब था कि उनकी तलवार अबू सुफ़यान का फ़ैसला कर दे, दफ़अ़तन पहलू से शद्दाद बिन अलअस्वद ने झपट कर उनके वार को रोका और उनको शहीद कर दिया, ताहम लड़ाई का पल्ला मुसलमानों ही की तरफ़ भारी था।[2] बहादुर नाज़नीनें जोरिज्ज़ से दिलों को उभार रही थीं, बदहवासी के साथ पीछे हटीं और मतलअ़ साफ़ हो गया, लेकिन साथ ही मुसलमानों ने लूट शुरू कर दी, यह देखकर तीर अंदाज़ जो पुश्त पर मुकर्रर किये गए थे वह भी ग़नीमत की तरफ़ झुके, अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि0 ने बहुत रोका लेकिन वह न रुक सके।[3] तीर अंदाज़ों की जगह ख़ाली देखकर ख़ालिद ने अकब से हमला किया, अब्दुल्लाह बिन जुबैर चंद जांबाज़ों के साथ जम कर लड़े, लेकिन सबके सब शहीद हो गए, अब रास्ता साफ़ था, ख़ालिद ने सवारों

(1) सीरत इब्ने कसीर 3-43, तबरी 3-65, सीरत इब्ने हिशाम 2-78 (2) मुस्तदरक हाकिम 3-225, तबरी 3-69 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद

के दस्ता के साथ निहायत बेजिग्री से हमला किया, लोग लूटने में मसरूफ़ थे, मुड़कर देखा तो तलवारें बरस रही हैं, बदहवासी में दोनों फ़ौजें इस तरह बाहम मिल गईं कि खुद मुसलमान मुसलमानों के हाथ से मारे गए।[1] मस्अूब बिन उमैर जो आंहज़रत सल्ल० से सूरत में मुशाबेह थे, इब्ने कम्ईया ने उनको शहीद कर दिया।[2] मुश्रिकीन का इतने ज़ोर का रेला आया कि अक्सर सहाबा रज़ि० के क़दम उखड़ गए और दुशमन रसूलुल्लाह सल्ल० तक पहुंच गए, आप सल्ल० के चेहरा मुबारक को ज़ख़्मी कर दिया, मिग़्फ़र की दो टुकड़ियां चेहरए मुबारक में चुभ कर रह गईं और दाहिनी तरफ़ का नीचे का दांत शहीद हो गया।[3] चारों तरफ़ तलवारें और तीर बरस रहे थे, आप सल्ल० अपने पहलू पर एक गढ़े में गिर गए, हज़रत अली रज़ि० ने हाथ पकड़ा और हज़रत तलहा रज़ि० ने गोद में उठा लिया।[4]

इसी बदहवासी और परेशानी में ख़बर उड़ गई कि आप सल्ल० शहीद हो गए, इस इज़्तिराब में अक्सरों ने हिम्मत हार दी और जो जहां था वहीं का वहीं रह गया।[5] हज़रत अनस रज़ि० बिन नुज़र ने चंद मुसलमानों को देखा कि हथियार फेंक दिये हैं और मग़्मूम बैठे हैं, पूछा! बैठे क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा कि हुज़ूर सल्ल० शहीद हो गए,

(1) तबरी 3-63, सीरत इब्ने हिशाम 2-78
(2) तबरी 3-66, सीरत इब्ने हिशाम 2-73
(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मा असाबन्नबी सल्ल० मिनल जराह यौमा उहुद
(4) ज़ादुल मआद 3-197, सीरत इब्ने हिशाम 2-80
(5) तबरी 3-68

बोले फिर जी कर क्या करोगे? उठो! जिस पर रसूल सल्ल० ने जान दी उस पर तुम भी जान दे दो, हज़रत अनस रज़ि० ने मुसलमानों की तरफ़ इशारा करके कहा "ऐ अल्लाह इनके फेअ्ल से मैं मअ्ज़रत करता हूं और मुश्रिकीन के अमल से मैं बरी हूं" आगे बढ़े तो सअ्द बिन मआज़ रज़ि० मिले, अनस ने कहा सअ्द! मुझे जन्नत की ख़ुशबू उहुद पहाड़ के इसी तरफ़ से आ रही है, यह कहकर बड़े जोश के साथ हमला किया और शहीद हो गए, शहादत के बाद देखा गया तो जिस्म पर अस्सी से ऊपर ज़ख़्म थे और लाश पहचान नहीं पड़ती थी, उनकी बहन ने उंगली के पोर के एक निशान से पहचाना।[1] एक मुहाजिर का गुज़र एक अंसारी रज़ि० के पास हुआ, देखा तो वह ख़ून में लोटपोट हैं, कहा तुमको मअ्लूम है कि मुहम्मद सल्ल० शहीद हो गए, उन्होंने जवाब दिया कि अगर आप सल्ल० शहीद हो गए तो अपनी मुराद को पहुंच गए तुम भी अपने दीन पर जान दे दो।"[2]

मुहब्बत व जांनिसारी के नमूने और मुसलमानों का दोबारा जमाव

जांनिसाराने ख़ास बराबर लड़ते जाते थे, लेकिन निगाहें रसूल सल्ल० को ढूंढती थीं, सबसे पहले कअ्ब बिन मालिक रज़ि० की नज़र आप सल्ल० पर पड़ी, चेहरए मुबारक पर

---

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा बद्र

(2) सीरत इब्ने कसीर 3-61।

मिग़फ़र था लेकिन आंखें नज़र आती थीं, कअ़ब ने पहचान कर पुकारा, "मुसलमानो! रसूलुल्लाह सल्ल0 यह हैं।" यह सुन कर हर तरफ़ से जां निसार टूट पड़े।[1] कुफ़्फ़ार ने अब हर तरफ़ से हट कर इसी रुख़ पर ज़ोर दिया, दल का दल हुजूम करके बढ़ता था, हज़रत तलहा रज़ि0 ने अपने पुरजोश हमलों से उनको पीछे हटा दिया, तीरों की चारों तरफ़ से बारिश थी, हज़रत अबू दुजाना रज़ि0 ने अपनी पीठ को आप सल्ल0 पर झुका कर ढाल बना दिया,[2] तीर उनकी पीठ पर लग रहे थे और वह बेहिस व हरकत खड़े थे।[3] एक मर्तबा ज़ोर शोर का हमला हुआ, आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि कौन उनको पीछे ढकेलता है और जन्नत लेता है, सात अंसारी खड़े थे, एक एक आदमी बारी बारी बढ़ता रहा और आप सल्ल0 यही फ़रमाते रहे, सातों उस जगह काम आ गए।[4] हज़रत तलहा रज़ि0 ने अपने हाथ से सिपर का काम लिया और आंहज़रत सल्ल0 की जानिब आने वाले तीर अपने हाथ से रोके, यह हाथ हमेशा के लिये शल हो गया।[5] बेदर्द रहमते आलम सल्ल0 पर तीर बरसा रहे थे और आप सल्ल0 की ज़बान पर यह अलफ़ाज़ थे, "رَبِّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ" ऐ मेरे ख़ुदा! मेरी क़ौम को

---

(1) तबरी 3-67, सीरत इब्ने कसीर 3-68

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-417

(3) तबरी 3-66

(4) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब ग़ज़वए उहुद

(5) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी

बख़्श दे यह जानते नहीं"[1] हज़रत तलहा ज़ख़्म खाते खाते चूर चूर होकर गिर गए, सहाबए किराम रज़ि० जब पलट कर आए तो आप सल्ल० ने फ़रमाया तलहा (रज़ि०) की ख़बर लो उनकी हालत नाज़ुक है, लोगों ने उनको उठाया तो उन पर दस से ऊपर ज़ख़्म थे, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० के भी बीस से ऊपर ज़ख़्म आए थे[2] हज़रत अबू तलहा रज़ि० जो मशहूर तीर अंदाज़ थे उन्होंने इस क़द्र तीर बरसाए कि दो तीन कमानें उनके हाथ से टूट कर रह गईं, उन्होंने सिपर आंहज़रत सल्ल० के चेहरा पर ओट कर लिया था कि आप सल्ल० पर कोई वार न आने पाए, आप सल्ल० कभी गर्दन उठाकर दुशमनों की फ़ौज की तरफ़ देखते तो अर्ज़ करते कि आप गर्दन न उठाएं, ऐसा न हो कि कोई तीर आकर लग जाए, यह मेरा सीना सामने है[3] हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ि० भी मशहूर तीर अंदाज़ थे और उस वक़्त आप सल्ल० के रिकाब में हाज़िर थे, आंहज़रत सल्ल० ने अपना तर्कश उनके सामने डाल दिया और फ़रमाया "तुम पर मेरे मां बाप क़ुर्बान" तीर मारते जाओ[4] एक दफ़ा हुजूम हुआ तो आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया "कौन मुझ पर जान देता है?" ज़ियाद बिन सकन रज़ि० पांच अंसारी लेकर इस ख़िदमत के अदा करने के लिये बढ़े और एक एक ने जांबाज़ी से लड़कर अपनी जानें फ़िदा कर दीं, ज़ियाद को

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब ग़ज़वए उहुद (2) मुस्तदरक हाकिम 3-548, सीरत इब्ने हिशाम 2-83 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद सहीह मुस्लिम किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब ग़ज़वतुन्निसाअ़ मअ़र्रिजाल। (4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद

यह शर्फ़ हासिल हुआ कि आंहज़रत सल्ल0 ने हुक्म दिया कि उनका लाशा करीब लाओ, लोग उठा कर लाए कुछ कुछ जान बाक़ी थी कदमों पर रख दिया और उसी हालत में जान दी।[1]

सर बवक़्ते ज़िब्ह अपना उसके ज़ेरे पाए है
यह नसीब अल्लाहु अक्बर लौटने की जाए है

एक बहादुर मुसलमान इस आलम में भी बेपरवाई के साथ खड़ा खजूरें खा रहा था, उसने बढ़कर पूछा कि "या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! अगर मैं मारा गया तो कहां हूंगा?" आपने फ़रमाया "जन्नत में" इस बशारत से बेख़ुद होकर वह इस तरह कुफ़्फ़ार पर टूट पड़ा कि मारा गया।[2] ऐन उस वक़्त जबकि काफ़िरों ने आम हमला कर दिया था और आप सल्ल0 के साथ सिर्फ़ चंद जांनिसार रह गए थे, उम्मे अम्मारा रज़ि0 आंहज़रत सल्ल0 के पास पहुचीं और अपना सीना सिपर कर दिया, कुफ़्फ़ार जब आप सल्ल0 पर बढ़ते थे तो तीर और तलवार से रोकती थीं, इब्ने कम्ई जब दर्राता हुआ आंहज़रत सल्ल0 के पास पहुंच गया तो उम्मे अम्मारा रज़ि0 ने बढ़ कर रोका, चुनांचे कंधे पर ज़ख़्म आया और ग़ार पड़ गया, उन्होंने भी तलवार मारी लेकिन वह दोहरी ज़िरह पहने हुए था इसलिये कारगर न हुई।[3]

उबैय बिन ख़लफ़ लोहे में डूबा हुआ आपकी तरफ़ बढ़ा,

(1) तबरी 3-65, 66, सीरत इब्ने हिशाम 2-81
(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद
(3) सीरत इब्ने कसीर 3-67, सीरत इब्ने हिशाम 2-81, 82

वह यह कहता जाता था कि अगर मुहम्मद (सल्ल0) बच गए तो मेरी ख़ैर नहीं, उसने मक्का में आप सल्ल0 को शहीद करने की क़सम खाई थी, उसकी एक हंसली, ज़िरह और खुद के दर्मियानी सूराख़ से नज़र आ रही थी, आंहज़रत सल्ल0 ने उस पर नेज़ा से वार किया और वह घोड़ा से गिर गया, उसके साथियों ने उसको उठाया, वह बैल की तरह चिल्लाता था, लोगों ने उससे कहा कि घबराने की क्या बात है, यह तो एक मअ़मूली ख़राश है, उसने कहा कि तुमको मअ़लूम नहीं कि मुहम्मद (सल्ल0) ने कहा था कि वह मुझे क़त्ल करेंगे, मुझे इस ज़ख़्म की इतनी तकलीफ़ है कि वह अगर ज़ुल मजाज़ की बस्ती पर तक़सीम कर दी जाए तो वह सब मर जाएं, उबैय बिन ख़लफ़ राबिग़ पहुच कर मर गया।[1]

सहाबए किराम रज़ि0 सब तरफ़ से आपके पास आकर जमा हो गए, ख़ौद की एक कड़ी रुख़्सार मुबारक में धंस गई थी, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 कहते हैं कि मैं उसको निकालने चला, अबू उबैदा रज़ि0 ने ख़ुदा की क़सम देकर मुझसे कहा कि मुझे इसका मौक़ा दो, उन्होंने दांतों में उसको दबा कर इस तरह आहिस्ता आहिस्ता निकालना शुरू किया कि हुज़ूर सल्ल0 को तकलीफ़ न हो, कड़ी निकल आई और उसके साथ अबू उबैदा का दांत उखड़ गया, मैं दूसरी कड़ी को निकालने के लिये बढ़ा, अबू उबैदा ने फिर

(1) तबरी 3-67, सीरत इब्ने कसीर 3-69, सीरत इब्ने हिशाम 2-84

क़सम दी और इसी तरह आहिस्ता आहिस्ता निकालना शुरू किया और उनका दूसरा दांत भी उखड़ गया[1] मालिक बिन सनान अंसारी रज़ि0 ने रुख़्सार मुबारक के खून को चूस लिया, आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि कुल्ली कर दो, उन्होंने अर्ज़ किया बख़ुदा कभी कुल्ली न करूंगा, जब वहां से चले तो हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया कि अगर किसी को जन्नती देखने का शौक़ हो तो इन्हें देख ले''[2]

आप सल्ल0 की वफ़ात की ख़बर मदीना पहुंची तो इख़्लास शिआर निहायत बेताबी के साथ दौड़े, जनाब फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि0 ने आकर देखा तो अभी तक चेहरए मुबारक से खून जारी था, हज़रत अली रज़ि0 सिपर में भर कर पानी लाए, जनाब सय्यदा धोती थीं लेकिन खून नहीं थमता था, बिलआख़िर चटाई का एक टुक्ड़ा जलाया और ज़ख़्म पर रख दिया खून फ़ौरन थम गया[3] आप सल्ल0 ने एक चट्टान पर चढ़ना चाहा लेकिन ना ताक़ती से चढ़ नहीं सके, हज़रत तलहा रज़ि0 बैठ गए और अपने को ज़ीना बना दिया,[4] नमाज़ का वक़्त हुआ तो आपने बैठे बैठे नमाज़ पढ़ाई।[5]

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-29, किताबुल मग़ाज़ी वस्सियर

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-65, सीरत इब्ने हिशाम 2-80

(3) सहीहुल बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब मा असाबुन्नबी सल्ल0 मिनल जराह यौमा उहुद, सहीह मुस्लिम किताबुल जिहाद वस्सियर बाब ग़ज़वए उहुद

(4) मुस्तदरक हाकिम 3-28, किताबुल मग़ाज़ी वस्सियर, इमाम ज़हबी ने इसको मुस्लिम की शर्त पर क़वी क़रार दिया है।

(5) ज़ादुल मआद 3-197, सीरत इब्ने हिशाम 7-86,87

इस जंग में बअज़ सहाबा रज़ि० ने आंहज़रत सल्ल० से (जबकि हुज़ूर सल्ल० को भी कई ज़ख़्म आए थे) अर्ज़ किया "काश आप मुश्रिकीन पर बद्दुआ फ़रमाएं, नबी सल्ल० ने फ़रमाया-

إِنِّي لَمْ أُبْعَثْ لَعَّانًا وَلٰكِنْ بُعِثْتُ دَاعِيًا وَرَحْمَةً، اَللّٰهُمَّ اهْدِ قَوْمِي فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ

मैं लअ़नत करने के लिये नबी नहीं बनाया गया, मुझे तो खुदा की तरफ़ बुलाने वाला और सरापा रहमत बनाया गया है, ऐ खुदा! मेरी क़ौम को हिदायत फ़रमा, क्योंकि वह मुझे जानते नहीं।[1]

रसूलुल्लाह सल्ल० साबित क़दमों के साथ पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए कि दुशमन इधर नहीं आ सकते, अबू सुफ़यान ने देख लिया, फ़ौज लेकर पहाड़ी पर चढ़ा, लेकिन हज़रत उमर रज़ि० और चंद सहाबा रज़ि० ने पत्थर बरसाए जिससे वह आगे न बढ़ सका।[2] अबू सुफ़यान ने सामने की पहाड़ी पर चढ़ कर पुकारा कि यहां मुहम्मद (सल्ल०) हैं? आप सल्ल० ने हुक्म दिया कोई जवाब न दे, अबू सुफ़यान ने हज़रत अबू बक्र रज़ि० और उमर रज़ि० का नाम लेकर पुकारा, और जब कुछ आवाज़ न आई, तो पुकार कर बोला सब मारे गए, हज़रत उमर रज़ि० से ज़ब्त न हो सका बोल उठे ओ दुशमने खुदा! हम सब ज़िंदा हैं,

अबू सुफ़यान ने कहाः

"اُعْلُ هُبَل" "ऐ हुबल! तू ऊंचा रह"

(1) रहमतुल लिल आलमीन 1-111, बहवाला अश्शिफ़ा क़ाज़ी अयाज़ स० 48

(2) सीरत इब्ने कसीर 3-45

सहाबा रज़ि० ने आंहज़रत सल्ल० के हुक्म से कहा: "اللّٰهُ أَعْلَى وَأَجَلُّ" "अल्लाह ऊंचा है और बड़ा है"

अबू सुफ़यान ने कहा:

"لَنَا الْعُزّٰى وَلَا عُزّٰى لَكُمْ" "हमारे पास उज़्ज़ा है, तुम्हारे पास नहीं,

सहाबा रज़ि० ने कहा:

"اَللّٰهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلٰى لَكُمْ" "खुदा हमारा आक़ा है और तुम्हारा कोई आक़ा नहीं"

अबू सुफ़यान ने कहा: आज का दिन बद्र के दिन का जवाब है, फ़ौज के लोगों ने मुर्दों के नाक कान काट लिये हैं, मैंने यह हुक्म नहीं दिया था लेकिन मुझको मअ़लूम हुआ तो कुछ रंज भी नहीं हुआ।[1]

चंद शुहदा का हाल

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० कहते हैं मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० ने सअ़द बिन अर्रबीअ़ को देखने के लिये भेजा और मुझसे फ़रमाया कि वह अगर तुमको मिल जाएं तो उनको मेरा सलाम कहना कि रसूलुल्लाह सल्ल० पूछते हैं तुम अपने को किस हाल में पाते हो? ज़ैद कहते हैं कि मैं लाशों को देखता फिरता था कि मेरी नज़र सअ़द पर पड़ी, उनका दमे वापसीं था, उनके जिस्म में नेज़े, तलवार के सत्तर ज़ख़्म थे, मैंने कहा सअ़द! रसूलुल्लाह सल्ल० तुमको सलाम कहते हैं और फ़रमाते हैं तुम किस हाल में हो? उन्होंने जवाब दिया

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद

कि हुजूर सल्ल0 को मेरा सलाम कहना और अ़र्ज़ करना कि मुझे जन्नत की खुशबू आ रही है, मेरी क़ौम अंसार से मेरा प्याम कहना कि "जब तक एक झपकने वाली आंख भी तुम में से बाक़ी है उस वक़्त तक अगर दुश्मन नबी सल्ल0 तक पहुंच गया तो खुदा के हुजूर में तुम कोई उज़्र पेश न कर सकोगे" यह कहकर उनकी रूह परवाज़ कर गई।[1]

शुहदा में देखा गया तो अ़म्र बिन साबित की भी लाश थी, उनका लक़ब उसैरम है, यह क़बीला बनी अब्दुल अश्हल से तअ़ल्लुक़ रखते थे, उहुद के मअ़रके से पहले उनको इस्लाम से हमेशा इंकार रहा, उहुद के दिन दफ़अ़तन उनके दिल में इस्लाम का जज़्बा पैदा हुआ, आंहज़रत सल्ल0 और सहाबए किराम रज़ि0 तशरीफ़ ले जा चुके थे, यह मुसलमान हुए तलवार हाथ में ली और जंग में शरीक हो गए, किसी को इसकी इत्तिला नहीं हुई, जब मैदान साफ़ हुआ और बनी अब्दुल अश्हल अपने कबीला के शुहदा की तलाश में निकले तो देखा कि उसैरम भी ज़ख़्मी पड़े हैं और कुछ सांस बाक़ी है, उन्होंने कहा यह तो उसैरम मअ़लूम होते हैं, यह यहां कहां, यह तो इस्लाम के मुन्किर थे, फिर उन्होंने उनसे पूछा कि तुम यहां कैसे आए? क्या क़ौम की हमीय्यत में या इस्लाम की मुहब्बत में? उन्होंने कहा नहीं बल्कि इस्लाम की मुहब्बत में, मैं अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाया और मैंने आंहज़रत सल्ल0 के साथ जिहाद में शिर्कत की और इस सआ़दत को पहुंचा, यह कहकर

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-221, किताब मअ़रिफ़तुस्सहाबा, ज़िक्रे मनाक़िब सअ़द बिन रबीअ़ रज़ि0

उनकी रूह परवाज़ कर गई, लोगों ने रसूलुल्लाह सल्ल0 से तज़किरा किया, आप सल्ल0 ने फ़रमायाः "वह जन्नती हैं" हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 कहते हैं कि उसैरम को एक वक़्त की नमाज़ पढ़ने की भी नौबत नहीं आई, (इस्लाम लाने के बाद ही शहीद हो गए)[1]

उन्ही शुहदा में हज़रत जाबिर के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह अम्र भी थे, उन्होंने उहुद से पहले हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुंज़िर को (जो बद्र में शहीद हो चुके थे।) ख़्वाब में देखा कि वह उनसे कह रहे हैं कि तुम हमारे पास चंद ही दिन में आने वाले हो, उन्होंने कहा तुम कहां हो? मुबश्शिर ने कहा जन्नत में, यहां हम आज़ादी के साथ चलते फिरते हैं, अब्दुल्लाह ने कहा क्या तुम बद्र में शहीद नहीं हुए? उन्होंने कहा हां! लेकिन फिर मुझे ज़िंदा कर दिया गया, हज़रत अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैंने इसका ज़िक्र रसूलुल्लाह सल्ल0 से किया, आप सल्ल0 ने फ़रमाया "यह शहादत की तरफ़ इशारा है"[2] हज़रत जाबिर रज़ि0 कहते हैं कि मेरे वालिद की लाश को आंहज़रत सल्ल0 के पास लाया गया, दुशमनों ने उनके अअ्ज़ा काटे थे, जब आप सल्ल0 के सामने उनको रखा गया तो मैं उनका मुंह खोलने चला तो लोगों ने मुझे मना किया, आप सल्ल0 ने फ़रमायाः कि फ़रिशते बराबर इन पर साया करते रहे हैं।[3]

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-30, मुस्नद अहमद 5-428, 429

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-225

(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मन क़ुतिला मिनल मुस्लिमीन यौम उहुद

उन्ही शुहदा में हज़रत ख़ैसमा भी थे, उनके बेटे बद्र में शहीद हुए थे, उन्होंने आंहज़रत सल्ल0 से अर्ज़ किया कि बद्र की लड़ाई से मैं रह गया, हालांकि मुझे इसका बड़ा शौक़ था, लेकिन कुर्आ में मेरे बेटे का नाम निकला और शहादत उन्हीं के नसीब में थी, या रसूलुल्लाह सल्ल0 मैंने रात अपने बेटे को ख़्वाब में देखा, बेहतरीन शक्ल व सूरत है, जन्नत के मेवों और नहरों के दर्मियान चलता फिरता है और मुझसे कहता है कि मुझसे आ मिलो, साथ रहेंगे, मेरे रब ने मुझसे जो कुछ वादा किया मैंने हक़ पाया, खुदा की क़सम या रसूलुल्लाह सल्ल0 अब मैं जन्नत में उसकी रिफ़ाक़त का बहुत मुशताक़ हूं, मेरी उम्र भी बहुत हो गई, ज़ईफ़ी का ज़माना है, अब मुझे अपने रब की मुलाक़ात ही का शौक़ है, आप अल्लाह से दुआ फ़रमाइये कि जन्नत में रिफ़ाक़त नसीब फ़रमाए, आप सल्ल0 ने उनके हक़ में दुआ की और वह उहुद में शहीद हो गए।[1]

उन्ही शुहदा में अब्दुर्रहमान बिन जहश रज़ि0 भी थे, उन्होंने कहा था कि ऐ अल्लाह! तुझको क़सम है कि कल मेरा दुशमन का सामना हो वह मुझे क़त्ल करें, फिर मेरा पेट फाड़ें और नाक कान काटें, फिर तू मुझसे सवाल करे कि यह सब किस लिये हुआ? मैं कहूं यह सब तेरी ख़ातिर हुआ।[2]

उन्ही शुहदा में अम्र बिन अलजमूह रज़ि0 भी थे, उनके पांव में सख़्त लंग था, उनके चार जवान जवान बेटे थे.......

(1) ज़ादुल मआद 3-208

(2) असदुल ग़ाबा 3-91, ज़ादुल मआद 3-208

.....................जब उहुद का मअ़रका पेश आया तो अ़म्र रज़ि0 ने भी मैदान का इरादा किया, बेटों ने कहा अल्लाह ने आपको जिहाद से मुआफी दी है, आप घर में रहें और हम लड़ने जाएं, वह आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा या रसूलुल्लाह सल्ल0 मेरे बेटे मुझे जिहाद से रोकते हैं, मैं तो उम्मीद करता हूं कि मैं शहीद हूं और अपने इस लंगड़े पांव से जन्नत में चलूं, आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि "अल्लाह ने तुमको जिहाद से रुख़सत दी है" और उनके बेटों से फ़रमाया कि "तुम्हारा क्या हरज है इनको जाने दो शायद अल्लाह इनको शहादत नसीब करे।"[1]

उन्ही शुहदा में हज़रत मस्अ़ब बिन उमैर रज़ि0 भी थे, जिनके बदन पर इस्लाम से पहले दो सौ रूपये से कम की पौशाक नहीं होती थी, वह सिर्फ एक कम्मल छोड़कर शहीद हुए थे, जो इतना छोटा था कि कफ़न देने में जब उनका सर छिपाया जाता था तो पांव खुल जाते थे और जब पैर छिपाए जाते थे तो सर खुल जाता था, आंहज़रत सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि कम्मल से सर छिपा दो और पांव पर घास डाल दो।[2]

इसी जंग में नबी सल्ल0 के महबूब चचा शेरे खुदा हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 भी शहीद हुए, दुशमनों ने उनके अअ़ज़ा काट कर उनकी लाश को बेहुर्मत किया था, हिंदा ज़ौजा अबू सुफ़यान ने उन फूलों का हार बनाया और अपने गले

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-226, सीरत इब्ने हिशाम 2-90
(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद

में डाला, हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की लाश पर गई और उनका पेट चाक करके कलेजा निकाला और चबा गई, लेकिन गले से उतर न सका इसलिये उगल देना पड़ा।[1]

हज़रत सफीया रज़ि० (हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की बहन) शिकस्त की ख़बर सुन कर मदीना से निकलीं, आंहज़रत सल्ल० ने उनके साहबज़ादे हज़रत ज़ुबैर को बुलाकर इर्शाद फ़रमाया कि हम्ज़ा की लाश न देखने पाएं, ज़ुबैर ने आंहज़रत सल्ल० का पैग़ाम सुनाया, बोलीं कि मैं अपने भाई का माजिरा सुन चुकी हूं, लेकिन ख़ुदा की राह में यह कोई बड़ी कुर्बानी नहीं, आंहज़रत सल्ल० ने इजाज़त दी, लाश पर गई, ख़ून का जोश था और अज़ीज़ भाई के टुक्ड़े बिखरे पड़े थे लेकिन "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ" कहकर चुप हो रहीं और मग़फ़िरत की दुआ मांगी।[2]

ख़ातूनाने इस्लाम की ख़िदमत गुज़ारी व जांनिसारी

इस ग़ज़वा में अक्सर ख़ातूनाने इस्लाम ने भी शिर्कत की, हज़रत आइशा रज़ि० और उम्मे सुलैम रज़ि० जो हज़रत अनस रज़ि० की मां थीं, ज़ख़्मियों को पानी पिलाती थीं, सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ि० से मनक़ूल है कि "मैंने आइशा और उम्मे सुलैम रज़िअल्लाहु अन्हुमा को देखा कि पाएंचे चढ़ाए हुए मशक भर भर कर लाती थीं और ज़ख़्मियों को पानी पिलातीं थीं, मशक ख़ाली हो जाती थी तो जाकर फिर भर लाती थीं।[3] एक रिवायत में है कि उम्मे सुलैत

(1) सीरत इब्ने कसीर 3-74, इब्ने हिशाम 2-91 (2) मुस्तदरक हाकिम 3-218, तारीख़े तबरी 3-72 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद

रज़ि0 ने भी जो हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 की मां थीं यही ख़िदमत अंजाम दी।[1]

अंसार में से एक अफ़ीफ़ा के बाप, भाई, शौहर सब इस मअ्रका में मारे गए थे, बारी बारी तीन हादसों की सदा उनके कानों में पड़ी थी, लेकिन वह हर बार सिर्फ़ यह पूछती थीं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 कैसे हैं? लोगों ने कहा बख़ैर हैं, उन्होंने पास आकर चेहरए मुबारक देखा और बेइख़्तियार पुकार उठीं: "كُلُّ مُصِيبَةٍ بَعْدَكَ جَلَلٌ"[2] आप के होते सब मुसीबतें हेच हैं"

मैं भी और बाप भी, शौहर भी, बिरादर भी फ़िदा
ऐ शहे दीं तिरे होते हुए क्या चीज़ हैं हम

मुसलमानों की तरफ़ सत्तर आदमी मारे गए जिनमें ज़्यादातर अंसार थे, लेकिन मुसलमानों के इफ़्लास का यह हाल था कि इतना कपड़ा भी न था कि शोहदा की पर्दा पोशी हो सकती, शुहदा बे गुस्ल उसी तरह ख़ून में लुथड़े हुए, दो दो मिलाकर एक क़ब्र में दफ़्न किये गए, जिसको क़ुर्आन ज़्यादा याद होता उसको मुक़द्दम किया जाता,[3] आठ बरस बाद (वफ़ात से एक दो बरस पहले) जब आप उधर से गुज़रे तो बेइख़्तियार आप पर रिक़्क़त तारी हुई और इस तरह आपने पुर दर्द कलिमात इर्शाद फ़रमाए जैसे कोई ज़िंदा किसी मुर्दा से रुख़्सत हो रहा हो, और इसके बाद आप सल्ल0 ने

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ज़िक्रे उम्मे सुलैत
(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-99, सीरत इब्ने कसीर 3-95, तबरी 3-74
(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मन क़ुतिला मिनल मुस्लिमीन यौम उहुद

सुफ़यान से मिला, अबू सुफ़यान ने अपना इरादा ज़ाहिर किया, मअ्बद ने कहा "मैं देखता आता हूं कि मुहम्मद (सल्ल0) इस सर व सामान से आ रहे हैं कि उनका मुक़ाबला नामुम्किन है, ग़र्ज़ अबू सुफ़यान वापस चला गया।"[1]

आंहज़रत सल्ल0 मदीना में तशरीफ़ लाए तो तमाम मदीना मातम कदा था, आप सल्ल0 जिस तरफ़ से गुज़रते थे घरों से मातम की आवाज़ें आती थीं, आपको इबरत हुई कि सबके अज़ीज़ व अक़ारिब मातमदारी का फ़र्ज़ अदा कर रहे हैं, लेकिन हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 का कोई नौहा ख़्वां नहीं है, रिक़्क़त के जोश में आपकी ज़बान मुबारक से बेइख़्तियार निकला "أمّا حمزة فلا بواكي له" लेकिन हम्ज़ा (रज़ि0) का कोई रोने वाला नहीं।"

अंसार ने यह अलफ़ाज़ सुने तो तड़प उठे, सबने जाकर अपनी बीबियों को हुक्म दिया कि दौलत कदा पर जाकर हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 का मातम करो, आंहज़रत सल्ल0 ने देखा तो दरवाज़े पर पर्दा नशीनाने अंसार की भीड़ थी और हम्ज़ा रज़ि0 का मातम बुलंद था, उनके हक़ में दुआए ख़ैर की और फ़रमाया कि मैं तुम्हारी हमदर्दी का शुक्र गुज़ार हूं, लेकिन मुर्दों पर नौहा करना जाइज़ नहीं।[2]

---

(1) मुस्नद अहमद 2-84, इब्ने हिशाम 2-100 ता 104

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-215, ज़हबी ने हदीस की तस्हीह फ़रमाई है, इब्ने हिशाम 2-99

उजल व कारा और बीरे मऊना के दिलदोज वाकिआत और खुबैब रज़ि० की जवांमर्दी

जंगे उहुद के बाद दुशमनों ने मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाने और पामाल करने की मुख़्तलिफ़ तदाबीर पर अमल किया, चुनांचे 4 हि० में कुरैश ने क़ौमे उज़ल और क़ारा के सात शख़्सों को गांठ कर मदीना में नबी सल्ल० के पास भेजा कि हमारे कबीले इस्लाम लाने को तैयार हैं, हमारे साथ मुअल्लिम कर दीजिये।[2] रसूलुल्लाह सल्ल० ने दस बुज़ुर्ग सहाबा को जिनके सरदार आसिम बिन साबित रज़ि० थे उनके साथ कर दिया, जब यह सहाबा रज़ि० उनकी ज़द में पहुंच गए तो उनके दो सौ जवान आए कि उन्हें ज़िंदा गिरफ़्तार कर लें, तीर अंदाज़ों ने उनसे कहा कि "उतर आओ हम तुम को अम्न देते हैं" हज़रत आसिम रज़ि० ने कहा "मैं काफ़िर की पनाह में नहीं आता।" यह कहकर खुदा से ख़िताब किया कि "अपने पैग़म्बर को ख़बर पहुंचा दे" ग़र्ज़ वह मअ़ सात आदमियों के लड़कर तीरअंदाज़ों के हाथ शहीद हो गए।[2] कुरैश ने चंद आदमियों को भेजा कि आसिम रज़ि० के बदन से गोश्त का एक लोथड़ा काट लाएं कि उनकी शनाख़्त न हो, कुदरते खुदावंदी ने शहीद मुस्लिम की यह तह्क़ीर गवारा न की, शहद की मक्खियों ने लाश पर परा डाल दिया, कुरैश नाकाम फिर गए।[3] लेकिन दो

(1) तबक़ात इब्ने सअ़द 2-50

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुर्रजीअ़

(3) सीरत इब्ने हिशाम 2-171

शख़्सों ने जिनके नाम खुबैब रज़ि0 और ज़ैद रज़ि0 थे काफ़िरों के वादों पर एतिमाद किया और टीके से उतर आए, सुफ़यान हुज़ली मक्का में ले गया और कुरैश के पास फ़रोख़्त कर आया, कुरैश ने उन्हें हारिस बिन आमिर के घर में चंद रोज़ भूका प्यासा कैद रखा, एक दिन हारिस का बच्चा खेलता हुआ हज़रत खुबैब रज़ि0 के पास पहुंच गया, उनके पास उस वक़्त उस्तुरा था, उन्होंने बच्चा को ज़ानों पर बिठा लिया, जब बच्चा की मां ने यकायक देखा कि उसका बच्चा कैदी के पास है, जिसे चंद रोज़ से उन्होंने बे आब व दाना रखा था और उसके पास उस्तुरा भी है, तो बे इख़्तियार चीख़ मारी, हज़रत खुबैब रज़ि0 ने कहा: यह समझती है कि मैं बच्चा को कत्ल कर दूंगा, नहीं जानती कि मुसलमानों का काम ग़दर करना नहीं।

ज़ालिम कुरैश वालों ने चंद रोज़ के बाद हज़रत खुबैब रज़ि0 को सलीब के नीचे ले जाकर खड़ा कर दिया और कहा "अगर इस्लाम छोड़ दो तो तुम्हारी जाँ बख़्शी हो सकती है" दोनों बुज़ुर्गवार ने जवाब दिया कि "जब इस्लाम न बाकी रहा तो जान रखकर क्या करेंगे।"

अब कुरैश ने पूछा कि कोई तमन्ना हो तो बयान करो, हज़रत खुबैब रज़ि0 ने कहा कि दो रकअ़त नमाज़ पढ़ लेने की हमें मोहलत दी जाए, मोहलत दी गई तो उन्होंने नमाज़ अदा की, हज़रत खुबैब रज़ि0 ने कहा मैं नमाज़ में ज़्यादा वक़्त सर्फ़ करता, लेकिन सोचा कि दुशमन यह न कहें कि

मौत से डर गया है, बेरहमों ने दोनों को सलीब पर लटकाया और नेज़ा वालों से कहा कि नेज़ा की उनी से उनके जिस्मों के एक एक हिस्सा पर चर्के लगाएं।[1]

अल्लाहु अक्बर! उनका दिल इस्लाम पर कितना क़ाइम था, उनको दीने हक़ पर कितनी इस्तिक़ामत थी, उनको हमेशा की नजात और खुदा की खुशनूदी का कितना यक़ीन था कि इन तमाम तकलीफ़ों और ज़ख़्मों को बर्दाश्त करते हुए उफ़ तक न की।

एक सख़्त दिल ने हज़रत खुबैब रज़ि० के जिगर को छेदा और पूछा कहो अब तुम भी पसंद करते होगे कि मुहम्मद (सल्ल०) फंस जाएं और मैं छूट जाऊं, खुबैब रज़ि० ने निहायत जोश से जवाब दिया "खुदा जानता है मैं तो यह भी नहीं पसंद करता कि मेरी जान बच जाने के लिये नबी सल्ल० के पांव में कांटा भी लगे।[2]

खुदा के इस बरगुज़ीदा बंदा फ़तल फ़ित्यान (जवांमर्द तरीन जवांमर्दान) ने मक़्तल और तमाशाइयों के हुजूम में सलीब के नीचे खड़े होकर फ़िलबदीह अश्आर कहे हैं, उनसे इस मंज़र की पूरी कैफ़ियत और उस बुज़ुर्गवार की सदाक़त व मुहब्बते इस्लाम की पाकीज़ा सूरत नज़र आती है:

"अंबोह दर अंबोह लोग मेरे गिर्द अगर खड़े हो रहे हैं
और उन्होंने बड़ी बड़ी जमाअतों को बुला लिया है,

---

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुर्रजीअ व रअ़ल व ज़क्वान
(2) ज़ादुल मआद 3-245

मौत से डर गया है, बेरहमों ने दोनों को सलीब पर लटकाया और नेज़ा वालों से कहा कि नेज़ा की उनी से उनके जिस्मों के एक एक हिस्सा पर चर्के लगाएं।[1]

अल्लाहु अक्बर! उनका दिल इस्लाम पर कितना क़ाइम था, उनको दीने हक़ पर कितनी इस्तिक़ामत थी, उनको हमेशा की नजात और ख़ुदा की ख़ुशनूदी का कितना यक़ीन था कि इन तमाम तकलीफ़ों और ज़ख़्मों को बर्दाश्त करते हुए उफ़ तक न की।

एक सख़्त दिल ने हज़रत ख़ुबैब रज़ि० के जिगर को छेदा और पूछा कहो अब तुम भी पसंद करते होगे कि मुहम्मद (सल्ल०) फंस जाएं और मैं छूट जाऊं, ख़ुबैब रज़ि० ने निहायत जोश से जवाब दिया "ख़ुदा जानता है मैं तो यह भी नहीं पसंद करता कि मेरी जान बच जाने के लिये नबी सल्ल० के पांव में कांटा भी लगे।[2]

ख़ुदा के इस बरगुज़ीदा बंदा फ़तल फ़ित्यान (जवांमर्द तरीन जवांमर्दान) ने मक़्तल और तमाशाइयों के हुजूम में सलीब के नीचे खड़े होकर फ़िलबदीह अश्आर कहे हैं, उनसे इस मंज़र की पूरी कैफ़ियत और उस बुज़ुर्गवार की सदाक़त व मुहब्बते इस्लाम की पाकीज़ा सूरत नज़र आती है:

"अंबोह दर अंबोह लोग मेरे गिर्द अगर खड़े हो रहे हैं
और उन्होंने बड़ी बड़ी जमाअतों को बुला लिया है,

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब गज़वतुर्रजीअ व रअ़ल व ज़कवान
(2) ज़ादुल मआद 3-245

यह सब के सब अदावत निकाल रहे हैं और मेरे खिलाफ़ जोश दिखा रहे हैं, और मैं इस हलाकत गाह में बंधा हुआ हूं, कबीलों ने अपनी औरतों और बच्चों को भी बुला रखा है और मुझे एक मज़बूत बुलंद लकड़ी के पास ले आए हैं, उन्होंने कह दिया है कि कुफ़्र इख़्तियार करने से मुझे आज़ादी मिल सकती है मगर इससे तो मौत मेरे लिये ज़्यादा सहल है, मेरी आंखों से लगातार आंसू जारी हैं, मगर मुझे कुछ ना शकेबाई नहीं, मैं दुशमन के सामने न आजिज़ी करूंगा और न रोऊं चिल्लाऊंगा, मैं जानता हूं कि मैं खुदा की तरफ़ जा रहा हूं, मौत से मुझे इसलिये डर नहीं कि मर जाऊंगा, लेकिन मैं तो लपट वाली आग के खून चूसने से डरता हूं, इस अर्शे अज़ीम के मालिक ने मुझ से कोई ख़िदमत लेनी चाही और मुझे शकेबाई के लिये फ़रमाया है, अब उन्होंने ज़द व कोब से मेरा तमाम गोश्त कूट कूट दिया है और मेरी उम्मीद जाती रही है, मैं अपनी दरमांदगी और बेवतनी व बेकसी की फ़रयाद और उन इरादों की (जो मेरे जान तोड़ने के बाद यह लोग रखते हैं) खुदा से करता हूं, बखुदा जब मैं इस्लाम पर जान दे रहा हूं तो मैं यह परवाह नहीं करता कि राहे खुदा में किस पहलू पर गिरता और क्योंकर जान देता हूं, खुदा की ज़ात से अगर वह चाहे यह बिल्कुल उम्मीद है कि वह पारहाए गोश्त के हर एक टुक्ड़े को बरकत अता फ़रमाए।"[1]

(1) ज़ादुल मआद 3-245, इब्ने हिशाम 2-176

सबसे आख़िर में यह दुआ थी:

اَللّٰهُمَّ اِنَّا قَدْ بَلَّغْنَا رِسَالَةَ رَسُوْلِكَ فَبَلِّغْهُ الْغَدَاةَ مَا يُصْنَعُ بِنَا.

"ऐ खुदा हमने तेरे रसूल सल्ल0 के अहकाम उन लोगों को पहुंचा दिये, अब तू अपने रसूल सल्ल0 को हमारे हाल की और उनके करतूतों की ख़बर फ़रमा दे।"[1]

सईद बिन आमिर रज़ि0 (जो हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 के उम्माल में से थे) का हाल यह था कि कभी कभी यकबारगी बेहोश हो जाया करते, उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने उनसे वजह पूछी वह बोले मुझे न कोई मर्ज़ है, न कुछ शिकायत है, जब ख़ुबैब रज़ि0 को सलीब पर चढ़ाया गया तो मैं मज्मा में मौजूद था, मुझे जिस वक़्त ख़ुबैब की बातें याद आ जाती हैं तो मैं कांप कर बेहोश हो जाता हूं।[2]

अबू बराअ् आमिर ने भी ऐसा ही फ़रेब किया, वह नबी सल्ल0 की ख़िदमत में आया और अर्ज़ की कि मुल्के नज्द की तअ्लीम व हिदायत के कुछ मुनादी मेरे साथ भेज दीजिये, उसका भतीजा नज्द का रईस था, आमिर ने यक़ीन दिलाया था कि मुनादी करने वालों की हिफ़ाज़त की जाएगी, नबी सल्ल0 ने मुंज़िर बिन अम्र अंसारी रज़ि0 को मअ् सत्तर सहाबा रज़ि0 जो कुर्राअ् व फुज़ला व मुंतख़ब बुज़ुर्गवार थे, उसके साथ कर दिया, जब वह बीरे मऊना पर जा पहुंचे, जो बनी आमिर का इलाक़ा था वहां से हराम बिन, मल्हान को नामए नबवी सल्ल0 देकर तुफ़ैल हाकिम के पास भेजा

(1) व (2) इब्ने हिशाम 2-173

गया, उसने उस सफ़ीर को क़त्ल करा दिया, जब्बार बिन सलमा एक शख़्स था, जिसने हाकिम के इशारे से उनकी पुश्त में नेज़ा मारा था जो छाती से साफ़ निकल गया, उन्होंने गिरते हुए कहा "فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ" "क़सम है कअ्बा के ख़ुदा की मैं अपनी मुराद को पहुंच गया।"

क़ातिल पर इस फ़िक़रह ने ऐसा असर किया कि वह नबी सल्ल० की ख़िदमत में आकर मुसलमान हो गया, हाकिम ने बाक़ी सब को भी क़त्ल करा दिया, कअ्ब बिन ज़ैद ने जो कुश्तगाने ख़ंजरे तस्लीम की ओट में छिप कर बच रहे थे, इस वाक़िआ की ख़बर आंहज़रत सल्ल० को पहुंचाई।[1]

बनू नज़ीर की जिलावतनी

बनी इस्राईल (यहूद) अपने इब्तिदाई ज़माना में ख़ुदा की मक़्बूल और बरगुज़ीदा क़ौम थी, लेकिन आख़िर दौर में वह ख़ुदा से इस क़दर दूर होते गए कि ख़ुदा के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ ठहरे।

हज़रत मसीह अलै० जैसे रहम दिल ने उनकी हालतों को देखकर उन्हें सांप और सांप के बच्चे बताया था और यह भी ख़बर दी थी कि ख़ुदा की बादशाहत इस क़ौम से ले जाकर एक दूसरी क़ौम को दी जाएगी जो इसके अच्छे फल लाए।

जब इस बशारत के ज़ुहूर का वक़्त आ गया और

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुर्रजीअ, इब्ने हिशाम 2-184

मुहम्मद सल्ल0 ने अपनी बेहतरीन तअ़लीम की तबलीग़ शुरू की तो यहूद ने सख़्त पेच व ताब खाया और आख़िर यही फ़ैसला किया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल0 को भी वैसे ही ज़ुल्म व सितम की आमाजगाह बनाया जाए जैसा कि मसीह अलै0 को बना चुके थे।[1]

यहूद अगर्चे हिज्रत के पहले ही साल मुआहदा करके अम्ने आम्मा का पैमान बांध चुके थे, लेकिन फ़ित्री शरारत ने ज़्यादा देर तक छिपा न रहने दिया, मुआहदा से डेढ़ साल ही के बाद शरारतों का आग़ाज़ हो गया, जब नबी सल्ल0 बद्र की जानिब गए हुए थे उन्ही दिनों का ज़िक्र है कि एक मुसलमान औरत बनू कैनक़ाअ़ के मुहल्ला में दूध बेचने गई, चंद हूदियों ने शरारत की और उसे सरे बाज़ार बरहना कर दिया, औरत की चीख़ व पुकार सुनकर एक मुसलमान मौक़ा पर जा पहुंचा, उसने तैश में आकर फ़साद अंगेज़ यहूदी को क़त्ल कर दिया, इस पर सब यहूदी जमा हो गए उस मुसलमान को भी मार डाला और बलवा भी किया, नबी सल्ल0 ने बद्र से वापस आकर यहूदियों को इस बलवा के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त करने के लिये बुलाया, उन्होंने मुआहदा का काग़ज़ भेज दिया और ख़ुद जंग पर आमादा हो गए।[2]

यह हरकत अब बग़ावत तक पहुंच गई थी, इसलिये उनको यह सज़ा दी गई कि मदीना छोड़ दें[3] क़ुरैश ने

(1) रहमतुल लिलआलमीन 1-129, 130 (2) अलबिदाया वन्निहाया 4-403, उयूनुल असर 1-295 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हदीस बनी अन्नज़ीर

मदीना के बुत परस्तों को नबी सल्ल0 के ख़िलाफ़ जंग करने की बाबत ख़त लिखा था, मगर आंहज़रत सल्ल0 की ज़ीरकी व दानाई से उनकी यह तदबीर कारगर न हुई, अब बद्र में शिकस्त पाने के बाद कुरैश ने यहूद को फिर लिखा कि "तुम जाइदादों और किलों के मालिक हो, तुम मुहम्मद (सल्ल0) से लड़ो, वर्ना हम तुम्हारे साथ ऐसा और ऐसा करेंगे, तुम्हारी औरतों की पाज़ेबें तक उतार लेंगे, इस ख़त के मिलने पर बनू नज़ीर ने अहद शिकनी का और आंहज़रत सल्ल0 से फ़रेब करने का इरादा कर लिया"[1]

4 हि0 का ज़िक्र है कि नबी सल्ल0 एक कौमी चंदा फ़राहम करने के लिये बनू नज़ीर के मुहल्ला में तशरीफ़ ले गए, उन्होंने आंहज़रत सल्ल0 को एक दीवार के नीचे बिठा दिया और तदबीर की कि इब्ने जहाश मलऊन दीवार के ऊपर जाकर एक भारी पत्थर नबी सल्ल0 पर गिरा दे और हुज़ूर सल्ल0 की ज़िंदगी का ख़ातमा कर दे।

आंहज़रत सल्ल0 को वहां जा बैठने के बाद बएलामे रब्बानी इस शरारत का इल्म हो गया और हिफ़ाज़ते इलाही से बच कर चले आए।[2]

बिलआख़िर बनू नज़ीर को यह सज़ा दी गई कि ख़ैबर जाकर आबाद हो जाएं उन्होंने छः सौ ऊंटों पर अस्बाब लादा, अपने घरों को अपने हाथ से गिराया, बाजे बजाते हुए निकले और ख़ैबर जा बसे।[3]

(1) सुनन अबी दाऊद, बाब फ़ी ख़ैबर बनी अन्नज़ीर (2) सीरत इब्ने हिशाम 2-190
(3) मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक 5-358, इब्ने हिशाम 2-191, 192

गज़वए ख़ंदक़

बनू नज़ीर मदीना से निकल कर ख़ैबर पहुंचे तो उन्होंने एक निहायत अज़ीमुश्शान साज़िश शुरू की, उन रुअसा में से सलाम बिन अबी अलहुक़ैक़, हुय्य बिन अख़्तब, कनाना बिन अर्रबीअ़ वग़ैरा मक्का मुअ़ज़्ज़मा गए और क़ुरैश से मिल कर कहा "अगर हमारा साथ दो तो इस्लाम का इस्तीसाल किया जा सकता है" क़ुरैश इसके लिये हमेशा तैयार रहते, क़ुरैश को आमादा करके यह लोग क़बीला ग़तफ़ान के पास गए और उनको लालच दिया कि ख़ैबर का निस्फ़ मुहासिल उनको हमेशा दिया करेंगे, बनू असद ग़तफ़ान के हलीफ़ थे, ग़तफ़ान ने उनको लिख भेजा कि तुम भी साथ फ़ौजें लेकर आओ, क़बीला बनू सुलैम से क़ुरैश की क़राबत थी, इस तअ़ल्लुक़ से उन्होंने भी साथ दिया, बनू सअ़द का क़बीला यहूद का हलीफ़ था, इस बिना पर यहूद ने उनको भी आमादा किया, ग़र्ज़ तमाम क़बाइले अरब से लशकरे गिरां तैयार होकर मदीना की तरफ़ बढ़ा, उनकी तअ़दाद दस हज़ार से ज़ाइद थी।[1]

आंहज़रत सल्ल0 ने यह ख़बरें सुनीं, सहाबा से मशवरा किया, हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि0 ईरानी होने की वजह से ख़दंक़ के तरीक़ा से वाक़िफ़ थे, उन्होंने राए दी कि खुले मैदान में निकल कर मुक़ाबला करना मस्लिहत नहीं, एक महफ़ूज़ मक़ाम में लशकर जमा किया जाए और इर्द गिर्द

(1) फ़त्हुल बारी 7-393, इब्ने हिशाम 2-214, 215

ख़ंदक़ खोद ली जाए, तमाम लोगों ने इस राए को पसंद किया और ख़ंदक़ खोदने के आलात मुहय्या किये गये।

मदीना में तीन जानिब मकानात और नख़्लिस्तान का सिलसिला था जो शहर पनाह का काम देता था, सिर्फ़ शामी रुख़ खुला हुआ था, आंहज़रत सल्ल0 ने 3/ हज़ार सहाबा रज़ि0 के साथ शहर से निकल कर उसी मक़ाम में ख़ंदक़ की तैयारियां शुरू कीं, यह ज़ुलक़अ़दा 5 हि0 की 8/ तारीख़ थी।

आंहज़रत सल्ल0 ने निशानात ख़ुद क़ाइम किये, दाग़ बेल डाल कर दस दस आदमियों पर दस दस गज़ ज़मीन तक़सीम की, ख़ंदक़ का उमुक़ 5/ गज़ रखा गया 6/ दिन में तीन हज़ार मुतबर्रक हाथों से यह काम अंजाम पाया।[1]

जब मस्जिदे नबवी बन रही थी तो सरवरे दो जहां सल्ल0 मज़दूरों की सूरत में थे, आज भी वही इबरत अंगेज़ मंज़र है, जाड़े की रातें हैं, तीन तीन दिन का फ़ाक़ा है, मुहाजिरीन और अंसार अपनी पीठों पर मिट्टी लाद लाद कर फेंकते हैं और जोशे मुहब्बत में हम आवाज़ होकर कहते हैं

نَحْنُ الَّذِيْنَ بَايَعُوْا مُحَمَّدًا   عَلَى الْإِسْلَامِ مَا بَقِيْنَا أَبَدًا

"हम वहीं हैं जिन्होंने हमेशा के लिये मुहम्मद (सल्ल0) के हाथ पर बैअ़त की है"[2]

---

(1) फ़त्हुल बारी 7-393,394, इब्ने हिशाम 2-216,217

(2) सहीहुल बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी ग़ज़्वतुल ख़ंदक़

सरवरे दो आलम भी मिट्टी फेंक रहे हैं, शिकम मुबारक पर गर्द अट गई है उसी हालत में यह रिज्ज़ ज़बान पर है।

وَاللّٰهِ لَوْلَا اللّٰهُ مَا اهْتَدَيْنَا وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صَلَّيْنَا
فَأَنْزِلَنْ سَكِيْنَةً عَلَيْنَا وَثَبِّتِ الْأَقْدَامَ إِنْ لَاقَيْنَا
إِنَّ الْأُولٰى قَدْ بَغَوْا عَلَيْنَا إِذَا أَرَادُوْا فِتْنَةً أَبَيْنَا

"أَبَيْنَا" का लफ्ज़ जब आता था तो आवाज़ बुलंद हो जाती थी और मुकर्रर कहते थे, इसके साथ अंसार के हक् में दुआ भी देते थे, और यह मौज़ूं अलफाज़ जबान पर आते थे।

أَللّٰهُمَّ إِنَّهُ لَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرُ الْآخِرَةِ فَبَارِكْ فِي الْأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةِ [1]

पत्थर खोदते खोदते इत्तिफाकन एक सख़्त चट्टान आ गई, किसी की ज़र्ब काम नहीं देती थी, रसूल सल्ल0 तशरीफ लाए, तीन दिन का फाका था और पेट पर पत्थर बंधा हुआ था आपने दस्ते मुबारक से फावड़ा मारा तो चट्टान एक तौदए ख़ाक थी।[2]

सिल्अ़ की पहाड़ी को पुश्त पर रखकर सफ आराई की गई, मस्तूरात शहर के महफूज़ किलों में भेज दी गईं और चूंकि बनू कुरैज़ा के हमला का अंदेशा था इसलिये सलमा बिन असलम 200/ आदमियों के साथ मुतअ़य्यन किये गए कि उधर से हमला न होने पाए।[3]

---

(1) व (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल ख़ंदक

(3) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-422

बनू कुरैज़ा के यहूद अब तक अलग थे, लेकिन बनू नज़ीर ने उनको मिला लेने की कोशिश की, हैय बिन अख़्तब (हज़रत सफ़ीया रज़ि0 का बाप) खुद कुरैज़ा के सरदार कअ़ब बिन असद के पास गया, उसने मिलने से इंकार किया, हैय ने कहा "मैं फ़ौजों का दरयाए बेकरां लाया हूं कुरैश और तमाम अरब उमंड आया है और एक मुहम्मद (सल्ल0) के खून का प्यासा है, यह मौक़ा हाथ से जाने देने के क़ाबिल नहीं, अब इस्लाम का ख़ातमा है।" कअ़ब अब भी राज़ी न था, उसने कहाः मैंने मुहम्मद (सल्ल0) को हमेशा सादिकुल वअ़्द पाया, उनसे अहद शिकनी ख़िलाफ़े मुरव्वत है, लेकिन हैय का जादू राईगां नहीं जा सकता था।

आं हज़रत सल्ल0 को यह हाल मअ़लूम हुआ तो तहक़ीक़ और इत्मामे हुज्जत के लिये सअ़्द बिन मआज़ रज़ि0 और सअ़्द बिन उबादा रज़ि0 को वहां भेजा और फ़रमाया कि अगर दरहक़ीक़त बनू कुरैज़ा ने मुआहदा तोड़ दिया हो तो वहां से आकर इस ख़बर को मुब्हम लफ़्ज़ों में बयान करना कि लोगों में बेदिली न फैलने पाए, दोनों साहिबों ने बनू कुरैज़ा को मुआहदा याद दिलाया तो उन्होंने कहा "हम नहीं जानते मुहम्मद (सल्ल0) कौन हैं और मुआहदा क्या चीज़ है।"[1]

ग़र्ज़ बनू कुरैज़ा ने......इस बेशुमार फौज में और इज़ाफ़ा कर दिया, कुरैश, यहूद, और क़बाइले अरब की दस

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-220, 224

हज़ार फ़ौजें तीन हिस्सों में तक़सीम होकर मदीना के तीन तरफ़ इस ज़ोर शोर से हमलाआवर हुईं कि मदीना की ज़मीन हिल गई।[1]

इस मअ़रका की तस्वीर ख़ुद ख़ुदा ने खींची है:

اِذْجَاءُوْكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا. هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالاً شَدِيْدًا

"जबकि दुश्मन ऊपर की तरफ़ और नशेब की तरफ़ से आ पड़े, और जब आंखें डगने लगीं और कलेजे मुंह में आ गए और तुम ख़ुदा की निस्बत तरह तरह के गुमान करने लगे, तब मुसलमानों की जांच का वक़्त आ गया वह ज़ोर से लरज़ने लगे।"[2]

फ़ौजे इस्लाम में मुनाफ़िक़ों की तअ़दाद भी शामिल थी, जो बज़ाहिर मुसलमानों के साथ थे, लेकिन मौसम की सख़्ती, रसद की क़िल्लत, मुतवातिर फ़ाक़े, रातों की बेख़्वाबी, बेशुमार फ़ौजों का हुजूम, ऐसे वाक़िआत थे जिन्होंने उनका पर्दा फ़ाश कर दिया, आ आकर आंहज़रत सल्ल० से इजाज़त मांगनी शुरू की कि हमारे घर महफ़ूज़ नहीं, हमको शहर में वापस चले जाने की इजाज़त दी जाए।[3]

---

(1) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-423, फ़त्हुल बारी में और सीरत की किताबों में लश्कर की तअ़दाद दस हज़ार मज़कूर है। (2) सहीहुल बुख़ारी में मौजूद है कि यह आयात ग़ज़वए ख़ंदक के बारे में नाज़िल हुईं, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुल ख़ंदक (3) ज़ादुल मआ़द 3-272, सीरत इब्ने हिशाम 2-222

يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ، إِنْ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا

"कहते हैं कि हमारे घर खुले पड़े हैं और वह खुले नहीं हैं, बल्कि उनको भागना मक़्सूद है।" (अहज़ाब)

लेकिन जाँनिसाराने इस्लाम का तिलाए इख़्लास इसी कसौटी पर आज़माने के क़ाबिल था।[1]

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا هَذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا

"जब मुसलमानों ने क़बाइल की फ़ौजें देखीं तो बोल उठे कि यह वही है जिसका वादा ख़ुदा ने और उसके रसूल (सल्ल०) ने किया था और ख़ुदा और उसका रसूल सल्ल० सच्चे थे और इस बात ने उनके यक़ीन और इताअ़त को और भी बढ़ा दिया।" (अहज़ाब)

मुहासरा की शिद्दत और सहाबए किराम की अज़ीमत

तक़रीबन एक महीना तक इस सख़्ती से मुहासरा क़ाइम रहा कि आंहज़रत सल्ल० और सहाबा रज़ि० पर तीन तीन फ़ाक़े गुज़र गए, एक दिन सहाबा रज़ि० ने बेताब होकर आंहज़रत सल्ल० के सामने पेट खोल कर दिखाए, कि पत्थर बंधे हैं, लेकिन जब आप सल्ल० ने शिकम मुबारक खोला तो एक के बजाए दो पत्थर थे।[2] मुहासरा इस क़दर शदीद और पुर ख़तर हो गया था कि एक दफ़ा आंहज़रत स०

(1) तफ़सीरे क़ुर्तबी 14-157 (2) शमाइले तिर्मिज़ी, बाब माजाअ् फ़ी ऐशिन्नबी सल्ल०

ने लोगों से ख़िताब करके फ़रमायाः कोई है जो बाहर निकल कर मुहासरीन की ख़बर लाए? तीन दफ़ा आप सल्ल0 ने यह अलफ़ाज़ फ़रमाए, लेकिन हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 के सिवा और कोई सदा नहीं आई, आंहज़रत सल्ल0 ने उसी मौक़ा पर हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 को हवारी का लक़ब दिया।[1]

मुहासिरीन ख़ंदक़ को उबूर नहीं कर सकते थे, इसलिये दूर से तीर और पत्थर बरसाते थे, आंहज़रत सल्ल0 ने ख़ंदक़ के मुख़्तलिफ़ हिस्सों पर फ़ौजें तक़सीम कर दी थीं जो मुहासिरीन के हमलों का मुक़ाबला करती थीं, एक हिस्सा ख़ुद आप सल्ल0 के एहतिमाम में था।[2]

मुहासरा की सख़्ती देखकर आप सल्ल0 को ख़्याल हुआ कि ऐसा न हो कि अंसार हिम्मत हार जाएं, इसलिये आप सल्ल0 ने ग़तफ़ान से इस शर्त पर मुआहदा करना चाहा कि मदीना की पैदावार का एक सुलुस उनको दे दिया जाए, सअ़द बिन उबादा और सअ़द बिन मआज़ रज़िअल्लाहु अन्हुमा को रुअसाए अंसार ने बुलाकर मशवरा फ़रमाया, दोनों ने अ़र्ज़ की कि अगर यह ख़ुदा का हुक्म है तो इंकार की मजाल नहीं, लेकिन अगर राए है तो यह अ़र्ज़ है कि कुफ़्र की हालत में भी कोई शख़्स हमसे ख़िराज मांगने की जुर्अत न कर सका और अब तो इस्लाम ने हमारा पाया बहुत बुलंद कर दिया है, यह इस्तिक़लाल देखकर आप सल्ल0 को इत्मीनान हुआ, सअ़द रज़ि0 ने मुआहदा का

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल ख़ंदक़

(2) सीरतुन्नबी सल्ल0 1-425

कागज़ लेकर तमाम इबारत मिटा दी और कहा उन लोगों से जो बन आए कर दिखाएं।[1]

अब मुश्रिकों की तरफ़ से हमला का यह इंतिज़ाम किया गया कि कुरैश के मशहूर जनरल यअनी अबू सुफ़यान, ख़ालिद बिन वलीद, अम्र बिन अलआस, ज़िरार बिन अलख़त्ताब, हुबैरा, का एक एक दिन मुकर्रर हुआ, हर जनरल अपनी बारी के दिन पूरी फ़ौज लेकर लड़ता था, ख़ंदक़ को उबूर नहीं कर सकते थे, लेकिन ख़ंदक़ का अर्ज़ चूंकि ज़्यादा न था इसलिये बाहर से तीर और पत्थर बरसाते थे।[2] चूंकि इस तरीक़ा में कामियाबी नहीं हुई इसलिये क़रार पाया कि अब आम हमला किया जाए, तमाम फ़ौजें यक्जा हुईं, क़बाइल के तमाम सरदार आगे आगे थे, ख़ंदक़ एक जगह से इत्तिफ़ाक़न कम अ़रीज़ थी, यह मौक़ा हमला के लिये इंतिख़ाब किया गया, अरब के मशहूर बहादुरों यअ़नी ज़िरार, हुबैरा, नौफ़ल, अम्र बिन अब्दे वुद्द ने ख़ंदक़ के इस किनारे से घोड़ों को महमीज़ किया तो उस पार थे, इनमें सबसे ज़्यादा बहादुर अम्र बिन अब्दे वुद्द था, वह एक हज़ार सवारों के बराबर माना जाता था, जंगे बद्र में ज़ख़्मी होकर वापस चला गया था और क़सम खाई थी कि जब तक इंतिक़ाम न लूंगा बालों में तेल न डालूंगा, उस वक़्त उसकी उम्र 90/बरस की थी, ताहम सबसे पहले वही आगे बढ़ा और अरब के दस्तूर के मुवाफ़िक़ पुकारा कि मुक़ाबला को कौन आता है? हज़रत अली रज़ि0 ने उठ कर कहा कि

(1) कशफ़ुल अस्तार लिल बज़्ज़ाज़ 1-332, सीरत इब्ने हिशाम, 2-223

(2) सीरते हलबीया 2-636

"मैं" लेकिन आंहज़रत सल्ल0 ने रोका कि यह अम्र बिन अब्दे वुद्द है! हज़रत अली रज़ि0 बैठ गए, लेकिन अम्र की आवाज़ का और किसी तरफ़ से जवाब नहीं आता था, अम्र ने दोबारा पुकारा और फिर वही एक सदा जवाब में थी, तीसरी दफ़ा जब आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि "यह अम्र है" तो हज़रत अली रज़ि0 ने अ़र्ज़ की हां मैं जानता हूं कि यह अम्र है, ग़र्ज़ आप सल्ल0 ने इजाज़त दी, खुद दस्ते मुबारक से तलवार इनायत की, सर पर अमामा बांधा।

अम्र का कौल था कि कोई शख़्स दुन्या में अगर मुझसे तीन बातों की दरख़्वास्त करे तो एक ज़रूर कबूल करूंगा, हज़रत अली रज़ि0 ने अम्र से पूछा कि क्या वाकई तेरा कौल है, फिर हसबे ज़ैल गुफ़्तगू हुई:

हज़रत अली रज़ि0:- मैं दरख़्वास्त करता हूं कि तू इस्लाम ला।

अम्र: यह नहीं हो सकता।

हज़रत अली रज़ि0: लड़ाई से वापस चला जा।

अम्र:- मैं ख़ातूनाने अरब का तअ़ना नहीं सुन सकता।

हज़रत अली रज़ि0: मुझसे मअ़रका आरा हो,

अम्र हंसा और कहा मुझको उम्मीद न थी कि आसमान के नीचे यह दरख़्वास्त भी मेरे सामने पेश की जाएगी, हज़रत अली रज़ि0 प्यादा थे, अम्र की ग़ैरत ने यह गवारा न किया, घोड़े से उतर आया और पहली तलवार घोड़े के पांव पर मारी कि कोंचें कट गई, फिर पूछा कि तुम कौन हो?

आपने नाम बताया, उसने कहा मैं तुमसे लड़ना नहीं चाहता, आपने फ़रमाया "हां लेकिन मैं चाहता हूं" अम्र अब गुस्सा से बेताब था, पर्तले से तलवार निकाली और आगे बढ़कर वार किया, हज़रत अली रज़ि० ने सिपर पर रोका, लेकिन सिपर में डूब कर निकल आई और पेशानी पर लगी, गो ज़ख़्म कारी न था, ताहम यह तुग़रा आपकी पेशानी पर यादगार रह गया, क़ामूस में लिखा है कि हज़रत अली रज़ि० को ज़ुलक़रनैन भी कहते थे, जिसकी वजह यह थी कि आपकी पेशानी पर दो ज़ख़्मों के निशान थे, एक अम्र के हाथ का और एक इब्ने मुलजिम का, दुशमन का वार हो चुका तो हज़रत अली रज़ि० ने वार किया, उनकी तलवार शाना काट कर नीचे उतर आई, साथ ही हज़रत अली रज़ि० ने अल्लाहु अक्बर का नअ़रा मारा और फ़त्ह का एलान हो गया।[1] अम्र के बाद ज़िरार और हुबैरा ने हमला किया लेकिन जब ज़ुलफ़िक़ार का हाथ बढ़ा तो पीछे हटना पड़ा, हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने ज़िरार का तआ़क़ुब किया, ज़िरार ने मुड़कर बर्छे का वार करना चाहा, लेकिन रोक लिया और कहा उमर! इस एहसान को याद रखना।[2]

नौफ़ल भागते हुए ख़ंदक़ में गिरा, सहाबा रज़ि० ने तीर मारने शुरू किये, उसने कहा "मुसलमानो! मैं शरीफ़ाना मौत चाहता हूं" हज़रत अली रज़ि० ने उसकी दरख़्वास्त मंज़ूर की

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-34, सीरत इब्ने हिशाम 2-224, 225, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 3-436, 439, सीरतुन्नबी सल्ल० 1-427, 428

(2) सीरते हलबीया 2-644

और ख़ंदक़ में उतर कर तलवार से मारा कि शरीफ़ों के शायान था।[1] हमला का यह दिन बहुत सख़्त था तमाम दिन लड़ाई रही, कुफ़्फ़ार हर तरफ़ से तीरों और पत्थरों का मेंह बरसा रहे थे और एक दम के लिये यह बारिश थमने न पाई थी, यही दिन है जिसका ज़िक्र अहादीस में है कि आंहज़रत सल्ल0 की मुसलसल चार नमाज़ें क़ज़ा हुईं, मुसलसल तीर अंदाज़ी और संग बारी से जगह से हटना नामुम्किन था।[2]

हज़रत सफ़ीया रज़ि0 का दिलेराना इक़दाम

मस्तूरात जिस क़िला में थीं, बनू क़ुरैज़ा की आबादी से मुत्तसिल था, यहूदियों ने यह देखकर कि तमाम जमईयत आंहज़रत सल्ल0 के साथ है, क़िला पर हमला किया, एक यहूदी क़िला के फाटक तक पहुंच गया और क़िला पर हमला करने का मौक़ा ढूंढ रहा था, हज़रत सफ़ीया रज़ि0 (आंहज़रत सल्ल0 की फूफी) ने देख लिया, मस्तूरात की हिफ़ाज़त के लिये हज़रत हस्सान रज़ि0 बिन साबित (शाइरे रसूल सल्ल0) मुतअय्यन कर दिये गए थे, हज़रत सफ़ीया रज़ि0 ने उनसे कहा कि उतर कर इसको क़त्ल कर दो, वर्ना यह जाकर दुशमनों को पता करेगा, हज़रत हस्सान रज़ि0 को एक आरज़ा हो गया था, जिसने उनमें इस क़दर जुब्न पैदा कर दिया था कि वह लड़ाई की तरफ़ नज़र उठाकर भी नहीं देख सकते थे, इस बिना पर अपनी मअज़ूरी ज़ाहिर की

(1) दलाइलुन्नुबुव्वा 3-438, सीरते हलबीया 2-637
(2) सुनन अन्नसाई, किताबुस्सलात

और कहा कि मैं इस काम का होता तो यहां क्यों होता, हज़रत सफ़ीया रज़ि० ने ख़ेमा की एक चोब उखाड़ी और उतर कर यहूदी के सर पर इस ज़ोर से मारी कि सर फट गया, हज़रत सफ़ीया रज़ि० चली आई और हस्सान रज़ि० से कहा कि हथियार और कपड़े छीन लाओ, हस्सान रज़ि० ने कहा जाने दीजिये मुझको इसकी ज़रूरत नहीं, हज़रत सफ़ीया रज़ि० ने कहा अच्छा जाओ उसका सर काट कर क़िला के नीचे फेंक दो कि यहूदी मरऊब हो जाएं, लेकिन यह ख़िदमत भी हज़रत सफ़ीया रज़ि० ही को अंजाम देनी पड़ी, यहूदियों को यक़ीन हुआ कि क़िला में भी फ़ौज मुतअ़य्यन है, इस ख़्याल से फिर उन्होंने हमला की जुर्अत न की।[1]

नुसरते ग़ैबी और मुहासरा का ख़ातमा

मुहासरा जिस क़दर तूल होता जाता था, मुहासरा करने वाले हिम्मत हारते जाते थे, दस हज़ार आदमियों को रसद पहुंचाना, आसान काम न था, इत्तिफ़ाक़ यह कि बावजूद सर्दी के मौसम के इस ज़ोर की हवा चली कि तूफ़ान आ गया, ख़ेमों की तनाबें उखड़ उखड़ गईं, खाने के देगचे चूल्हों पर उलट उलट जाते थे, इस वाक़िआ ने फ़ौजों से बढ़कर काम दिया, इसी बिना पर क़ुर्आन मजीद ने इस बादे सरसर को अस्करे इलाही से तअ़बीर किया है।[2]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ
جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-228

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 3-448

وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا،

"मुसलमानो! खुदा के उस एहसान को याद करो कि जब तुम पर फ़ौजें आ पड़ीं तो हमने उन पर आंधी भेजी और वह फ़ौजें भेजीं जो तुम को दिखाई नहीं देती थीं।" (अहज़ाब)

नुऐम बिन मसऊद सकफ़ी एक ग़तफ़ानी रईस थे, कुरैश और यहूद दोनों उनको मानते थे, वह इस्लाम ला चुके थे, लेकिन कुफ़्फ़ार को अभी इसका इल्म न था, उन्होंने कुरैश और यहूद से अलग अलग जाकर इस किस्म की बातें कीं जिससे दोनों में फूट पड़ गई।[1]

मौसम की सख़्ती, मुहासरा का इम्तिदाद, आंधी का ज़ोर, रसद की किल्लत, यहूद की अलाहिदगी, यह तमाम अस्बाब ऐसे जमा हो गए थे कि कुरैश के पाए सिबात अब नहीं ठहर सकते थे, अबू सुफयान ने फ़ौज से कहा, रसद ख़त्म हो चुकी, मौसम का यह हाल है, यहूद ने साथ छोड़ दिया, अब मुहासरा बेकार है, यह कहकर तबले रहील बजने का हुक्म दिया[2] ग़तफ़ान भी उसके साथ रवाना हो गए, बनू कुरैज़ा मुहासरा छोड़ कर अपने किलों में चले आए और मदीना का उफ़ुक़ 20,22/ दिन तक गुबार आलूद रह कर साफ़ हो गया।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ،

(1) सीरत इब्ने हिशाम
(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-232

"और खुदा ने काफ़िरों को गुस्सा में भरा हुआ हटा दिया कि उनको कुछ हाथ न आया, और मुसलमानों को लड़ने की नौबत न आई।"

(अहज़ाब)

इस मअ़रका में फौजे इस्लाम का जानी नुक़्सान कम हुआ, लेकिन अंसार का सबसे बड़ा बाज़ू टूट गया, यअ़नी हज़रत सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि० जो कबीला औस के सरदार थे ज़ख़्मी हुए और फिर जां बर न हो सके, उनके ज़ख़्म खाने का वाकिआ मुअस्सिर और इबरत अंगेज़ है।

मां अपने जिगर के टुकड़े को जिहाद और शहादत पर आमादा करती है

हज़रत आइशा रज़ि० जिस क़िला में पनाह गुज़ीं थीं, सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि० की मां भी वहीं उनके साथ थीं, हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि मैं क़िला से बाहर निकल कर फिर रही थी, अक़ब से पांव की आहट मअ़लूम हुई, मुड़कर देखा तो सअ़द रज़ि० हाथ में हर्बा लिये जोश की हालत में बड़ी तेज़ी से बढ़े जा रहे हैं और यह शेअ़र ज़बान पर है-

لَبِثْ قَلِيْلاً يُدْرِكِ الْهَيْجَا جَمَلْ لَابَأْسَ بِالْمَوْتِ اِذَا الْمَوْتُ نَزَلْ

"ज़रा ठहर जाना कि लड़ाई में एक शख़्स और पहुंच जाए, जब वक़्त आ गया तो मौत से क्या डर है।"

हज़रत सअ़द रज़ि० की मां ने सुना तो आवाज़ दी

बेटा! दौड़ कर जा, तूने देर लगा दी, सअ़द रज़ि० की ज़िरह इस क़दर छोटी थी कि उनके दोनों हाथ बाहर थे, हज़रत आइशा रज़ि० ने सअ़द रज़ि० की मां से कहा "काश सअ़द की लम्बी ज़िरह होती" इत्तिफ़ाक़ यह कि इब्नुल अरक़ा ने ताक कर खुले हुए हाथ पर तीर मारा जिससे अकहल की रग कट गई।[1] ख़ंदक़ का मअ़रका हो चुका तो आंहज़रत सल्ल० ने उनके लिये मस्जिद के सिहन में एक ख़ेमा खड़ा कराया और उनकी तीमारदारी शुरू की, इस लड़ाई में रुफ़ैदा एक ख़ातून शरीक थीं, जो अपने पास दवाएं रखती थीं और ज़ख़्मों की मरहम पट्टी करती थीं, यह ख़ेमा उन्हीं का था और वह इलाज की निगरां थीं, आंहज़रत सल्ल० ने ख़ुद दस्ते मुबारक से मिशक़स लेकर दाग़ा, लेकिन वह फिर वरम कर आया, दोबारा दाग़ा, लेकिन फिर फ़ाएदा न हुआ, कई दिन के बाद यअ़नी बनू क़ुरैज़ा की हलाकत के बाद ज़ख़्म खुल गया और उन्होंने वफ़ात पाई।[2]

ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ाअ़

ग़ज़वए ख़ंदक़ के बाद आप सल्ल० ने ग़तफ़ान के क़बाइल के मुक़ाबला के लिये चार सौ सहाबा रज़ि० के साथ नज्द का रुख़ किया, इस ग़ज़वा में सहाबा रज़ि० के पांव ऐसे ज़ख़्मी हो गए थे कि चीथड़े लपेट कर चलते थे इसलिये इस ग़ज़वा का नाम ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ है।[3] इस

(1) सहीहुल बुख़ारी, बाब रजउन्नबी सल्ल० मिनल अहज़ाब, तफ़सील सीरत इब्ने हिशाम 2-226, 1227 और दलाइलुन्नुबूव्वा 3-440-441में है। (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब रजउन्नबी सल्ल० मिनल अहज़ाब, फ़त्हुल बारी 7-412 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ाअ़

ग़ज़वा के बाद यह वाक़िआ पेश आया कि दो सहाबी अब्बाद बिन बिश्र रज़ि० और अम्मार बिन यासिर रज़ि० एक जगह पहरे पर मुक़र्रर थे, हज़रत अब्बाद रज़ि० खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे और हज़रत अम्मार सोए हुए थे, एक दुशमन ने हज़रत अब्बाद रज़ि० को एक तीर मारा, उन्होंने तीर निकाल कर फेंक दिया और नमाज़ बराबर पढ़ते रहें, यहां तक कि उनके तीन तीर लगे, लेकिन वह नमाज़ में मशगूल रहे, सलाम फेरने के बाद अपने साथी को जगाया, उन्होंने कहा सुब्हानल्लाह! तुमने हमें जगा क्यों न दिया, उन्होंने कहा कि मैं एक सूरत पढ़ रहा था मेरा जी न चाहा कि उसको नातमाम छोड़ूं।[1]

ग़ज़वए बनू कुरैज़ा

आंहज़रत सल्ल० ने आग़ाज़े क़्याम में यहूद के साथ मुआहदा किया था, और उनको जान व माल व मज़हब हर चीज़ में अम्न व आज़ादी बख़्शी, लेकिन जब कुरैश ने उनको तहरीज़ व तह्दीद का ख़त लिखा तो वह आमादए बग़ावत हो गए, आंहज़रत सल्ल० ने उन लोगों से तज्दीदे मुआहदा करनी चाही, बनू नज़ीर ने इंकार किया और जिला वतन कर दिये गये, लेकिन बनू कुरैज़ा ने नए सिरे से मुआहदा कर लिया, चुनांचे उनको अम्न दे दिया गया, सहीह मुस्लिम में इन वाक़िआत को इख़्तिसार के साथ इन अलफ़ाज़ में बयान किया गया है......[2]

(1) मुस्नद अहमद 3-344, सुनन अबू दाऊद, किताबुत्तहारत, बाबुल वुज़ू मिनद्दम
(2) सीरतुन्नबी सल्ल० 1-453

عَنِ ابْنِ عُمَرَ اَنَّ يَهُوْدَ بَنِى النَّضِيرِ وَقُرَيْظَةَ حَارَبُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاَجْلٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَنِى النَّضِيرِ وَاَقَرَّ قُرَيْظَةَ وَمَنَّ عَلَيْهِمْ،

"हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि बनू नज़ीर और बनू कुरैज़ा के यहूद ने आंहज़रत सल्ल० से लड़ाई की तो आप सल्ल० ने बनू नज़ीर को जिला वतन कर दिया और कुरैज़ा को रहने दिया और एहसान किया।[1]

बनू नज़ीर जब जिला वतन हुए तो उनके रईसे अअ्ज़म हुय्य बिन अख़्तब, अबू राफ़ेअ़, सलाम बिन अबिल हुकैक ख़ैबर में जाकर आबाद हुए और वहां रियासते आम हासिल कर ली, जंगे अहज़ाब उन्हीं की कोशिशों का नतीजा था, कबाइले अरब में दौरा करके तमाम मुल्क में आग लगा दी और कुरैश के साथ मिल कर मदीना पर हमला आवर हुए, उस वक़्त तक कुरैज़ा मुअहादा पर क़ाइम थे, लेकिन हुय्य बिन अख़्तब ने उनको बहका कर तोड़ लिया और उनसे वादा किया कि ख़ुदा नख़्वास्ता अगर कुरैश दस्त बर्दार होकर चले गए तो मैं ख़ैबर छोड़ कर यहीं रहूंगा, चुनांचे उसने वादा वफ़ा किया, कुरैज़ा ने अहज़ाब में एलानिया शिर्कत की और शिकस्त खाकर हट आए, तो इस्लाम के सबसे बड़े दुशमन हुय्य बिन अख़्तब को साथ लाए,[2] अब इसके सिवा कोई चारा न था कि उनका कोई आख़िरी

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब 1 जिलाउल यहूद मिनल हिजाज़
(2) सीरतुन्नबी 1-454 बहवाला तबरी व सीरत इब्ने हिशाम

फ़ैसला किया जाए, आंहज़रत सल्ल0 ने अहज़ाब से फ़ारिग़ होकर हुक्म दिया कि अभी लोग हथियार न खोलें और कुरैज़ा की तरफ़ बढ़ें।[1] कुरैज़ा अगर सुलह व आश्ती से पेश आते तो क़ाबिले इत्मीनान तस्फ़िया के बाद उनको अम्न हो जाता, लेकिन वह मुक़ाबला का फ़ैसला कर चुके थे, फ़ौज से आगे बढ़कर जब हज़रत अली रज़ि0 उनके क़िलों के पास पहुंचे तो उन्होंने एलानिया आंहज़रत सल्ल0 को गालियां दीं, ग़र्ज़ उनका मुहासरा कर लिया गया और तक़रीबन एक महीना मुहासरा रहा, बिलआख़िर उन्होंने दरख़्वास्त पेश की कि हज़रत सअ़द बिन मआज़ रज़ि0 जो फ़ैसला करें वह हमें मंज़ूर है।

हज़रत सअ़द बिन मआज़ रज़ि0 और उनका क़बीला (औस) कुरैज़ा का हलीफ़ और हम अहद था और अरब में यह तअ़ल्लुक़ हम नसबी से बढ़कर था, आंहज़रत सल्ल0 ने उनकी यह दरख़्वास्त मंज़ूर की।[2]

कुर्आन मजीद में जब तक कोई ख़ास हुक्म नहीं आता था, आंहज़रत सल्ल0 तौरात के अहकाम की पाबंदी फ़रमाते थे, चुनांचे अक्सर मसाइल, क़िब्ला, नमाज़, रज्म, क़िसास बिलमिस्ल, वग़ैरा वग़ैरा में जब तक ख़ास वह्य नहीं आई, आंहज़रत सल्ल0 ने तौरात ही की पाबंदी फ़रमाई, सअ़द रज़ि0 ने जो फ़ैसला किया यअ़नी यह लड़ने वाले क़त्ल किये जाएं, औरतें बच्चे क़ैद हों, माल व अस्बाब ग़नीमत क़रार

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब रुजूउन्नबी सल्ल0 मिनल अहज़ाब
(2) हज़रत सअ़द रज़ि0 की तहकीम का ज़िक्र बुख़ारी में मौजूद है, किताबुल मग़ाज़ी, बाब रुजूउन्नबी सल्ल0 मिनल अहज़ाब

दिया जाए[1] तौरात के मुताबिक़ था, तौरात किताब सनीया इस्हाह 20, आयत 10/ में है:

"जब किसी शहर पर हमला करने के लिये तू जाए तो पहले सुलह का पैग़ाम दे, अगर वह सुलह तस्लीम कर लें और तेरे लिये दरवाज़े खोल दें तो जितने लोग वहां मौजूद हों सब तेरे ग़ुलाम हो जाएंगे, लेकिन अगर सुलह न करें तो उनका मुहासरा कर और जब तेरा ख़ुदा तुझको उन पर क़ब्ज़ा दिला दे तो जिस क़दर मर्द हों, सबको क़त्ल कर दे, बाक़ी औरतें, बच्चे, जानवर और जो चीज़ें शहर में मौजूद हों सब तेरे लिये माले ग़नीमत होंगी।[2]

अहादीस में मज़कूर है कि हज़रत सअ़द रज़ि० ने जब यह फ़ैसला किया तो आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया कि तुमने आसमानी फ़ैसला किया।[3] तौरात के इसी हुक्म की तरफ़ इशारा था, यहूदियों को जब यह हुक्म सुनाया गया तो जो फ़िक़रे उनकी ज़बान से निकले उससे साबित होता है कि वह ख़ुद भी इस फ़ैसला को हुक्मे इलाही के मुवाफ़िक़ समझते थे।

हुय्य बिन अख़्तब जो इन तमाम फ़ितन का बानी था, मक़्तल में लाया गया तो आंहज़रत सल्ल० की तरफ़ उसने नज़र उठा कर देखा और यह फ़िक़रे कहे:

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब जवाज़े क़िताल फ़ी नक़्ज़िल अहद
(2) सीरतुन्नबी सल्ल०, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-435, बहवाला तौरात
(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब रजउन्नबी सल्ल० मिनल अहज़ाब

أَمَا وَاللّٰهِ مَالُمْتُ نَفْسِيْ فِي عَدَاوَتِكَ وَلٰكِنَّهُ مَنْ يَّخْذُلِ اللّٰهَ يُخْذَلُ

"हां खुदा की क़सम मुझको इसका अफ़सोस नहीं है कि मैंने तेरी (आप सल्ल0 की) अदावत की, लेकिन बात यह है कि जो शख़्स खुदा को छोड़ देता है खुदा भी उसको छोड़ देता है।"

फिर लोगों की तरफ़ मुख़ातब होकर कहा:

أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهُ لَا بَأْسَ بِأَمْرِ اللّٰهِ كِتَابٌ وَقَدَرٌ وَمَلْحَمَةٌ كَتَبَهَا اللّٰهُ عَلٰى بَنِيْ إِسْرَائِيْلَ

"लोगो! खुदा के हुक्म की तअ्मील में कुछ मुज़ाइक़ा नहीं, यह एक हुक्मे इलाही था जो लिखा हुआ था, यह एक सज़ा थी जो खुदा ने बनी इस्राईल पर लिखी थी।"[1]

हुय्य बिन अख़्तब की यह बात ख़ास तौर पर लिहाज़ रखने के क़ाबिल है कि जब वह जिला वतन होकर ख़ैबर जा रहा था तो उसने यह मुआहदा किया था कि आंहज़रत सल्ल0 की मुख़ालफ़त पर किसी को मदद न देगा, इस मुआहदा पर उसने खुदा को ज़ामिन किया था, लेकिन अह्ज़ाब में उसेन इस मुआहदा की जिस तरह की तअ्मील की उसका हाल अभी गुज़र चुका।

सरीयए नज्द और हज़रत सुमामा रज़ि0 का क़बूले इस्लाम

नबी सल्ल0 ने कुछ सवार नज्द की जानिब रवाना

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-241

फरमाए थे, वह वापस होते हुए सुमामा बिन असाल को गिरफ़्तार कर लाए थे, फौज वालों ने उन्हें मस्जिदे नबवी सल्ल0 के सुतून से ला बांधा था, नबी सल्ल0 ने वहां तशरीफ लाकर दरयाफ़्त किया कि सुमाका क्या हाल है? सुमाना ने कहा मुहम्मद (सल्ल0) मेरा हाल अच्छा है, अगर आप मेरे कत्ल किये जाने का हुक्म दें तो यह हुक्म एक खूनी के हक में होगा और अगर आप इन्आम फरमाएंगे तो एक शुक्रगुज़ार पर रहमत करेंगे और अगर माल की ज़रूरत है तो जिस कुदर चाहिये बता दीजिये।

दूसरे रोज़ नबी सल्ल0 ने सुमामा से फिर वही सवाल किया, सुमामा ने कहा मैं कह चुका हूं कि अगर आप एहसान फरमाएंगे तो एक शुक्र गुज़ार शख़्स पर फरमाएंगे।

तीसरे रोज़ नबी सल्ल0 ने फिर सुमामा से वही सवाल किया, उसने कहा मैं अपना जवाब दे चुका हूं, नबी सल्ल0 ने हुक्म दिया कि सुमामा को छोड़ दो, सुमामा रिहाई पाकर खजूर के एक एक बाग़ में गए, जो मस्जिदे नबवी सल्ल0 के करीब ही था, वहां जाकर गुस्ल किया और फिर मस्जिदे नबवी सल्ल0 में लौट कर आ गए और आते ही कलिमा पढ़ लिया।

सुमाम रज़ि0 ने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल0! कसम है खुदा की कि सारे आलम में आप से ज़्यादा और किसी शख़्स से मुझे नफरत न थी, लेकिन अब तो आप सल्ल0 ही मुझे दुन्या में सबसे बढ़ कर प्यारे मअ़लूम होते हैं।

बख़ुदा आपके शहर से मुझे निहायत नफ़रत थी, मगर आज तो वह मुझे सब मक़ामात से पसंदीदा नज़र आता है, बख़ुदा आपके दीन से बढ़कर मुझे और किसी दीन से बुग़्ज़ न था, लेकिन आज तो आप ही का दीन मुझे महबूब तर हो गया है।

सुमामा रज़ि० ने यह भी अर्ज़ किया कि मैं अपने वतन से मक्का को उम्रा के लिये जा रहा था, रास्ता में गिरफ़्तार कर लिया गया था, अब उम्रा के बारे में क्या इर्शाद है, नबी सल्ल० ने उन्हें इस्लाम क़बूल करने की बशारत दी और उम्रा करने की इजाज़त फ़रमाई।

हज़रत सुमामा रज़ि० मक्का पहुंचे तो वहां के एक शख़्स ने पूछा कहो तुम साबी बन गए? हज़रत सुमामा रज़ि० ने कहा नहीं! मैं मुहम्मद रसूलुल्ला सल्ल० पर ईमान लाया हूं और इस्लाम क़बूल किया है और अब याद रखना कि मुल्के यमामा से तुम्हारे पास एक दानए गंदुम भी नहीं आएगा, जब तक नबी सल्ल० की इजाज़त न होगी।[1]

हज़रत सुमामा रज़ि० ने अपने मुल्क पहुंचते ही मक्का की तरफ़ आने वाला अनाज बंद कर दिया, ग़ल्ला की आमद के रुक जाने से अह्ले मक्का बिलबिला उठे और आख़िर नबी सल्ल० ही से इल्तिजा करनी पड़ी, नबी सल्ल० ने सुमामा रज़ि० को लिख दिया कि ग़ल्ला बदस्तूर जाने दें[1]

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब रबतुल असीर व हब्सुहू, सहीह बुख़ारी में इख़्तिसार के साथ रिवायत मन्क़ूल है

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहक़ी 4-80

(उन दिनों अहले मक्का नबी सल्ल0 के जानी दुशमन थे) इस क़िस्सा से न सिर्फ़ यही साबित हुआ कि नबी सल्ल0 ने क्योंकर एक शख़्स की जान बख़्शी फ़रमाई जो ख़ुद भी अपने आपको वाजिबुल क़त्ल समझता था और न सिर्फ़ यही साबित हुआ कि नबी सल्ल0 के पाकीज़ा हालात और अख़्लाक़ का कैसा असर लोगों पर पड़ता था कि सुमामा जैसा शख़्स जो इस्लाम और मदीना और आंहज़रत सल्ल0 से सख़्त नफ़रत व अदावत रखता था, तीन रोज़ के बाद बख़ुशी ख़ुद मुसलमान हो गया था, बल्कि नबी सल्ल0 की नेकी और तीनत की पाकी और रहमदिली का सुबूत इस तरह मिलता है कि मक्का के जिन काफ़िरों ने आंहज़रत सल्ल0 को मक्का से निकाला था और बद्र, उहुद, ख़ंदक़ में अब तक नबी सल्ल0 और मुसलमानों के तबाह व बर्बाद करने के लिये सारी ताक़त सर्फ़ कर चुके थे, उनके लिये रहमतुल लिल आलमीन यह पसंद नहीं फ़रमाते कि उनका ग़ल्ला रोक दिया जाए और उनको तंग व ज़लील करके अपना फ़रमां बरदार बनाया जाए।

सुलह हुदैबिया

6 हि0 में नबी सल्ल0 ने अपना एक ख़्वाब मुसलमानों को सुनाया, फ़रमाया कि मैंने देखा गोया मैं और मुसलमान मक्का पहुंच गए हैं और बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे हैं, इस ख़्वाब के सुनने से ग़रीबुल वतन मुसलमानों को इस शौक़ ने जो बैतुल्लाह के तवाफ़ का उनके दिल में था, बेचैन

कर दिया और उन्होंने उसी साल नबी सल्ल० को सफ़रे मक्का के लिये आमादा कर लिया।[1]

चूंकि मुहाजिरीन उमूमन और अक्सर अंसार इस सआदत के मुंतज़िर थे, 1400 अशख़ास इस सफ़र में हमरिकाब हुए, मक़ामे ज़ुल हुलैफ़ा पहुंच कर कुर्बानी की इब्तिदा की, रस्में अदा हो गईं यअ़नी कुर्बानी के ऊंट साथ थे, उनकी गर्दनों पर कुर्बानी की अलामत के तौर पर लोहे के नअ़्ल लगा दिये गए।[2]

एहतियात के लिये क़बीलए ख़ुज़ाआ़ का एक शख़्स जिसके इस्लाम लाने का हाल कुरैश को मअ़लूम न था, पहले भेज दिया गया कि कुरैश के इरादा की ख़बर लाए, जब क़ाफ़िला उस्फ़ान के क़रीब पहुंचा उसने आकर ख़बर दी कि कुरैश ने तमाम क़बाइल (अहाबीश) को यकजा करके कह दिया है कि मुहम्मद (सल्ल०) मक्का में कभी नहीं आ सकते।[3]

ग़र्ज़ कुरैश ने बड़े ज़ोर व शोर से मुक़ाबला की तैयारी की, क़बाइले मुत्तहिदा के पास पैग़ाम भेजा कि वह जमईयते अज़ीम लेकर आएं, मक्का से बाहर बलदह के मक़ाम पर फ़ौजें फ़राहम हुईं, ख़ालिद बिन वलीद जो अब तक इस्लाम नहीं लाए थे, दो सौ सवार लेकर जिनमें अबू जह्ल का बेटा अकरमा भी था, मुक़द्दमतुल जैश के तौर पर आगे बढ़े और ग़ुमैम तक पहुंच गए जो राबिग़ और जुह्फ़ा के दर्मियान है।[4]

(1) सीरते हलबीया 2-688 (2) व (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया (4) सीरतुन्नबी सल्ल० 1-449

आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि कुरैश ने ख़ालिद बिन वलीद को तलीआ बनाकर भेजा है और वह मक़ामे गुमैम तक आ गए हैं, इसलिये कतरा कर दाहनी तरफ़ से चलो, फ़ौजे इस्लाम जब गुमैम के क़रीब पहुंच गई तो ख़ालिद को घोड़ों की गर्द उड़ती नज़र आई, वह घोड़ा उड़ाते हुए गए और कुरैश को ख़बर की कि लशकरे इस्लाम गुमैम तक आ गया।

आंहज़रत सल्ल0 आगे बढ़े और हुदैबिया में पहुंच कर क़्याम किया, यहां पानी की क़िल्लत थी, एक कुंवां था वह पहली ही आमद में ख़ाली हो गया, लेकिन एजाज़े नबवी सल्ल0 से उसमें इस क़दर पानी आ गया कि सब सैराब हो गए।[1]

कबीलए खुज़ाआ ने अब तक इस्लाम नहीं कबूल किया था, लेकिन इस्लाम के हलीफ़ और राज़दार थे, कुरैश और आम कुफ़्फ़ार जो मंसूबे इस्लाम के ख़िलाफ़ बनाया करते थे वह हमेशा आंहज़रत सल्ल0 को उससे मुत्तलअ् कर दिया करते थे, इस कबीला के रईसे अअ्ज़म बुदैल बिन वरक़ा थे (फ़त्हे मक्का में इस्लाम लाए) उनको आंहज़रत सल्ल0 का तशरीफ़ लाना मअ्लूम हुआ तो चंद आदमी साथ लेकर बारगाहे नबवी सल्ल0 में हाज़िर हुए और अर्ज़ की कि कुरैश की फ़ौजों का सैलाब आ रहा है, वह आपको कअ्बा में न जाने देंगे, आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि कुरैश से जाकर

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया

कह दो कि "हम उम्रा की गर्ज़ से आए हैं, लड़ना मक्सूद नहीं, जंग ने कुरैश की हालत ज़ार कर दी है और उनको सख़्त नुक्सान पहुंचा है, उनके लिये यह बेहतर है कि एक मुद्दते मुअय्यन के लिये मुआहदए सुलह कर लें और मुझको अरब के हाथ में छोड़ दें, इस पर भी अगर राज़ी नहीं तो उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं यहां तक लड़ूंगा कि मेरी गर्दन अलग हो जाए और ख़ुदा को जो फ़ैसला करना हो कर दे।"

बुदैल ने जाकर कुरैश से कहा कि "मैं मुहम्मद (सल्ल0) के पास से पैग़ाम लेकर आया हूं, इजाज़त दो तो कह दूं" चंद शरीर बोल उठे कि हमको मुहम्मद (सल्ल0) के पैग़ाम सुनने की ज़रूरत नहीं, लेकिन संजीदा लोगों ने इजाज़त दी, बुदैल ने आंहज़रत सल्ल0 की शर्तें पेश कीं, उर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी ने उठ कर कहा क्यों कुरैश! क्या मैं तुम्हारा बाप और तुम मेरे बच्चे नहीं? बोले हां! उर्वा ने कहा मेरी निस्बत तुमको बदगुमानी तो नहीं? सबने कहा "नहीं" उर्वा ने कहा "अच्छा तुम मुझको इजाज़त दो कि मैं ख़ुद जाकर मुआमला तै करूं, मुहम्मद (सल्ल0) ने मअ़कूल शर्तें पेश की हैं" ग़र्ज़ आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में आए, कुरैश का पैग़ाम सुनाया और कहा मुहम्मद (सल्ल0)! फ़र्ज़ करो तुमने कुरैश का इस्तीसाल कर दिया तो क्या इसकी और भी कोई मिसाल है कि किसी ने अपनी क़ौम को बर्बाद कर दिया हो, इसके सिवा अगर लड़ाई का रुख़ बदला तो तुम्हारे साथ जो यह भीड़ है गर्द की तरह उड़ जाएगी, हज़रत अबू बक्र

रज़ि० को इस बदगुमानी पर इस क़दर गुस्सा आया कि गाली देकर कहा क्या हम मुहम्मद सल्ल० को छोड़ कर भाग जाएंगे? उर्वा ने आंहज़रत सल्ल० से पूछा यह कौन हैं?......आप सल्ल० ने फ़रमाया "अबू बक्र" उर्वा ने कहा मैं इनकी सख़्त कलामी का जवाब देता, लेकिन इनका एहसान मेरी गर्दन पर है जिसका बदला मैं अभी तक अदा नहीं कर सका।[1]

उर्वा आंहज़रत सल्ल० से बेतकल्लुफ़ाना तरीक़ा से गुफ़्तगू कर रहा था और जैसा कि अरब का क़ाएदा है कि बात करते करते मुख़ातब की दाढ़ी पकड़ लेते हैं, वह रीश मुबारक पर बार बार हाथ डालता था, मुग़ीरा बिन शोअ़बा रज़ि० जो हथियार लगाए आंहज़रत सल्ल० की पुश्त पर खड़े थे इस जुर्अत को गवारा न कर सके, उर्वा से कहा "अपना हाथ हटा ले वर्ना यह हाथ बढ़ कर वापस न जा सकेगा" उर्वा ने मुग़ीरा को पहचाना और कहा: ओ दग़ाबाज़! क्या मैं तेरी दग़ाबाज़ी के मुआमला में तेरा काम नहीं कर रहा हूं, (मुग़ीरा ने चंद आदमी क़त्ल कर दिये थे जिनका ख़ून बहा उर्वा ने अपने पास से अदा किया था)[2]

उर्वा ने रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ सहाबा रज़ि० की हैरत अंगेज़ अक़ीदत का जो मंज़र देखा उसने उसके दिल पर अजब असर किया, क़ुरैश से जाकर कहा कि "मैंने क़ैसर व किस्रा व नजाशी के दरबार देखे हैं, यह अक़ीदत

(1) पूरी रिवायत सहीह बुख़ारी में मौजूद है, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद
(2) सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

और वारफ़्तगी कहीं नहीं देखी, मुहम्मद (सल्ल0) बात करते हैं तो सन्नाटा छा जाता है, कोई शख़्स उनकी तरफ़ नज़र भर कर देख नहीं सकता, वह वुजू करते हैं, तो जो पानी गिरता है उस पर ख़िल्क़त टूट पड़ती है, थूक गिरता है तो अक़ीदत केश हाथों हाथ लेते हैं, और चेहरा और हाथों पर मल लेते हैं।"[1]

चूंकि यह मुआमला नातमाम रह गया, आंहज़रत सल्ल0 ने ख़राश बिन उमय्या को कुरैश के पास भेजा, लेकिन कुरैश ने उनकी सवारी का ऊंट जो ख़ास रसूलुल्लाह सल्ल0 की सवारी का था मार डाला और खुद उन पर भी यही गुज़रने वाली थी, लेकिन कबाइले मुत्तहिदा के लोगों ने बचा लिया और वह किसी तरह जान बचाकर चले आए।[2]

अब कुरैश ने एक दस्ता भेजा कि मुसलमानों पर हमला आवर हो, लेकिन यह लोग गिरफ़्तार कर लिये गए, गोया सख़्त शरारत थी, लेकिन रहमते आलम सल्ल0 का दामने अफ़्व इससे ज़्यादा वसीअ़ था, आप सल्ल0 ने सबको छोड़ दिया और मुआफ़ी दे दी[3] कुर्आन मजीद की इस आयत में इसी वाक़िआ की तरफ़ इशारा है।

وَهُوَ الَّذِىْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ.

(1) सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-314, मुस्नद अहमद 4-324

(3) सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

"वह वही खुदा है जिसने मक्का में उन लोगों का हाथ तुमसे और तुम्हारा हाथ उनसे रोक दिया बाद इसके कि तुमको उन पर काबू दे दिया था।"

बैअते रिज़वान

बिलआख़िर आप सल्ल0 ने गुफ़्तगूए सुलह के लिये हज़रत उमर रज़ि0 का इंतिख़ाब किया लेकिन उन्होंने मअज़िरत की कि कुरैश मेरे सख़्त दुशमन हैं और मक्का में मेरे कबीला का एक शख़्स भी नहीं कि मुझको बचा सके, आप सल्ल0 ने हज़रत उस्मान रज़ि0 को भेजा वह अपने एक अज़ीज़ (अबान बिन सईद) की हिमायत में मक्का गए और आंहज़रत सल्ल0 का पैग़ाम सुनाया, कुरैश ने उनको नज़र बंद कर लिया, लेकिन आम तौर पर यह ख़बर मशहूर हो गई कि वह कत्ल कर डाले गए।[1] यह ख़बर आंहज़रत सल्ल0 को पहुंची तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया "उस्मान के ख़ून का किसास लेना फ़र्ज़ है" यह कहकर आप सल्ल0 ने एक बबूल के दरख़्त के नीचे बैठकर सहाबा रज़ि0 से जांनिसारी की बैअ़त ली, तमाम सहाबा रज़ि0 ने जिनमें ज़न व मर्द दोनों शामिल थे वलवला अंगेज़ जोश के साथ दस्ते मुबारक पर जांनिसारी का अहद किया, यह तारीख़े इस्लाम का मोहतम्म बिश्शान वाक़िआ है, इस बैअ़त का नाम "बैअ़तुर्रिज़वान" है, सूरए फ़त्ह में इस वाक़िआ का और दरख़्त का ज़िक्र है।

(1) मुस्नद अहमद 4-324, सीरत इब्ने हिशाम 2-314,315

لَقَدْ رَضِیَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ یُبَایِعُوْنَکَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِیْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّکِیْنَةَ عَلَیْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِیْبًا.

"खुदा मुसलमानों से राज़ी था जबकि वह तेरे हाथ पर दरख़्त के नीचे बैअ़त कर रहे थे, सो खुदा ने जान लिया जो कुछ उन लोगों के दिलों में था तो खुदा ने उन पर तसल्ली नाज़िल की और आजिलाना फ़त्ह दी।"

लेकिन बाद को मअ़लूम हुआ वह ख़बर सही न थी।[1]

मुआहदा व सुलहनामा

कुरैश ने सुहैल बिन अ़म्र को सफ़ीर बना कर भेजा, वह निहायत फ़सीह व बलीग़ मुक़र्रिर थे, चुनांचे उन लोगों ने "ख़तीबे कुरैश" का ख़िताब दिया था।[2] कुरैश ने उनसे कह दिया कि सुलह सिर्फ़ इस शर्त पर हो सकती है कि मुहम्मद (सल्ल0) इस साल वापस चले जाएं।

सुहैल आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए और देर तक सुलह के शराइत पर गुफ़्तगू रही, बिलआख़िर चंद शर्तों पर इत्तिफ़ाक़ हुआ और आंहज़रत सल्ल0 ने हज़रत अली को बुलाकर हुक्म दिया कि मुआहदा के अलफ़ाज़ क़लमबंद करें, हज़रत अली रज़ि0 ने उन्वान पर "بسم الله الرحمن الرحيم" लिखा, अरब का क़दीम तरीक़ा था कि ख़ुतूत की इब्तिदा में "بِاسْمِكَ اللّٰهُمَّ" लिखते थे।

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-315, 316, इस्माइल बैअ़त का तज़्किरा सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में भी मौजूद है। (2) ज़रक़ानी 2-225

"بسم الله الرحمن الرحيم" से वह नाआशना थे, इस बिना पर सुहैल बिन अम्र ने कहा "بسم الله الرحمن الرحيم" के बजाए वही क़दीम अलफ़ाज़ लिखे जाएं, आंहज़रत सल्ल0 ने मंज़ूर फ़रमाया, आगे का फ़िक़रह था "هذا ما قاضى عليه محمد رسول الله" यअ़नी "यह वह मुआहदा है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल0 ने तस्लीम किया" सुहलै ने कहा "अगर हम आपको पैग़म्बर ही तस्लीम करते तो फिर झगड़ा क्या था, आप सिर्फ़ अपना और अपने बाप का नाम लिखवाएं" आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि गो तुम तकज़ीब करते हो लेकिन ख़ुदा की क़सम मैं ख़ुदा का पैग़म्बर हूं, यह कहकर आप सल्ल0 ने हज़रत अली रज़ि0 को हुक्म दिया कि अच्छा मेरा नाम लिखो, हज़रत अली रज़ि0 से ज़्यादा कौन फ़रमाँ गुज़ार हो सकता था, लेकिन आलमे मुहब्बत में ऐसे मक़ाम भी पेश आते हैं जहां फ़रमांबरदारी से इंकार करना पड़ता है, हज़रत अली रज़ि0 ने कहा मैं हरगिज़ आपका नाम न मिटाऊंगा, आपने फ़रमाया कि अच्छा मुझको दिखाओ मेरा नाम कहां है? हज़रत अली रज़ि0 ने उस जगह उंगली रख दी, आपने रसूलुल्लाह सल्ल0 का लफ़्ज़ मिटा दिया।

शराइते सुलह यह थे:

1- मुसलमान इस साल वापस चले जाएं।

2- अगले साल आएं और सिर्फ़ तीन दिन क़याम करके चले जाएं।

3-हथियार लगा कर न आएं, सिर्फ़ तलवार साथ लाएं, वह भी नियाम में और नियाम भी जिलबान (थैला वग़ैरा) में।

4- मक्का में जो मुसलमान पहले से मुक़ीम हैं उनमें से किसी को अपने साथ न ले जाएं और मुसलमानों में से कोई मक्का में रह जाना चाहे तो उसको न रोकें।

5- काफ़िरों या मुसलमानों में से कोई शख़्स अगर मदीना जाए तो वापस कर दिया जाए, लेकिन अगर कोई मुसलमान मक्का में जाए तो वह वापस नहीं किया जाएगा।

6- क़बाइले अरब को इख़्तियार होगा कि फ़रीक़ैन से जिसके साथ चाहें मुआहदा में शरीक हो जाएं।[1]

मुसलमानों की आज़माइश

यह शर्तें बज़ाहिर मुसलमानों के सख़्त ख़िलाफ़ थीं, इत्तिफ़ाक़ यह कि ऐन उस वक़्त जबकि मुआहदा लिखा जा रहा था सुहैल के साहबज़ादे (अबू जुंदल) जो इस्लाम ला चुके थे और मक्का में काफ़िरों ने उनको क़ैद कर रखा था और तरह तरह की अज़ीयतें देते थे, किसी तरह भाग कर पांव में बेड़ियां पहने हुए आए और सबके सामने गिर पड़े, सुहैल ने कहा "मुहम्मद (सल्ल0) सुलह की तअ़मील का यह पहला मौक़ा है, इस (अबू जुंदल) को शराइते सुलह के मुताबिक़ मुझको वापस दे दो" आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया "अभी मुआहदा क़लमबंद नहीं हो चुका।" सुहैल ने कहा

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब सुलह हुदैबिया

"तो हमको सुलह भी मंज़ूर नहीं।" आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमायाः "कि अच्छा इनको यहीं रहने दो" सुहैल ने नामंजूर किया, आप सल्ल0 ने चंद दफ़ा इसरार से कहा, लेकिन सुहैल किसी तरह राज़ी न हुआ, मजबूरन आंहज़रत सल्ल0 को तस्लीम करना पड़ा, अबू जुंदल को काफ़िरों ने इस क़दर मारा था कि उनके जिस्म पर निशान थे, मज्मा के सामने तमाम ज़ख़्म दिखाए और कहा बिरादराने इस्लाम! क्या फिर मुझको उसी हालत में देखना चाहते हो? मैं इस्लाम ला चुका हूं, क्या फिर मुझको काफ़िरों के हाथ में देते हो, तमाम मुसलमान तड़प उठे, हज़रत उमर रज़ि0 ज़ब्त न कर सके, आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में आए और कहाः या रसूलुल्लाह! क्या आप पैग़म्बरे बरहक़ नहीं हैं? आप सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया "हां हूं" हज़रत उमर रज़ि0 ने कहाः क्या हम हक़ पर नहीं हैं? आप सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया "हां हम हक़ पर हैं" हज़रत उमर रज़ि0 ने कहाः तो हम दीन में यह ज़िल्लत क्यों गवारा करें? आप सल्ल0 ने फ़रमाया "मैं ख़ुदा का पैग़म्बर हूं और ख़ुदा के हुक्म की नाफ़रमानी नहीं कर सकता, ख़ुदा मेरी मदद करेगा" हज़रत उमर रज़ि0 ने कहाः क्या आप (सल्ल0) ने यह नहीं फ़रमाया था कि हम लोग कअ्बा का तवाफ़ करेंगे? आप सल्ल0 ने फ़रमाया लेकनि यह तो नहीं कहा था कि इसी साल करेंगे, हज़रत उमर रज़ि0 उठकर हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के पास आए और वही गुफ़्तगू की, हज़रत अबू बक्र

रज़ि0 ने कहा वह पैग़म्बरे ख़ुदा हैं, जो कुछ करते हैं ख़ुदा के हुक्म से करते हैं।[1]

हज़रत उमर रज़ि0 को अपनी इन गुस्ताख़ाना मअरूज़ात का जो बेइख़्तियारी में उनसे सरज़द हुई तमाम उम्र सख़्त रंज रहा और उसके कफ़्फ़ारा के लिये उन्होंने नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे, ख़ैरात की, गुलाम आज़ाद किये। बुख़ारी शरीफ़ में अगर्चे इन अअ्माल का ज़िक्र इज्मालन है लेकिन इब्ने इस्हाक़ ने तफ़सील से यह बातें गिनाई हैं।[2]

इस हालत का गवारा करना सहाबी की इताअत शिआरी का सख़्त ख़तरनाक इम्तिहान था, एक तरफ़ इस्लाम की तौहीन है, अबू जुंदल रज़ि0 बेड़ियां पहने चौदह सौ जांनिसाराने इस्लाम से इस्तिग़ासा करते हैं, सबके दिल जोश से लबरेज़ हैं, और अगर रसूलुल्लाह सल्ल0 का ज़रा ईमाअ् हो जाए तो तलवार फ़ैसलए क़ातेअ़ के लिये मौजूद है, दूसरी तरफ़ मुआहदा पर दस्तख़त हो चुके हैं और ईफ़ाए अहद की ज़िम्मादारी है, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने अबू जुंदल की तरफ़ देखा और फ़रमाया:

يَا اَبَا جُنْدَل اِصْبِرْ وَاحْتَسِبْ فَاِنَّ اللّٰهَ جَاعِلٌ لَكَ وَلِمَنْ مَّعَكَ مِنَ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ فَرَجاً وَّمَخْرَجاً، اِنَّا قَدْ عَقَدْنَا صُلْحًا وَاِنَّا لَا نَغْدِرُ بِهِمْ.[3]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया व किताबुश्शुरूत फ़िल जिहाद, इब्ने हिशाम 2-317

(3) मुस्नद अहमद 4-325, इब्ने हिशाम 2-318

"अबू जुंदल! सब्र और ज़ब्त से काम लो, खुदा तुम्हारे और मज़लूमों के लिये कोई राह निकालेगा, सुलह अब हो चुकी है और हम उन लोगों से बदअहदी नहीं कर सकते।"

आंहज़रत सल्ल0 ने हुक्म दिया कि लोग यहीं कुर्बानी करें, लेकिन लोग इस क़दर दिल शिकस्ता थे कि एक शख़्स भी न उठा, यहां तक कि जैसा सहीह बुख़ारी में है, तीन दफ़ा बार बार कहने पर भी एक शख़्स आमादा न हुआ[1] आंहज़रत सल्ल0 घर में तशरीफ़ ले गए और उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 से शिकायत की, उन्होंने कहा "आप किसी से कुछ न फ़रमाएं बल्कि बाहर निकल कर ख़ुद कुर्बानी करें और एहराम उतरवाने के लिये बाल मुंडवाएं" आप सल्ल0 ने बाहर आकर ख़ुद कुर्बानी की और बाल मुंडवाए, अब जब लोगों को यक़ीन हो गया कि इस फ़ैसला में तबदीली नहीं हो सकती तो सबने कुर्बानियां कीं और एहराम उतारा।[2]

बसूरत नाकामी बहक़ीक़त कामियाबी

सुलह के बाद तीन दिन तक आप सल्ल0 ने हुदैबिया में क़याम फ़रमाया, फिर रवाना हुए तो राह में यह सूरत उतरीः

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا

"हमने तुझको खुली हुई फ़त्ह इनायत की।"

---

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया

(2) सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

तमाम मुसलमान जिस चीज़ को शिकस्त समझते थे खुदा ने उसको फ़त्ह कहा, आंहज़रत सल्ल0 ने हज़रत उमर को बुला कर फ़रमाया यह आयत नाज़िल हुई है, उन्होंने तअज्जुब से पूछाः क्या यह फ़त्ह है? इर्शाद हुआ कि "हां" सहीह मुस्लिम में है कि हज़रत उमर रज़ि0 को तस्कीन हो गई और मुतमइन हो गए[1] नताइजे माबअ़्द ने इस राज़े सरबस्ता की उक्दा कुशाई की।

अब तक मुसलमान और काफ़िर बाहम मिलते जुलते न थे, अब सुलह की वजह से आमद व रफ़्त शुरू हुई और तिजारती तअ़ल्लुक़ात की वजह से कुफ़्फ़ार मदीना में आते, महीनों क्याम करते और मुसलमानों से मिलते जुलते थे, बातों बातों में इस्लामी मसाइल का तज़्किरा आता रहता था, इसके साथ हर मुसलमान इख़्लास, हुस्ने अमल, नेकूकारी, पाकीज़ा अख़्लाक़ी की एक ज़िंदा तस्वीर था, जो मुसलमान मक्का जाते थे उनकी सूरतें यही मनाज़िर पेश करती थीं, इससे खुद बखुद कुफ़्फ़ार के दिल इस्लाम की तरफ़ खिंचते आते[2] मुअर्रिख़ीन का बयान है कि इस मुआहदए सुलह से लेकर फ़त्हे मक्का तक इस क़दर कसरत से लोग इस्लाम लाए कि कभी नहीं लाए थे[3] हज़रत ख़ालिद रज़ि0 (फ़ातिहे शाम) और अम्र बिन आस रज़ि0 (फ़ातिहे मिस्र) का इस्लाम भी उसी ज़माना की यादगार है।[4]

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब सुलह हुदैबिया, सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर, तफ़सीर सूरतुल फ़त्ह (2) ज़ादुल मआ़द 3-309 (3) दलाइलुन्नुबूव्वा 4-160 (4) सीरतुन्नबी 1-459

मुआहदए सुलह में यह जो शर्त थी कि जो मुसलमान मदीना चला आएगा वह फिर मक्का को वापस कर दिया जाएगा, इसमें सिर्फ़ मर्द दाख़िल थे, औरतें न थीं, औरतों के मुतअल्लिक़ ख़ास यह आयत उतरी।[1]

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ، أَللّٰهُ أَعْلَمُ بِإِيْمَانِهِنَّ، فَإِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ، لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ، وَآتُوْهُمْ مَّآ أَنْفَقُوْا، وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوْهُنَّ أُجُوْرَهُنَّ، وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ.

“मुसलमानो! जब तुम्हारे पास औरतें हिज्रत करके आएं तो उनको जांच लो, ख़ुदा उनके ईमान को अच्छी तरह जानता है, अब अगर तुमको मअ़लूम हो कि वह मुसलमान हैं तो उनको काफ़िरों के यहां वापस न भेजो, न वह औरतें काफ़िरों के क़ाबिल हैं और न काफ़िर उन औरतों के क़ाबिल हैं और उन औरतों पर उन लोगों ने जो ख़र्च किया हो वह उनको दे दो, और तुम उनसे शादी कर सकते हो बशर्तेकि उनके मह्र अदा कर दो, और काफ़िर औरतों को अपने निकाह में न रखो।”

(सूरत मुम्तहिना आयत 10)

जो मुसलमान मक्का में मजबूरी से रह गए थे, चूंकि

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

कुफ़्फ़ार उनको सख़्त तकलीफ़ें देते थे इसलिये वह भाग भाग कर मदीना आते थे, सबसे पहले उत्बा बिन उसैद रज़ि० (अबू बुसैर रज़ि०) भाग कर मदीना आए......आंहज़रत सल्ल० ने उत्बा रज़ि० से फ़रमाया कि वापस जाओ, उत्बा रज़ि० ने अर्ज़ की कि क्या आप मुझको काफ़िरों के पास भेजते हैं कि जो मुझको कुफ़्र पर मजबूर करें? आप सल्ल० ने फ़रमाया "ख़ुदा इसकी तदबीर निकालेगा" उत्बा रज़ि० मजबूरन दो काफ़िरों की हिरासत में वापस गए, लेकिन मक़ामे ज़ुल हलैफ़ा पहुंच कर उन्होंने एक शख़्स को क़त्ल कर डाला, दूसरा शख़्स जो बच रहा उसने मदीना आकर आंहज़रत सल्ल० से शिकायत की, साथ ही अबू बुसैर रज़ि० पहुंचे और अर्ज़ की कि आप ने अहद के मुवाफ़िक़ अपनी तरफ़ से मुझको वापस कर दिया, अब आप पर कोई ज़िम्मादारी नहीं, यह कह कर मदीना से चले गए और मक़ामे ऐस में जो समंदर के किनारे ज़ूमिर्रा के पास है रहना इख़्तियार किया, मक्का के बेकस और सितम रसीदा लोगों को जब इल्म हुआ कि जान बचाने का ठिकाना पैदा हो गया है, तो चोरी छिपे भाग भाग कर यहां आने लगे, चंद रोज़ बाद अच्छी ख़ासी जमईयत हो गई और अब उन लोगों ने इतनी क़ूव्वत हासिल कर ली कि क़ुरैश का कारवाने तिजारत जो शाम को जाया करता था उसको रोक लेते थे, उन हमलों में जो माले ग़नीमत मिल जाता था वह उनकी मआश का सहारा था। क़ुरैश ने मजबूर होकर आंहज़रत

सल्ल0 को लिख भेजा कि मुआहदा की इस शर्त से हम बाज़ आते हैं, अब जो मुसलमान चाहे मदीना जाकर आबाद हो सकता है हम उससे तअ़र्रुज़ न करेंगे, आप सल्ल0 ने आवारा वतन लोगों को लिख भेजा कि यहां चले आओ, चुनांचे अबू जुंदल रज़ि0 और उनके साथी मदीना में आकर आबाद हो गए और कारवाने क़ुरैश का रास्ता बदस्तूर खुल गया।[1]

मस्तूरात में से उम्मे कुल्सूम रज़ि0 जो रईसे मक्का (उक़्बा बिन अबी मुईत) की बेटी थीं और मुसलमान हो चुकी थीं, मदीना हिज्रत करके आईं, लेकिन उनके साथ उनके दोनों भाई अम्मरा और वलीद भी आए और आंहज़रत सल्ल0 से दरख़्वास्त की कि इनको वापस दे दीजिये आप सल्ल0 ने मंजूर नहीं फ़रमाया।[2] सहाबा में से जिन लोगों की अज़्वाज मक्का में रह गई थीं और अब तक काफ़िरा थीं सहाबा रज़ि0 ने उनको तलाक़ दे दी।[3]

हुदैबिया की सुलह को ख़ुदा ने फ़त्ह कहा है, लेकिन अज्साम की नहीं क़ुलूब की, इस्लाम को अपनी इशाअ़त के लिये जो अम्न दरकार था वह इस सुलह से हासिल हो गया था, इस सुलह को ख़ुद दुशमन फ़त्ह समझते थे, क़ुरैश और मुसलमानों में अब तक जो मअ़रके हुए फ़ौजी हैसियत से

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुल हुदैबिया

(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

कुरैश की सफ में हर जगह ख़ालिद बिन वलीद का नाम मुम्ताज़ नज़र आता है, जाहिलीयत में रिसाला की अफ़सरी उन्हीं के सिपुर्द थी, उहुद में कुरैश के उखड़े हुए पांव उन्हीं की कोशिशों से संभले थे, हुदैबिया के मौक़ा पर भी कुरैश का तलाया उन्ही की ज़ेरे अफ़सरी नज़र आया था, लेकिन कुरैश का यह सिपहसालारे अअ़ज़म भी आख़िर इस्लाम के हमलए कारी से बच न सका।[1]

सुलह हुदैबिया के बाद हज़रत ख़ालिद ने मक्का से निकल कर मदीना का रुख़ किया, रास्ता में हज़रत अम्र बिन अलआ़स मिले, पूछा किधर का क़स्द है? बोले इस्लाम लाने जाता हूं, आख़िर कब तक? अम्र बिन अलआ़स ने कहा हमारा भी यही इरादा है, दोनों साहब एक साथ बारगाहे नबवी में हाज़िर होकर इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए।[2] और अब वह जौहर जो इस्लाम की मुख़ालफ़त में सर्फ़ हो रहा था, इस्लाम की मुहब्बत में सर्फ़ होने लगा।

फ़त्हे मक्का में हज़रत ख़ालिद जब एक मुसलमान दस्ता के अफ़सर बन कर आंहज़रत सल्ल0 के सामने से गुज़रे, आप सल्ल0 ने पूछा कौन? लोगों ने कहा, ख़ालिद हैं, आपने फ़रमाया ख़ुदा की तलवार है।[3]

ग़ज़वए मौता में जब हज़रत जअ़फ़र, ज़ैद बिन हारसा और अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़िअल्लाहु अन्हुम के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ि0 ने अलम अपने हाथ में लिया तो मुसलमान ख़तरा से बाहर थे।

(1) सीरतुन्नबी 1-473 (2) अलइसाबा 1-418 (3) सुनन तिर्मिज़ी अबवाबुल मनाक़िब

अहदे ख़िलाफ़त में एक (ख़ालिद रज़ि0) ने शाम का मुल्क कैसर से छीन लिया और दूसरा (अम्र बिन अलआस रज़ि0) मिस्र का फ़ातेह हुआ।[1]

सलातीन व उमराअ को दावते इस्लाम

7 हि0 के मुहर्रम की पहली तारीख़ थी कि नबी सल्ल0 ने बादशाहाने आलम के नाम दावते इस्लाम के ख़ुतूत मुबारक अपने सफ़ीरों के हाथ रवाना फ़रमाए, जो सफ़ीर जिस क़ौम के पास भेजा गया वह वहां की ज़बान जानता था ताकि तब्लीग़ बख़ूबी कर सके।[2]

अब तक नबी सल्ल0 ने कोई मुहर न बनाई थी, जब शाहाने आलम के ख़ुतूत लिखे गए तो उन पर मुहर करने के लिये ख़ातिम तैयार की गई, यह चांदी की थी, तीन सुतूर में यह इबारत कंदा थी।[3] (محمد رسول الله)

उन ख़ुतूत के देखने से मअ़लूम होता है कि ख़ुतूत ईसाई बादशाहों के नाम थे, उनमें ख़ुसूसियत से यह आयते शरीफ़ा भी थी:

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَنْ لَا
نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا
أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ

"ऐ अह्ले किताब! आओ ऐसी बात पर इत्तिफ़ाक़ करें जो हमारे तुम्हारे दीन में मुसावी है यअ़नी ख़ुदा

(1) सीरतुन्नबी 1-474 (2) तबक़ात इब्ने सअ़द 2-23 (3) सहीहुल बुख़ारी किताबुल लिबास, बाब ख़ातिमु फ़िल ख़ासिर

के सिवा किसी दूसरे की इबादत न करें और किसी चीज़ को उसका शरीक न ठहराएं और खुदा के सिवा खुदाई का दर्जा हम अपने जैसे इंसानों के लिये तज्वीज़ न करें।"

अब हम मुख़्तसर तौर पर उस सिफ़ारतों का हाल दर्ज करते हैं।

नामए मुबारक बनाम नजाशी शाहे हब्श

असहम बिन अब्जर बादशाहे हबश अल मुलक़्क़ब ब नजाशी के पास अम्र बिन उमय्या अज़्ज़ुम्री आंहज़रत सल्ल0 का नामए मुबारक लेकर गए थे, यह बादशाह ईसाई था।[1]

तारीख़े तबरी से नामा मुबारक का तर्जुमा नक़्ल किया जाता है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"यह ख़त अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल0) की तरफ़ से नजाशी असहम बादशाहे हबश के नाम है, तुझे सलामती हो, मैं पहले अल्लाह की सताइश करता हूं जो मलिक, क़ुद्दूस, सलाम, मोमिन और मुहैमिन है, और ज़ाहिर करता हूं कि ईसा बिन मरयम अलै0 अल्लाह की मख़्लूक़ और उसका हुक्म हैं, जो मरयम अलै0 बतूल तय्यिबा की जानिब भेजा गया और उन्हें ईसा अलै0 का उससे हमल ठहर गया, खुदा ने ईसा अलै0 को अपनी

(1) ज़ादुल मआद 3-689

रूह और नफ़्ख़ से इस तरह पैदा किया जैसा कि आदम अलै0 को अपने हाथ और नफ़्ख़ से पैदा किया था, अब मेरी दावत यह है कि तू खुदा पर जो अकेला और लाशरीक है, ईमान ले आ, और हमेशा उसकी फरमां बर्दारी में रहा कर और मेरा इत्तिबा कर और मेरी तअ़लीम का सच्चे दिल से इक़रार कर, क्योंकि मैं अल्लाह का रसूल हूं।

मैं क़ब्ल इसके उस मुल्क में अपने चचेरे भाई जअ़फ़र को मुसलमानों की एक जमाअत के साथ भेज चुका हूं, तुम उसे बआराम ठहरा लेना, नजाशी! तुम तकब्बुर छोड़ दो क्योंकि मैं तुमको और तुम्हारे दरबार को खुदा की तरफ़ बुलाता हूं, देखो मैंने अल्लाह का हुक्म पहुंचा दिया और तुम्हें बखूबी समझा दिया, अब मुनासिब है कि मेरी नसीहत मान लो, सलाम उस पर जो सीधी राह पर चलता है।"[1]

नजाशी इस फरमान मुबारक पर मुसलमान हो गया, और जवाब में यह अरीज़ा तहरीर किया:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में नजाशी असहम बिन अब्जर की तरफ़ से, ऐ नबी अल्लाह के, आप पर अल्लाह की सलामती, रहमत, और बरकतें हों, उसी खुदा की जिसके सिवा कोई मअ़बूद

(1) तारीख़े तबरी 2-131, 132, ज़ादुल मआ़द 3-689

नहीं, और जिसने मुझे इस्लाम की हिदायत फ़रमाई है, अब अर्ज़ यह है कि हुज़ूर सल्ल0 का फ़रमान मेरे पास पहुंचा, ईसा अलै0 के मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ आपने तहरीर फ़रमाया है, बख़ुदाए ज़मीन व आसमान वह उससे ज़र्रा बराबर भी बढ़ कर नहीं, उनकी हैसियत इतनी ही है जो आपने तहरीर फ़रमाई है, हमने आपकी तअ़लीम सीख ली है और आपका चचेरा भाई और मुसलमान मेरे पास आराम से हैं, और मैं इक़रार करता हूं कि आप अल्लाह के रसूल हैं, सच्चे हैं और रास्त बाज़ों की सच्चाई ज़ाहिर करने वाले हैं, मैं आप से बैअ़त करता हूं, मैंने आपके चचेरे भाई के हाथ पर बैअ़त और अल्लाह की फ़रमांबरदारी का इक़रार कर लिया है, और मैं हुज़ूर सल्ल0 की ख़िदमत में अपने फ़रज़ंद अरहा को रवाना करता हूं, मैं तो अपने ही नफ़्स का मालिक हूं अगर हुज़ूर सल्ल0 का मंशा होगा कि मैं हाज़िरे ख़िदमत हो जाऊं तो ज़रूर हाज़िर हो जाऊंगा, क्योंकि मैं यक़ीन करता हूं कि हुज़ूर सल्ल0 जो फ़रमाते हैं वही हक़ है, ऐ ख़ुदा के रसूल सलाम आप पर।"[1]

बनाम शाहे बहरैन

(2) मुंज़िर बिन सावी शाहे बहरैन था, शहंशाहे फ़ारस का ख़िराज गुज़ार था, अलाअ़ बिन अलहज़रमी उसके पास

(1) तारीख़े तबरी 2-232, ज़ादुल मआद 3-690 नजाशी और क़ैसर व किस्रा को फ़रमाने मुबारक इर्साल करने का ज़िक्र इजमालन सहीह मुस्लिम में मौजूद है, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब कुतुबुन्नबी सल्ल0

नामए मुबारक लेकर गए थे, यह मुसलमान हो गया और इसकी रिआया का अक्सर हिस्सा भी मुसलमान हुआ, उसने जवाब में आंहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में लिखा था कि बअूज़ लोगों ने तो इस्लाम को अज़हद पसंद किया है, बअूज़ ने कराहत का इज़्हार किया है, बअूज़ ने मुख़ालफ़त की है, मेरे इलाक़ा में यहूदी और मजूसी बहुत हैं, उनके लिये जो इर्शाद हो किया जाए, नबी सल्ल० ने जवाब में तहरीर फ़रमाया थाः

وَمَنْ يَنْصَحْ فَلِنَفْسِهِ، وَمَنْ أَقَامَ عَلَى يَهُودِيَّةٍ أَوْ مَجُوسِيَّةٍ فَعَلَيْهِ الْجِزْيَةُ

"जो नसीहत करता है वह अपने लिये, और जो यहूदीयत या मजूसीयत पर क़ाइम रहे वह जिज़्या (ख़िराज रईयताना) दिया करे।"[1]

बनाम शाहे उम्मान

(3) जैफ़र व अब्द फ़रज़ंदाने जुलंदी मालिक उम्मान के नाम अम्र बिन अलआस रज़ि० के बदस्त ख़त भेजा गया, अम्र का कौल है कि जब मैं उम्मान पहुंचा तो पहले अब्द को मिला, यह सरदार था और अपने भाई की निस्बत ज़्यादा नर्म व खुश खुल्क़ था, मैंने उसे बताया कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल० का सफ़ीर हूं और तुम्हारे पास और तुम्हारे भाई के पास आया हूं।

अब्द बोला मेरा भाई उम्र में मुझसे बड़ा और मुल्क का

(1) ज़ादुल मआद 3-693, उयूनुल असर 2-266

मालिक है, मैं तुम्हें उसकी ख़िदमत में पहुंचा दूंगा, मगर यह तो बताओ कि तुम किस चीज़ की दावत देते हो?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 ने कहा: अकेले ख़ुदा की तरफ़ जिसका कोई शरीक नहीं, नीज़ इस शहादत की तरफ़ कि मुहम्मद सल्ल0 ख़ुदा के बंदे और (उसके) रसूल हैं।

अब्द ने कहा अम्र तू सरदारे क़ौम का बेटा है, बता तेरे बाप ने क्या किया, क्योंकि हम उसे नमूना बना सकते हैं?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 ने जवाब दिया वह मर गया, नबी सल्ल0 पर ईमान न लाया था, काश वह ईमान लाता और आंहज़रत सल्ल0 की रास्त बाज़ी का इक़रार करता, मैं भी अपने बाप की राए पर था हत्ताकि ख़ुदा ने मुझे इस्लाम की हिदायत फ़रमाई।

अब्द: तुम कब से मुहम्मद (सल्ल0) के पैरू हो गए हो?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0: अभी थोड़ा अर्सा हुआ।

अब्द: कहां?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0: नजाशी के दरबार में, और नजाशी भी मुसलमान हो गया।

अब्द: वहां की रिआया ने नजाशी के साथ क्या सुलूक किया?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0: उसे बदस्तूर बादशाह रहने दिया और उन्होंने भी इस्लाम क़बूल कर लिया।

अब्द: (तअ़ज्जुब से) क्या बिशप पादरयों ने भी?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0: हां!

अब्दः देखो अम्र क्या कह रहे हो, इंसान के लिये कोई चीज़ भी झूट से बढ़ कर ज़िल्लत बख़्श नहीं।

अम्र बिन अलआ़स रज़ि०: मैंने झूट नहीं कहा और इस्लाम में झूट बोलना जाइज़ भी नहीं।

अब्दः हिरक़्ल ने क्या किया, क्या उसे नजाशी के इस्लाम लाने का हाल मअ़लूम है?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि०: हां!

अब्दः तुम क्योंकर ऐसा कह सकते हो?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि०: नजाशी हिरक़्ल को ख़िराज दिया करता था, जब से मुसलमान हुआ कह दिया है कि अब अगर वह एक दिरहम भी मांगे तो न दूंगा।

हिरक़्ल तक यह बात पहुंच गई, हिरक़्ल के भाई यन्नाक़ ने कहा यह नजाशी हुज़ूर का अदना गुलाम अब ख़िराज देने से इंकार करता है और हुज़ूर के दीन को भी उसने छोड़ दिया है, हिरक़्ल ने कहा फिर क्या हुआ उसने अपने लिये एक मज़हब पसंद कर लिया और क़बूल कर लिया, मैं क्या करूं? बख़ुदा अगर इस शहंशाही का मुझे ख़्याल न होता तो मैं भी वही करता जो नजाशी ने किया है।

अब्दः देखा अम्र! क्या कह रहे हो?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि०: क़सम है ख़ुदा की सच कह रहा हूं।

अब्दः अच्छा बताओ वह किन चीज़ों के करने का हुक्म देते

हैं और किन चीज़ों से मना करते हैं।

अम्र बिन अलआस रज़ि०: वह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की इताअत का हुक्म देते हैं और मअसियते इलाही से रोकते हैं, वह ज़िना, शराब के इस्तेमाल से और पत्थरों, बुतों और सलीब की परस्तिश से मना फ़रमाते हैं।

अब्दः कैसे अच्छे अहकाम हैं जिनकी वह दावत देते हैं, काश मेरा भाई मेरी राए कबूल करे, हम दोनों मुहम्मद सल्ल० की ख़िदमत में जाकर ईमान लाएं।

मैं समझता हूं कि अगर मेरे भाई ने इस पैग़ाम को रद किया और दुन्या ही का राग़िब रहा तो वह अपने मुल्क के लिये भी सरापा नुक़्सान साबित होगा।

अम्र बिन अलआस रज़ि०: अगर वह इस्लाम कबूल करेगा तो नबी सल्ल० उसी को इस मुल्क का बादशाह तस्लीम फ़रमा लेंगे, वह सिर्फ इतना करेंगे कि यहां सदक़ा वसूल करके यहां के गुरबा को तक़सीम करा दिया करेंगे।

अब्दः यह तो अच्छी बात है, मगर सदक़ा से क्या मुराद है?

अम्र बिन अलआस रज़ि० ने ज़कात के मसाइल बताए, जब यह बताया कि ऊंट में भी ज़कात है, तो अब्द बोला क्या वह हमारे मवाशी में से भी सदक़ा देने को कहेंगे? वह तो खुद ही दरख़्तों के पत्तों से पेट भर लेता और खुद ही पानी पीता है।

अम्र बिन अलआस रज़ि० ने कहा, हां! ऊंटों से सदक़ा लिया जाता है।

अब्दः मैं नहीं जानता कि मेरी कौम के लोग जो तअ़दाद में

ज़्यादा हैं और दूर दूर तक बिखरे पड़े हैं वह इस हुक्म को मान लेंगे।

अलग़र्ज़ अम्र बिन अलआस रज़ि० वहां चंद रोज़ ठहरे, अब्द रोज़ रोज़ की बातें अपने भाई को पहुंचाया करता था, एक रोज़ अम्र बिन अलआस रज़ि० को बादशाह ने तलब किया, चोबदारों ने दोनों जानिब से बाज़ू थाम कर उन्हें बादशाह के हुज़ूर में पेश किया, बादशाह ने फ़रमाया इन्हें छोड़ दो, चोबदारों ने छोड़ दिया, यह बैठने लगे, चोबदारों ने फिर टोका, उन्होंने बादशाह की तरफ़ देखा, बादशाह ने कहा, बोलो तुम्हारा क्या काम है?

अम्र बिन अलआस रज़ि० ने ख़त दिया जिस पर मुहर सब्त थी।

जैफ़र ने मुहर तोड़कर ख़त खोला, पढ़ा, फिर भाई को दिया, उसने भी पढ़ा, और अम्र बिन अलआस रज़ि० ने देखा कि भाई ज़्यादा नर्म दिल है।

बादशाह ने पूछा कि क़ुरैश का क्या हाल है?

अम्र बिन अलआस रज़ि० ने कहा: सबने तौअन व करहन उनकी इताअत इख़्तियार कर ली है।

बादशाह ने पूछा कि उनके साथ रहने वाले कौन लोग हैं?

अम्र बिन अलआस रज़ि०: जिन्होंने इस्लाम को बरज़ा व रग़बत क़बूल किया, सब कुछ छोड़ कर नबी सल्ल० को इख़्तियार कर लिया है और पूरी फ़िक्र और अक़्ल व तर्जबा से नबी सल्ल० की जांच कर ली है, बादशाह ने कहा अच्छा

तुम कल फिर मिलना, अम्र बिन अलआस रज़ि० दूसरे रोज़ बादशाह के भाई से फिर मिले, वह बोला कि अगर हमारी हुकूमत को सदमा न पहुंचे तो बादशाह मुसलमान हो जाएगा।

अम्र बिन अलआस रज़ि० फिर बादशाह से मिले।

बादशाह ने कहा, मैंने इस मुआमला में ग़ौर किया, देखो अगर मैं ऐसे शख़्स की इताअत इख़्तियार करता हूं जिसकी फ़ौज हमारे मुल्क तक नहीं पहुंची तो मैं सारे अरब में कमज़ोर समझा जाऊंगा, हालांकि अगर उनकी फ़ौज इस मुल्क में आए तो मैं ऐसी सख़्त लड़ाई लड़ूंगा कि तुम्हें कभी साबिक़ा न हुआ हो।

अम्र बिन अलआस रज़ि० ने कहा बेहतर मैं कल वापस चला जाऊंगा।

बादशाह ने कहा नहीं! कल तक ठहरो।

दूसरे दिन बादशाह ने उन्हें आदमी भेजकर बुलाया और दोनों भाई मुसलमान हो गए और रिआया का अक्सर हिस्सा भी इस्लाम ले आया।[1]

बनाम हाकिमे दमिश्क़ व हाकिमे यमामा

(4) मुंज़िर बिन हारिस बिन अबू शिमर दमिश्क़ का हाकिम और शाम का गवर्नर था, शुजाअ़ बिन वहबुल असदी उसके पास बतौरे सिफ़ारत भेजे गए, यह ख़त पढ़कर बहुत बिगड़ा, कहा मैं ख़ुद मदीना पर हमला करूंगा बिल-

(1) ज़ादुल मआद 3-693 ता 696, नसबुर्रीया 4-423,424, उयूनुल असर 2-267 ता 269

आख़िर सफ़ीर को बएज़ाज़ रुख़सत किया, मगर मुसलमान न हुआ।[1]

(5) हौज़ह बिन अली हाकिमे यमामा ईसाइयुल मज़हब था, सुलैत बिन अम्र रज़ि० नामए मुबारक उसके पास ले गए थे, उसने कहा कि अगर इस्लाम पर मेरी आधी हुकूमत तस्लीम कर ली जाए तो मुसलमान हो जाऊंगा, हौज़ा इस जवाब से थोड़े दिनों बाद हलाक हो गया।[2]

बनाम शाहे इस्कंदरिया

(6) जुरैह बिन मत्ता अलमुलक़्क़ब बिही मुक़ौक़स शाहे इस्कंदरिया व मिस्र ईसाइयुल मज़हब था, हातिब रज़ि० बिन अबी बलतआ़ उसके पास सफ़ीर होके गए थे, नबी सल्ल० ने ख़त के आख़िर में तहरीर फ़रमा दिया था कि अगर तुमने इस्लाम से इंकार किया तो तमाम मिस्रियों (अह्ले क़िब्त) के मुसलमान न होने का गुनाह तुम्हारी गर्दन पर होगा।

सफ़ीर ने ख़त पहुंचाने के अलावा बादशाह को इन अलफ़ाज़ में समझाया था:

"साहब! आप से पहले इस मुल्क में एक शख़्स हो चुका है जो "اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰی" (मैं तुम लोगों का बड़ा ख़ुदा हूं) कहा करता था, और ख़ुदा ने उसे दुन्या और आख़िरत की रुस्वाई दी, जब ख़ुदा का ग़ज़ब भड़का तो वह मुल्क वग़ैरा कुछ भी न रहा, इसलिये तुम दूसरों को देखो और इबरत पकड़ो, यह न हो कि दूसरे तुम से इबरत लिया

(1) ज़ादुल मआद 3-697 (2) ज़ादुल मआद 3-696, उयूनुल असर 2-269

करें।"

बादशाह ने कहा हम खुद एक मज़हब रखते हैं, उसे तर्क नहीं करेंगे, जब तक उससे बेहतर दीन कोई न मिले।

हज़रत हातिब रज़ि0 ने कहा, मैं आपको उस दीन की जानिब बुलाता हूं जो जुम्ला मज़ाहिब से किफ़ायत कुनिंदा है।

नबी सल्ल0 ने सब ही को दावते इस्लाम फ़रमाई है, कुरैश ने मुख़ालफ़त की है और यहूद ने अदावत की, लेकिन सब में से मवद्दत व मुहब्बत के साथ क़रीब तर नसारा रहे हैं, बख़ुदा जिस तरह हज़रत मूसा अलै0 ने हज़रत ईसा अलै0 के लिये बशारत दी, इसी तरह हज़रत ईसा अलै0 ने मुहम्मद सल्ल0 की बशारत दी है, कुर्आन मजीद की दावत हम आपको उसी तरह देते हैं जैसे आप अह्ले तौरात को इंजील की दावत दिया करते हैं।

जिस नबी को जिस क़ौम का ज़माना मिला वही क़ौम उसकी उम्मत समझी जाती है, इसलिये आप पर लाज़िम है कि उस नबी की इताअत करें जिसका अहद आपको मिल गया है और यह समझ लें कि हम आपको हज़रत मसीह अलै0 के मज़हब ही की दावत देते हैं।

मुक़ौक़श ने कहा, मैंने इस नबी के बारे में ग़ौर किया, हनूज़ मुझे कोई रग़बत मअ़लूम नहीं हुई, अगर्चे वह किसी मरग़ूब शैय से नहीं रोकते हैं, मैं जानता हूं कि वह साहिर ज़रर रसां हैं, न काहिन काज़िब, और उनमें तो नुबूव्वत ही

की अलामत पाई जाती है बहरहाल मैं इस मुआमला में मज़ीद ग़ौर करूंगा।

फिर आंहज़रत सल्ल0 के ख़त को हाथी दांत के डब्बे में रखवा कर मुहर लगवाकर ख़ज़ाना में रखवा दिया, आंहज़रत सल्ल0 के लिये तहाइफ़ भेजे और जवाबे ख़त में यह लिखा कि यह तो मुझे मअ़लूम है कि एक नबी का ज़ुहूर बाक़ी है, मगर मैं यह समझता रहा कि वह रसूल मुल्के शाम में होंगे।

दुलदुल, मशहूर ख़च्चर, इसी ने तोहफ़े में भेजा था।[1]

बनामे हिरक़्ल शाहे क़ुस्तुन्तुनिया

(7) हिरक़्ल शाहे क़ुस्तुन्तुनिया या रूमा की मशिरक़ी शाख़े सलतनत का नामवर शहंशाह ईसाइयुल मज़हब था, हज़रत दिहया बिन ख़लीफ़ा अलकल्बी रज़ि0 उसके पास नामए मुबारक लेकर गए थे, यह बादशाह से बैतुल मक़्दिस के मक़ाम पर मिले, हिरक़्ल ने सफ़ीर के एज़ाज़ में बड़ा शानदार दरबार किया और सफ़ीर से नबी सल्ल0 के मुतअ़ल्लिक़ बहुत ही बातें दरयाफ़्त करता रहा।

इसके बाद हिरक़्ल ने मज़ीद तहक़ीक़ात करना भी ज़रूरी समझा, हुक्म दिया कि अगर मुल्क में कोई शख़्स मक्का का आया हुआ मौजूद हो तो पेश किया जाए।

इत्तिफ़ाक़ से उन दिनों अबू सुफ़यान मअ़ दीगर ताजिराने मक्का शाम आए हुए थे, उन्हें बैतुल मक़्दिस

(1) ज़ादुल मआ़द 3-691, नसबुर्राया 4-421-422, उयूनुल असर 2-665, 666

पहुंचाया और दरबार में पेश किया गया, कैसर ने हमराही ताजिरों से कहा कि मैं अबू सुफ़यान से सवाल करूंगा अगर यह कोई जवाब ग़लत दें तो मुझे बता देना।

अबू सुफ़यान उन दिनों नबी सल्ल० के जानी दुशमन थे, उनका अपना बयान है कि अगर मुझको यह डर न होता कि मेरे साथ वाले मेरा झूट ज़ाहिर कर देंगे तो मैं बहुत सी बातें बनाता, मगर उस वक़्त कैसर के सामने मुझे सच सच ही कहना पड़ा।

सवाल व जवाब यह हैं:-

कैसरः मुहम्मद (सल्ल0) का ख़ानदान और नसब कैसा है?

अबू सुफ़यानः शरीफ़ व अज़ीम।

यह जवाब सुनकर हिरक़्ल ने कहा, "सच है नबी शरीफ़ घराने के होते हैं ताकि उनकी इताअत में किसी को आ़र न हो।"

कैसरः मुहम्मद (सल्ल0) से पहले भी किसी ने अरब में नबी होने का दावा किया है?

अबू सुफ़यानः "नहीं।"

यह जवाब सुनकर हिरक़्ल ने कहा "अगर ऐसा होता तो मैं समझ लेता कि अपने से पहले की तक़्लीद और रेस करता है।

कैसरः नबी होने से पहले क्या यह शख़्स झूट बोला करता था, इसको झूट बोलने की कभी तोहमत दी गई थी?

अबू सुफ़यानः "नहीं"

हिरक़्ल ने इस जवाब पर कहा "यह नहीं हो सकता कि जिस शख़्स ने लोगों पर झूट न बोला वह ख़ुदा पर झूट बांधे।"

कैसरः उसके बाप दादा में से कोई शख़्स बादशाह भी हुआ है?

अबू सुफ़यानः "नहीं।"

हिरक़्ल ने इस जवाब पर कहा "अगर ऐसा होता तो मैं समझ लेता नुबूव्वत के बहाने से बाप दादा की सलतनत हासिल करना चाहता है।

कैसरः मुहम्मद (सल्ल0) के मानने वाले मिस्कीन ग़रीब लोग ज़्यादा हैं या सरदार और क़वी लोग?

अबू सुफ़यानः मिस्कीन और हक़ीर लोग।

हिरक़्ल ने जवाब पर कहा हर एक नबी के पहले मानने वाले मिस्कीन ग़रीब लोग ही होते रहे हैं।

कैसरः उन लोगों की तअ़दाद रोज़ बरोज़ बढ़ रही है या कम हो रही है?

अबू सुफ़यानः बढ़ रही है।

हिरक़्ल ने कहा, ईमान का यही ख़ास्सा है कि आहिस्ता आहिस्ता बढ़ता और हद्दे कमाल तक पहुंच जाता है।

कैसरः कोई शख़्स उनके दीन से बेज़ार होकर फिर भी जाता है?

अबू सुफ़यानः "नहीं।"

हिरक़्ल ने कहा "लज़्ज़ते ईमान की यही तअ़्सीर है कि

जब दिल में बैठ जाती है और रूह पर अपना असर क़ाइम कर लेती है तब जुदा नहीं होती।"

कैसरः यह शख़्स कभी अह्द व पैमान को तोड़ भी देता है?

अबू सुफ़यानः नहीं, इम्साल हमारा इससे मुआहदा हुआ है देखिये क्या अंजाम हो?

अबू सुफ़यान कहते हैं कि मैं सिर्फ़ इस जवाब में इतना फ़िक़रा ज़्यादा कर सका था, मगर कैसर ने उस पर कुछ तवज्जोह न की और यूं कहा, बेशक नबी अहद शिकन नहीं होते, अहद शिक्नी दुन्यादार ही करता है, नबी दुन्या के तालिब नहीं होते।

कैसरः कभी उस शख़्स के साथ तुम्हारी लड़ाई भी हुई?

अबू सुफ़यानः "हां।"

कैसरः जंग का नतीजा क्या रहा?

अबू सुफ़यानः कभी वह ग़ालिब रहे (बद्र में) और कभी हम (उहुद में)।

हिरक़्ल ने कहा "ख़ुदा के नबियों का यही हाल होता है लेकिन आख़िर ख़ुदा की मदद और फ़त्ह उन ही को हासिल होती है।"

कैसरः उनकी तअ़लीम क्या है?

अबू सुफ़यानः एक ख़ुदा की इबादत करो, बाप दादा के तरीक़ (बुत परस्ती) को छोड़ दो, नमाज़, रोज़ा, सच्चाई, पाकदामनी, सिला रहम की पाबंदी इख़्तियार करो।

हिरक़्ल ने कहा "कि नबीये मौऊद की यही अलामतें

हमको बताई गई हैं, मैं समझता था कि नबी का ज़ुहूर होने वाला है, लेकिन यह न समझता था कि वह अरब में से होगा" अबू सुफ़यान! अगर तुमने सच सच जवाब दिये हैं तो वह एक रोज़ इस जगह का जहां मैं बैठा हुआ हूं (शाम व बैतुल मक़्दिस) का ज़रूर मालिक हो जाएगा, काश मैं उनकी ख़िदमत में पहुंच सकता और नबी (सल्ल०) के पांव धोया करता।

इसके बाद आंहज़रत सल्ल० का नामए मुबारक पढ़ा गया, अराकीने दरबार उसे सुन कर बहुत चीख़े और चिल्लाए और हमको दरबार से बाहर निकाल दिया गया, अबू सुफ़यान कहते हैं कि मेरे दिल में उसी रोज़ से अपनी ज़िल्लते नफ़्स और आंहज़रत सल्ल० की आइंदा अज़्मत का यक़ीन हो गया।[1]

बनाम किसरा शाहे ईरान

(8) ख़ुसरू व परवेज़ किसरा ईरान (निस्फ़ मश्रिक़ी दुन्या) का शहंशाह था, ज़रतुश्ती मज़हब रखता था, अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा उसके पास नामए मुबारक ले गए थे, नामए मुबारक की नक़्ल यह है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

مِنْ مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللّٰهِ اِلٰى كِسْرٰى عَظِيْمِ فَارِسَ، سَلَامٌ
عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى وَ آمَنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَشَهِدَ اَنْ لَّا اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ،

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताब बद्उल वह्य, बाब हद्दसना अबुल यमान हकीम बिन नाफ़ेअ, सहीह मुस्लिम किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब किताबुन्नबी सल्ल० इला हिरक़्ल।

وَاَدْعُوْکَ بِدِعَایَةِ اللّٰہِ فَاِنِّیْ اَنَا رَسُوْلُ اللّٰہِ اِلَی النَّاسِ کَافَّةً لِیُنْذِرَ مَنْ کَانَ حَیًّا وَّیَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَی الْکَافِرِیْنَ، اَسْلِمْ تَسْلَمْ، فَاِنْ اَبَیْتَ فَعَلَیْکَ اِثْمُ الْمَجُوْسِ.

अल्लाह रहमाने रहीम के नाम से:-

"मुहम्मद रसूलुल्लाह की तरफ़ से किस्रा बुज़ुर्ग फ़ारस के नाम, सलाम उस पर जो सीधे रास्ता पर चलता और खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाता और यह शहादत अदा करता है कि खुदा के सिवा कोई इबादरत के लाइक़ नहीं और मुहम्मद सल्ल० उसका बंदा और रसूल है, मैं तुझे खुदा के पैग़ाम की दावत देता हूं और मैं खुदा का रसूल हूं, मुझे जुम्ला नस्ले आदम की तरफ़ भेजा गया है ताकि जो कोई ज़िंदा है उसे अज़ाबे इलाही का डर सुनाया जाए और जो मुन्किर हैं उन पर खुदा का क़ौल पूरा हो, तू मुसलमान हो जा सलामत रहेगा, वर्ना मजूस का गुनाह तेरे ज़िम्मा होगा।"

खुस्रू ने देखते ही ख़त गुस्से से चाक कर डाला और ज़बान से कहा मेरी रिआया का अदना शख़्स मुझको ख़त लिखता है और अपना नाम मेरे नाम से पहले तहरीर करता है?

उसने खुस्रू बाज़ान को जो यमन में उसका वाइस्राए (नाइबे सलतनत) था और अरब का तमाम मुल्क उसी के ज़ेरे इक़्तिदार या ज़ेरे असर समझा जाता था, यह हुक्म भेजा

कि उस शख़्स (नबी सल्ल0) को (मआज़ल्लाह) गिरफ़्तार करके मेरे पास रवाना कर दो।

बाज़ान ने एक फ़ौजी दस्ता मामूर किया फ़ौजी अफ़सर का नाम ख़ुर्रख़ुस्रा था, एक मुल्की अफ़सर भी रवाना किया जिसका नाम बाबवैह था, बाबवैह को यह हिदायत की थी कि आंहज़रत सल्ल0 के हालात पर गहरी नज़र डाले और आंहज़रत सल्ल0 को किस्रा के पास पहुंचा दे, लेकिन अगर आप साथ जाने से इंकार करें वापस आकर रिपोर्ट करे।'

जब यह अफ़सर मदीना में नबी सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि वह कल को फिर हाज़िर हों, दूसरे रोज़ नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "आज रात तुम्हारे बादशाह को ख़ुदा ने हलाक कर डाला, जाओ और तहक़ीक़ करो, अफ़सर यह ख़बर सुनकर यमन को लौट गए, वहां वाइसराए के पास सरकारी इत्तिला आ चुकी थी ख़ुस्रू को उसके बेटे ने क़त्ल कर दिया है और तख़्त का मालिक "शेरवैह" है जो बाप का क़ातिल था।

अब बाज़ान ने नबी सल्ल0 के आदात व अख़्लाक़ और तअ़लीम व हिदायत के मुतअ़ल्लिक़ कामिल तहक़ीक़ात की और तहक़ीक़ात के बाद मुसलमान हो गया, दरबार और मुल्क का अक्सर हिस्सा मुसलमान हो गया।[1]

जो सफ़ीर नबी सल्ल0 ने भेजा था उसने वापस आकर

(1) तारीख़े तबरी 2-133

अर्ज़ किया कि शाहे ईरान ने नामए मुबारक चाक कर डाला, उस वक्त नबी सल्ल० ने फ़रमाया "مَزَّقَ مُلْكَهُ" (उसने अपनी क़ौम के फ़रमाने सलतनत को चाक कर दिया है।)[1]

नाज़िरीन! इस मुख़्तसर और पुरहैबत जुम्ला को देखें और सवा चौदह सौ बरस की तारीख़े आलम में तलाश करें कि किसी जगह उस क़ौम की सलतनत का निशान मिलता है जो इस वाक़िआ से पेशतर चार पांच हज़ार बरस से निस्फ़ दुन्या पर शहंशाही करती थी और जिसकी फ़ुतूहात बारहा यूनान व रूमा को नीचा दिखा चुकी थीं, हरगिज़ नहीं।

ग़ज़्वए ख़ैबर

ख़ैबर मदीना से शाम की जानिब तीन मंज़िल पर एक मक़ाम का नाम है, यह यहूदियों की ख़ालिस आबादी का क़स्बा था, आबादी के गिर्दा गिर्द मुस्तहकम क़िले बने हुए थे।[2]

नबी सल्ल० को सफ़रे हुदैबिया से पहुंचे हुए अभी थोड़े ही दिन (एक माह से कम) हुए थे कि सुनने में आया कि ख़ैबर के यहूदी फिर मदीना पर हमला करने वाले हैं, उन्होंने क़बीला बनू ग़तफ़ान के चार हज़ार जंगजू बहादुरों को भी अपने साथ मिला लिया था और मुआहदा यह था कि अगर

(1) सहीहुल बुख़ारी में नामए मुबारक के चाक करने और आप सल्ल० की बद्दुआ का ज़िक्र है, किताबुल मग़ाज़ी, बाब किताबुन्नबी सल्ल० इला किस्रा व क़ैसर।

(2) सीरते हलबीया 2-726

मदीना फ़त्ह हो गया तो पैदावार का निस्फ़ हिस्सा हमेशा बनू ग़तफ़ान को देते रहेंगे।[1]

नबी सल्ल0 ने इस ग़ज़्वा में सिर्फ़ उन्हीं सहाबा को हमरिकाब चलने की इजाज़त दी थी जो "لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ" की बशारत से मुम्ताज़ थे और जिनको "وَعَدَكُمُ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا" का मुज़दह मिल चुका था, उनकी तअ़दाद सोलह सौ थी जिनमें दो सौ सवार थे।[2]

लशकरे इस्लमा आबादिये ख़ैबर के मुत्तसिल रात के वक़्त पहुंच गया था, नबी सल्ल0 की आदते मुबारक यह थी कि रात को लड़ाई शुरू न करते और न कभी शबख़ून डाला करते, इसलिये लशकरे इस्लाम ने मैदान में डेरे डाल दिये।[3] यह मैदान अहले ख़ैबर और बनू ग़तफ़ान के दर्मियान पड़ता था, इस तदबीर का फ़ाएदा यह हुआ कि जब बनू ग़तफ़ान यहूदियाने ख़ैबर की मदद के लिये निकले तो उन्होंने लशकरे इस्लाम को सद्दे राह पाया और इसलिये चुपचाप अपने घरों को वापस चले गए।[4]

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने सबसे पहले ख़ैबर के क़िलों की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई, और एक एक करके उन क़िलों को फ़त्ह करना शुरू किया, उन क़िलों में एक ऐसा क़िला था

(1) सीरतुन्नबी सल्ल0 1-478, मन्क़ूल अज़ तारीख़ुल ख़मीस

(2) सीरते हलबीया 2-726

(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वए ख़ैबर

(4) इब्ने हिशाम 2-230

जो नामवर यहूदी शहसवार मरहब का तख़्त गाह था, उसको हज़रत अली रज़ि० ने सर किया, उसका वाक़िआ यह है कि यह क़िला मुसलमानों के लिये बहुत सख़्त दुशवार गुज़ार साबित हो रहा था और उनका क़ाबू उस पर नहीं चल रहा था, हज़रत अली रज़ि० की आंखें उस वक़्त आशोब कर आई थीं, नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया: "لَأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ غَداً رَجُلاً يُحِبُّهُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ يَفْتَحُ اللّٰهُ عَلىٰ يَدَيْهِ" (कल फ़ौज का अलम उस शख़्स को दिया जाएगा जिससे ख़ुदा तआला और रसूलुल्लाह मुहब्बत करते हैं और ख़ुदा तआला फ़त्ह इनायत फ़रमाएगा।) यह ऐसी तअरीफ़ थी कि जिसे सुनकर फ़ौज के बड़े बड़े बहादुर अगले दिन की कमान मिलने के आरज़ूमंद हो गये थे, सुब्ह हुई तो नबी करीम सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० को याद फ़रमाया, लोगों ने अर्ज़ किया कि उन्हें आशोबे चश्म है और आंखों में दर्द भी होता रहा है, हज़रत अली रज़ि० आ गए तो नबी सल्ल० ने लुआब मुबारक जनाब मुर्तज़ा रज़ि० की आंखों को लगा दिया, उसी वक़्त आंखें खुल गईं, न आशोब की सुर्ख़ी बाक़ी थी और न दर्द की तकलीफ़, फिर फ़रमाया अली जाओ, राहे ख़ुदा में जिहाद करो, पहले इस्लाम की दावत दो बाद में जंग, अली! अगर तुम्हारे हाथ पर एक शख़्स भी मुसलमान हो जाए तो यह काम भारी ग़नीमतों के हासिल हो जाने से बेहतर होगा।[1]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वए ख़ैबर, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब ग़ज़्वए ख़ैबर

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० ने किला नाइम पर जंग की नज़र डाली, मुकाबले के लिये किला का मशहूर सरदार मरहब जब मैदान में निकला, यह अपने आप को हज़ार बहादुरों के बराबर कहा करता था, उसने आते ही यह रिज्ज़ पढ़ना शुरू कर दिया

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ أَنِّي مَرْحَبُ
شَاكِي السِّلَاحِ بَطَلٌ مُجَرَّبُ
إِذَا الْقُلُوبُ أَقْبَلَتْ تَلَهَّبُ

"ख़ैबर जानता है कि मैं हथियार सजाने वाला, बहादुर, तजर्बाकार मरहब हूं, जब लोगों के होश मारे जाते हैं तो मैं बहादुरी दिखाया करता हूं।"

इसके मुकाबला के लिये हज़रत आमिर बिन अल अक्वअ़ रज़ि० निकले, वह भी अपना रिज्ज़ पढ़ते जाते थे,

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ أَنِّي عَامِرُ
شَاكِي السِّلَاحِ بَطَلٌ مُغَامِرُ

"ख़ैबर जानता है कि मैं हथियार चलाने में उस्ताद, नबुर्द आज़मा, तल्ख़ हूं मेरा नाम आमिर है।"

मरहब ने उन पर तलवार से वार किया, हज़रत आमिर रज़ि० ने उसे ढाल पर रोका और मरहब के हिस्साए ज़ेरीं पर वार चलाया, मगर उनकी तलवार जो लम्बाई में छोटी थी, उन ही के घुटने पर लगी, जिसके सदमा से बिलआख़िर शहीद हो गए, फिर हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० निकले, रिज्ज़े हैदरी से मैदान गूंज उठा, आप फ़रमाते थे-

أَنَــا الَّــذِىْ سَــمَّتْـنِــىْ أُمِّىْ حَيْـدَرَهْ

كَـلَيْـثِ غَـابَـاتٍ كَـرِيْـهِ الْمَـنْظَرَهْ

أُوْفِيْهِــمْ بِــالـصَّــاعِ كَيْـلَ السَّـنْـدَرَهْ

"मैं हूं कि मेरी मां ने मेरा नाम शेरे ग़ज़बनाक रखा है, मैं जंगलों के शेर की तरह हूं और बहुत ही हैबतनाक हूं, मैं अपने पैमाने की सख़ावत से बड़े बड़े पैमाने अता करूंगा।"

हज़रत अली रज़ि0 ने एक ही हाथ तलवार का ऐसा लगाया कि उसका काम तमाम हो गया, और फ़त्ह हो गई।[1]

ख़ैबर का वाक़िआ है कि एक सियाह फ़ाम हब्शी गुलाम जो अपने यहूदी आक़ा की बकरियां चराता था, यह देखकर कि यहूदी लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं, उनसे पूछा कि आप लोगों का क्या इरादा है? उन्होंने कहा कि हम उस शख़्स से लड़ने जा रहे हैं जो नुबूव्वत का दावा करता है, उसके दिल में नबी सल्ल0 का शौक़ पैदा हुआ वह अपना गल्ला लेकर आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप सल्ल0 से पूछा कि आप क्या फ़रमाते हैं और किस बात की दावत देते हैं? आप सल्ल0 ने फ़रमाया "मैं इस्लाम की दावत देता हूं और यह कि तुम इसकी गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और यह कि मैं अल्लाह का पैग़म्बर हूं और अल्लाह के सिवा तुम किसी की इबादत

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब ग़ज़्वा कर्द, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबे अली रज़ि0

न करो" गुलाम ने कहा कि अगर मैंने यह गवाही दी और अल्लाह पर ईमान ले आया तो मुझे क्या मिलेगा? फ़रमायाः "अगर तुम इसी पर मरे तो जन्नत है।" गुलाम ने इस्लाम कुबूल किया और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्ल० यह गल्ला मेरे पास अमानत है, मैं क्या करूं? आप सल्ल० ने फ़रमाया "उनको हंका दो और कंकरी मारो अल्लाह तुम्हारी अमानत अदा करा देगा" उसने ऐसा ही किया और बकरियां अपने मालिक के पास पहुंच गईं, मालिक समझ गया कि गुलाम मुसलमान हो गया, इतने में आंहज़रत सल्ल० ने वअ़ज़ फ़रमाया और सहाबा को जिहाद पर उभारा, जब मुसलमानों और कुफ़्फ़ार का मुकाबला हुआ तो शहीदों में यह गुलाम भी था, लोग उसकी लाश उठाकर खेमा में ले गए, आंहज़रत सल्ल० ने उसको देखकर फ़रमाया "अल्लाह ने इस गुलाम पर बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाया और इसको बड़ी तौफ़ीक़ दी" मैंने इसके सरहाने दो हूरें देखीं हालांकि इसको एक मर्तबा भी सज्दा करने की नौबत नहीं आई।[1]

इसी तरह का एक दूसरा वाकिआ है कि आंहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में एक शख़्स आया और उसने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल० में सियाह फ़ाम, कम रू आदमी हूं, बू भी ख़राब है, माल भी मेरे पास नहीं है, अगर मैं यहूदियों से लड़ूं और मारा जाऊं तो क्या जन्नत में जाऊंगा? फ़रमाया "हां" यह सुन कर वह आगे बढ़ा, जंग की, और मारा गया, आंहज़रत सल्ल० उसके पास आए, आपने फ़रमाया "अल्लाह

(1) दलाइलुन्नुबूव्वा 4-219, ज़ादुल मआ़द 3-323

ने तुम्हारा चेहरा हसीन कर दिया, तुम्हें ख़ुशबूदार बना दिया और तुम्हें बहुत सा माल दिया, फिर फ़रमाया "मैंने देखा कि हूरों में से उसकी दो बीवियां हैं।"[1]

ख़ैबर की लड़ाई से पहले एक अअ्राबी आंहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, ईमान लाया और आप के साथ हो गया, आपने उसको एक सहाबी के सिपुर्द कर दिया कि वह उसकी तअ्लीम व तरबियत करें, जब ख़ैबर की जंग हुई और कुछ माल ग़नीमत हाथ आया तो आपने उस अअ्राबी का भी हिस्सा लगाया, अअ्राबी अपने साथियों के ऊंट चराने गया था, जब पलट कर आया तो लोगों ने उसका हिस्सा दिया, वह अपना हिस्सा लिये हुए आंहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि या रसूलुल्लाह सल्ल० यह क्या है? फ़रमाया कि "यह तुम्हारा हिस्सा है।" उसने कहा मैं इसलिये थोड़ी आपके साथ हुआ था, मैं तो इसलिये साथ हुआ था कि (हलक़ की तरफ़ इशारा करते हुए कहा) यहां मेरे तीर लगे और मैं मर कर जन्नत में चला जाऊं, फ़रमाया "अगर तुम इस इरादा में सच्चे हो तो अल्लाह भी यही करके दिखाएगा।" ख़ैबर की लड़ाई में अअ्राबी शहीद हुआ तो उसकी लाश लोग हुज़ूर सल्ल० के पास लाए आपने देख कर फ़रमाया "यह वही है?" लोगों ने कहा हां या रसूलुल्लाह! फ़रमाया "इसका मुआमला अल्लाह से सच्चा था, अल्लाह ने वही कर दिया" आंहज़रत सल्ल० ने उसको उसी के जुब्बा में रखकर

(1) दलाइलुन्नुबूव्वा 4-221, ज़ादुल मआद 3-324

कफ़नाया फिर उसको मुकद्दम रखकर नमाज़ पढ़ाई, दुआ में यह भी फ़रमाया "कि ऐ अल्लाह यह तेरा बंदा तेरे रास्ता में हिजरत करके निकला था और शहीद मारा गया है मैं इसका गवाह हूं।[1]

फ़त्ह के बाद ज़मीने मफ़तूह पर कब्ज़ा कर लिया गया लेकिन यहूद ने दरख़्वास्त की कि ज़मीन हमारे क़ब्ज़ा में रहने दी जाए, हम पैदावार का निस्फ़ हिस्सा अदा किया करेंगे, यह दरख़्वास्त मंजूर हुई।[2]

बटाई का वक़्त आता था तो आंहज़रत सल्ल0 अब्दुल्लाह बिन रवाहा को भेजते थे वह ग़ल्ला को दो हिस्सों में तक़सीम करके यहूद से कहते थे कि इसमें से जो हिस्सा चाहो ले लो, यहूद इस अद्ल पर मुतहैयर होकर कहते कि ज़मीन और आसमान ऐसे ही अद्ल से क़ाइम हैं।[3] ख़ैबर की ज़मीन तमाम मुजाहिदीन पर जो इस जंग में शरीक थे तक़सीम कर दी गई।[4]

ख़ैबर ही के मौक़ा पर हज़रत जअ़्फ़र बिन अबी तालिब रज़ि0 अपने साथियों के साथ हब्शा से पहुंचे, उनके साथ यमन के अश्अ़री भी थे, यह कुछ ऊपर पचास आदमी थे, एक कशती पर सवार थे, कशती ने उनको हब्शा के साहिल पर पहुंचा दिया, वहां हज़रत जअ़्फ़र बिन अबी

(1) सुनन नसाई 4-60, मुस्तदरक हाकिम 3-495, दलाइलुन्नुबूव्वा 4-221

(2) सुनन अबी दाऊद, किताबुल ख़िराज वलइमारा, बाब मा जाअ फ़ी हुक्मे अर्ज़े ख़ैबर

(3) फ़त्हुल बुल्दान बलाज़ुरी स0 34

(4) अबू दाऊद, किताबुल ख़िराज वल इमारा, बाब मा जाअ फ़ी हुक्मे अर्ज़े ख़ैबर

तालिब और उनके साथियों से मुलाक़ात हुई, हज़रत जअ़्फ़र रज़ि० ने कहा हमको यहां रसूलुल्लाह सल्ल० ने भेजा है और ठहरने का हुक्म दिया है, तुम लोग भी हमारे साथ ठहरो, यह लोग ठहर गए और हब्शा से साथ ही रवाना हो गए, जब यह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे और आप सल्ल० ने हज़रत जअ़्फ़र की आवाज़ सुनी तो बड़ी मुसर्रत से उनसे बढ़कर मिले और पेशानी पर बोसा दिया और फ़रमाया "ख़ुदा की क़सम मैं नहीं कह सकता कि मुझे ख़ैबर की फ़त्ह की ज़्यादा ख़ुशी है या जअ़्फ़र के आने की" आप सल्ल० ने ख़ैबर के माले ग़नीमत में आने वालों का भी हिस्सा लगाया।[1]

ख़ैबर ही के मौक़ा पर एक यहूदी औरत ने आंहज़रत सल्ल० को ज़हर दिया, सल्लाम बिन मशकम यहूदी की बीवी ज़ैनब ने लोगों से पूछा कि हुज़ूर सल्ल० को कौनसा गोश्त ज़्यादा मरग़ूब है, लोगों ने कहा दस्त का, उसने आपकी ख़िदमत में एक भुनी हुई बकरी पेश की और दस्त में ख़ूब ज़ह्र मिला दिया, जब आपने उसमें से गोश्त नोचा, तो अल्लाह ने उस दस्त ही के ज़रीआ़ आपको मुत्तलअ़ कर दिया कि इसमें ज़ह्र मिला हुआ है, आपने यहूदियों से दरयाफ़्त फ़रमाया क्या तुमने इस बकरी में ज़ह्र मिलाया है? उन्होंने इक़्बाल किया, फ़रमाया क्यों? उन्होंने कहा हमने सोचा कि अगर आप (मआ़ज़ल्लाह) झूटे हैं तो हमको छुट्टी मिल जाएगी और अगर पैग़म्बर हैं तो आपको कोई

(1) सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए ख़ैबर, सहीह मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल

नुक़्सान नहीं होगा, औरत को भी ख़िदमत में हाज़िर किया गया और उसने एतिराफ़ किया कि मेरा इरादा मार डालने ही का था, फ़रमाया "अल्लाह तआला तुझे इसका मौक़ा नहीं दे सकता था" सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया हम इसे क़त्ल कर दें, आपने फ़रमाया "नहीं"।[1]

सुलह हुदैबिया में क़ुरैश से मुआहदा हुआ था कि अगले साल आंहज़रत सल्ल० मक्का में आकर उम्रा अदा करेंगे और तीन दिन क़्याम करके वापस चले जाएंगे,[2] इस बिना पर आंहज़रत सल्ल० ने इस साल उम्रा अदा करना चाहा और एलान करा दिया कि जो लोग वाक़िअए हुदैबिया में शरीक थे उनमें से कोई न रह जाए, चुनांचे बजुज़ उन लोगों के जो इस अस्ना में मर चुके थे सबने यह सआ़दत हासिल की।[3]

मुआहदा में शर्त थी कि मुसलमान मक्का में आएं तो हाथियार साथ न लाएं, इसलिये अस्लहा जंगे बतन या जुज में जो मक्का से आठ मील उधर है छोड़ दिये गए, और दो सौ सवारों का एक दस्ता अस्लहा की हिफ़ाज़त के लिये मुतअ़य्यन कर दिया गया,[4] रसूलुल्लाह सल्ल० लब्बैक कहते हुए हरम की तरफ़ बढ़े, अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ऊंट की महार थामे हुए आगे आगे यह रिज्ज़ पढ़ते जाते थे।

---

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाबुश्शातुल्लती सुम्मत लिन्नबीये बिख़ैबर।

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उमरतुल क़ज़ा

(3) सीरत इब्ने कसीर 3-429

(4) ज़ादुल मआ़द 3-370

خَلُّوا بَنِي الْكُفَّارِ عَنْ سَبِيلِهِ
الْيَوْمَ نَضْرِبُكُمْ عَلَى تَنْزِيلِهِ
ضَرْبًا يُزِيلُ الْهَامَ عَنْ مَقِيلِهِ
وَيُذْهِلُ الْخَلِيلَ عَنْ خَلِيلِهِ[1]

"काफ़िरो! सामने से हट जाओ, आज जो तुमने उतरने से रोका है तो हम तलवार का वार करेंगे, वह वार जो सर को ख़्वाबगाह से अलग कर दे और सारी दोस्ती हवा कर दे"

सहाबा का जम्मे ग़फ़ीर साथ था और बरसों की देरीना तमन्ना, वह बड़े जोश के साथ मनासिके हज्ज अदा कर रहे थे, अह्ले मक्का का ख़्याल था कि मुसलमानों को मदीना की आब व हवा ने कमज़ोर कर दिया है, इस बिना पर आपने हुक्म दिया कि लोग तवाफ़ में तीन पहले फेरे में अकड़ते हुए चलें[2] अरबी ज़बान में इसको "रमल" कहते हैं, चुनांचे आज तक यह सुन्नत बाक़ी है।

अह्ले मक्का ने अगर्चे चार व नाचार मुसलमानों को उम्रा की इजाज़त दी थी, ताहम उनकी आंखें इस मंज़र के देखने की ताब नहीं ला सकती थीं, रुअसाए कु़रैश ने उमूमन शहर ख़ाली कर दिया और पहाड़ों पर चले गए, तीन दिन के बाद हज़रत अली रज़ि० के पास आए और कहा मुहम्मद (सल्ल०) से कह दो कि शर्त पूरी हो चुकी अब मक्का से

(1) सुनन तिर्मिज़ी, अबवाबुल अम्साल, बाब माजाअ फ़ी इंशाअश्शेअर, सुनन नसाई, किताब मनासिकुल हज्ज, बाब इंशाउश्शेअर फ़िल हरम
(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उम्रतुल क़ज़ा

निकल जाएं, हज़रत अली रज़ि० ने आंहज़रत सल्ल० से अर्ज की, आप उसी वक़्त रवाना हो गए,[1] चलते वक़्त हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की सग़ीरुस्सिन साहबज़ादी उमामा जो मक्का में रह गई थीं, आंहज़रत सल्ल० के पास "चचा चचा" कहती दौड़ती आई, हज़रत अली रज़ि० ने हाथों में उठा लिया, लेकिन हज़रत जअ़्फ़र रज़ि० (हज़रत अली रज़ि० के भाई) और ज़ैद बिन हारसा ने अपने दावे पेश किये, हज़रत जअ़्फ़र रज़ि० कहते कि यह मेरे चचा की लड़की है, ज़ैद कहते थे कि हम्ज़ा रज़ि० मेरे मज़हबी भाई थे इस रिश्ता से यह मेरी भतीजी है, हज़रत अली रज़ि० को दावा था कि मेरी हमशीरा भी है और पहले मेरी ही गोद में आई है, आंहज़रत सल्ल० ने सबके दअ़्वों को बराबर देख कर उनको अस्मा की गोद में दे दिया, वह उमामा की ख़ाला थीं, फिर फ़रमाया "कि ख़ाला मां के बराबर होती है।"[2]

ग़ज़वए मौता

सलातीन और रुअसा को दावते इस्लाम के जो ख़ुतूत भेजे गए थे उनमें एक ख़त शुरहबील बिन अ़म्र के नाम था जो बसरा (हूरान) का बादशाह और क़ैसर का मातहत था, यह अरबी ख़ानदान एक मुद्दत से ईसाई था और शाम के सरहदी मक़ामात में हुक्मरां था, यह ख़त हारिस बिन उमैर रज़ि० लेकर गए थे, शुरहबील ने उनको क़त्ल कर दिया, इसके क़िसास के लिये आंहज़रत सल्ल० ने तीन हज़ार फ़ौज

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उम्रतुल क़ज़ा
(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उम्रतुल क़ज़ा

तैयार करके शाम की तरफ़ रवाना की[1] ज़ैद बिन हारसा रज़ि० को जो आंहज़रत सल्ल० के गुलाम थे सिपहसालारी मिली और इर्शाद हुआ कि इनको दौलते शहादत नसीब हो तो जअ़फ़र तय्यार रज़ि० और वह भी शहीद हो जाएं तो अब्दुल्लाह रज़ि० बिन रवाहा फ़ौज के सरदार हों।[2]

गो यह मुहिम क़िसास लेने की ग़र्ज़ से थी, लेकिन चूंकि तमाम मुहिम्मात का अस्ली मेहवर तबलीग़े इस्लाम था, इर्शाद हुआ कि पहले उनको दावते इस्लाम दी जाए, अगर वह इस्लाम क़बूल कर लें तो जंग की ज़रूरत नहीं, यह भी हुक्म हुआ कि इज़्हारे हमदर्दी के लिये उस मक़ाम पर जाना जहां हारिस बिन उमैर रज़ि० ने अदाए फ़र्ज़ में जान दी है, सनीयतुल वदाअ़ तक आंहज़रत सल्ल० ख़ुद फ़ौज की मुशायअत के लिये तशरीफ़ ले गए, सहाबा रज़ि० ने पुकार कर दुआ की कि ख़ुदा सलामत और कामियाब लाए।[3]

फ़ौज मदीना से रवाना हुई तो जासूसों ने शुरहबील को ख़बर दी, उसने मुक़ाबला के लिये कम व बेश एक लाख की फ़ौज तैयार की, उधर क़ैसरे रूम (हिरक़्ल) क़बाइले अरब की बेशुमार फ़ौज लेकर मआब में ख़ेमा ज़न हुआ जो बुलक़ाअ़ के अज़्लाअ़ में है, हज़रत ज़ैद रज़ि० ने यह हालात सुनकर चाहा कि इन वाक़िआत से दरबारे रिसालत को इत्तिला दी जाए और हुक्म का इंतिज़ार किया जाए, लेकिन अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने कहा, हमारा अस्ल मक़सद

(1) ज़ादुल मआद 3-381 (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वए मौता
(3) सीरतुन्नबी 1-506

फत्ह नहीं बल्कि दौलते शहादत है, जो हर वक़्त हासिल हो सकती है।[1] ग़र्ज़ यह मुख़्तसर गिरोह आगे बढ़ा और एक लाख फौज पर हमला आवर हुआ, हज़रत ज़ैद रज़ि० बर्छियां खाकर शहीद हुए, उनके बाद हज़रत जअ़्फ़र तय्यार रज़ि० ने अलम हाथ में लिया, घोड़े से उतर कर पहले ख़ुद अपने घोड़े के पांव पर तलवार मारी कि उसकी कोंचें कट गईं, फिर इस बेजिग्री से लड़े कि तलवारों से चूर चूर होकर गिर पड़े[2] हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० का बयान है कि मैंने उनकी लाश देखी तलवारों और बर्छियों के 90/ ज़ख़्म थे लेकिन सबके सब सामने की जानिब थे, पुश्त ने यह दाग़ नहीं उठाया था,[3] हज़रत जअ़्फ़र रज़ि० के बाद अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने अलम हाथ में लिया और वह भी दादे शुजाअ़त देकर शहीद हुए, अब हज़रत ख़ालिद रज़ि० सरदार बने और निहायत बहादुरी से लड़े, सहीह बुख़ारी में है कि आठ तलवारें टूट कर गिरीं,[4] लेकिन लाख से तीन हज़ार का मुक़ाबला किया था, बड़ी कामियाबी यही थी कि फौजों को दुश्मन की ज़द से बचा लाए।

रसूलुल्लाह सल्ल० को इस वाक़िआ का सख़्त सदमा हुआ, हज़रत जअ़्फ़र रज़ि० से आप सल्ल० को ख़ास मुहब्बत थी, उनकी शहादत का निहायत क़लक़ था, आप

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-375
(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-378
(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए मौता
(4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए मौता, पूरी तफ़सील इब्ने हिशाम में मौजूद है, 2-379, 380

सल्ल0 मस्जिद में जाकर ग़मज़दा बैठे, उसी हालत में एक शख़्स ने आकर कहा कि जअ़्फ़र रज़ि0 की मस्तूरात मातम कर रही हैं और रो रही हैं, आप सल्ल0 ने मना करा भेजा, वह गए और वापस आकर कहा कि मैंने मना किया, लेकिन वह बाज़ नहीं आतीं, आप सल्ल0 ने दोबारा भेजा, वह फिर गए और वापस आकर अ़र्ज़ की कि हम लोगों की नहीं चलती, आप सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि "तो इनके मुंह में ख़ाक भर दो" यह वाक़िआ हज़रत आइशा रज़ि0 से सहीह बुख़ारी में मन्क़ूल है, सहीह बुख़ारी में यह भी है कि हज़रत आइशा रज़ि0 ने उस शख़्स से कहा कि "ख़ुदा की क़सम तुम यह न करोगे (मुंह में ख़ाक डालना) और आंहज़रत सल्ल0 को तकलीफ़ से नजात न मिलेगी।"[1]

फ़त्हे मक्का

6 हि0 में जो मुआहदा क़ुरैश ने नबी सल्ल0 से बमक़ामे हुदैबिया किया था उसकी एक दफ़अ़ा में यह था कि दस साल जंग न होगी, इस शर्त में जो क़ौमें नबी सल्ल0 की जानिब मिलना चाहें वह उधर मिल जाएं और जो क़ुरैश की जानिब मिलना चाहें वह इधर मिल जाएं।

इसके मुवाफ़िक़ बनी ख़ुज़ाआ़ नबी सल्ल0 की तरफ़ और बनू बक्र क़ुरैश की तरफ़ मिल गए थे, मुआहदा को अभी दो बरस भी न पूरे हुए थे कि बनू बक्र ने बनू ख़ुज़ाआ़ पर हमला कर दिया और क़ुरैश ने भी अस्लहा से

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए मौता

इम्दाद दी, अकरमा बिन अबी जह्ल, सुहैल बिन अम्र, (मुआहदा पर उसी ने दस्तख़त किये थे) सफ़वान बिन उमय्या (मशहूर सरदाराने कुरैश) खुद भी नक़ाब पोश होकर मअ अपने हवाली व मवाली बनू खुज़ाआ पर हमला आवर हुए, उन बेचारों ने अमान भी मांगी, भाग कर ख़ानए कअ़बा में पनाह ली, मगर उनको हर जगह बेदरेग़ तहेतेग़ किया गया, जब यह मज़लूम "اِلٰهَكَ اِلٰهَكَ" (अपने खुदा के वास्ते) कह कर रहम की दरख़्वास्त करते तो यह ज़ालिम उनके जवाब में कहते थे "لَا اِلٰـهَ الْيَـوْمَ" (आज खुदा कोई चीज़ नहीं)[1]

मज़लूमों के बचे खुचे चालीस आदमी जिन्होंने भागकर अपनी जान बचाई थी, नबी सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे और अपनी मज़लूमी व बरबादी की दास्तान सुनाई, अम्र बिन सालिम खुज़ाई ने पुरदर्द नज़्म में तमाम वाकिआत गोश गुज़ार किये, उसके जस्ता जस्ता अश्आर दर्ज किये जाते हैं:

اِنَّ قُـرَيْشاً اَخْلَفُوْكَ الْمَوْعِدَا ۝ وَنَـقَـضُوْا مِيْثَاقَكَ الْمُؤَكَّدَا

وَجَـعَـلُوْا بِیْ فِیْ كَدَاءَ رُصَّدَا ۝ وَزَعَمُوْا اَنْ لَّسْتُ اَدْعُوْا اَحَدَا

وَهُـــمْ اَذَلُّ وَاَقَـــلُّ عَـــدَدَا ۝ هُـمْ بَيَّتُوْنَـا بِـالْـوَتِيْـرِ هُجَّدَا

فَقَتَلُوْنَا رُكَّعًا وَّسُجَّدًا

तरजुमाः "कुरैश ने आप सल्ल० से वादा ख़िलाफ़ी की, उन्होंने मज़बूत मुआहदा को जो आप सल्ल० से किया था तोड़ डाला, मकामे कदाअ़ में लोगों को

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-390, तारीख़े तबरी 2-153

घात में लगा दिया, वह समझते हैं कि हमारी इम्दाद को कोई नहीं आने का, वह ज़लील हैं और क़लील हैं, उन्होंने वतीर में हमको सोते में जा लिया, हमको रुकूअ़ व सुजूद की हालत में पारा पारा कर दिया।"

मुआहदा की पाबंदी, फ़रीक़े मज़लूम की दाद रसी, दोस्तदार क़बाइल की आइंदा हिफ़ाज़त की ग़र्ज़ से नबी सल्ल0 मक्का की जानिब सवार हो गए, दस हज़ार की जमईयत हमरिकाब थी,[1] दो मंज़िल चले थे कि राह में अबू सुफ़यान बिन अल हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब और अब्दुललाह बिन अबू उमय्या आंहज़रत सल्ल0 से मिले।

यह वह लोग थे जिन्होंने नबी सल्ल0 को सख़्त ईज़ाएं दी थीं और इस्लाम के मिटाने में बड़ी कोशिशें की थीं, आंहज़रत सल्ल0 ने उन्हें देखा और रुख़ फेर लिया, उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा ने अ़र्ज़ कीः

"या रसूलुल्लाह सल्ल0! अबू सुफ़यान आपके हक़ीक़ी चचा का बेटा है और अब्दुल्लाह हक़ीक़ी फूफी (आतिका) का लड़का है, इतने क़रीबी तो मरहमत से महरूम न रहने चाहियें।[2]

इसके बाद हज़रत अली रज़ि0 ने उन दोनों को यह तरकीब बताई कि जिन अलफ़ाज़ में बिरादराने यूसुफ़ ने मुआफ़ी की दरख़्वास्त की थी तुम भी आंहज़रत सल्ल0 की

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल फ़त्ह फी रमज़ान

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-400, मुस्तदरक हाकिम 3-46, ज़हबी ने सनद को मुस्लिम की शर्त पर क़रार दिया है।

ख़िदमत में जाकर उन्हीं अलफ़ाज़ का इस्तेमाल करो, नबी सल्ल0 के अफ़्व व करम से उम्मीद है कि ज़रूर कामियाब हो जाओगे।

उन्होंने नबी सल्ल0 के हुज़ूर में हाज़िर होकर यह आयत पढ़ी:

تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخَاطِئِيْنَ

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने जवाब में फ़रमाया:

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ(1)

उस वक़्त अबू सुफ़यान ने जोश व नशात से यह अशआर पढ़े:

لَعَمْرُكَ اِنِّيْ يَوْمَ اَحْمِلُ رَايَةً لِتَغْلِبَ خَيْلُ اللَّاتِ خَيْلَ مُحَمَّدٖ

لَكَالْمُدْلِجِ الْحَيْرَانِ اَظْلَمَ لَيْلُهٗ فَهٰذَا اَوَانِيْ حِيْنَ اُهْدٰى وَاَهْتَدِيْ

هَدَانِيْ هَادٍ غَيْرُ نَفْسِيْ وَنَالَنِيْ مَعَ اللّٰهِ مَنْ طَرَّدْتُ كُلَّ مُطَرَّدٖ

"क़सम है कि जिन दिनों निशाने जंग इसलिये उठाया करता था कि लात (बुत का नाम) का लशकर मुहम्मद (सल्ल0) के लशकर पर ग़ालिब आ जाए, उन दिनों मैं उस ख़ार पुश्त जैसा था जो अंधेरी रात में टक्करें खाता हो, अब वक़्त आ गया है कि मैं हिदायत पाऊं और सीधे रस्ता जाऊं, मुझे हादी ने न कि मेरे नफ़्स ने हिदायत दी है और ख़ुदा का रास्ता मुझे उस शख़्स ने बताया

(1) ज़ादुल मआद 3-400

जिसे मैंने धुतकार दिया और छोड़ दिया था।"

नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः हां! तुम तो मुझे छोड़ते ही रहे थे।[1]

नबी सल्ल0 की ख़्वाहिश यह थी कि अहले मक्का को इस आमद की ख़बर न होने पाए, चुनांचे ऐसा ही हुआ कि जब आंहज़रत सल्ल0 मक्का तक पहुंच कर बाहर ख़ेमाज़न हो गए, तो आप सल्ल0 ने हुक्म फ़रमाया कि आग के अलाव रौशन किये जाएं, चुनांचे इसकी तअ़मील की गई, उस वक़्त अबू सुफ़यान बिन हर्ब जासूसी की ग़र्ज़ से और हालात का अंदाज़ा करने के लिये उधर से गुज़रे और उनके मुंह से निकला कि इस शान का लशकर और इस तरह की रौशनी तो मैंने इससे पहले कभी नहीं देखी थी, हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि0 इससे पहले हिज्रत कर चुके थे और इसी लशकर में मौजूद थे, उन्होंने अबू सुफ़यान की आवाज़ पहचान ली और कहा देखो रसूलुल्लाह सल्ल0 लोगों में तशरीफ़ फ़रमा हैं, कल कुरैश का अंजाम कितना हौलनाक होगा, फिर यह सोच कर कि कोई मुसलमान उनको देख लेगा तो फ़ौरन उनका काम तमाम कर देगा, अपने ख़ंजर के पीछे उन्हें संभाल लिया और नबी सल्ल0 के पास लाए, जब आप सल्ल0 की नज़र मुबारक उन पर पड़ी तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया, अबू सुफ़यान तुम्हारा भला हो......क्या अभी तक इसका वक़्त नहीं आया कि तुम इस पर ईमान लाओ कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं,

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-401, मुस्तदरक हाकिम 3-46

उन्होंने कहा कि मेरे मां बाप आप पर कुर्बान! आप कितने हलीम और कितने करीम हैं और किस क़दर सिला रहमी करने वाले हैं, खुदा की कसम मैं तो यह समझता हूं कि अल्लाह के सिवा किसी और मअ़बूद का वुजूद होता तो आज मेरे कुछ काम आता, आप सल्ल0 ने फ़रमाया: अबू सुफ़यान खुदा तुम्हें समझ दे, क्या अब भी इसका वक़्त नहीं आया कि तमु इस बात का इक़रार करो कि मैं अल्लाह का रसूल हूं, अबू सुफ़यान ने कहा मेरे मां बाप आप पर कुर्बान! आप कितने हलीम और कितने करीम और सिला रहमी करने वाले हैं, लेकिन जहां तक इस मुआमला का तअ़ल्लुक़ है इस बारे में मुझे अभी शुब्हा है, हज़रत अब्बास रज़ि0 ने फ़रमाया बंदए खुदा! क़ब्ल इसके कि तुम्हारी गर्दन तलवार से उड़ा दी जाए इस्लाम क़बूल कर लो और गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के रसूल हैं, यह सुन कर अबू सुफ़यान इस्लाम लाए और शहादत देकर इस फ़रीज़ा से उह्दा बरआ हुए।[1]

मुआफ़ी की सदाए आम

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने मुआफ़ी और अम्न व हिफ़ाज़त का दाइरा उस रोज़ वसीअ़ फ़रमा दिया कि अहले मक्का में से सिर्फ़ वही शख़्स हलाक हो सकता था जो खुद मुआफ़ी और सलामती का ख़्वाहिशमंद न हो और अपनी ज़िंदगी से बेज़ार हो, आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि जो अबू सुफ़यान के

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-402, 403, ज़ादुल मआद 3-398, 401, 402

घर में दाख़िल हो जाएगा उसको पनाह मिलेगी, जो अपने घर का दरवाज़ा बंद कर लेगा वह महफ़ूज़ है, जो मस्जिदे हराम में दाख़िल होगा उसको अम्न है, रसूलुल्लाह सल्ल० ने अहले लशकर को हिदायत फ़रमाई कि मक्का में दाख़िल होते वक़्त सिर्फ़ उस शख़्स पर हाथ उठाएं जो उनकी राह में हाइल हो और उनसे मज़ाहमत करे, आप सल्ल० ने इसका भी हुक्म फ़रमाया कि अहले मक्का की जाइदाद के बारे में मुकम्मल एहतियात बरती जाए इसमें मुतलक़ दस्त दराज़ी न की जाए।[1]

रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत अब्बास रज़ि० को हिदायत की कि अबू सुफ़यान को ऐसी जगह ले जाएं जहां से इस्लामी दस्तों की पेशक़दमी का नज़ारा हो सके, यह फ़ातिहाना दस्ते समंदर की मौजों की तरह मुतलातिम नज़र आते थे, मुख़्तलिफ़ क़बाइल अपने अपने झंडों के साथ गुज़र रहे थे, जब कोई क़बीला गुज़रता तो अबू सुफ़यान अब्बास रज़ि० से उसका नाम दरयाफ़्त करते और कहते कि मुझे इस क़बीला से क्या सरोकार।[2] यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्ल० बनफ़्से नफ़ीस एक मुसल्लह दस्ते में तशरीफ़ लाए जो सब्ज़ मअ़लूम हो रहा था, यह मुहाजिरीन और अंसार का आहन पोश दस्ता था कि उनकी सिर्फ़ आंखें नज़र आती थीं, अबू सुफ़यान ने यह मंज़र देखकर कहा कि ख़ुदा की शान अब्बास यह कौन लोग हैं, उन्होंने जवाब दिया कि

(1) ज़ादुल मआ़द 3-405

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ऐना रक्कज़न्नबीयो सल्ल० अर्रायता यौमल फ़त्हे

रसूलुल्लाह सल्ल0 हैं जो मुहाजिरीन और अंसार के जुलू में तशरीफ़ ले जा रहे हैं, उन्होंने कहा इनमें से किसी को इससे पहले यह ताक़त और शान व शौकत हासिल नहीं थी, खुदा की क़सम ऐ अबुल फ़ज़्ल! तुम्हारे भतीजे का इक़्तिदार आज की सुब्ह कितना अज़ीम है, उन्होंने कहा, अबू सुफ़यान! यह नुबूव्वत का मोअ़जिज़ा है।

इसके बाद अबू सुफ़यान ने बुलंद आवाज़ से यह एलान किया कि ऐ क़ुरैश के लोगो! यह मुहम्मद (सल्ल0) इतनी ताक़त के साथ तुम्हारे पास आए हैं जिसका तुमको कभी तजर्बा न हुआ होगा, अब जो अबू सुफ़यान के घर में आ जाएगा उसको अमान दी जाएगी, लोग यह सुनकर कहने लगे, अल्लाह तुम से समझे, तुम्हारे घर की हक़ीक़त ही क्या है कि हम सबको उस घर में पनाह मिल सके? फिर उन्होंने कहा, जो अपने घर का दरवाज़ा बंद कर लेगा उसको अमान मिलेगी, जो मस्जिद (मस्जिदे हराम) में चला जाएगा उसको भी अमान मिलेगी, चुनांचे लोग मुंतशिर हो गए, अपने अपने घरों और मस्जिदे हराम में पनाह गीर हो गए।[1]

नियाज़मंदाना, न कि फ़ातिहाना दाख़िला

रसूलुल्लाह सल्ल0 मक्का में इस शान से दाख़िल हुए कि सर मुबारक अब्दीयत व तवाज़ोअ़ के ग़ल्बे से बिल्कुल झुक गया था, क़रीब था कि आप सल्ल0 की ठोड़ी ऊंट के

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-404, 405, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब फ़त्हे मक्का।

कजावे से लग जाए[1] आप सल्ल0 दाख़िल होते वक़्त सूरए फ़त्ह पढ़ रहे थे।[2]

मक्का के इस फ़ातिहाना दाख़िले में (जो जज़ीरतुल अरब का कल्ब व जिगर और रूहानी व सियासी मर्कज़ था) अद्ल व मुसावात, तवाज़ोअ् और इज़हारे अब्दीयत का कोई अंदाज़ न था, जिसको आप सल्ल0 ने इख़्तियार न फ़रमाया हो, उसामा को जो आप सल्ल0 के मौला (आज़ाद कर्दा गुलाम) हज़रत ज़ैद रज़ि0 के साहबज़ादे थे, आप सल्ल0 ने अपनी सवारी के पीछे जगह दी, बनी हाशिम और अशराफ़े कुरैश में से जिनकी बड़ी तअ्दाद वहां मौजूद थी यह शर्फ़ किसी को हासिल न हुआ,[3]

फ़त्हे मक्का के रोज़ एक शख़्स ने आप सल्ल0 से गुफ़्तगू की तो उस पर कपकपी तारी हो गई, आप सल्ल0 ने फ़रमाया डरो नहीं इत्मीनान रखो, मैं कोई बादशाह नहीं हूं, मैं तो कुरैश की एक ऐसी औरत का लड़का हूं जो गोश्त के सूखे टुक्ड़े खाया करती थी।[4]

मुआफ़ी और रहम का दिन है ख़ूंरेज़ी का नहीं

जब हज़रत सअ्द बिन उबादा रज़ि0 जो अंसार दस्ता के अमीर थे, अबू सुफ़यान के पास से गुज़रे, उन्होंने कहा "اليوم يوم الملحمة، اليوم تستحل الكعبة، اليوم اذل الله قريشا"

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-405, मुस्तदरक हाकिम 3-50

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी

(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब दुख़ूलुन्नबी सल्ल0 मिन अअ्ला मक्का

(4) मुस्तदरक हाकिम 3-50, ज़हबी ने शैख़ैन की शर्त पर क़रार दिया है।

(आज घमसान का दिन है, और ख़ूंरेज़ी का दिन है, आज कअ़बा में सब जाइज़ होगा, अल्लाह तआला ने कुरैश को ज़लील किया है) जब रसूलुल्लाह अपने दस्ते में अबू सुफ़यान के पास से गुज़रे तो उन्होंने आप सल्ल० से इसकी शिकायत की और कहा कि या रसूलुल्लाह सल्ल० आपने सुना सअ़द ने अभी क्या कहा? आप सल्ल० ने फ़रमाया क्या कहा है? उन्होंने वह सब दोहराया, सअ़द के जुम्ले को आप सल्ल० ने नापसंद फ़रमाया और फ़रमाया "اَلْيَوْمُ يَوْمُ الْمَرْحَمَة، اَلْيومَ يُعِزُّ اللّٰهُ قريشاً، ويُعَظِّمُ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ" (नहीं! आज तो रहम व मुआफ़ी का दिन है, आज अल्लाह तआला कुरैश को इज़्ज़त अता फ़रमाएगा और कअ़बा की अज़मत बढ़ाएगा)

आप सल्ल० ने हज़रत सअ़द रज़ि० को बुलवा भेजा और इस्लामी परचम उनसे लेकर उनके साहबज़ादे कैस रज़ि० के हवाले किया[1] आप सल्ल० ने यह ख़्याल फ़रमया कि उनके साहबज़ादे को परचम देने के मअ़ना यह होंगे गोया परचम उनसे वापस नहीं लिया गया है।

इस तरह एक हर्फ़ की तबदली (الملحمة के बजाए المرحمة फ़रमा देने) और एक हाथ को दूसरे हाथ से तबदील कर देने से (जिनमें से एक बाप का हाथ था दूसरा बेटे का) आप सल्ल० ने सअ़द बिन उबादा रज़ि० (जिनके ईमानी और मुजाहिदाना कारनामे اَظْهر مِنَ الشمس थे) की अदना दिलशिकनी के बग़ैर अबू सुफ़यान की (जिनकी तालीफ़े क़ल्ब की ज़रूरत थी) दिलजोई का सामान ऐसे

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल फ़त्ह, फ़त्हुल बारी 8-9

हकीमाना बल्कि मुअज्ज़ाना तरीक़ा पर अंजाम दे दिया जिससे बेहतर तरीक़े पर तस्वीर में आना मुश्किल है, बाप के बजाए उनके बेटे को यह मंसब अता कर दिया, जिससे अबू सुफ़यान के ज़ख़्म ख़ुर्दा दिल की तस्कीन मंज़ूर थी, दूसरी तरफ़ आप सल्ल0 सअ़्द बिन उबादा रज़ि0 को आज़ुर्दा ख़ातिर नहीं देखना चाहते थे, जिन्होंने इस्लाम के लिये बड़ी ख़िदमात अंजाम दी थीं।

मअमूली झड़पें

इस मौक़ा पर सफ़वान बिन उमय्या, अक्रमा बिन अबू जह्ल, सुहैल बिन अ़म्र और ख़ालिद बिन वलीद के साथियों के दर्मियान कुछ झड़पें हुईं, जिनमें तक़रीबन एक दर्जन मुश्रिकीन मारे गए, इसके बाद उन्होंने शिकस्त क़बूल कर ली।[1] इसकी वजह यह थी कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इस्लामी लशकर के सालारों को यह हिदायत फ़रमा दी थी कि जब वह मक्का में दाख़िल हों तो सिर्फ़ उन पर हाथ उठाएं जो उन पर हाथ उठाए।

हरम से बुतों की सफ़ाई

जब रसूलुल्लाह सल्ल0 मक्का में अपने मक़ाम पर पहुंच गए, और लोग भी मुत्मइन हो गए तो उस वक़्त आप बाहर तशरीफ़ लाए, बैतुल्लाह की तरफ़ रवाना हुए, वहां जाकर बैतुल्लाह के गिर्द तवाफ़ किया, उस वक़्त आप सल्ल0 के दस्ते मुबारक में एक कमान थी, कअ़बा में तीन

(1) इब्ने हिशाम 2-408

सौ साठ बुत थे, आप सल्ल0 इस कमान से उन बुतों को कोंचते थे, और फ़रमाते थेः-

جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ط اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا

तर्जुमाः हक़ आ गया और बातिल मिट गया, और बातिल मिटने ही की चीज़ थी। (सूरए इस्राअ् 81)

इसी के साथ यह तमाम एक एक करके मुंह के बल गिरते जाते।

आप सल्ल0 को कअ्बा में कुछ तस्वीरें और शबीहें भी नज़र आईं और आपके हुक्म से उनको भी तोड़ फोड़ दिया गया।

जब आप सल्ल0 ने तवाफ़ पूरा फ़रमा लिया तो उस्मान बिन तल्हा रज़ि0 को जो कअ्बा के कलीद बरदार थे बुलवाया, कअ्बा की कलीद उनसे ली, दरवाज़ा खोला गया, और आप सल्ल0 कअ्बा में दाख़िल हुए, इससे पहले जब आप सल्ल0 ने मदीना हिज्रत से क़ब्ल एक दिन यह कलीद तलब फ़रमाई थी, तो उन्होंने सख़्त जवाब दिया था, और आप सल्ल0 से इहानत आमेज़ गुफ़्तगू की थी, और आप सल्ल0 ने हिल्म और बुर्दबारी से काम लेते हुए यह फ़रमाया था, उस्मान! "तुम कलीद किसी वक़्त मेरे हाथ में देखोगे, उस वक़्त मैं जिसे चाहूंगा उसे यह दूंगा" इसके जवाब में उन्होंने कहा था, "अगर ऐसा हुआ तो वह दिन तो कुरैश की बड़ी ज़िल्लत व तबाही का होगा" आप सल्ल0 ने फ़रमाया "नहीं उस दिन वह आबाद और बाइज़्ज़त होंगे" यह अलफ़ाज़ उस्मान बिन तलहा के दिलनशीं हो गए और

उन्होंने महसूस किया कि जैसा आप सल्ल० ने फ़रमाया है वैसा ही होगा।[1]

जब आप सल्ल० कअ्बा से बाहर तशरीफ़ लाए तो कुंजी आप सल्ल० के दस्ते मुबारक में थी, आप सल्ल० को देखते ही हज़रत अली रज़ि० खड़े हो गए और अ़र्ज़ किया, अल्लाह आप सल्ल० पर दुरूद व सलाम भेजे आप सल्ल० सक़ाया (पानी पिलाने का इंतिज़ाम) के साथ हजाबा (बैतुल्लाह की दरबानी) भी हमें अता फ़रमाएं।

नबी सल्ल० ने फ़रमाया "اَلْيَوْمُ يَوْمُ الْبِرِّ وَالْوَفَاءِ" (आज का दिन तो सुलूक करने, पूरे अतीयात देने का है) फिर उस्मान को बुलाया, उन्ही को कलीद मरहमत फ़रमाई, और इर्शाद फ़रमाया कि "जो कोई तुमसे यह कलीद छीनेगा वह ज़ालिम होगा।[2]

अरब में दस्तूर था कि कोई शख़्स किसी को क़त्ल कर देता था तो उसके ख़ून का इंतिक़ाम लेना ख़ानदानी फ़र्ज़ क़रार पा जाता था, यअ्नी अगर उस वक़्त क़ातिल न हाथ आ सका तो ख़ानदानी दफ़्तर में मक़तूल का नाम लिख लिया जाता और सैकड़ों बरस गुज़रने के बाद भी इंतिक़ाम का फ़र्ज़ अदा किया जाता था, क़ातिल अगर मर चुका है तो उसके ख़ानदान या क़बीला के आदमी को क़त्ल करते थे, इसी तरह ख़ूं बहा का मुतालबा भी اباً عَنْ جَدٍّ चला आता था, यह ख़ून का इंतिक़ाम अरब में सबसे बड़े फ़ख़्र की बात थी, इसी तरह और बहुत सी लग्व बातें मफ़ाख़िरे क़ौमी में

(1) ज़ादुल मआ़द जि01, स0 425 सहीह बुख़ारी में भी यह वाक़िआ आया है।
(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-412

दाख़िल हो गई थीं, इस्लाम इन सबके मिटाने के लिये आया था और इस बिना पर आप सल्ल० ने इंतिकाम और ख़ूं बहा और तमाम ग़लत मुफ़ाख़रात की निस्बत फ़रमाया कि "मैंने इनको पांव से कुचल दिया।"[1]

अरब और तमाम दुन्या में नस्ल और क़ौम व ख़ानदान के इम्तियाज़ की बिना पर हर क़ौम में फ़र्क़े मरातिब क़ाइम किये गए थे, जिस तरह हिंदुओं ने चार ज़ातें क़ाइम कीं, और शूद्र को वह दर्जा दिया जो जानवरों का दर्जा है, इसके साथ यह बंदिश कर दी कि वह कभी अपने रुत्बा से आगे न बढ़े।

इस्लाम का सबसे बड़ा एहसान जो उसने तमाम दुन्या पर किया, मुसावाते आम का क़ाइम करना था, यअ़नी अरब व अजम, शरीफ़ व रज़ील, शाह व गदा सब बराबर हैं, हर शख़्स तरक़्क़ी के हर इंतिहाई दर्जा तक पहुंच सकता है, इस बिना पर आंहज़रत सल्ल० ने कुर्आन मजीद की आयत पढ़ी और फिर तौज़ीह फ़रमाई कि "तुम सब औलादे आदम हो और आदम मिट्टी से बने थे।[2]

ख़ुत्बा के बाद आप सल्ल० ने मजमा की तरफ़ देखा तो जब्बाराने क़ुरैश सामने थे, उनमें वह हौसलामंद भी थे जो इस्लाम के मिटाने में सबसे पेशरौ थे, वह भी थे जिनकी ज़बानें रसूलुल्लाह सल्ल० पर गालियों का बादल बरसाया करती थीं, वह भी थे जिनकी तेग़ व सनान ने पैकरे कुदसी

(1) इब्ने हिशाम 2-412, सुनन अबी दाऊद, किताबुद्दियात, बाब फ़ी ख़ताए शुब्हिल अ़मद
(2) इब्ने हिशाम 2-412, सुनन अबी दाऊद, किताबुद्दियात, बाब फ़ी ख़ताए शुब्हिल अ़मद

के साथ गुस्ताखियां कीं थीं, वह भी थे जिन्होंने आंहज़रत सल्ल0 के रास्ता में कांटे बिछाए थे, वह भी थे जो वअ़्ज़ के वक्त आंहज़रत सल्ल0 की एड़ियों को लहू लहान कर दिया करते थे, वह भी थे जिनकी तश्ना लबी ख़ूने नुबूव्वत के सिवा किसी चीज़ से बुझ नहीं सकती थी, वह भी थे जिनके हमलों का सैलाब मदीना की दीवारों से आ आकर टकराता था, वह भी थे जो मुसलमानों को जलती हुई रेत पर लिटा कर उनके सीनों पर आतशीं मोहरें लगाया करते थे।

रहमते आलम सल्ल0 ने उनकी तरफ़ देखा और ख़ौफ़ अंगेज़ लहजा में पूछा "तुम को कुछ मअ़लूम है? मैं तुम से क्या मुआमला करने वाला हूं।"

यह लोग अगर्चे ज़ालिम थे, शकी थे, लेकिन मिज़ाज शनास थे, पुकार उठे कि: أَخٌ كَرِيمٌ وَابْنُ أَخٍ كَرِيمٍ "आप शरीफ़ भाई हैं और शरीफ़ बिरादरज़ादा हैं।"

इर्शाद हुआ:

"لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ اِذْهَبُوا، فَأَنْتُمُ الطُّلَقَاءُ"[1]

"तुम पर कुछ इलज़ाम नहीं जाओ, तुम सब आज़ाद हो"

कुफ़्फ़ारे मक्का ने तमाम मुहाजिरीन के मकानात पर कब्ज़ा कर लिया था, अब वक्त था कि उनको हुकूक दिलाए जाते, लेकिन आपने मुहाजिरीन को हुक्म दिया कि वह भी अपनी मम्लूकात से दस्त बर्दार हो जाएं।

नमाज़ का वक्त आया तो हज़रत बिलाल रज़ि0 ने बामे कअ़्बा पर चढ़ कर अज़ान दी, वही सरकश जो अभी राम

(1) इब्ने हिशाम 2-412, इस मअ़्ना की रिवायत मुस्नद अहमद 5-135 में भी है।

हो चुके थे, उनकी आतिशे ग़ैरत फिर मुशतइल थी, अत्ताब बिन उसैद ने कहा "खुदा ने मेरे बाप की इज़्ज़त रख ली कि इस आवाज़ के सुनने से पहले उसको दुन्या से उठा लिया" एक और सरदारे कुरैश ने कहा "अब जीना बेकार है"[1]

मक़ामे सफ़ा में आप सल्ल0 एक बुलंद मक़ाम पर जा बैठे, जो लोग इस्लाम क़बूल करने आते थे आप सल्ल0 के हाथ पर बैअ़त करते थे, मर्दों की बारी हो चुकी, तो मस्तूरात आईं, औरतों से बैअ़त लेने का यह तरीक़ा था कि पहले उनसे अरकाने इस्लाम और महासिने अख़्लाक़ का इक़रार लिया जाता था, फिर पानी के एक लबरेज़ प्याला में आंहज़रत सल्ल0 दस्ते मुबारक डुबो कर निकाल लेते थे, आप सल्ल0 के बाद औरतें उसी प्याला में हाथ डालती थीं और बैअ़त का मुआहदा पुख़्ता हो जाता था।[2]

रुअसाए अरब में दस शख़्स थे जो कुरैश के सरताज थे, उनमें सफ़वान बिन उमय्या जद्दा भाग गए, उमैर बिन वह्ब ने आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में आकर अ़र्ज़ की कि रईसे अरब मक्का से जिला वतन हुआ जाता है, आप सल्ल0 ने अलामाते अमान के तौर पर अपना अमामा इनायत किया। उमैर जद्दा पहुंच कर उनको वापस लाए, हुनैन के मअ़रका तक यह इस्लाम नहीं लाए।[3]

(1) इब्ने हिशाम 2-413

(2) रहमतुल लिल आलमीन 1-120,121

(3) इब्ने हिशाम 2-417, 418

अब्दुल्लाह बिन जुबेअ़रा अरब का शाइर जो आंहज़रत सल्ल0 की हज्व किया करता और कुर्आन मजीद पर नुक्ता चीनियां करता था, नजरान भाग गया, लेकिन फिर आकर इस्लाम लाया।[1]

हारिस बिन हिशाम की साहबज़ादी उम्मे हकीम अक्रमा बिन अबू जह्ल की ज़ौजा थीं, वह फ़त्हे मक्का के दिन इस्लाम लाईं, लेकिन उनके शौहर अक्रमा बिन अबू जह्ल इस्लाम से भाग कर यमन चले गए, उम्मे हकीम यमन गईं और उनको इस्लाम की दावत दी और वह मुसलमान हो गए और मक्का में आए, आंहज़रत सल्ल0 ने जब उनको देखा तो फर्ते मुसर्रत से फ़ौरन उठ खड़े हुए, और इस तेज़ी से उनकी तरफ़ बढ़े कि जिस्म मुबारक पर चादर तक न थी, फिर उनसे बैअ़त ली।[2]

वह्शी को भी मुआफ़ी दी गई, जिसने अमीर हम्ज़ा (असदुल्लाह व रसूलिही) को धोका से मारा था और फिर नअ़्श को बेहुर्मत किया था।[3]

फ़त्ह से दूसरे दिन का ज़िक्र है, नबी सल्ल0 कअ़्बा का तवाफ़ कर रहे थे, फ़ुज़ाला बिन उमैर ने मौक़ा देखकर इरादा किया कि आंहज़रत सल्ल0 को क़त्ल कर डाले, जब वह इस इरादे से क़रीब पहुंचा तो नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "क्या फ़ुज़ाला आता है?" फ़ुज़ालाः "हां"!

---

(1) इब्ने हिशाम 2-418, 419, दलाइलुन्नुबूव्वा 99

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहकी 5-95

(3) रहमतुल लिल आलमीन 1-122

नबी सल्ल० ने फ़रमायाः "तुम अपने दिल में अभी क्या इरादा कर रहे थे?" फुज़ाला ने कहाः "कुछ नहीं, मैं तो अल्लाह अल्लाह कर रहा था।"

नबी सल्ल० यह सुन कर हंस पड़े और फ़रमाया "अच्छा तुम अपने खुदा से अपने लिये मुआफ़ी की दरख़्वास्त करो" यह फ़रमा कर अपना हाथ भी उसके सीना पर रख दिया।

फुज़ाला का बयान है कि हाथ रख देने से मुझे इत्मीनाने कल्ब हासिल हुआ और आंहज़रत सल्ल० की मुहब्बत इस क़दर मेरे दिल में पैदा हो गई कि हुज़ूर सल्ल० से बढ़ कर कोई भी महबूब न रहा।

मैं यहां से घर को चला, रास्ता में मेरी मअ़शूक़ा मिली जिसके पास मैं बैठा करता था, उसने कहाः फुज़ाला एक बात सुनते जाओ, मैंने जवाब दिया नहीं, नहीं! खुदा और इस्लाम ऐसी बातों से मुझे मना करते हैं।[1]

ग़ज़वए हुनैन

मक्का जब फ़त्ह हुआ तो तमाम कबाइल ने खुद पेश क़दमी की और इस्लाम कबूल करना शुरू किया[2] लेकिन हवाज़िन और सक़ीफ़ पर इसका उल्टा असर हुआ, यह क़बीले निहायत जंगजू और फुनूने जंग से वाक़िफ़ थे, इस्लाम को जिस क़दर ग़ल्बा होता जाता था यह ज़्यादा मुज़तर होते थे कि उनकी रियासत और इम्तियाज़ का

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-417

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मकारिमुन्नबी सल्ल० बिमक्का

ख़ातमा हुआ जाता है, इन बिना पर फ़त्हे मक्का से पहले हवाज़िन के रुअसा ने अरब का दौरा किया और हर जगह मुख़ालफ़ते इस्लाम का जोश फैलाया, पूरे साल उनकी यह कोशिश जारी रही और तमाम क़बाइले अरब से क़रादाद हो गई कि एक आम हमला किया जाए, मक्का फ़त्ह हुआ तो उनको यक़ीन हो गया कि अब जल्द तदारुक न किया गया तो फिर कोई ताक़त इस्लाम को ज़ेर न कर सकेगी।[1]

आंहज़रत सल्ल0 की रवानगी के वक़्त उनको यह ग़लत ख़बर पहुंची थी कि हमला का रुख़ उन्ही की तरफ़ है इसलिये इंतिज़ार की हाजत भी नहीं रही, दफ़अ़तन बड़े ज़ोर व शोर के साथ ख़ुद हमला के लिये बढ़े, जोश का यह आलम था कि हर क़बीला अपने तमाम अह्ल व अयाल लेकर आया[2] कि बच्चे और औरतें साथ होंगे तो उनकी हिफ़ाज़त की ग़र्ज़ से लोग जानें दे देंगे।[3]

इस मअ़्रका में अगर्चे सक़ीफ़ और हवाज़िन की तमाम शाख़ें शरीक थीं, ताहम कअ़्ब और कुलाब अलग रहे, फ़ौज की सरदारी के लिये दो शख़्स इंतिख़ाब किये गए, मालिक बिन औफ़ और दुरैद बिन अस्सिम्मा, अव्वलुज़्ज़िक्र क़बीला हवाज़िन का रईसे अअ़्ज़म था, दुरैद बिन अस्सिम्मा अरब का मशहूर शाइर और क़बीलए जशम का सरदार था, उसकी शाइरी और बहादुरी के मअ़्रके अब तक अरब की तारीख़

(1) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली 1-530, 531

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-51

(3) सीरतुन्नबी सल्ल0 1-531

में यादगार हैं, लेकिन उसकी उम्र सौ बरस से ज़्यादा हो चुकी थी और सिर्फ़ हड्डियों का ढांचा रह गया था, चूंकि अरब उसको मानता था और उसकी राए व तदबीर पर तमाम मुल्क को एतिमाद था, खुद मालिक बिन औफ़ ने उससे शिर्कत की दरख़्वास्त की, पलंग पर उठाकर उसको मैदाने जंग में लाए, उसने पूछा! कि यह कौनसा मक़ाम है? लोगों ने कहा "औतास" बोला कि हां "यह मकाम जंग के लिये मौज़ूं है, इसकी ज़मीन न बहुत सख़्त है, न इस क़दर नर्म कि पांव धंस जाएं" फिर पूछा कि "यह बच्चों के रोने की आवाज़ें कैसी आ रही हैं?" लोगों ने कहा "बच्चे और औरतें साथ आई हैं कि कोई शख़्स पांव पीछे न हटाए, बोला "जब पांव उखड़ जाते हैं तो कोई चीज़ रोक नहीं सकती, मैदाने जंग में सिर्फ़ तलवार काम देती है, बदकिस्मती से अगर शिकस्त हुई तो औरतों की वजह से और ज़िल्लत होगी"

फिर पूछा कि "कअ़ब और कुलाब भी शरीक हैं या नहीं?" जब मअ़लूम हुआ कि इन मुअ़ज़्ज़ज़ क़बीलों का एक शख़्स भी मैदाने जंग में नहीं, तो कहा "अगर आज का दिन इज़्ज़त व शर्फ़ का होता तो कअ़ब व कुलाब ग़ैर हाज़िर न होते" उसकी राए थी कि मैदान से हट कर किसी महफ़ूज़ मक़ाम में फ़ौजें जमा की जाएं और वहीं एलाने जंग किया जाए, लेकिन मालिक बिन औफ़ ने जो तीस साला नौजवान था जोशे शबाब में इस राए को क़बूल करने से

इंकार किया और कहा कि आपके होश जाते रहे और आप की अक़्ल बेकार हो चुकी।[1]

रसूलुल्लाह सल्ल० को इन वाक़िआत की ख़बर पहुंची तो आपने तस्दीक़ के लिये अब्दुल्लाह बिन अबी हदरद को भेजा, वह जासूस बन कर हुनैन में आए और कई दिन फ़ौज में रह कर तमाम हालात तहक़ीक़ किये[2] आंहज़रत सल्ल० ने मजबूरन मुक़ाबला की तैयारियां कीं, रसद और सामाने जंग के लिये क़र्ज़ की ज़रूरत पेश आई, अब्दुललाह बिन रबीआ़ जो निहायत दौलतमंद थे उनसे तीस हज़ार दिरहम क़र्ज़ लिये।[3] सफ़वान बिन उमय्या जो मक्का का रईसे अअ़ज़म था, मेहमान नवाज़ी में मशहूर था, लेकिन अब तक इस्लाम नहीं लाया था उससे आंहज़रत सल्ल० ने अस्लहए जंग मुस्तआ़र मांगे, उसने सौ ज़िरहें और उनके लवाज़िमात पेश किये।[4]

शव्वाल 8 हि० मुताबिक़ जनवरी, फ़रवरी 630 ई० इस्लामी फ़ौजें, जिनकी तअ़दाद बारह हज़ार थी, इस सर व सामान से हुनैन पर बढ़ीं कि सहाबा रज़ि० की ज़बान से बेइख़्तियार यह लफ़्ज़ निकल गया कि "आज हम पर कौन ग़ालिब आ सकता है" लेकिन बारगाहे एज़दी में यह नाज़िश पसंद न थी।[5]

(1) ज़ादुल मआ़द 3-466, सीरत इब्ने हिशाम 2-338, 339
(2) मुस्तदरक हाकिम 3-51, इब्ने हिशाम 2-440
(3) सीरतुन्नबी सल्ल० 1-533
(4) सुनन बैहक़ी 6-89, सुनन अबी दाऊद, किताबुल बुयूअ़, बाब फ़ी तज़मीनिल आरिया
(5) सीरतुन्नबी सल्ल० 1-533, सीरत इब्ने हिशाम 2-444

وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنكُمْ شَيْئًا، وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُم مُّدْبِرِينَ، ثُمَّ أَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ، وَأَنزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا، وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ.

"और हुनैन का दिन याद करो जब तुम अपनी कसरत पर नाज़ां थे, लेकिन वह कुछ काम न आई, और ज़मीन बावजूद वुस्अत के तुम पर तंगी करने लगी, फिर तुम पीठ फेर कर भाग निकले, फिर अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल0 पर और मुसलमानों पर तसल्ली नाज़िल की, और ऐसी फ़ौजें भेजीं जो तुमने नहीं देखीं, और काफ़िरों को अज़ाब दिया, और काफ़िरों की यही सज़ा है।"

मुसलमानों को पहले कामियाबी हुई और लोग ग़नीमत पर टूट पड़े, दुशमन के तीर अंदाज़ों ने मौक़ा पाकर तीर अंदाज़ी शुरू कर दी, जिससे मुसलमानों की सफ़ों में बेतरतीबी, इंतिशार और परागंदगी पैदा हो गई।[1]

हज़रत अबू क़तादा जो शरीके जंग थे, उनका बयान है कि जब लोग भाग निकले तो मैंने एक काफ़िर को देखा कि एक मुसलमान के सीना पर सवार है, मैंने अक़ब से उसके शाना पर तलवार मारी जो ज़िरह को काट कर अंदर उतर गई, उसने मुड़कर मुझको इस ज़ोर से दबोचा कि मेरी जान

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए हुनैन

पर बन गई, लेकिन फिर वह ठंडा होकर गिर पड़ा, इसी अस्ना में उमर रज़ि० को देखा "पूछा कि मुसलमानों का क्या हाल है?" बोले कज़ाए इलाही यही थी।[1]

इस ज़ाहिरी शिकस्त के मुख़्तलिफ़ अस्बाब थे, मुक़द्दमतुल जैश में जो हज़रत ख़ालिद रज़ि० की अफ़सरी में था, ज़्यादातर मक्का के जदीदुल इस्लाम नौजवान थे, वह जवानी के गुरूर में अस्लहए जंग भी पहन कर नहीं आए थे, फौज में दो हज़ार तुलक़ाअ् यअ़नी वह लोग थे, जो अब तक इस्लाम नहीं लाए थे, हवाज़िन तीर अंदाज़ी में तमाम अरब में अपना जवाब नहीं रखते थे, मैदाने जंग में उनका एक तीर भी ख़ाली नहीं जाता था, कुफ़्फ़ार ने मअ़रका गाह में पहले पहुंच कर मुनासिब मक़ामात पर कब्ज़ा कर लिया था और तीर अंदाज़ों के दस्ते पहाड़ की घाटियों, खोओं और दर्रों में जा बजा जमा दिये थे।[2]

तीरों का मेंह बरस रहा था, बारह हज़ार फौजें हवा हो गई थीं, लेकिन एक पैकरे मुक़द्दस पा बर जा था जो तन्हा एक फौज, एक मुल्क, एक अक़्लीम, एक आलम, बल्कि मज्मूअए काइनात था।[3]

आंहज़रत सल्ल० ने दाहनी जानिब देखा और पुकारा "يَا مَعْشَرَ الْأَنْصَارِ" आवाज़ के साथ सदा आई "हम हाज़िर हैं" फिर आप सल्ल० ने बाईं जानिब मुड़कर पुकारा,

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए हुनैन

(2) सीरतुन्नबी 1-535

(3) सीरतुन्नबी 1-535, 538, इमाम नौवी रज़ि० ने शर्ह मुस्लिम में शिकस्त के इन बअ़ज़ अस्बाब का ज़िक्र किया है

अब भी वही आवाज़ आई, आप सल्ल0 सवारी से उतर पड़े और जलाले नुबूव्वत के लहजा में फ़रमाया "मैं ख़ुदा का बंदा और उसका पैग़म्बर हूं।"[1]

बुख़ारी की दूसरी रिवायत में है कि यह रिज्ज़ आप सल्ल0 की ज़बाने मुबारक पर था।

اَنَاالنَّبِیُّ لَا کَذِبْ اَنَاابْنُ عَبْدِالْمُطَّلِبْ

"मैं पैग़म्बर हूं यह झूट नहीं है, मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूं,[2]

हज़रत अब्बास रज़ि0 निहायत बुलंद आवाज़ थे, आप सल्ल0 ने उनको हुक्म दिया कि मुहाजिरीन और अंसार को आवाज़ दो, उन्होंने नअ़रा माराः

یَامَعْشَرَ الْاَنْصَارُ یَا اصحابَ السَّمرہ

ऐ गिरोहे अंसार! ऐ बैअ़ते रिज़वान वालो!

इस पुर असर आवाज़ का कानों में पड़ना था कि तमाम फ़ौज पलट पड़ी, जिनके घोड़े कशमकश और घमसान की वजह से मुड़ न सके, उन्होंने ज़िरहें फेंक दीं और घोड़ों से कूद पड़े, दफ़अ़तन लड़ाई का रंग बदल गया,[3] कुफ़्फ़ार भाग निकले और जो रह गए उनके हाथों में हथकड़ियां थीं, बनू मालिक (सक़ीफ़ की एक शाख़ थी) जम कर लड़े, लेकिन उनके सत्तर आदमी मारे गए, और जब उनका

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुत्ताइफ़

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, ग़ज़वए हुनैन

(3) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब फ़ी ग़ज़वए हुनैन, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ 5-380, 381

अलमबरदार उस्मान बिन अब्दुल्लाह मारा गया, तो वह भी साबित कदम न रह सके।[1]

शिकस्त खुर्दा फ़ौज टूट फूट कर कुछ औतास में जमा हुई और कुछ ताइफ़ में जाकर पनाह गुज़ीं हुई, जिसके साथ सिपहसालारे लशकर (मालिक बिन औफ़) भी था।[2]

दुरैद बिन अस्सिम्मा कई हज़ार की जमईयत लेकर औतास में आया, आंहज़रत सल्ल0 ने (अबू आमिर अशअ़री के मातहत) थोड़ी सी फ़ौज उसके इस्तीसाल के लिये भेज दी, अबू आमिर दुरैद के बेटे के हाथ से मारे गए और अलमे इस्लाम उसके हाथ में था, यह हालत देखकर हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि0 ने आगे बढ़ कर हमला किया, दुशमन को कत्ल करके अलम उसके हाथ से छीन लिया।[3]

असीराने जंग की तअ़दाद हज़ारों से ज़्यादा थी उनमें हज़रत शीमा भी थीं, जो रसूलुल्लाह सल्ल0 की रज़ाई बहन थीं, लोगों ने जब उनको गिरफ़्तार किया तो उन्होंने कहा "मैं तुम्हारे पैग़म्बर की बहन हूं" लोग तस्दीक़ के लिये आंहज़रत सल्ल0 के पास लाए, उन्होंने पीठ खोल कर दिखाई कि एक दफ़ा बचपन में आपने दांत से काटा था यह उसका निशान है, फ़र्ते मुहब्बत से आप सल्ल0 की आंखों में आंसू भर आए, उन के बैठने के लिये खुद रिदाए मुबारक बिछाई, मुहब्बत की बातें कीं, चंद शुतुर और बकरियां

(1) इब्ने हिशाम 2-449, 450

(2) इब्ने हिशाम 2-453

(3) इब्ने हिशाम 2-454, सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़्वए औतास

इनायत कीं और इर्शाद किया जी चाहे तो मेरे घर चल कर रहो और अगर घर जाना चाहो तो वहां पहुंचा दिया जाए, उन्होंने ख़ानदान की मुहब्बत से घर जाना चाहा, चुनांचे इज़्ज़त और एहतिराम के साथ पहुंचा दी गई।[1]

हुनैन की बक़िया शिकस्त ख़ुर्दा फ़ौज ताइफ़ जाकर पनाह गुज़ीं हुई और जंग की तैयारियां कीं, ताइफ़ महफ़ूज़ मक़ाम था, ताइफ़ इसको इसलिये कहते हैं कि इसके गिर्द शहरे पनाह के तौर पर चहार दीवारी थी, यहां सक़ीफ़ का जो क़बीला आबाद था, निहायत शुजाअ़, तमाम अरब में मुम्ताज़ और क़ुरैश का गोया हमसर था, उर्वा बिन मसऊद जो यहां का रईस था, अबू सुफ़यान (अमीर मुआविया रज़ि० के बाप) की लड़की उसको ब्याही थी, कुफ़्फ़ारे मक्का कहते थे कि क़ुर्आन अगर उतरता तो मक्का या ताइफ़ के रुअसाअ् पर उतरता, यहां के लोग फ़न्ने जंग से भी वाक़िफ़ थे।[2] तबरी और इब्ने इस्हाक़ ने लिखा है कि उर्वा बिन मसऊद और ग़लान बिन सलमा ने जर्श (यमन का एक ज़िला) में जाकर क़िला शिकन आलात यअ़नी दब्बाबा, सन्बूर और मिंजिनीक़ के बनाने और इस्तेमाल करने का फ़न सीखा था।[3]

यहां एक महफ़ूज़ क़िला था, अह्ले शहर और हुनैन की शिकस्त ख़ुर्दा फ़ौज ने उसकी मरम्मत की, साल भर का रसद का सामान जमा किया, चारों तरफ़ मिंजिनीक़ और

(1) इब्ने हिशाम 2-458, तबरी 2-171 (2) सीरतुन्नबी सल्ल० 1-541, तारीख़े तबरी 2-171 (3) इब्ने हिशाम 2-478

जा बजा क़द्र अंदाज़ मुतअय्यन किये।[1]

आंहज़रत सल्ल0 ने हुनैन के माले ग़नीमत और असीराने जंग के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म दिया कि जिइर्राना में महफ़ूज़ रखे जाएं और ख़ुद ताइफ़ का अ़ज़्म किया, हज़रत ख़ालिद रज़ि0 मुक़द्दमतुल जैश के तौर पर पहले रवाना कर दिये गए, ग़र्ज़ मुहासरा हुआ और इस्लाम में यह पहला मौक़ा था कि क़िला शिकन आलात यअ़नी दब्बाबा और मिंजिनीक़ इस्तेमाल किये गए, दब्बाबा पर अह्ले क़िला ने लोहे की गर्म सलाख़ें बरसाईं और इस शिद्दत से तीर बारी की कि हमलाआवरों को हटना पड़ा, बहुत से लोग ज़ख़्मी हुए, बीस दिन तक मुहासरा रहा, लेकिन शहर फ़त्ह न हो सका[2] आंहज़रत सल्ल0 ने नौफ़ल बिन मुआविया को बुलाकर पूछा कि तुम्हारी क्या राए है? उन्होंने कहा लोमड़ी भट में घुस गई है, अगर कोशिश जारी रही तो पकड़ ली जाएगी, लेकिन छोड़ दी जाए तब भी कुछ अंदेशा नहीं, चूंकि सिर्फ़ मुदाफ़अत मक़्सूद थी, आंहज़रत सल्ल0 ने हुक्म दिया कि मुहासरा उठा लिया जाए, सहाबा रज़ि0 ने अ़र्ज़ की कि आप इनको बद्दुआ दें, आप सल्ल0 ने यह दुआ दी:

"اللّٰهمّ اهد ثقيفاً وائت بهم."

"ऐ ख़ुदा सक़ीफ़ को हिदायत कर और तौफ़ीक़ दे कि मेरे पास हाज़िर हो जाएं।"[3]

(1) तबक़ात इब्ने सअ़द 2-158

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-482, 483, तबक़ात इब्ने सअ़द 2-158

(3) तबक़ात इब्ने सअ़द 2-159, इब्ने हिशाम 2-488

मुहासरा छोड़ कर आप सल्ल0 जिइर्राना में तशरीफ़ लाए, ग़नीमत का बेशुमार ज़ख़ीरा था, छः हज़ार असीराने जंग, चौबीस हज़ार ऊंट, चालीस हज़ार बकरियां और चार हज़ार ऊक़िया चांदी थी, असीराने जंग के मुतअ़ल्लिक़ आप सल्ल0 ने इंतिज़ार किया कि उनके अज़ीज़ व अक़ारिब आएं तो उनसे गुफ़्तगू की जाए, लेकिन कई दिन गुज़रने पर कोई न आया, माले ग़नीमत के पांच हिस्से किये गए, चार हिस्से हसबे क़ाएदा अह्ले फ़ौज को तक़सीम किये गए, ख़ुम्स बैतुल माल और गुरबा व मसाकीन के लिये रखा गया।

मक्का के अक्सर रुअसाअ़ जिन्होंने इस्लाम क़बूल किया था अभी तक मुज़बज़बुल एक़ाद थे, इन्ही को क़ुर्आन मजीद में "مُؤَلَّفَةُ الْقُلُوبِ" कहा है, क़ुर्आन मजीद में जहां ग़नीमत के मसारिफ़ बयान किये हैं, इन लोगां का नाम भी है, आंहज़रत सल्ल0 ने इन लोगों को निहायत फ़य्याज़ाना इन्आमात दिये।[1]

जिन लोगों पर इन्आ़म की बारिश हुई, उमूमन अह्ले मक्का और अक्सर जदीदुल इस्लाम थे, इस पर अंसार को रंज हुआ, बअ़्ज़ों ने कहा रसूलुल्लाह सल्ल0 ने क़ुरैश को इन्आ़म दिया और हमको महरूम रखा, हालांकि हमारी तलवारों से अब तक क़ुरैश के ख़ून के क़त्रे टपकते हैं, बअ़्ज़ बोले कि मुश्किलात में हमारी याद होती है और ग़नीमत औरों को मिलती है।

(1) दलाइलुन्नुबूव्वा 5-171, इब्ने हिशाम 2-489, सीरतुन्नबी सल्ल0 1-542, 543, इन्आमात का ज़िक्र सहीहैन में मौजूद है।

आंहज़रत सल्ल0 ने यह चर्चे सुने तो अंसार को तलब फ़रमाया, एक चर्मी ख़ेमा नसब किया गया, जिसमें लोग जमा हुए, आप सल्ल0 ने अंसार से ख़िताब किया और फ़रमाया तुमने ऐसा कहा? लोगों ने अर्ज़ की कि "हुजूर सल्ल0! हमारे सर बरआवुर्दा लोगों में से किसी ने यह नहीं कहा, नौख़ेज़ नौजवानों ने यह फ़िक़रे कहे थे, सहीह बुख़ारी बाब मनाक़िबुल अंसार में हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि जब आंहज़रत सल्ल0 ने अंसार को बुला कर पूछा "यह क्या वाक़िआ है?" तो चूंकि अंसार झूट नहीं बोलते थे, उन्होंने कहा: "आप सल्ल0 ने जो सुना सही है।"[1]

आप सल्ल0 ने एक ख़ुत्बा दिया, जिसकी नज़ीर फ़न्ने बलाग़त में नहीं मिल सकती, अंसार की तरफ़ ख़िताब फ़रमाकर कहा "क्या यह सच नहीं है कि तुम पहले गुमराह थे, ख़ुदा ने मरे ज़रीआ तुमको हिदायत की? तुम मुंतशिर और परागंदा थे, ख़ुदा ने मेरे ज़रीआ तुम में इत्तिफ़ाक़ पैदा किया? तुम मुफ़्लिस थे ख़ुदा ने मेरे ज़रीआ से तुमको दौलतमंद किया? आप सल्ल0 यह फ़रमाते जाते थे और हर फ़िक़रा पर अंसार कहते जाते थे कि "ख़ुदा और रसूल सल्ल0 का एहसान सबसे बढ़ कर है।"

आप सल्ल0 ने फ़रमाया नहीं, तुम यह जवाब दो कि "ऐ मुहम्मद (सल्ल0)! आप (सल्ल0) को जब लोगों ने झुटलाया तो हमने आपकी तस्दीक़ की, आप (सल्ल0) को

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुत्ताइफ़, व किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबुल अंसार।

तवक़्क़ुआत हैं, आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि "ख़ानदाने अब्दुल मुत्तलिब का जिस क़दर हिस्सा है वह तुम्हारा है लेकिन आम रिहाई की तदबीर यह है कि नमाज़ के बाद जब मज्मा हो तो सब के सामने यह दरख़्वास्त पेश करो, नमाज़े ज़ुहर के बाद उन लोगों ने यह दरख़्वास्त मज्मा के सामने पेश की, आप सल्ल0 ने फ़रमाया "मुझको तो सिर्फ़ अपने ख़ानदान पर इख़्तियार है, लेकिन मैं तमाम मुसलमानों से उनके लिये सिफ़ारिश करता हूं" मुहाजिरीन और अंसार फ़ौरन बोल उठे "हमारा हिस्सा भी हाज़िर है" इस तरह छः हज़ार दफ़अ़तन आज़ाद हुए।[(1)]

ग़ज़वए तबूक

एक क़ाफ़िला शाम से आया और उन्होंने ज़ाहिर किया कि क़ैसर की फ़ौजें मदीने पर हमला आवर होने के लिये तैयार और फ़राहम हो रही हैं, अरब के ईसाई क़बाइल भी उनके साथ शामिल हैं।[(2)]

नबी सल्ल0 ने ख़्याल फ़रमाया कि हमला आवर फ़ौज की मुदाफ़अत अरब की सरज़मीन में दाख़िल होने से पहले मुनासिब है, ताकि अंदरूने मुल्क के अम्न में ख़लल वाक़ेअ़ न हो।

यह मुक़ाबला ऐसी सलतनत से था जो निस्फ़ दुन्या पर हुक्मरां थी और जिसकी फ़ौज हाल ही में सलतनते ईरान को नीचा दिखा चुकी थी।[(3)]

(1) तारीख़े तबरी 2-173, इब्ने हिशाम 2-488, 489 (2) तबक़ात इब्ने सअ़द
(3) रहमतुल लिल आलमीन 1-196

मुसलमान बे सर व सामान थे सफ़र दूर दराज़ का था, अरब की मशहूर गर्मी खूब ज़ोरों पर थी, मदीना में मेवे पक गए थे, मेवे खाने और साया में बैठने के दिन थे।[1]

नबी करीम सल्ल0 ने तैयारिये सामान के लिये आम चंदा की फ़ेहरिस्त खोली, हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि0 ने तीन सौ ऊंट, पचास घोड़े और एक हज़ार दीनार चंदा में दिये उनको "مُجَهِّزُ جَيْشِ الْعُسْرَةِ" का ख़िताब मिला।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने चालीस हज़ार दिरहम पेश किये।[3]

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने घर में जो कुछ था उसका निस्फ़ जो कई हज़ार रूपया था हाज़िर किया।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 जो कुछ लाए अगर्चे वह क़ीमत में कम था मगर मअ्लूम हुआ कि वह घर में अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्ल0 की मुहब्बत के सिवा और कुछ भी बाक़ी छोड़ कर न आए थे।[4]

अबू अक़ील अंसारी रज़ि0 ने दो सेर छुहारे लाकर पेश किये और यह भी अर्ज़ की कि "रात भर पानी निकाल निकाल कर एक खेत को सैराब करके चार सेर छुहारे मज़दूरी के लाया था, दो सेर बीवी बच्चे के लिये छोड़ कर बाक़ी दो सेर ले आया हूं।" नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया कि छुहारों को जुम्ला क़ीमती माल व मताअ् के ऊपर बिखेर दो।[5]

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-516 (2) सुनन तिर्मिज़ी, अबवाबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबे उस्मान बिन अफ़्फ़ान, मुस्नद अहमद 5-63 (3) तफ़सीर तबरी में बीस हज़ार का ज़िक्र है 10-191 (4) रहमतुल लिल आलमीन 1-136 (5) तफ़सीरे तबरी 10-197

ग़र्ज़ हर सहाबी ने इस मौक़ा पर ऐसे ही खुलूस व फ़राख़ दिली से काम लिया, तक़रीबन बयासी शख़्स जो दिखावे के मुसलमान थे बहाना करके अपने घरों में रह गए।[1]

अब्दुल्लाह बिन उबैय बिन सलूल मशहूर मुनाफ़िक़ ने इन लोगों को इत्मीनान दिलाया था कि अब मुहम्मद सल्ल0 और उनके साथी मदीना वापस न आ सकेंगे, कैसर उन्हें क़ैद कर के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में भेज देगा।[2]

ख़ुदा का नबी सल्ल0 तीस हज़ार की जमईयत से तबूक को रवाना हुआ।[3]

मदीना में सिबाअ् बिन उरफ़ुता को ख़लीफ़ा बनाया और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि0 को मदीना में अह्ले बैत की ज़रूरीयात के लिये मामूर फ़रमाया।[4]

लशकर में सवारियों की बड़ी क़िल्लत थी अट्ठारह शख़्सों के लिये एक ऊंट मुक़र्रर था, रसद के न होने से अक्सर जगह दरख़्तों के पत्ते खाने पड़े, जिससे होंट सूज गए थे, पानी बजुज़ जगह मिला ही नहीं, ऊंटों को (अगर्चे सवारी के लिये पहले ही कम थे) ज़िब्ह करके उनकी आंतों का पानी पिया करते थे।[5]

---

(1) ज़ादुल मआद 3-529, इब्ने सअ़द 2-165

(2) रहमतुल लिलआलमीन 1-136

(3) तबक़ात इब्ने सअ़द जुज़्व मग़ाज़ी, स0 119

(4) इब्ने हिशाम 2-519

(5) मदारिजुन्नुबूव्वा 2-577, 580

अलग़र्ज़ सब्र व इस्तिक़बाल से तमाम तकालीफ़ को बर्दाश्त करते हुए तबूक पहुंच गए। अभी तबूक के रास्ते ही में थे कि अली मुर्तज़ा रज़ि० भी पहुंच गए, मअ़लूम हुआ कि मुनाफ़िक़ीन बाद में हज़रत अली रज़ि० को चिढ़ाने और खिजाने लगे थे, कोई कहता निकम्मा समझ कर छोड़ दिया, कोई कहता तरस खाकर छोड़ दिया, इन बातों से शेरे खुदा को ग़ैरत आई, दो मंज़िला सेह मंज़िला तै करते हुए नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच गए, लम्बे लम्बे सफ़र और सख़्त गर्मी की तकलीफ़ से पांव मुतवर्रम थे और छाले पड़ गए थे, नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया "اَلَا تَرْضٰى اَنْ تَكُوْنَ مِنِّىْ بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُوْسٰى اِلَّا اَنَّهٗ لَا نَبِىَّ بَعْدِىْ" "अली! तुम इस पर खुश नहीं होते कि तुम मेरे लिये वैसे ही हो जैसा कि मूसा के लिये हारून थे, गो मेरे बाद कोई नबी नहीं" यह सुनकर अली मुर्तज़ा खुश व खुर्रम मदीना को वापस तशरीफ़ ले गए।(1)

तबूक पहुंच कर नबी सल्ल० ने एक माह क़याम फ़रमाया, अह्ले शाम पर इस दिलेराना इक़दाम का यह असर हुआ कि उन्होंने अरब पर हमला आवर होने का ख़्याल उस वक़्त छोड़ दिया और इस हमला आवरी का बेहतरीन मौक़ा आंहज़रत सल्ल० की वफ़ात के बाद का ज़माना क़रार दिया।(2)

(1) इब्ने हिशाम 2-519, 520, सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए तबूक

(2) रहमतुल लिल आलमीन

तबूक में एक नमाज़ के बाद आंहज़रत सल्ल0 ने एक मुख़्तसर और निहायत जामेअ् वअ़ज़ फरमाया, ज़ैल में इसे मअ् तर्जुमा दर्ज किया जाता है।

अल्लाह पाक की बेहतरीन हम्द व सना के बाद फरमाया:

امّا بعد:

"فَإِنَّ اصدَقَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللّهِ، وَأَوْثَقَ الْعُرَىٰ كَلِمَةُ التَّقْوىٰ، وَخَيْرُ الْمِلَلِ مِلَّةُ إِبْرٰهِيمَ، وَخَيْرُ السُّنَنِ سُنَّةُ مُحَمَّدٍ، وَأَشْرَفُ الْحَدِيْثِ ذِكْرُ اللّهِ، وَأَحْسَنُ الْقَصَصِ هٰذَاالْقُرْآن، وَخَيْرُ الْأُمُوْرِ عَوَازِمُهَا، وَشَرُّ الْأُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا، وَأَحْسَنُ الْهُدٰى هُدَىٰ الْأَنْبِيَاءِ، وَاَشْرَفُ الْمَوْتِ قَتْلُ الشُّهَدَاءِ، وَاَعْمٰى الْعَمىٰ الضَّلَالَةُ بَعْدَ الْهُدىٰ، وَخَيْرُ الْأَعْمَالِ مَا نفعَ، وَخَيْرُالْهُدٰى مَا اتُّبِعَ، وَشَرُّ الْعَمىٰ عَمَى الْقَلْبِ، وَالْيَدُالْعُلْيَا خَيْرٌ مِّنَ الْيَدِ السُّفْلىٰ، وَمَا قَلَّ وَكَفىٰ خَيْرٌ ممَّا كَثُرَ وَالْهٰى. وَشَرُّ الْمَعْذِرَةِ حِيْنَ يَحْضُرُ الْمَوْتُ، وشَرُّ النَّدَامَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمِنَ النَّاسِ مَن لَايَاتِي الْجُمُعَةَ اِلَّادُبُراً، وَمَنْ لَا يَذْكُرُ اللّه اِلَّا هَجْراً، وَمِنْ اَعْظَمِ الْخَطَايَا اللِّسَانُ الْكَذُوْبُ، وَخَيْرُ الْغِنىٰ غِنىَ النَّفْسِ، وَخَيْرُ الزَّادِ التَّقْوىٰ، وَرَاْسُ الْحِكْمَةِ مَخَافَةُ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ، وَخَيْرُ مَا وَقَرَفِى الْقُلُوْبِ الْيَقِيْنُ، وَالْاِرْتِيَابُ مِنَ الْكُفْرِ، وَالنِّيَاحَةُ مِنْ عَمَلِ الْجَاهِلِيَّةِ، وَالْغُلُولُ مِنَ

حَرِّ جَهَنَّمَ، وَالْكَنْزُ كَيٌّ مِّنَ النَّارِ، وَالشِّعْرُ مِنْ مَّزَامِيْرِ إِبْلِيْسَ، وَالخَمْرُ جُمَّاعُ الإِثْمِ، وَشَرُّ الْمَاكِلِ مَالُ الْيَتِيْمِ، وَالسَّعِيْدُ مَنْ وُّعِظَ بِغَيْرِهِ، وَالشَّقِيُّ مَنْ شَقِيَ فِيْ بَطْنِ أُمِّهِ، وَمِلَاكُ الْعَمَلِ خَوَاتِمُه وَشَرُّ الرَّوَايَا رَوَايَا الْكَذِبِ، وَكُلُّ مَاهُوَاتٍ قَرِيْبٌ، وَسِبَابُ الْمُؤْمِنِ فُسُوْقٌ وَقِتَالُه كُفْرٌ، وَأَكْلُ لَحْمِهِ مِنْ مَعْصِيَةِ اللّٰهِ وَحُرْمَةُ مَالِهِ كَحُرْمَةِ دَمِهِ، وَمَنْ يَتَأَلَّ عَلَى اللّٰهِ يُكَذِّبْهُ، وَمَنْ يَغْفِرْ يُغْفَرْ له، وَمَنْ يَعْفُ يَعْفُ اللّٰهُ عَنْهُ، وَمَنْ يَكْظِمُ الْغَيْظَ يَأْجُرْهُ اللّٰهُ، وَمَنْ يَصْبِرْ عَلَى الرَّزِيَّةِ يُعَوِّضْهُ اللّٰهُ، وَمَنْ يَتَّبِعِ السُّمْعَةَ يُسَمِّعْهُ اللّٰهُ، وَمَنْ يَصْبِرْ يُضَعِّفُ اللّٰهُ له، وَمَنْ يَعْصِ اللّٰهَ يُعَذِّبْهُ اللّٰهُ، ثُمَّ اسْتَغْفَرَ ثَلٰثًا.»[1]

“हर एक कलाम में सिद्क़ में बढ़कर अल्लाह की किताब है, सबसे बढ़कर भरोसा की बात तक़्वा का कलिमा है, सब मिल्लतों से बेहतर मिल्लत, इब्राहीम (अलै0) की है, सब तरीक़ों से बेहतर तरीक़ा मुहम्मद (सल्ल0) का है, सब बातों पर अल्लाह के ज़िक्र को शर्फ़ है, सब बयानात से पाकीज़ा तर क़ुर्आन है, बेहतरीन काम उलुल अ़ज़्म के काम हैं, उमूर में बदतरीन अम्र वह है जो नया निकाला गया हो, अंबिया की रविश सब रविशों से ख़ूब तर है, शहीदों की मौत, मौत की

(1) दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहक़ी 5-241, 242

सब क़िस्मों से बुज़ुर्ग तर है, सबसे बढ़ कर अंधापन वह गुमरही है जो हिदायत के बाद हो जाए, अमलों में वह अमल अच्छा है जो नफ़ा देह हो, बेहतरीन रविश वह है जिस पर लोग चल सकें, बदतरीन कोरी (अंधापन) दिल की कोरी है, बुलंद हाथ पस्त हाथ से बेहतर होता है, थोड़ा और काफ़ी माल उस बुहतात से अच्छा है जो ग़फ़लत में डाल दे, बदतरीन मअज़िरत वह है जो जाँ कनी के वक़्त की जाए, बदतरीन नदामत वह है जो क़्यामत को होगी, बअ़ज़ लोग जुमुआ को आते हैं दिल पीछे लगे होते हैं, उनमें बअ़ज़ लोग वह हैं जो अल्लाह का ज़िक्र कभी कभी किया करते हैं, सब गुनाहों से अज़ीम तर झूटी ज़बान है, सबसे बड़ी तवंगरी दिल की तवंगरी है, सबसे उम्दा तोशा तक़्वा है, दानाई यह है कि ख़ुदा का ख़ौफ़ दिल में हो, दिल नशीन होने के लिये बेहतरीन चीज़ यक़ीन है, शक पैदा करना कुफ़्र (की शाख़) है, बैन से रोना जाहिलीयत का काम है, ख़ियानत करना अज़ाबे जहन्नम का सामान है, माल व दौलत नारे दोज़ख़ का दाग़ है, शेअ़र इबलीस का बाजा गाजा है, शराब तमाम गुनाहों का मज्मूआ है, बदतरीन रोज़ी यतीम का माल खाना है, सआ़दतमंद वह है जो दूसरे से नसीहत पकड़ता है, अस्ल बदबख़्त वह है जो माँ के पेट ही से बदबख़्त हो, अमल का

सरमाया उसका बेहतरीन अंजाम है, बदतरीन बात वह है जो झूटी है, जो बात होने वाली है वह बहुत क़रीब है, मोमिन को गाली देना फ़िस्क़ है, मोमिन को क़त्ल करना कुफ़्र है, मोमिन का गोश्त खाना (उसकी ग़ीबत करना) अल्लाह की मअ़सियत है, मोमिन का माल दूसरे पर ऐसा ही हराम है जैसा कि उसका ख़ून, जो ख़ुदा से इस्तिग़फ़ार करता है ख़ुदा उसे झुटलाता है, जो किसी का ऐब छिपाता है ख़ुदा उसके उयूब छिपाता है, जो मुआफ़ी देता है उसे मुआफ़ी दी जाती है, जो ग़ुस्सा को पी जाता है ख़ुदा उसे अज्र देता है, जो नुक़सान पर सब्र करता है ख़ुदा उसे अज्र देता है, जो चुग़ली को फैलाता है ख़ुदा उसकी रुस्वाई आम कर देता है, जो सब्र कर करता है ख़ुदा उसे बढ़ाता है, जो ख़ुदा की नाफ़रमानी करता है, ख़ुदा उसे अज़ाब देता है, फिर तीन मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़कर आंहज़रत सल्ल0 ने इस ख़ुत्बा को ख़त्म फ़रमाया।"

अय्यामे क़यामे तबूक में ज़ुलबजादीन का इंतिक़ाल हुआ इस मुख़्लिस के ज़िक्र से वाज़ेह होता है कि नबी करीम सल्ल0 मुफ़्लिस सहाबा पर किस क़दर मज़ीद लुत्फ़ व इनायत फ़रमाते थे, उनका नाम अब्दुल्लाह था, अभी बच्चा ही थे कि बाप मर गया, चचा ने परवरिश की थी, जब जवान हुए तो चचा ने ऊंट, बकरिया, ग़ुलाम देकर उनकी हैसियत दुरुस्त कर दी थी, अब्दुल्लाह ने इस्लाम के

मुतअ़ल्लिक़ कुछ सुना और दिल में तौहीद का ज़ौक़ पैदा हुआ, लेकिन चचा से इस क़दर डरते थे कि इज़्हारे इस्लाम न कर सके, जब नबी करीम सल्ल0 फ़त्हे मक्का से वापस गए तो अब्दुल्लाह ने चचा से जाकर कहाः

प्यारे चचा! मुझे बरसों इंतिज़ार करते गुज़र गए कि कब आपके दिल में इस्लाम की तहरीक पैदा होती है और आप कब मुसलमान होते हैं, लेकिन आपका हाल वही पहले का सा चला आता है, मैं अपनी उम्र पर ज़्यादा एतिमाद नहीं कर सकता, मुझे इजाज़त फ़रमाइये कि मैं मुसलमान हो जाऊं।

चचा ने जवाब दिया "देख अगर तू मुहम्मद (सल्ल0) का दीन क़बूल करना चाहता है तो मैं सब कुछ तुझसे छीन लूंगा, तेरे बदन पर चादर और तहबंद तक बाक़ी न रहने दूंगा।"

अब्दुल्लाह ने जवाब दिया "चचा साहब! मैं मुसलमान ज़रूर बनूंगा और मुहम्मद सल्ल0 की इत्तिबाअ़ ही क़बूल करूंगा, शिर्क और बुत परस्ती से मैं बेज़ार हो चुका हूं अब जो आप का मंशा है कीजिये और जो कुछ मेरे क़ब्ज़ा में ज़र व माल वग़ैरा है सब कुछ संभाल लीजिये, मैं जानता हूं कि इन सब चीज़ों को आख़िर एक रोज़ यहीं दुन्या में छोड़ जाना है, इसलिये में उसके लिये सच्चे दीन को तर्क नहीं कर सकता।

अब्दुल्लाह ने यह कहकर कपड़े उतार दिये और मां के

सामने गए, मां देख कर हैरान हुई कि क्या हुआ, अब्दुल्लाह ने कहा मैं मोमिन और मुवह्हिद हो गया हूं, नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में जाना चाहता हूं, सत्र पोशी के लिये कपड़े की ज़रूरत है, मेहरबानी करके दीजिये, मां ने एक कम्बल दे दिया, अब्दुल्लाह ने कम्बल फाड़ कर आधे का तहबंद बना लिया, आधा ओढ़ लिया और मदीना को रवाना हो गए, अलस्सुब्ह मदीना मस्जिदे नबवी में पहुंच गए और मस्जिद से तकिया लगा कर मुंतज़िराना बैठ गए, नबी करीम सल्ल0 जब मस्जिद मुबारक में आए उन्हें देखकर पूछा कौन हो? कहा मेरा नाम अब्दुल उज़्ज़ा है, फ़क़ीर व मुसाफ़िर हूं, आशिके जमाल और तालिबे हिदायत होकर दरे दौलत आ पहुंचा।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "तुम्हारा नाम अब्दुल्लाह है, ज़ुलबजादीन लक़ब, तुम हमारे क़रीब ही ठहरो और मस्जिद में रहा करो।"

हज़रत अब्दुल्लाह अस्हाबे सुफ़्फ़ा में शामिल हो गए, नबी करीम सल्ल0 से क़ुर्आन सीखते और दिन भर अजब ज़ौक़ व शौक़ और जोश व नशात से पढ़ा करते।

एक दफ़ा उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने कहा कि लोग तो नमाज़ पढ़ रहे हैं और यह अअ्राबी इस क़दर बुलंद आवाज़ से पढ़ रहा है कि दूसरों की क़िराअत में मुज़ाहमत होती है, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया उमर! उसे कुछ न कहो यह तो ख़ुदा और रसूल के लिये सब कुछ छोड़ छाड़ कर आया

है।

अब्दुल्लाह के सामने ग़ज़वए तबूक की तैयारी होने लगी तो यह भी रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में आए, अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0 दुआ फ़रमाइये कि मैं भी राहे ख़ुदा में शहीद हो जाऊं, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया जाओ किसी दरख़्त का छिल्का उतार लाओ, अब्दुल्लाह छिल्का ले आए तो नबी करीम सल्ल0 ने वह छिल्का उनके बाज़ू पर बांध दिया और ज़बाने मुबारक से फ़रमाया "इलाही में कुफ्फ़ार पर इसका ख़ून हराम करता हूं" अब्दुल्लाह ने कहा या रसूलल्लाह सल्ल0! मैं तो शहादत का तालिब हूं, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "जब ग़ज़वा की नीयत से तुम निकलो और फिर तप आ जाए और मर जाओ तब भी तुम शहीद ही होगे।"

तबूक पहुंच कर यही हुआ कि तप चढ़ी और आलमे बक़ा को सिधार गए, बिलाल बिन हारिस मुज़नी का बयान है कि मैंने अब्दुल्लाह के दफ़्न की कैफ़ियत देखी है।

रात का वक़्त था हज़रत बिलाल रज़ि0 के हाथ में चराग़ था, अबू बक्र रज़ि0 व उमर रज़ि0 उसकी लाश को लहद में रख रहे थे, नबी करीम सल्ल0 भी उसकी क़ब्र में उतरे थे और अबू बक्र रज़ि0 व उमर रज़ि0 से फ़रमा रहे थे "اَدْنِيَا اِلَيَّ اَخَا كُمَا" अपने भाई को मुझसे क़रीब करो, आंहज़रत सल्ल0 ने क़ब्र में ईंटें भी अपने हाथ से रखीं और फिर दुआ में फ़रमायाः "ऐ अल्लाह मैं इनसे राज़ी हुआ तू भी इनसे राज़ी हो जा" इब्ने मसऊद रज़ि0 फ़रमाते हैं काश

इस क़ब्र में मैं दफ़्न किया जाता।[1]

तबूक से वापस फिरे और मदीना के क़रीब पहुंचे तो लोग आलमे शौक़ में इस्तिक़बाल को निकले, यहां तक कि पर्दा नशीनाने हरम भी जोश में घरों से निकल पड़ें।

जो मुनाफ़िक़ीन यह समझे हुए थे कि अब मुहम्मद (सल्ल०) और उनके दोस्त क़ैद होकर किसी दूर दराज़ जज़ीरा में भेजे जाएंगे और सही व सालिम मदीना न पहुंचेंगे, वह अब पशेमां हुए और उन्होंने साथ न चलने के झूट मूट उज़्र बनाए, नबी करीम सल्ल० ने सब को मुआफ़ी दे दी, लेकिन तीन मुख़्लिस सहाबी भी थे जो अपनी मअ़मूली सुस्ती व काहिली की वजह से हमरिकाब जाने से रह गए थे, उनको अपनी सदाक़त की वजह से इम्तिहान भी देना पड़ा।

उनमें से एक बुज़ुर्ग सहाबी रज़ि० ने अपने मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ अपनी ज़बान से बयान किया है मैं उसी को इस जगह लिख देना ज़रूरी समझता हूं।

यह बुज़ुर्गवार हज़रत कअ़ब बिन मालिक अंसारी रज़ि० हैं और उन 73/साबिक़ीन में से हैं, जो उक़्बा की बैअ़ते सानिया में हाज़िर हुए थे और शुअ़राए ख़ास में से थे।[2] हज़रत कअ़ब रज़ि० का बयान कि इस सफ़र में मेरा घर पर रह जाना इत्तिफ़ाए महज़ था, ऐसा करने का न मेरा इरादा था, न कोई उज़्र था, सफ़र का सामान मुरत्तब था, उम्दा

(1) मदारिजुन्नुबूव्वा, मुतरजम 2-90,91, इब्ने हिशाम 2-527, 528

(2) रहमतुल लिल आलमीन 1-122

ऊंटनियां मेरे पास मौजूद थीं, मेरी माली हालत ऐसी अच्छी थी कि पहले कभी न हुई थी, उस सफ़र के लिये मैंने दो मज़बूत शुतुर भी ख़रीद लिये थे, हालांकि इससे पेशतर, मेरे पास दो ऊंट कभी न हुए थे, लोग सफ़र की तैयारी करते थे और मुझे ज़रा तरद्दुद न था, मैंने सोच रखा था कि जिस रोज़ कूच होगा मैं चल पड़ूंगा, लशकरे इस्लाम जिस रोज़ रवा हुआ मुझे कुछ थोड़ा सा काम था, मैंने कहा ख़ैर मैं कल जा मिलूंगा, दो तीन रोज़ इसी तरह सुस्ती और तज़बज़ुब में गुज़र गए, अब लशकर इतनी दूर निकल गया था कि उसका मिल सकना मुश्किल हो गया, मुझे निहायत सदमा था कि यह क्या हुआ।

मैं एक रोज़ घर से निकला, मुझे उन मुनाफ़िक़ीन के सिवा जो झूट मूट उज़्र करने के आदी थे या जो मअ़ज़ूर थे, और कोई भी रास्ता में न मिला, यह देखकर मेरे तन बदन को रंज व ग़म की आग लग गई, यह दिन मेरे इस तरह गुज़र गए कि नबी करीम सल्ल0 वापस भी तशरीफ़ ले आए, अब मैं हैरान था कि क्या करूं और क्या कहूं और क्योंकर खुदा के रसूल सल्ल0 के इताब से बचाव करूं, लोगों ने मुझे बअ़ूज़ हीले बहाने बताए, मगर मैंने यही फ़ैसला किया कि नजात सच ही से मिल सकती है, आख़िर मैं नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, नबी करीम सल्ल0 ने मुझे देखा और तबस्सुम फ़रमाया, तबस्सुम ख़श्म आमेज़ था, मेरे तो होश उसी वक़्त जाते रहे।

नबी करीम सल्ल0 ने पूछा कअ़ब! तुम क्यों रह गए थे, क्या तुम्हारे पास कोई सामान मुहय्या न था? मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0! मेरे पास तो सब कुछ था, मेरे नफ़्स ने मुझे ग़ाफ़िल बनाया, काहिली ने मुझ पर ग़ल्बा किया, शैतान ने मुझ पर हमला किया और मुझे हिर्मान व खिज़लान के गिर्दाब में डाल दिया, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः "तुम अपने घर ठहरो और हुक्मे इलाही का इंतिज़ार करो"

बअ़ज़ लोगों ने कहा देखो! अगर तुम भी कोई हीला बना लेते तो ऐसा न होता, मैंने कहा "वह्ये इलाही से मेरा झूट खुल जाता और मैं कहीं का भी न रहता, मुआमला किसी दुन्यादार से नहीं, बल्कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ है" मैंने दरयाफ़्त किया कि "जो हुक्म मेरे लिये हुआ है किसी और के लिये भी हुआ है?" लोगों ने कहा "हां हिलाल बिन उमय्या और मुरारा बिन रबीअ़ की भी यही हालत है" यह सुनकर मुझे ज़रा तसल्ली हुई कि दो मर्दे सालेह और भी मुझ जैसी हालत में हैं।

फिर रसूले ख़ुदा सल्ल0 ने हुक्म दिया कि कोई मुसलमान हमारे साथ बातचीत न करे और न हमारे पास आकर बैठे, अब ज़िंदगी और दुन्या हमारे लिये वबाल मअ़लूम होने लगी, उन दिनों में हिलाल और मुर्रारा तो घर से बाहर भी न निकले, क्योंकि वह बूढ़े भी थे, लेकिन मैं जवान और दिलेर था, घर से निकलता मस्जिदे नबवी में

जाता, नमाज़ पढ़कर मस्जिद मुबारक के एक गोशाम में बैठ जाता।

नबी करीम सल्ल0 मुहब्बत भरी निगाह और गोशए चश्म से मुझे दखा करते, मेरी शिकस्तगी को मुलाहज़ा फरमाते, और जब मैं हुज़ूर सल्ल0 की जानिब आंख उठाता तो हुज़ूर सल्ल0 एराज़ फ़रमाते।

मुसलमानों का यह हाल था कि न कोई मुझसे बात करता न कोई मेरे सलाम का जवाब देता, एक रोज़ मैं निहायत रंज व अलम में मदीना से बाहर निकला, अबू कतादा रज़ि0 मेरा चचेरा भाई था और हम दोनों में निहायत मुहब्बत थी, सामने उसका बाग़ था, वह बाग़ में कुछ इमारत बनवा रहा था, मैं उसके पास चला गया, उसे सलाम किया तो उसने जवाब तक न दिया और मुंह फेर कर खड़ा हो गया, मैंने कहा "अबू क़तादा (रज़ि0)! तुम खूब जानते हो कि मैं खुदा और रसूल सल्ल0 से मुहब्बत रखता हूं और निफ़ाक़ व शिर्क का मेरे दिल पर असर नहीं, फिर तुम क्यों मुझसे बात नहीं करते?" अबू क़तादा ने अब भी जवाब न दिया, जब मैंने तीन बार इसी बात को दोहराया तो चचेरे भाई ने सिर्फ इस क़दर जवाब दिया कि "अल्लाह और रसूल सल्ल0 ही को खूब मअ़लूम है" मुझे बहुत ही रिक्क़त हुई और खूब ही रोया, मैं शहर में लौट कर आया तो मुझे एक ईसाई मिला, यह मदीना में मुझे तलाश कर रहा था, लोगों ने बता दिया कि वह यही शख़्स है, उसके पास

बादशाहे ग़स्सान का एक ख़त मेरे नाम था, ख़त में लिखा था:

"हमने सुना है कि तुम्हारा आक़ा तुमसे नाराज़ हो गया है, तुमको अपने सामने से निकाल दिया है और बाक़ी सब लोग भी तुम पर जौर व जफ़ा कर रहे हैं, हमको तुम्हारे दर्जा व मंज़िलत का हाल बख़ूबी मअ़लूम है और तुम ऐसे नहीं हो कि कोई तुम से ज़रा भी बे इल्तिफ़ाती करे या तुम्हारी इज़्ज़त के ख़िलाफ़ तुमसे सुलूक किया जाए, अब तुम यह ख़त पढ़ते ही मेरे पास चले आओ और आकर देखो कि मैं तुम्हारा एज़ाज़ व इकराम क्या कुछ कर सकता हूं।"

ख़त पढ़ते ही मैंने कहा कि यह एक और मुसीबत मुझ पर पड़ी, इससे बढ़ कर मुसीबत और क्या हो सकती है? कि आज एक ईसाई मुझ पर और मेरे दीन पर क़ाबू पाने की आरज़ू करने लगा है और मुझे कुफ़्र की दावत देता है, इस ख़्याल से मेरा रंज व अंदोह चंद दर चंद बढ़ गया, ख़त को क़ासिद के सामने ही मैंने आग में डाल दिया और कह दिया "जाओ कह देना कि आपकी इनायात व इल्तिफ़ात से मुझे अपने आक़ा (सल्ल०) की बेइल्तिफ़ाती लाख दर्जा बेहतर व ख़ुशतर है।"

मैं घर पहुंचा तो देखा कि नबी करीम सल्ल० की तरफ़ से एक शख़्स आया हुआ मौजूद है, उसने कहा: नबी करीम सल्ल० ने हुक्म दिया है कि "तुम अपनी बीवी से अलाहीदा

कहा नहीं, सिर्फ़ अलाहिदा रहने को फ़रमाया है, यह सुनकर अपनी बीवी को उसके मैके भेज दिया, मुझे मअ़लूम हुआ कि हिलाल और मुरारा के पास भी यही हुक्म पहुंचा था, हिलाल की बीवी नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्ल0! हिलाल कमज़ोर और ज़ईफ़ हैं और उनकी ख़िदमत के लिये कोई ख़ादिम भी नहीं, अगर इज़्न हो तो मैं उनकी ख़िदमत करती रहूं, फ़रमाया "हां उसके बिस्तर से दूर रहो" औरत ने कहा "या रसूलुल्लाह सल्ल0! हिलाल का रंज व ग़म से ऐसा हाल है कि उन्हें तो और कोई भी ख़्याल नहीं रहा।

अब मुझे लोगों ने कहा तुम भी इजाज़त ले लो कि तुम्हारी बीवी तुम्हारा काम काज तो कर दिया करे, मैंने कहा "मैं तो ऐसी जुर्अत नहीं करने का, क्या ख़बर हुजूर सल्ल0 इजाज़त दें या न दें, और मैं जवान हूं अपना काम ख़ुद कर सकता हूं मुझे ख़िदमत की ज़रूरत नहीं।

अलग़र्ज़ इसी तरह मुसीबत के पचास दिन गुज़र गए, एक रात मैं अपनी छत पर लेटा हुआ था और अपनी मुसीबत पर सख़्त नालां था कि कोहे सल्अ़ पर चढ़कर जो मेरे घर के क़रीब था, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने आवाज़ दी, कअ़ब को मुबारक हो कि उसकी तौबा क़बूल हो गई, यह आवाज़ सुनते ही मेरे दोस्त व अह्बाब दौड़ पड़े और मुबारकबाद कहने लगे कि मुख़्लिस की तौबा क़बूल, मैंने यह सुनते ही पेशानी को ख़ाक पर रख दिया और

सज्दए शुक्राना अदा किया और फिर दौड़ा दौड़ा नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ।

नबी करीम सल्ल0 मुहाजिरीन व अंसार में तशरीफ़ फ़रमा थे, मुझे देखकर मुहाजिरीन ने मुबारकबाद दी और अंसार ख़ामोश रहे, मैंने आगे बढ़कर सलाम अ़र्ज़ किया, उस वक़्त चेहरए मुबारक ख़ुशी व मुसर्रत से चौदहवीं के चांद की तरह ताबां व दरख़्शां हो रहा था और आदते मुबारक थी कि ख़ुशी में चेहरए मुबारक और भी ज़्यादा रौशन हो जाता था, मुझे फ़रमाया "कअ़ब मुबारक! उस बेहतरीन दिन के लिये जब से तू मां के पेट से पैदा हुआ कोई दिन ऐसा मुबारक तुझ पर आज तक नहीं गुज़रा, आओः तुम्हारी तौबा को रब्बुल आलमीन ने कबूल फ़रमा लिया है।"

मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0! इस कबूलियत के शुक्राना में अपना कुल माल राहे ख़ुदा में सद्क़ा देता हूं, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "नहीं" मैंने अ़र्ज़ किया "निस्फ़" फ़रमाया "नहीं" मैंने अ़र्ज़ किया "सुलुस" फ़रमाया, हां सुलुस ख़ूब है और सुलुस भी बहुत है।[1]

मुनाफ़िक़ीन हमेशा इस फ़िक्र में रहते थे कि मुसलमानों में किसी तरह फूट डाल दें, एक मुद्दत से वह इस ख़्याल में थे कि मस्जिदे कुबा की तोड़ पर वहीं एक और मस्जिद इस हीला से बनाएं कि जो लोग ज़ुअ़्फ़ या किसी और वजह से मस्जिदे नबवी में न पहुंच सकें यहां आकर नमाज़ अदा कर लिया करें, अबू आमिर जो अंसार में से ईसाई हो गया था

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हदीस कअ़ब बिन मालिक रज़ि0

उसने मुनाफ़िक़ीन से कहा तुम सामान करो, मैं क़ैसर के पास जाकर वहां से फ़ौजें लाता हूं कि इस मुल्क को इस्लाम से पाक कर दें।

आंहज़रत सल्ल० जब तबूक तशरीफ़ ले जाने लगे तो मुनाफ़िक़ीन ने आंहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में आकर अ़र्ज़ की कि हमने बीमारों और मअ़ज़ूरों के लिये एक मस्जिद तैयार की है, आप चल कर उसमें एक दफ़ा नमाज़ पढ़ा दें तो मक़बूल हो जाए, आप सल्ल० ने फ़रमाया इस वक़्त मैं मुहिम पर जा रहा हूं, जब तबूक से वापस फिरे तो हज़रत मालिक और हज़रत मअ़न बिन अ़दी को हुक्म दिया कि जाकर मस्जिद में आग लगा दें, इसी मस्जिद की शान में यह आयतें उतरीं हैं।[1]

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِداً ضِرَاراً وَّكُفْراً وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَاداً لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَا اِلَّا الْحُسْنٰى وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكَاذِبُوْنَ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَداً لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ، فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا، وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ.

"और इनमें ऐसे भी हैं जिन्होंने इस ग़र्ज़ से मस्जिद बनाई है कि ज़रर पहुंचाएं और कुफ़्र करें और मोमिनों में तफ़रक़ा डालें और जो लोग ख़ुदा

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-529, 530, ज़ादुल मआ़द 3-549

और उसके रसूल (सल्ल0) से पहले जंग कर चुके हैं उनके घात की जगह बनाएं, और कसमें खाएंगे कि हमारा मक़सूद तो सिर्फ भलाई थी, मगर खुदा गवाही देता है कि यह झूटे हैं, तुम इस मस्जिद में कभी खड़े भी न होना, अलबत्ता वह मस्जिद जिसकी बुन्याद पहले दिन से तक़्वा पर रखी गई है इस काबिल है कि उसमें जाया करो, उसमें ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसंद करते हैं और खुदा पाक रहने वालों ही को पसंद करता है।"

(तौबा)

वफ़्दे दौस

तुफ़ैल बिन अम्र रज़ि0 दौसी के इस्लाम लाने का ज़िक्र इस किताब में पहले आ चुका है, इस्लाम के बाद जब यह बुज़ुर्गवार वतन को जाने लगे तो इन्होंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0! दुआ फरमाइये कि मेरी क़ौम भी मेरी दावत पर मुसलमान हो जाए, दुआ फरमाई, खुदाया तुफ़ैल को तू एक निशान (आयत) बना दे, हज़रत तुफ़ैल रज़ि0 घर पहुंचे तो बूढ़े बाप मिलने के लिये आए, हज़रत तुफ़ैल रज़ि0 ने कहा, बावा जान अब न मैं आपका हूं और न आप मेरे हैं, उन्होंने कहा क्यों? हज़रत तुफ़ैल रज़ि0 ने कहा मुहम्मद सल्ल0 का दीन कबूल करके और मुसलमान होके आया हूं, उन्होंने कहा बेटा जो तेरा दीन है वही मेरा भी दीन है,

हज़रत तुफ़ैल ने कहा खूब, तब आप उठिये, गुस्ल फ़रमाइये, पाक कपड़े पहन कर तशरीफ़ लाइये, ताकि मैं इस्लाम की तअ़लीम दूं, फिर हज़रत तुफ़ैल की बीवी आई, उससे भी इसी तरह बातचीत हुई और वह भी मुसलमान हो गई, अब हज़रत तुफ़ैल रज़ि० ने इस्लाम की मुनादी शुरू कर दी लेकिन लोग कुछ मुसलमान न हुए।[1]

हज़रत तुफ़ैल रज़ि० फिर नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में आए, अ़र्ज़ किया मेरी क़ौम में ज़िना की कसरत है। (चूंकि इस्लाम ज़िना को सख़्ती से हराम ठहराता है) इसलिये लोग मुसलमान नहीं हुए, हुजूर सल्ल० ने उनके लिये दुआ फ़रमाई "नबी करीम सल्ल० ने कहा: اللّٰهُمَّ اهْدِ دَوْسًا[2] (ऐ खुदा दौस को सीधा रास्ता दिखा) फिर हज़रत तुफ़ैल रज़ि० से फ़रमाया "जाओ" लोगों को दीने खुदा की तरफ़ बुलाओ, उनसे नर्मी और मुहब्बत का बरताव करो।

इस दफ़ा हज़रत तुफ़ैल को अच्छी कामियाबी हुई, वह 5 हि० में दौस के सत्तर अस्सी लोगों को जो मुसलमान हो चुके थे, साथ लेकर मदीना पहुंचे, मअ़लूम हुआ कि हुजूर सल्ल० ख़ैबर गए हुए हैं, इसलिये ख़ैबर ही पहुंच कर उन्होंने शर्फ़े हुजूरी हासिल किया और यह सब लोग भी ख़ैबर ही में नबी सल्ल० के दीदार से मुशर्रफ़ हुए,[3] नबी करीम सल्ल० के चचेरे भाई भी हब्श से वहां के हब्शी कबाइल को जो

(1) ज़ादुल मआ़द 3-625 (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़िस्सए दौस
(3) ज़ादुल मआ़द 3-625, 626

मुसलमान हो चुके थे लेकर ख़ैबर ही जा पहुंचे।

हज़रत जअ़फ़र रज़ि0 का हब्श से वहां के मुस्लिमों को लेकर और हज़रत तुफ़ैल बिन अ़म्र का यमन से दौस के नौ मुस्लिम ख़ानदानों को लेकर ख़ैबर में पहुंच जाना गोया यहूदियों को ख़ुदा की तरफ़ से यह बता देना था कि जिस नबी सल्ल0 की तअ़लीम ऐसे दूर दराज़ मुल्कों में दिलों के क़िलों को आसानी से फ़त्ह कर रही है, उसकी मुख़ालफ़त में अपने ईंट पत्थर के क़िलों के ऊपर भरोसा करना किस क़दर बे बुन्याद बात है।[1]

वफ़्दे सक़ीफ़

सक़ीफ़ में सबसे पहला शख़्स जो तअ़लीमे इस्लाम हासिल करने के लिये नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में आया था वह हज़रत उर्वा बिन मसऊद रज़ि0 सक़फ़ी थे, यह अपनी क़ौम के सरदार थे, और सुलह हुदैबिया में कुफ़्फ़ारे मक्का के वकील बन कर रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में आए थे, जंगे हवाज़िन व सक़ीफ़ के बाद जज़्बए तौफ़ीक़े इलाही से मदीना मुनव्वरा में हाज़िर हुए और इस्लाम क़बूल किया, हज़रत उर्वा के घर में दस बीवियां थीं, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया कि तुम उनमें से चार को रखकर बाक़ी को तलाक़ दे दो, चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया।[2]

(1) रहमतुल लिल आलमीन 1-163

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा 5-299, ज़ादुल मआद 3-498

जब हज़रत उर्वा रज़ि० इस्लाम सीख चुके तो उन्होंने आंहज़रत सल्ल० से अर्ज़ किया कि अब मुझे अपनी क़ौम में इस्लाम की मुनादी करने की इजाज़त फ़रमा दी जाए, नबी करीम सल्ल० ने फरमाया तुम्हारी क़ौम तुम्हें क़त्ल कर देगी, हज़रत उर्वा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल०! मेरी क़ौम को मुझसे इतनी मुहब्बत है जितनी किसी आशिक़ को अपने मअ़शूक़ से होती है, यह बुज़ुर्गवार अपनी क़ौम आए और वअ़ज़े इस्लाम शुरू कर दिया, एक रोज़ अपने बाला ख़ाना में नमाज़ पढ़ रहे थे, किसी शक़ी ने तीर चलाया, जिससे यह शहीद हो गए।[1]

अगर्चे हज़रत उर्वा रज़ि० जांबर न हुए, लेकिन जो आवाज़ उन्होंने क़ौम के कानों तक पहुंचाई थी वह दिलों पर असर किये बग़ैर न रही, थोड़ा ही अर्सा गुज़रा था कि क़ौम ने अपने चंद सर कर्दों को मुंतख़ब किया और नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में इसलिये भेजा कि इस्लाम की निस्बत पूरी वाक़िफ़ीयत हासिल करें।

यह वफ़्द 9 हि० में ख़िदमते नबवी सल्ल० में हाज़िर हुआ था, वफ़्द का सरदार अब्द या लैल था, जिसके समझाने को नबी करीम सल्ल० कोहे ताइफ़ पर 10 हि० नुबूव्वत में गए थे, और उसने वअ़ज़ सुनने से इंकार कर के आबादी के लड़कों और औबाशों को नबी करीम सल्ल० की तज़्हीक व तह्क़ीर के लिये मुक़र्रर कर दिया था, और

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-713

जिसके इशारे से ताइफ़ में रसूलुल्लाह सल्ल0 पर पत्थर बरसाए गए और कीचड़ फेंकी गई थी।

नबी करीम सल्ल0 ने वहां से आते हुए यह फ़रमा दिया था कि मैं इनकी बर्बादी के लिये दुआ नहीं करूंगा, क्योंकि अगर यह खुद इस्लाम न लाएंगे तो इनकी आइंदा नस्लों को खुदा ईमान अता करेगा, अब वही दुशमने इस्लाम खुद बखुद इस्लाम के लिये अपने दिल में जगह पाते, और दिली व रूही तलब से आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं।

हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ़बा रज़ि0 ने नबी करीम सल्ल0 से अ़र्ज़ किया कि यह (अह्ले सक़ीफ़) मेरी क़ौम के लोग हैं मैं इन्हें अपने पास उतार लूं और इनकी तवाज़ोअ़ करूं, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः "لَا أَمْنَعُكَ أَنْ تُكْرِمَ قَوْمَكَ" मैं मना नहीं करता कि तुम अपनी क़ौम की इज़्ज़त करो लेकिन इनको ऐसी जगह उतारो जहां कुर्आन की आवाज़ उनके कान में पड़े।

अलग़र्ज़ उनके ख़ेमे मस्जिद के सिहन में लगाए गए, जहां से यह कुर्आन भी सुनते थे और लोगों को नमाज़ पढ़ते भी देखते, इस तदबीर से उनके दिलों पर इस्लाम की सदाक़त का असर पड़ा, उन्होंने नबी करीम सल्ल0 के दस्ते मुबारक पर बैअ़ते इस्लाम की, और बैअ़त से पहले यह दरख़्वास्त की कि हम को तर्के नमाज़ की इजाज़त दी जाए, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "لَا خَيْرَ فِي دِيْنٍ لَيْسَ فِيْهِ رُكُوْعٌ"

(जिस मज़हब में नमाज़ नहीं, उसमें कोई भी खूबी नहीं) फिर उन्होंने कहा अच्छा हमें जिहाद के लिये न बुलाया जाए और न ज़कात हमसे ली जाए, आंहज़रत सल्ल0 ने यह शर्त कबूल फ़रमा ली और सहाबा रज़ि0 से फरमाया कि इस्लाम के असर से यह खुद ही दोनों काम करने लगेंगे।[1]

कनाना इब्ने अब्द या लैल ने जो उनका सरदार था, मुख़्तलिफ़ औक़ात में नबी करीम सल्ल0 से मुंदर्जा ज़ैल मसाइल पर भी गुफ़्तगू की।

1- या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! ज़िना के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं, हमारी क़ौम के लोग अक्सर वतन से दूर रहते हैं इसलिये ज़िना के बग़ैर चारा ही नहीं? नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः ज़िना तो हराम है, और अल्लाह पाक का इसके लिये यह हुक्म है:

لَا تَقْرَبُوا الزِّنٰى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّسَآءَ سَبِيْلًا

"तुम ज़िना के करीब भी न जाओ, यह तो सख़्त बेहयाई और बहुत बुरा तरीक़ है।" (बनी इस्राईल, रुकूअ़ 4)

2- या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! सूद के बारे में हुज़ूर क्या फ़रमाते हैं, यह तो बिल्कुल हमारा ही माल होता है? नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया तुम अपना अस्ल रूपया ले लो, देखो अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:

يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوا

(1) यह हिस्सा सुनन अबी दाऊद, किताबुल ख़िराज, बाब माजाअ् फ़ी ख़बरित्ताइफ़ में भी मज़कूर है।

"ऐ ईमान वालो खुदा से डरो और सूद में से जो लेना रह गया है वह भी छोड़ दो।"

(बकराः रुकूअ़ 4)

3- या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! ख़मर (शराब) के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं, यह तो हमारे ही मुल्क का अर्क़ है इसके बग़ैर तो हम रह नहीं सकते?

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः शराब को खुदा ने हराम कर दिया है, देखो अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ، فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

"ऐ ईमान वालो! शराब, जुवा, अंसाब, व अज़लाम, नापाक और गंदे हैं, शैतान के काम हैं, इनसे बचा करो ताकि फ़लाह पाओ" (माएदाः रुकूअ़ 4)

दूसरे रोज़ उसने आकर कहा ख़ैर हम आपकी बातें मान लेंगे लेकिन (रब्बह) को क्या करें? (रब्बा मुअन्नस है लफ़्ज़ रब का, जिस देवी के बुत को यह पूजा करते थे से रब्बह कहा करते थे) नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः उसे गिरा दो।

वफ़्द के लोगों ने कहा, हाए हाए अगर रब्बह को ख़बर हो गई कि आप उसे गिरा देना चाहते हैं तो वह हम लोगों को तबाह कर डालेगी।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 ने कहा अफ़सोस इब्ने

अब्द या लैल तुम इतना नहीं समझते कि वह तो सिर्फ़ पत्थर ही है, इब्ने अब्द या लैल ने खिसयाने होकर कहा उमर (रज़ि0) हम तुझसे बात करने नहीं आए, फिर रसूलुल्लाह सल्ल0 से अ़र्ज़ किया।

उसे गिराने की ज़िम्मादारी हुज़ूर (सल्ल0) खुद लें, क्योंकि हम तो उसे कभी नहीं गिराने के, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया ख़ैर मैं गिरा देने वाले को भी भेज दूंगा, उनमें से एक ने अ़र्ज़ किया कि उस शख़्स को हमारे बाद रवाना कीजियेगा, वह हमारे साथ न जाए।

अलग़र्ज़ यह लोग जितने हाज़िर हुए थे वह मुसलमान होकर वतन वापस चले गए, उन्होंने चलते वक़्त कहा कि हमारे लिये कोई इमाम मुक़र्रर कर दीजिये।

उन्ही में एक शख़्स हज़रत उस्मान बिन अबुल आ़स थे जो उम्र में सबसे छोटे थे, वह क़ौम से खुफ़िया क़ुर्आन मजीद और अहकामे शरीअ़त सीखते रहते थे, कभी रसूलुल्लाह सल्ल0 से, कभी अबू बक्र सिद्दीक़ से सीख लिया करते, आंहज़रत सल्ल0 ने उन्हीं को उनका इमाम मुक़र्रर फ़रमा दिया।

वफ़्द ने रास्ता में यह मशवरा किया कि अपना इस्लाम छिपाकर पहले क़ौम को मायूस कर देना चाहिये, जब यह वतन पहुंच गए तो क़ौम ने पूछा कहो क्या हाल हुआ?

वफ़्द ने कहा (मआ़ज़ल्लाह) हमें एक सख़्त ख़ू, दुरुश्त गो शख़्स से साबिक़ा पड़ा, जो हमें अनहोनी बातों का हुक्म

देता है, मसलन लात व उज़्ज़ा को तोड़ देना, तमाम सूदी रूपया को छोड़ देना, शराब, ज़िना को हराम समझना, कौम ने कसम खाकर कहा हम इन बातों को कभी नहीं मानने के।

वफ्द ने कहा अच्छा हथियारों को दुरुस्त करो और जंग की तैयारी करो, किलों की मरम्मत कर लो, दो दिन तक सकीफ़ इसी इरादा पर जमे रहे, तीसरे रोज़ खुद बखुद ही कहने लगेः

भला मुहम्मद (सल्ल0) के साथ हम क्योंकर लड़ सकेंगे, सारा अरब तो उनकी इताअ़त कर रहा है, फिर वफ़्द के लोगों से कहा जाओ जो कुछ वह कहते हैं क़बूल कर लो।

वफ़्द ने कहा, अब हम तुमको सही सही बताते हैं, हमने मुहम्मद सल्ल0 को तक़्वा में और वफ़ा में, रहम में और सिद्क़ में, सब ही से बढ़कर पाया, हम, तुम, सबको इस सफ़र से बड़ी बरकत हासिल हुई।

कौम ने कहा कि तुमने हमसे यह राज़ क्यों पोशीदा रखा और हमको ऐसे सख़्त ग़म व अलम में क्यों डाला? वफ़्द ने कहा मुद्दआ़ यह था कि अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों से शैतानी गुरूर निकाल दे, इसके बाद वह मुसलमान हो गए।

चंद रोज़ के बाद वहां रसूलुल्लाह सल्ल0 के भेजे हुए अशख़ास हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 की इमारत में पहुंच गए, उन्होंने ने लात के गिरा देने की कार्रवाई का

आग़ाज़ करना चाहा, सकीफ़ के सब मर्द व ज़न, बूढ़े बच्चे, इस काम को दुशवार समझे हुए थे, पर्दा नशीन औरतें भी यह तमाशा देखने निकल आई थीं, हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ्बा ने उसके तोड़ने के लिये तीर चलाया, मगर अपने ज़ोर में खुद ही गिर पड़े, यह देख कर सकीफ़ वाले पुकार उठे, खुदा ने मुग़ीरा को धुतकार दिया और रब्बह ने उसे कत्ल कर डाला, अब खुश खुश होकर कहने लगे तुम कुछ ही कोशिश करो मगर इसे नहीं गिरा सकते।

हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ्बा ने कहा सकीफ़ वालो! तुम बहुत ही बेवकूफ़ हो, यह पत्थर का टुक्ड़ा ही क्या सकता है, लोगो! खुदा की आफ़ियत कबूल करो और उसी की बंदगी करो, फिर उस घर का दरवाज़ा बंद करके मुग़ीरा ने अव्वल उस बुत को तोड़ा और फिर उसकी दीवारों पर चढ़ गए और उन्हें गिराना शुरू कर दिया, बाक़ी मुसलमान भी दीवारों पर चढ़े और उस इमारत का एक एक पत्थर गिरा के छोड़ा।

मूर्ती का पुजारी कहने लगा कि मूर्ती घर की बुन्याद उन्हें ज़रूर ग़र्क़ कर देगी, हज़रत मुग़ीरा ने यह सुना तो बुन्याद भी सारी खोद डाली और इस तरह कौम के दिलों में इस्लाम की बुन्याद मुस्तहकम हो गई।[1]

वफ़्दे अब्दुल कैस

कबीला अब्दुल कैस का वफ़्द खिदमते नबवी में हाज़िर

(1) ज़ादुल मआद 3-596 ता 599, दलाइलुन्नुबूवा लिलबैहकी 5-299 ता 304 में वफ़्दे सकीफ़ का पूरा वाकिआ तफ़सील से मौजूद है।

हुआ, नबी करीम सल्ल0 ने पूछा तुम किस क़ौम से हो? अर्ज़ किया क़ौमे रबीआ से, नबी करीम सल्ल0 उन्हें खुश आमदेद फ़रमाया, उन्होंने अ़र्ज़ किया, रसूलुल्लाह (सल्ल0)! हमारे और हुजूर (सल्ल0) के दर्मियान क़बीला मुज़र के काफ़िर आबाद हैं, हम शहरे हराम ही में हाज़िर हो सकते हैं, इसलिये साफ़ वाज़ेह तौर पर समझा दिया जाए, जिस पर हम भी अमल करते रहें और क़ौम के बाक़ी मांदा अश्ख़ास भी।

फ़रमाया: मैं चार चीज़ों पर अमल करने और चार चीज़ों से बचे रहने का हुक्म देता हूं, जिन चीज़ों के करने का हुक्म है, वह यह हैं:

(1) अकेले खुदा पर ईमान लाना, इससे मुराद यह है कि "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" की शहादत अदा करना। (2) नमाज़ (3) ज़कात (4) रमज़ान के रोज़े और माले ग़नीमत से खुम्स निकालना।

चार चीज़ें जिनसे बचने का हुक्म है, यह हैं:

(1) दुब्बा (2) हन्तुम (3) नक़ीर (4) मुज़फ़्फ़त।[1] इन बातों को याद रखो और पिछलों को भी बता दो।[2]

(1) "दुब्बा" कद्दू के छिल्के को कहते हैं जिसको सुखा लिया जाता है। "हन्तुम" सब्ज़ घड़ा "नक़ीर" दरख़्त की जड़ की लकड़ी को अंदर से खोद लिया करते थे, इस बर्तन को "नक़ीर" कहते हैं, "मुज़फ़्फ़त" तारकोल को बर्तन में लगा लिया करते थे और उन सब बर्तनों को नशा आवर चीज़ों के लिये इस्तेमाल करते थे, इसलिये आप सल्ल0 ने मना फ़रमा दिया।

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब अदाउल ख़ुम्स फ़िल ईमान, इसके अलावा नौ जगह इमाम बुख़ारी ने अपनी सहीह में इसको नक़्ल किया है, इमाम मुस्लिम रह0 ने भी सहीह मुस्लिम में यह हदीस ज़िक्र की है, किताबुल ईमान, बाबुल अम्र बिलईमान बिल्लाह।

उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हुजूर (सल्ल0) को क्या मअलूम है कि नक़ीर क्या होती है? फ़रमाया जानता हूं, खजूर के तने को खोदते हो और उसमें खजूरें डाला करते हो, उस पर पानी डालते हो, उसमें जोश पैदा होता है, जब जोश बैठ जाता है तब पिया करते हो, मुम्किन है कि तुम में से कोई (इस नशा में) अपने चचेरे भाई को भी क़त्ल कर डाले, (अजीब बात यह कि इसी वफ़्द में एक शख़्स ऐसा भी था जिसने नक़ीर के नशा में अपने चचेरे भाई को क़त्ल कर दिया था)

उन लोगों ने पूछा, या रसूलुल्लाह सल्ल0! हम कैसे बर्तन में पानी पिया करें, फ़रमाया मशकों में, जिनका मुंह बांध दिया जाता है, उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! हमारे यहां चूहे बकसरत होते हैं, इसलिये वहां चमड़े की मशकें सालिम नहीं रह सकतीं हैं, फ़रमाया ख़्वाह सालिम ही न रहें।[1]

इसी वफ़्द के साथ जारूद बिन मुअल्ला भी आया था, यह मसीहुल मज़हब था, उसने कहा या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! मैं इस वक़्त भी एक मज़हब रखता हूं, अगर हम इसे छोड़कर आपके दीन में दाख़िल हो जाएं, तो क्या आप हमारे ज़ामिन बन सकते हैं? फ़रमाया हां! मैं ज़ामिन बनता हूं, क्योंकि जिस मज़हब की मैं दावत दे रहा हूं यह उससे बेहतर है जिस पर तुम अब हो।

जारूद के साथ और भी ईसाई मुसलमान हो गए थे।[2]

(1) दलालुन्नुबुव्वा 5-366 (2) दलाइलुन्नुबूव्वा 5-328, इब्ने हिशाम 2-575

वफ़्दे बनू हनीफ़ा

बनू हनीफ़ा का वफ़्द नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, हज़रत सुमामा बिन उसाल रज़ि0 की कोशिश से उस इलाक़ा में इस्लाम की इशाअत हुई थी, यह वफ़्द मदीना आकर मुसलमान हुआ था, इसी वफ़्द के साथ मुस्लैमा कज़्ज़ाब भी था, वह मदीना आकर लोगों में कहने लगा कि अगर मुहम्मद (सल्ल0) साहब यह इक़रार करें कि उनका जानशीन मुझे बनाया जाएगा तो मैं बैअ़त करूंगा, नबी करीम सल्ल0 ने यह सुना, हुज़ूर सल्ल0 के हाथ में खजूर की एक छड़ी थी, फ़रमाया मैं तो इस छड़ी के देने की शर्त पर भी बैअ़त लेना नहीं चाहता, अगर वह बैअ़त न करेगा तो ख़ुदा उसे तबाह फ़रमाएगा, इसका अंजाम ख़ुदा तआला ने मुझे दिखा दिया है, यअ़नी मैंने ख़्वाब देखा कि मेरे हाथ में सोने के कंगन हैं, मुझे वह नागवार मअ़लूम हुए, ख़्वाब ही में वह्य से मअ़लूम हुआ कि उन्हें फूंक से उड़ा दो, मैंने फूंक मारी तो वह उड़ गए, मैं ख़्याल करता हूं कि उनसे मुराद मुस्लैमा साहबे यमामा और अनसी साहबे सुन्आ है।[1]

क़बीला तैय का वफ़्द

क़बीला बनू तैय का वफ़्द जिसका सरदार ज़ैद अलख़ैल था, नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "अरब के जिस शख़्स की

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब वफ़्द बनी हनीफ़ा

तअ़रीफ़ मेरे सामने हुई, वह देखने के वक़्त उससे कम ही निकला, एक ज़ैद अल ख़ैल इससे मुस्तस्ना है, फिर उसका नाम ज़ैद अलख़ैर रख दिया, यह सब लोग ज़रूरी गुफ़्तगू के बाद मुसलमान हो गए थे।[1]

क़बीला अशअ़रीया (जो अह्ले यमन थे) का वफ़्द हाज़िर हुआ, उनके आने पर नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया था:

"अह्ले यमन आए, जिनके दिल निहायत नर्म और ज़ईफ़ हैं, ईमान यमनीयों का है और हिक्मत यमनीयों की, मस्कनत बकरियों वालों में, फ़ख़्र और ग़ुरूर ऊंट वालों में है, जो मश्रिक़ की तरफ़ रहते हैं।"[2]

जब यह लोग मदीना में दाख़िल हुए तो यह शेअ़र पढ़ रहे थे:

غداً نلاقي الأحبة　　　　محمداً وحزبه

"कल हम अपने दोस्तों, यअ़नी मुहम्मद सल्ल० और उनके साथ वालों से मिलेंगे।"[3]

वफ़्दे अज़्द

यह वफ़्द सात शख़्सों का था, नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो नबी करीम सल्ल० ने उनकी वज़्अ़ क़त्अ़ को पसंदीदगी की निगाह से देखा, पूछा तुम कौन हो? उन्होंने कहा हम मोमिन हैं, नबी करीम सल्ल० ने

(1) इब्ने हिशाम 2-577

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़ुदूमुल अशअ़रीन व अहलुल यमन

(3) मुस्नद अहमद 3-105, 155 बिसनदिन सहीहिन

फ़रमाया हर एक क़ौल की हक़ीक़त होती है, बताओ कि तुम्हारे क़ौल और ईमान की हक़ीक़त क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया हम पंद्रह ख़स्लतें रखते हैं, पांच वह हैं जिन पर एतिक़ाद रखने का ज़िक्र आप के क़ासिदों ने किया, और पांच वह हैं जिन पर अमल करने का हुक्म आपने फ़रमाया, पांच वह हैं जिन पर हम पहले से पाबंद हैं।

पांच बातें जिन पर हुज़ूर सल्ल० के मुबल्लिग़ीन ने ईमान लाने का हुक्म दिया, यह हैं: ईमान ख़ुदा पर, फ़रिश्तों पर, अल्लाह की किताबों पर, अल्लाह के रसूलों पर, मरने के बाद जी उठने पर।

पांच बातें अमल करने की हमको यह बताई गई हैं:

“لا الٰہ الا اللہ” कहना, पांच वक़्त की नमाज़ों का क़ाइम करना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना, बैतुल हराम का हज करना जिसे राह की इस्तिताअ़त हो।

पांच बातें जो पहले से मअ़लूम हैं, यह हैं:

आसूदगी के वक़्त शुक्र करना, मुसीबत के वक़्त सब्र करना, क़ज़ाए इलाही पर रज़ामंद होना, इम्तिहान के वक़्त साबित क़दम रहना, दुश्मनों को भी गाली गलोज न करना।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया जिन्होंने इन बातों की तअ़लीम दी वह हकीम व आलिम थे और उनकी दानिशमंदी से मअ़लूम होता है गोया अंबिया थे, अच्छा पांच चीज़ें और बता देता हूं ताकि पूरी बीस ख़स्लतें हो जाएं:

(1) वह चीज़ें जमा न करो जिसे खाना न हो।

(2) वह मकान न बनाओ जिसमें बसना न हो।

(3) ऐसी बातों में मुकाबला न करो जिन्हें कल को छोड़ देना हो।

(4) खुदा का तक्वा रखो जिसकी तरफ लौट कर जाना और जिसके हुजूर में पेश होना है।

(5) उन चीज़ों की रग़बत रखो जो आख़िरत में तुम्हारे काम आएंगी जहां तुम हमेशा रहोगे।

उन लोगों ने नबी करीम सल्ल0 की वसीयत पर पूरा पूरा अमल किया।[1]

अरब का जितना शुमाली हिस्सा सलतनते कुस्तुन्तुनिया के कब्ज़ा में था, उस सारे इलाक़ा का गवर्नर फ़रवह बिन अ़म्र था, उसका दारुल हुकूमत मआन था, फलस्तीन का मुत्तसिला इलाक़ा भी उसी की हुकूमत में था।

नबी करीम सल्ल0 ने उसे नामए मुबारक (दावते इस्लाम का) भेजा था, फ़रवह रज़ि0 ने इस्लाम क़बूल किया और आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में एक क़ासिद रवाना किया और एक सफ़ेद क़ीमती ख़च्चर हदया में भेजा।

जब बादशाहे कुस्तुन्तुनिया को उनके मुसलमान हो जाने की इत्तिलाअ़ मिली तो उन्हें हुकूमत से वापस बुला लिया, पहले इस्लाम से फिर जाने की तरग़ीब देता रहा, जब हज़रत फ़रवह रज़ि0 ने इंकार किया तो उन्हें कैद कर दिया, आख़िर यह राए हुई कि उन्हें फांसी पर लटका दिया जाए, शहरे फ़लस्तीन में अफ़राअ़ नामी तालाब पर उन्हें फांसी दे दी गई।

(1) ज़ादुल मआद 3-672, 673, अल इसाबा 3-151

जान देने से पेशतर यह शेअ़्र पढ़ाः

بَلِّغ سَرَاةَ المسلمين بانني ‌ ‌ ‌ سِلمٌ لربى اعظمي ومقامي[1]

वफ़्दे हम्दान

यह क़बीला यमन में आबाद था, उनमें इशाअते इस्लाम के लिये ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 को भेजा गया था, वह वहां देर तक रहे, इस्लाम न फैला, नबी करीम सल्ल0 ने अली मुर्तज़ा रज़ि0 को उस क़बीला में इशाअते इस्लाम के लिये मामूर फ़रमाया, उनके फ़ैज़ान से तमाम क़बीला एक दिन में मुसलमान हो गया।

सय्यदना अली का ख़त नबी करीम सल्ल0 ने सुना तो सज्दए शुक्राना अदा किया और ज़बाने मुबारक से फ़रमाया "اَلسَّلَامُ عَلٰى هَمْدَانَ" (हम्दान वालों को सलमाती मिले)।[2] यह वफ़्द उन्ही लोगों का था जो हज़रत अली रज़ि0 के हाथ पर ईमान ला चुके थे और दीदारे नबवी सल्ल0 से मुशर्रफ़ होने आए थे।

तारिक़ बिन अब्दुल्लाह का बयान है कि मैं मक्का में सूक़ुल मजाज़ में खड़ा था इतने में एक शख़्स आया जो पुकार पुकार कर कहता थाः

"يَا اَيُّهَا النَّاسُ قُوْلُوْا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تُفْلِحُوْا"

"लोगो! ला इलाहा इल्लल्लाह कहो फ़लाह पाओगे"

एक दूसरा शख़्स उसके पीछे पीछे आया जो कंकरियां उसे मारता था और कहता थाः

(1) ज़ादुल मआद 3-646, इब्ने हिशाम 2-592 (2) सुनन बैहक़ी 2-369, सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब बअ़्सु अली रज़ि0 व ख़ालिद रज़ि0 इलल यमन

"يَا أَيُّهَا النَّاسُ لَا تُصَدِّقُوْهُ فَإِنَّهُ كَذَّابٌ"

"लोगो! इसे सच्चा न समझो यह तो झूटा शख़्स है"

मैंने दरयाफ़्त किया यह कौन हैं?

लोगों ने कहा कि यह तो बनी हाशिम का एक फ़र्द है, जो अपने आपको रसूलुल्लाह समझता है और यह दूसरा इसका चचा अब्दुल उज़्ज़ा है (अबू लहब का नाम अब्दुल उज़्ज़ा था) तारिक़ कहते हैं कि इसके बाद बरसों गुज़र गए, नबी सल्ल० मदीना जा रहे थे, उस वक़्त हमारी क़ौम के चंद लोग जिनमें मैं भी था, मदीना गए, ताकि वहां की खजूरें मोल लाएं, जब मदीना की आबादी के मुत्तसिल पहुंच गए तो हम इसलिये ठहर गए कि सफ़र के कपड़े उतार कर दूसरे कपड़े बदल कर शहर में दाख़िल होंगे।

इतने में एक शख़्स आया जिस पर दो पुरानी चादरें थीं, उसने सलाम के बाद पूछा कि किधर से आए, किधर जाओगे? हमने कहा रब्ज़ह से आए हैं और यहीं तक क़स्द है, पूछा मुद्दआ क्या है?

हमने कहा कि खजूरें ख़रीदनी हैं, हमारे पास एक सुर्ख़ ऊंट था जिस पर महार थी।

उसने कहा यह ऊंट बेचते हो? हमने कहा हां! इस क़दर खजूरों के बदले दे देंगे, उस शख़्स ने यह सुनकर क़ीमत घटाने की बाबत कुछ भी नहीं कहा और महारे शुतुर संभाल कर शहर को चला गया, जब शहर के अंदर जा पहुंचा तो अब आपस में लोग कहने लगे कि यह हमने क्या

किया ऊंट ऐसे शख़्स को दे दिया जिससे वाक़िफ़ तक नहीं और क़ीमत वसूल करने का कोई इंतिज़ाम ही न किया।

हमारे साथ एक हौदज नशीन (सरदारे क़ौम की) औरत भी थी, वह बोली कि मैंने उस शख़्स का चेहरा देखा था कि चौदहवीं रात के चांद की तरह चमक रहा था, अगर ऐसा आदमी क़ीमत न दे तो मैं अदा कर दूंगी।

हम यही बातें कर रहे थे कि इतने में एक शख़्स आया, कहा मुझे रसूलुल्लाह सल्ल0 ने भेजा है और (क़ीमत शुतुर की) खजूरें भेजी हैं (तुम्हारी ज़ियाफ़त की खजूरें अलग हैं) खाओ पियो और क़ीमत की खजूरों को नाप कर पूरा कर लो, जब हम खा पी कर सैर हुए तो शहर में दाख़िल हुए, देखा क वही शख़्स मस्जिद के मिंबर पर खड़े वअ़ूज़ कर रहा है, हमने मुंदर्जा ज़ैल अलफ़ाज़ आपके सुनेः

"تَصَدَّقُوْا فَإِنَّ الصَّدَقَةَ خَيْرٌ لَّكُمْ، اَلْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِّنَ الْيَدِ السُّفْلٰى أُمَّكَ وَأَبَاكَ وَأُخْتَكَ وَأَخَاكَ وَأَدْنَاكَ أَدْنَاكَ"

"लोगो! ख़ैरात दिया करो, ख़ैरात का दिया तुम्हारे लिये बेहतर है, ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है, मां को, बाप को, बहन को, भाई, को, फिर क़रीबी को और दूसरे क़रीबी को दो।"[1]

वफ़्दे नजीब

क़बीला नजीब के तेरह शख़्स हाज़िर हुए थे, यह अपनी

(1) ज़ादुल मआद 3-654, 647, इमाम हाकिम ने मुस्तदरक में यह रिवायत नक़्ल की है, इमाम ज़हबी ने इसकी तस्हीह की है

कौम के माल व मवेशी की ज़कात लेकर आए थे, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया कि इसे वापस ले जाओ और अपने क़बीले के फ़ुक़रा पर तक़्सीम कर दो उन्होंने अर्ज़ की:

या रसूलुल्लाह सल्ल0 फ़ुक़रा को जो देकर बच रहा है हम वही लेकर आए हैं, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्ल0! इनसे बेहतर कोई वफ़्द अब तक नहीं आया।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया "हिदायत ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल के हाथ में है, ख़ुदा जिसकी बहबूद चाहता है उसके सीना को ईमान के लिये खोल देता है"

उन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्ल0 से चंद बातों का सवाल किया, आंहज़रत सल्ल0 ने उनको जवाबात लिखवा दिये थे।

यह लोग कुर्आन और सुनने हुदा के सीखने में बहुत ही राग़िब थे, इसलिये नबी करीम सल्ल0 ने हज़रत बिलाल रज़ि0 को उनकी तवाज़ोअ् के लिये ख़ास तौर पर मुअय्यन कर दिया था।

यह लोग वापसी की इजाज़त के लिये बुहत ही इज़्तिराब ज़ाहिर करते थे, सहाबा ने पूछा कि तुम यहां से जाने के लिये क्यों बेचैन हो? कहा दिल में यह जोश है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 के दीदार से जो अनवार हमने हासिल किये, नबी सल्ल0 की गुफ़्तार से जो फ़ुयूज़ हमने पाए और जो बरकात और फ़वाइद हमको यहां आकर हासिल हुए,

उन सबकी इत्तिलाअ् अपनी क़ौम को जल्द पहुंचाएं।

आंहज़रत सल्ल0 ने उनको अतीयात से सरफ़राज़ किया और रुख़्सत फ़रमाया, पूछा! कोई शख़्स तुम में से बाक़ी भी रहा है? उन्होंने कहा हां! एक नौजवान लड़का है, जिसे अस्बाब के पास हमने छोड़ दिया था, फ़रमाया उसे भी भेज देना, वह हाज़िर हुआ तो उसने कहा, या रसूलुल्लाह सल्ल0! हुजूर (सल्ल0) ने मेरी क़ौम के लोगों पर लुत्फ़ व रहमत की है, मुझे भी कुछ मरहमत फ़रमाइये।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः तुम क्या चाहते हो?

कहा, या रसूलुल्लाह सल्ल0! मेरा मुद्दआ अपनी क़ौम के मुद्दआ से अलग है, अगर्चे मैं जानता हूं कि वह यहां इस्लाम की मुहब्बत में आए हैं और सदक़ात का माल भी लाए थे, आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया तुम क्या चाहते हो?

कहा! मैं अपने घर से सिर्फ इसलिये आया था कि हुजूर मेरे लिये दुआ फ़रमाएं कि ख़ुदा मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम करे और मेरे दिल को ग़नी बना दे।

नबी करीम सल्ल0 ने उसके लिये यही दुआ फ़रमा दी, 10 हि0 को जब नबी करीम सल्ल0 ने हज किया, तो उस क़बीला के लोग फिर हुजूर सल्ल0 से मिले, नबी करीम सल्ल0 ने पूछा "उस नौजवान की क्या ख़बर है? लोगों ने कहा या रसूलुल्लाह! उस जैसा शख़्स कभी देखने ही में नहीं आया और उस जैसा क़ानेअ् कोई सुना ही नहीं गया, अगर दुन्या की दौलत उसके सामने तक़्सीम हो रही हो तो वह

नज़र उठाकर भी नहीं देखता।[1]

वफ़्दे बनी सअ़द हज़ीम

यह वफ़्द जिस वक़्त मस्जिदे नबवी में पहुंचा तो नबी करीम सल्ल0 एक जनाज़ा की नमाज़ पढ़ा रहे थे।

उन्होंने आपस में तैय किया कि रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर होने से पेशतर हमको कोई भी काम नहीं करना चाहिये, इसलिये एक तरफ़ अलग होकर बैठे रहे, जब आंहज़रत सल्ल0 उधर से फ़ारिग़ हुए उनको बुलाया, पूछा "क्या तुम मुसलमान हो"? उन्होंने कहा हां! फ़रमाया "तुम अपने भाई के लिये दुआ में क्यों शामिल न हुए"?

अ़र्ज़ किया हम समझते थे कि बैअ़ते रसूल सल्ल0 से पहले कोई काम भी करने के मजाज़ नहीं, फ़रमाया "जिस वक़्त तुमने इस्लाम क़बूल किया उसी वक़्त से तुम मुसलमान हो गए।"

इतने में वह मुसलमान भी आ पहुंचा जिसे यह लोग अपनी सवारी के पास बिठा आए थे, वफ़्द ने कहा, या रसूलुल्लाह सल्ल0! यह हमसे छोटा है और इसी लिये हमारा ख़ादिम है, फ़रमाया "أَصْغَرُ الْقَوْمِ خَادِمُهُمْ" (छोटा अपने बुज़ुर्गों का ख़ादिम होता है) ख़ुदा उसे बरकत दे, इस दुआ की यह बरकत हुई कि वही क़ौम का इमाम और क़ुर्आन मजीद का क़ौम में सबसे ज़्यादा जानने वाला हो गया।

---

(1) ज़ादुल मआ़द 3-650, 651, इब्ने सअ़द 1-323

जब यह वफ़्द लौट कर वतन गया तो तमाम क़बीला में इस्लाम फैल गया।[1]

वफ़्दे बनी असद

यह दस शख़्स थे जिनमें वाबसा बिन मुअ़ब्बद और ख़ुवैलद थे, रसूलुल्लाह सल्ल0 अस्हाब के साथ अंदर मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे, इनमें से एक ने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल0! हम शहादत देते हैं कि ख़ुदा अकेला है, ला शरीक है और आप सल्ल0 उसके बंदे और रसूल हैं, देखिये या रसूलुल्लाह सल्ल0 हम अज़ ख़ुद हाज़िर हो गए हैं और आपने तो हमारे पास कोई आदमी भी न भेजा था, इस पर आयत का नुज़ूल हुआः

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدَاكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صَادِقِيْنَ.

"यह लोग आप पर एहसान जताते हैं कि इस्लाम ले आए हैं, कह दीजिये कि अपने इस्लाम का मुझ पर एहसान न जताओ, बल्कि ख़ुदा तुम पर इस बात का एहसान जताता है कि उसने तुमको इस्लाम की हिदायत की, अगर तुम इस दावा में सच्चे हो।" (हुज्रातः रुकूअ़ 2)

फिर उन लोगों ने सवाल किया कि जानवरों की बोलियों और शगूनों वग़ैरा से फ़ाल लेना कैसा है? रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इन सबसे उन्हें मना फ़रमाया,

(1) ज़ादुल मआ़द 3-652, इब्ने सअ़द 1-329

उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! एक बात रह गई है, इसकी बाबत क्या इर्शाद है, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया वह क्या है? उन्होंने कहा ख़त खींचना? तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि इसे एक नबी ने लोगों को सिखाया था जिस किसी को सिहत से वह इल्म मिल गया बेशक वह इल्म है।[1]

वफ़्दे बह्‌राअ्

यह लोग मदीना में आए, हज़रत मिक़्दाद रज़ि0 के घर के सामने आकर ऊंट बिठाए, हज़रत मिक़्दाद रज़ि0 ने घर वालों से कहा कि इनके लिये कुछ खाना तैयार करो और खुद उनके पास गए और खुश आमदेद कहकर अपने घर ले आए, उनके सामने हैस रखा गया, हैस एक खाना है जो खजूर और सत्तू मिलाकर घी में तैयार किया जाता है, घी के साथ कभी चर्बी भी डाल दिया करते हैं।

उसी खाने में से कुछ नबी करीम सल्ल0 के लिये भी हज़रत मिक़्दाद रज़ि0 ने भेजा, नबी करीम सल्ल0 ने कुछ खाकर वह बर्तन वापस फ़रमा दिया, अब हज़रत मिक़्दाद रज़ि0 दोनों वक़्त ही प्याला उन मेहमानों के सामने रख देते वह मज़ा ले लेकर खाया करते, खूब खाया करते, मगर खाना कम न हुआ करता था, उन लोगों को यह देखकर हैरत हुई, आख़िर एक रोज़ अपने मेज़बान से पूछाः

(हज़रत) मिक़्दार (रज़ि0)! हमने तो सुना था कि मदीना वालों की खूराक सत्तू, जौ वग़ैरा हैं, तुम तो हर वक़्त वह

(1) ज़ादुल मआ़द 3-654, इब्ने सअ़द 1-292

खाना खिलाते हो जो हमारे यहां बहुत उम्दा समझा जाता है और जो हर रोज़ हमको भी मुयस्सर नहीं आ सकता और फिर ऐसा लज़ीज़ कि हमने कभी ऐसा खाया भी नहीं।

हज़रत मिक़्दाद रज़ि० ने कहा साहिबो! यह सब कुछ आंहज़रत सल्ल० की बरकत है, क्योंकि आंहज़रत सल्ल० की अंगुश्तहाए मुबारक लग चुकी हैं।

यह सुनते ही सबने बइत्तिफ़ाक़ कहा और अपना ईमान ताज़ा किया कि "बेशक वह अल्लाह के रसूल सल्ल० हैं, यह लोग मदीना में कुछ अर्सा ठहरे, क़ुर्आन और अहकाम सीखे और वापस चले गए।[1]

वफ़्दे तैलान

यह दस शख़्स थे, जो बमाहे शअ़बान 10 हि० में ख़िदमते नबवी सल्ल० में हाज़िर हुए थे, उन्होंने आकर अ़र्ज़ किया कि हम अपनी क़ौम के पस्मांदों की जानिब से वकील होकर आए है, ख़ुदा और रसूल पर हमारा ईमान है, हम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में लम्बा सफ़र तैय करके आये हैं और इक़रार करते हैं कि ख़ुदा और रसूल का हम पर एहसान है, हम यहां महज़ ज़ियारत के लिये हाज़िर हुए हैं।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "مَنْ زَارَنِى بِالْمَدِينَةِ كَانَ فِى جِوَارِى يَوْمَ الْقِيَامَةِ" (जिसने मदीना में आकर मेरी ज़ियारत की वह क़यामत के दिन मेरा हमसाया होगा) फिर रसूलुल्लाह सल्ल० ने दरयाफ़्त फ़रमायाः अ़म्म अनस का

(1) ज़ादुल मआद 3-655, 656, इब्ने सअ़द 1-331

क्या हुआ? (यह एक बुत का नाम है जो उस कौम का मअबूद था) वफ़्द ने अर्ज़ किया, हज़ार शुक्र है कि अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल0 की तअलीम को हमारे लिये उसका बदल बना दिया है, बअूज़ बअूज़ बूढ़े और बूढ़ी औरतें रह गई हैं जो उसकी पूजा किया जाती हैं।

अब इंशा अल्लाह हम उसे जाकर गिरा देंगे, हम मुद्दतों धोके और फ़ित्ना में रहे, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया किसी दिन का वाक़िआ तो सुनाओ, वफ़्द ने अ़र्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्ल0! एक दफ़ा हमने सौ नर गाव जमा किये और सबके सब एक ही दिन अ़म्म अनस के लिये कुर्बान किये गए और दरिंदों के लिये छोड़ दिये गये, हालांकि हमको गोश्त और जानवरों की बहुत ज़रूरत थी, उन्होंने यह भी अ़र्ज़ किया कि चौपायों और ज़राअ़त में से अ़म्म अनस का हिस्सा बराबर निकाला जाता था, जब कोई ज़राअ़त करता तो उसका वसती हिस्सा अ़म्म अनस के लिये मुकर्रर करता और एक किनारे का ख़ुदा के नाम मुकर्रर कर देता, अगर खेती को हवा मार जाती तो ख़ुदा का हिस्सा तो अ़म्म अनस के नाम कर देते, मगर अ़म्म अनस का हिस्सा ख़ुदा के नाम पर न करते।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़राइज़े दीन सिखाए और ख़ुसूसियत से इन बातों की नसीहत की:

(1) अहद पूरा करना, (2) अमानत को अदा करना, (3) हमसाया लोगों से अच्छा बरताव करना, (4) किसी एक

शख़्स पर भी ज़ुल्म न करना, यह भी फ़रमाया कि ज़ुल्म क़्यामत के दिन तारीकी होगा।[1]

वफ़्दे मुहारिब

यह दस शख़्स थे, जो क़ौम के वकील होकर 10 हि0 में आए थे, हज़रत बिलाल रज़ि0 उनकी मेहमानी के लिये मामूर थे, सुब्ह व शाम का खाना वही लाया करते थे, एक रोज़ ज़ुह्र से अस्र तक पूरा वक़्त नबी करीम सल्ल0 ने उन्हीं को दिया।

उनमें से एक शख़्स को नबी करीम सल्ल0 ने देखना शुरू किया, फिर फरमाया कि मैंने तुमको पहले भी देखा है।

यह शख़्स बोला, खुदा की क़सम हां हुज़ूर (सल्ल0) ने मुझे देखा था और मुझसे बात भी की थी और मैंने बदतरीन कलाम से हुज़ूर (सल्ल0) को जवाब दिया और बहुत बुरी तरह हुज़ूर (सल्ल0) के कलाम को रद्द किया था, यह बाज़ारे उकाज़ का ज़िक्र है जहां हुज़ूर (सल्ल0) लोगों को समझाते फिरते थे।

नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया "हां ठीक है" उस शख़्स ने कहा या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! उस रोज़ मेरे दोस्तों में मुझसे बढ़कर कोई भी हुज़ूर (सल्ल0) की मुख़ालफ़त करने वाला और इस्लाम से दूर रहने वाला न था, वह सब तो अपने आबाई मज़हब ही पर मर गए, खुदा का शुक्र है कि उसने मुझे आज तक बाक़ी रखा और हुज़ूर (सल्ल0) पर ईमान लाना मुझे नसीब हुआ।

(1) ज़ादुल मआद 3-662, इब्ने सअद 1-324

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया: सबके दिल खुदाए अज़्ज़ व जल्ल के हाथ में हैं, उस शख़्स ने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल0 मेरी पहली हालत के लिये मुआफ़ी की दुआ फ़रमाइये।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया: "इस्लाम उन सब बातों को मिटा देता है जो कुफ़्र में हुई हों।"[1]

वफ़्दे बनी अबस

यह वफ़्द इंतिक़ाल मुबारक से चार माह पेशतर आया था, यह इलाक़ा नजरान के बाशिंदे थे, यह लोग मुसलमान होकर आए थे, इन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्ल0 हमने मुनादियाने इस्लाम से सुना है कि हुज़ूर सल्ल0 यह इर्शाद फ़रमाते हैं, "لَا إِسْلَامَ لِمَنْ لَا هِجْرَةَ لَهُ" हमारे पास ज़र व माल भी है और मवेशी भी जिन पर हमारी गुज़रान है, पस अगर हिजरत के बग़ैर हमारा इस्लाम ही ठीक नहीं तो माल व मताअ़ क्या हमारे काम आएंगे और मवेशी हमें क्या फ़ाएदा देंगे? बेहतर है कि हम सब कुछ फ़रोख़्त करके सब ख़िदमते आली में हाज़िर हो जाएं।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया, "إِتَّقُوا اللهَ حَيْثُ كُنْتُمْ فَلَنْ يَلِتَكُمْ مِنْ اعمالِكم شَيْئًا" (तुम जहां आबाद हो वहीं रहकर खुदा तरसी को अपना शेवा बनाए रखो तुम्हारे अअ़्माल में ज़रा भी कमी नहीं आएगी।)[2]

(1) ज़ादुल मआ़द 3-663, 664, इब्ने सअ़्द 1-299

(2) ज़ादुल मआ़द 3-670, इब्ने सअ़्द 1-295

वफ़्दे ग़ामद

यह वफ़्द 10 हि0 में आया था, इसमें दस आदमी थे, यह मदीना से बाहर आकर उतरे, एक लड़के को बिठा कर नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए, नबी करीम सल्ल0 ने पूछा कि तुम अस्बाब के पास किसे छोड़ आए हो? लोगों ने कहा एक लड़के को, फ़रमाया तुम्हारे बाद वह सो गया, एक शख़्स आया और घड़ी चुरा कर ले गया, चोर के पीछे पीछे भागा, उसे जा पकड़ा, सब माल सहीह सालिम मिल गया, यह लोग आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत से जब वापस पहुंचे तो लड़के से मअ़लूम हुआ कि ठीक उसी तरह उसके साथ माजिरा हुआ था, यह लोग उसी वक़्त मुसलमान हो गए, नबी करीम सल्ल0 ने उबैय बिन कअ़ब रज़ि0 को मुकर्रर फ़रमा दिया कि उन्हें क़ुर्आन याद कराएँ और शराएअ़े इस्लाम सिखाएं, जब वह वापस जाने लगे तो उन्हें शराएअ़े इस्लाम एक काग़ज़ पर लिखवा कर दे दिये गए।[1]

वफ़्दे बनी फ़ुज़ारा

जब रसूलुल्लाह सल्ल0 तबूक से वापस आए, तो बनी फ़ुज़ारा का एक वफ़्द जिसमें पंद्रह आदमी शामिल थे, ख़िदमते मुबारक में हाज़िर हुआ, उनको इस्लाम का इक़रार था, उनकी सवारी लाग़र कमज़ोर ऊंट थे, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने पूछा कि तुम्हारी बस्तियों का क्या हाल है?

उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0! बस्तियों में

(1) ज़ादुल मआद 3-671, इब्ने सअ़द 1-345

क़हत है, मवाशी मर गए, बाग़ खुश्क हो गए, बाल बच्चे भूके मर रहे हैं, आप खुदा से दुआ करें कि हमारी फ़रयाद सुने, आप हमारी सिफ़ारिश खुदा से करें, खुदा हमारी सिफ़ारिश आप से करे।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला इन बातों से पाक है, ख़राबी हो तेरे लिये, मैं तो खुदा के पास शफ़ाअ़त करूंगा, लेकिन खुदा किसके पास शफ़ाअत करे? वह मअ़बूद है, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वह सबसे बुज़ुर्ग तर है, आसमानों और ज़मीन पर उसी का हुक्म है।

आंहज़रत सल्ल0 ने उनकी कौम में बारिश के लिये दुआ फ़रमाई, जो अलफ़ाज़ महफ़ूज़ हैं, वह यह हैं:

”اَللّٰھُمَّ اسْقِ عِبَادَکَ وَبَھَائِمَکَ، وَانْشُرْ رَحْمَتَکَ، وَاَحْیِ بَلَدَکَ الْمَیِّتَ، اَللّٰھُمَّ اسْقِنَا غَیْثًا مُغِیْثًا مَرِیْئًا مَرِیْعًا طَبَقًا وَاسِعًا، عَاجِلًا غَیْرَ اٰجِلٍ، نَافِعًا غَیْرَ ضَارٍّ، اَللّٰھُمَّ اسْقِنَا رَحْمَةً لَا عَذَابٍ وَلَا ھَدْمٍ وَلَا غَرْقٍ وَلَا مَحْقٍ، اَللّٰھُمَّ اسْقِنَا الْغَیْثَ وَانْصُرْنَا عَلَی الْاَعْدَآءِ.“[1]

“ऐ खुदा अपने बंदों और जानवरों को सैराब कर, अपनी रहमत को फैला दे, और अपनी मुर्दा बस्तियों को ज़िंदा कर दे, इलाही हम फ़रयाद रस हैं, ऐसी बाशिर के जो राहत रसां, आराम बख़्श हो, जल्द आए, देर न लगाए, नफ़ा पहुंचाए, ज़रर

(1) ज़ादुल मआद 3-653, 654, इब्ने सअ़द 1-297 दुआ के अलफ़ाज़ सुनन अबी दाऊद, मुस्तदरक हाकिम और सुनन बैहक़ी में मौजूद है।

न करे, सैराब कर दे, इलाही हमको रहमत से सैराब कर दे, न कि अज़ाब व हद्म व ग़र्क़ व महक़ से भर दे, इलाही बारिशे बारां से हमें सैराब कर दे, और दुश्मनों पर हमको नुस्रत अता कर।"

वफ़्दे सुलामान

यह सत्तरह शख़्स थे, आंहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम लाए थे, इन्ही में हबीब बिन अम्र था, इन्होंने सवाल किया था कि सब अअ्माल से अफ़ज़ल क्या चीज़ है? रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "वक़्त पर नमाज़ पढ़ना" उन लोगों ने अर्ज़ किया कि हमारे यहां बारिश नहीं हुई, दुआ फ़रमाइये, रसूलुल्लाह सल्ल० ने ज़बान से फ़रमाया "اَللّٰهُمَّ اسْقِهِمُ الْغَيْثَ فِىْ دَارِهِمْ"

हबीब ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल०! इन मुबारक हाथों को उठाकर दुआ फ़रमाइये, नबी करीम सल्ल० मुस्कुराए और हाथ उठाकर दुआ कर दी।

जब वफ़्द अपने वतन लौटकर गया तो मअ्लूम हुआ कि ठीक उसी रोज़ बारिश हुई थी, जिस दिन नबी करीम सल्ल० ने दुआ फ़रमाई थी।[1]

वफ़्दे नजरान[2]

इन जुम्ला रिवायात पर जो वफ़्दे नजरान के उन्वान के तहत दवावीने अहादीस में पाई जाती हैं, ग़ौर करने से

(1) रहमतुल लिल आलमीन 1-183 बहवाला ज़ादुल मआद

(2) मुंदरजा ज़ैल पूरा वाक़िआ ज़ादुल मआद, दलाइलुन्नुबूव्वा में मौजूद है।

मअलूम होता है कि ईसाइयाने नजरान के मुअ़्तमद दो दफ़ा नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे, इसलिये उसी तरतीब से उनका ज़िक्र किया जाता है।

अबू अब्दुल्लाह हाकिम की रिवायत में है कि नबी करीम सल्ल0 ने अह्ले नजरान को दावते इस्लाम का ख़त तहरीर फ़रमाया, जब उस्कुफ़ ने उस ख़त को पढ़ा तो उसके बदन पर लर्ज़ा पड़ गया और वह कांप उठा, उसने फ़ौरन शुरहबील बिन वदाआ़ को बुलाया, यह कबीला हमदान का शख़्स था, कोई बड़ा काम बग़ैर उसकी राए के हाकिम या मुशीर या पादरी तैय नहीं करते थे।

उस्कुफ़ ने उसे ख़त दिया और उसने पढ़ लिया तो उस्कुफ़ बोला, अबू मरयम! फ़रमाइये! आपकी क्या राए है?

शुरहबील ने कहा "साहब यह तो आपको मअ़लूम ही है कि खुदा ने इब्राहीम (अलै0) से यह वादा कर रखा है कि इस्माईल (अलै0) की नस्ल में नुबूव्वत भी होगी, मुम्किन है यह वही शख़्स हों, लेकिन नुबूव्वत के मुतअ़ल्लिक़ क्या राए हो सकती है, कोई दुन्यवी बात होती तो मैं उस पर ग़ौर कर सकता था और अपनी राए अर्ज़ कर सकता था।"

उस्कुफ़ ने कहाः "अच्छा बैठ जाइये।"

उस्कुफ़ ने फिर एक दूसरे शख़्स को जिसका नाम अब्दुल्लाह बिन शुरहबील था और क़ौमे हुमैर से था, बुलाया, और नामए नबवी सल्ल0 दिखा कर उसकी राए दरयाफ़्त की उसने शुरहबील का सा जवाब दिया।

उस्कुफ़ ने फिर तीसरे शख़्स जब्बार बिन कैस को बुलाया, यह बनू हारिस बिन कअ़ब में से था, नामा दिखलाया और राए दरयाफ़्त की, उसने भी उन दानों का सा जवाब दिया।

जब उस्कुफ़ ने देखा कि इनमें से कोई भी जवाब नहीं देता तो उसने हुक्म दिया कि घंटे बजाए जाएं और टाट के पर्दे गिर्जे पर लटकाए जाएं, उनका दस्तूर था कि कोई मुहिम्मे अज़ीम दरपेश होती तो लोगों के बुलाने का तरीक़ दिन के लिये यह था कि घंटे बजाते और टाट के पर्दे गिर्जे पर लटका देते, और रात के लिये यह था कि घंटे बजाते और पहाड़ी पर आग रौशन कर देते, इस गिर्जे के मुतअ़ल्लिक़ तिहत्तर गांव थे, जिनमें से एक लाख से ज़्यादा जंगजू मर्दों की आबादी थी, वादी के बालाई और नशेबी हिस्सा का तूल एक अस्प सवार के एक दिन की राह था, जब कुल इलाक़ा के यह लोग (सबके सब ईसाई थे) जमा हो गए, तो उस्कुफ़ ने वह नामए मुबारक सबको सुनाया और राए दरयाफ़्त की, मशवरा के बाद क़रारदाद यह हुई, कि शुरहबील और अब्दुल्लाह और जब्बार को नबी (सल्ल0) की ख़िदमत में रवाना किया जाए और वहां के सब हालात मअ़लूम करके मुफ़स्सल बताएं।

यह लोग मदीना पहुंचे और चंद रोज़ नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर रहे, इन्होंने नबी करीम सल्ल0 से हज़रत ईसा की शख़्सियत के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू की, इस

गुफ़्तगू पर इन आयात का नुज़ूल हुआः

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِندَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِن تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُن فَيَكُونُ، الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ الْمُمْتَرِينَ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنفُسَنَا وَأَنفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَل لَّعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ.

"ईसा (अलै0) की मिसाल ख़ुदा के नज़दीक आदम (अलै0) की सी है, उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया (इंसान ज़िंदा) बन जा, वह ज़िंदा हो गया, सच्ची बात आपके परवरदिगार की जानिब से यही है, अब तुम इसी रस्सी को लम्बा खींचने वालों में न हो और जो कोई आपसे इस इल्म के बाद झगड़ा करे, उससे कह दीजिये कि हम अपनी औलाद को बुलाते हैं तुम अपनी औलाद को बुलाओ, हमारी औरतें और तुम्हारी औरतें, हम ख़ुद भी और तुम भी जमा हों, फिर ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जेह हों और ख़ुदा की लअ़नत झूटे पर डालें।"

(आले इम्रानः रुकूअ़ 6)

इन आयात के नुज़ूल पर नबी करीम सल्ल0 ने मुबाहला के लिये हसन रज़ि0 व हुसैन को भी बुलाया और फ़ातिमा रज़ि0 (सय्यदा निसाउल आलमीन) भी बाप की पसे पुश्त आकर खड़ी हो गईं।

उन ईसाइयों ने अलाहिदा होकर बातचीत की, शुरहबील ने अपने साथियों से कहा: इनके मुतअ़ल्लिक़ कोई राए क़ाइम करना आसान नहीं है, देखो! तमाम वादी के लोग इकट्ठे हुए तब उन्होंने हमको भेजा था।

मैं समझता हूं कि यह बादशाह हैं, तब भी उनसे मुबाहला करना ठीक न होगा, क्योंकि तमाम अरब में से हम ही उनकी निगाह में खटकते रहेंगे और अगर यह नबीये मुर्सल हैं तब तो इनकी लअ़नत के बाद हमारा पर्काह भी ज़मीन पर बाक़ी न मिलेगा, इसलिये मेरे नज़दीक बेहतर यह है कि हम इनकी मातहती कबूल करें और रक़मे जिज़्या का फैसला भी इनकी राए पर छोड़ दें, क्योंकि जहां तक मैंने समझा है, यह सख़्त मिज़ाज नहीं हैं। दोनों साथियों ने इत्तिफ़ाक़ किया और उन्होंने जाकर अ़र्ज़ कर दिया कि मुबाहला से बेहतर हमारे लिये यह है कि जो कुछ हुज़ूर (सल्ल0) के ख़्याल में कल सुब्ह तक हमारे लिये बेहतर मअ़लूम हो वह हम पर मुक़र्रर कर दिया जाए।

अगले रोज़ आंहज़रत सल्ल0 ने उन पर जिज़्या मुक़र्रर कर दिया और एक मुआहदा जिसे मुग़ीरा सहाबी रज़ि0 ने लिखा था और अबू सुफ़यान बिन हर्ब, ग़ैलान बिन अ़म्र, मालिक बिन औफ़, अक़रअ़ बिन हाबिस सहाबा की शहादत उस पर सब्त थीं, उन्हें मरहमत फ़रमाया, मुआहदा में आंहज़रत सल्ल0 ने ईसाइयों को फ़य्याज़ी से मुराआत व हुक़ूक़ मरहमत फ़रमाए।

फ़रमान हासिल करके यह लोग नजरान को वापस चले गए, बिशप (उस्कुफ़) और दीगर सरबर आवर्दा लोगों ने एक मंज़िल आगे बढ़कर उनसे मुलाक़ात की, वफ़्द ने यह फ़रमान उस्कुफ़ के सामने पेश कर दिया, वह चलते ही चलते इस फ़रमान को पढ़ने लगा, उसका चचेरा भाई बिश्र बिन मुआविया रज़ि0 जिसकी कुन्नियत अबू अल्क़मा थी, उसके बराबर था "वह भी इस तहरीर के मअ़ना की तरफ़ इस क़दर मुतवज्जेह हुआ कि बेख़्याल हो गया, और ऊंटनी ने उसे ज़मीन पर गिरा दिया, उसने गिरते ही कहा, "ख़राबी उस शख़्स की जिसने हमको इस क़दर तकलीफ़ में डाला है।"

बिश्र ने यह इशारा नबी करीम सल्ल0 की तरफ़ किया था।

उस्कुफ़ बोलाः देख तू क्या कहता है, बख़ुदा वह तो नबीये मुर्सल हैं।

बिश्र ने जवाब दिया बख़ुदा अब मैं भी नाक़ा का पालान उसी के पास जाकर उतारूंगा, यह कह उसने अपना रुख़ बदल दिया और मदीना को चल पड़ा।

उस्कुफ़ ने उसके पीछे पीछे नाक़ा लगाया, चिल्ला चिल्ला कर कहता था कि मेरी बात तो सुनो, मेरा मतलब तो समझो, मैंने यह फ़िक़रा इसलिये कहा था कि इन क़बाइल में मुश्तहर हो जाए, ताकि कोई यह न कहे कि हमने सनद हासिल करने में कोई हिमाक़त की है, या

फ़य्याज़ी क़बूल कर ली है, हालांकि दीगर क़बाइल ने अब तक उनकी फ़य्याज़ी को क़बूल नहीं किया है और हमारी ताक़त और शौकत औरों से बढ़ कर है।

बिश्र बोले नहीं नहीं, बख़ुदा नहीं, अब मैं नहीं रुकने का, तेरे मग़्ज़ से ऐसी ग़लत बात निकल ही नहीं सकती थी, यह कहकर वह मदीना चला आया।

यह बिश्र तो ख़िदमते नबवी सल्ल0 में पहुंच कर वहीं हुज़ूर में रहे और बिलआख़िर दर्जए शहादत पर फ़ाइज़ हुए, अब वफ़्द का बक़िया हाल यह हुआ कि जब यह लोग नज्रान पहुंच गए तो नजरान के गिर्जा में रहने वाले एक मुतिक (राहिब) ने भी किसी से यह तमाम दास्तान सुन ली, वह गिर्जा के बुर्ज के बालाई हिस्सा पर (सालहा साल से) रिहा करता था, चीख़ना शुरू कर दिया कि मुझे उतार दो वर्ना मैं ऊपर से कूद पड़ूंगा, ख़्वाह मेरी जान भी जाती रहे, यह राहिब भी चंद तहाइफ़ लेकर नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में रवाना हो गया, एक प्याला, एक असा, एक चादर उसने बतौरे तोहफ़ा पेश की थी, वह चादर ख़ुलफ़ाए अब्बासिया के अहद तक बराबर महफ़ूज़ रही थी, राहिब ने कुछ अर्सा तक मदीना में ठहर कर इस्लामी तअ़लीम से वाक़िफ़ीयत हासिल की और फिर आंहज़रत सल्ल0 से इजाज़त लेकर और वापस आने का वादा करके नज्रान चला गया।

(2) इस वफ़्द में कुछ अर्सा के बाद उस्क़ुफ़ अबुल

हारिस (जो गिर्जा का इमाम था, कुस्तुन्तुनिया के रूमी बादशाह जिसका निहायत अदब और एहतिराम किया करते थे और आम लोग अक्सर करामात वग़ैरा जिसकी ज़ात से मंसूब किया करते थे और जो अपने मज़हब का मुज्तहिद शुमार होता था) नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में पहुंचा उसके साथ ऐहम नामी इलाक़ा का जज और हाकिम भी था उसे सय्यद के लक़ब से मुलक़्क़ब करते थे, और अब्दुल मसीहु अल मुलक़्क़ब आक़िब भी था, जो सारे इलाक़ा का गवर्नर और अमीर भी था, बाक़ी 24/ मशहूर सरदार थे, कुल क़ाफ़िला 60/ सवरों का था, यह अस्र के वक़्त मस्जिदे नबवी सल्ल0 में पहुंचे थे, वह उनकी नमाज़ का वक़्त था (ग़ालिबन इतवार का दिन हागा) नबी करीम सल्ल0 ने उनको अपनी मस्जिद में नमाज़ पढ़ लेने की इजाज़त फ़रमा दी थी और उन्होंने मस्जिद से मश्रिक़ की जानिब रुख़ करके नमाज़ अदा की थी, बअ्ज़ मुसलमानों ने उन्हें मस्जिद में ईसाई नमाज़ पढ़ने से रोकना चाहा था, मगर आंहज़रत सल्ल0 ने मुसलमानों को मना फ़रमा दिया था।

यहूदी भी उन्हें देखने आते थे और कभी कभी किसी मस्अला पर गुफ़्तगू भी हो जाया करती थी। एक दफ़ा नबी करीम सल्ल0 के सामने यहूदियों ने बयान किया कि हज़रत इब्राहीम (अलै0) यहूदी थे और इन ईसाइयों ने कहा वह ईसाई थे, इस बहस पर कुर्आन मजीद की इन आयात का नुज़ूल हुआः

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنزِلَتِ التَّوْرَاةُ وَالْإِنجِيلُ إِلَّا مِن بَعْدِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ هَا أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُم بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ، وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ، مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَٰكِن كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ، إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ.

''उनसे कहिये कि ऐ किताब वालो! इब्राहीम (अले0) के बारे में क्यों झगड़ा करते हो, तौरात और इंजील तो उसके बाद उतरी हैं, क्या तुम नहीं समझते? जिन बातों में तुम्हारे पास कुछ इल्म था उसमें तो झगड़ते ही थे मगर जिसके बारे में कुछ इल्म नहीं उसमें झगड़ा क्यों करते हो? और अल्लाह ही जानता है और तुम नहीं जानते, इब्राहीम (अलै0) यहूदी थे, न ईसाई थे, वह तो पक्के मुवहि्हद थे और मुसलमान थे और मुश्रिक भी न थे, सारी ख़िल्क़त में इब्राहीम से क़रीब तर वह हैं जिन्होंने उनका इत्तिबाअ् किया और मुहम्मद (सल्ल0) और उन पर ईमान रखने वाले लोग, हां खुदा मोमिनीन का दोस्तदार है।

(आले इम्रानः रुकूअ 7)

एक दफ़ा यहूदियों ने (मुसलमानों और ईसाइयों दोनों पर एतिराज़ करने की ग़र्ज़ से) कहाः मुहम्मद (सल्ल0)

साहब! क्या आप यह चाहते हैं कि हम आपकी भी इबादत करने लगें जैसा कि ईसाई ईसा की इबादत किया करते हैं?

नजरान का एक ईसाई बोला:

हां मुहम्मद (सल्ल0) साहब! बता दीजिये कि आप का यही इरादा है और इसी अकीदा की दावत आप (सल्ल0) देते हैं? नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया: अल्लाह की पनाह! मैं अल्लाह के सिवा और किसी की इबादत करूं या किसी दूसरे को ग़ैरुल्लाह की इबादत का हुक्म दूं, खुदा ने मुझे इस काम के लिये नहीं भेजा और मुझे ऐसा हुक्म नहीं दिया,

इस वाक़िआ पर कुर्आन मजीद की इन आयात का नुजूल हुआ:

مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ، ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ، وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبَّانِيِّيْنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتَابَ، وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ، وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا، اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ.

"जिस बशर को खुदा किताब और हिक्मत और नुबूव्वत इनायत करे, यह उसके लिये शायां नहीं कि वह फिर लोगों से कहने लगे कि खुदा के सिवा मेरे बंदे बन जाओ, वह तो यही कहा करता है कि किताबे इलाही हो सीख लो और शरीअत का दर्स पाकर तुम अल्लाह वाले बन जाओ, यह नबी तो

नहीं कहते कि फ़रिश्तों को या नबियों को भी रब बना लो, भला वह कुफ़्र के लिये कह सकते हैं तुम लोगों को जो इस्लाम ला चुके।" (आले इम्रान)

मुहम्मद बिन सुहैल रज़ि0 की रिवायत है कि आले इम्रान की शुरू से 80/ आयात तक नुज़ूल भी इस वफ़्द की मौजूदगी में हुआ था, जब यह वापस जाने लगे तो आंहज़रत सल्ल0 से फिर एक सनद उन्होंने हासिल की जिसमें गिरजाओं और पादरियों की बाबत ज़्यादा सराहत थी।[1]

उन्होंने यह भी दरख़्वास्त की कि एक अमानतदार शख़्स को हमारे साथ भेज दिया जाए जिसे जिज़्या अदा कर दिया करें, नबी करीम सल्ल0 ने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह को उनके साथ भेज दिया और फ़रमाया कि यह शख़्स मेरी उम्मत का अमीन है।[2]

हज़रत अबू उबैदा रज़ि0 के फ़ैज़ाने सोहबत से इलाक़ा में इस्लाम फैल गया।

वफ़्दे नरख़

यह वफ़्द निस्फ़ मुहर्रम 11 हि0 में ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुआ था, इसके बाद कोई वफ़्द हाज़िर नहीं हुआ,

(1) ज़ादुल मआद 3-629 ता 637, दलाइलुन्नुबूव्वा 5-328 ता 393, इब्ने हिशाम 1-573 ता 584, इब्ने सअ़द 1-357, सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़िस्सा नजरान में इस वाक़िआ के बअ़ज़ अज्ज़ा मौजूद हैं।

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबे अबू उबैदा बिन अल जर्राह रज़ि0, सहीह मुस्लिम, फ़ज़ाइलुस्सहाबा रज़ि0 बाब फ़ज़ाइले अबी उबैदा बिन अल जर्राह।

यह दो सौ अशख़ास थे और हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि० के हाथ पर मुसलमाना होकर आए थे, उनको दारुज़्ज़ियाफ़ा (मेहमान ख़ाना) में उतारा गया था।

एक शख़्स उनमें ज़ुरारा बिन अ़म्र था, उसने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0! मैंने रास्ता में ख़्वाब देखे जो अजीब थे।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "बयान करो"

कहा मैंने देखा कि एक बकरी ने बच्चा दिया है, जो सफ़ेद और सियाह रंग का अबलक़ है।

नबी करीम सल्ल0 ने पूछाः क्या तुम्हारी औरत के बच्चा होने वाला था? उसने कहा हां!

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया कि उसके फ़रज़ंद पैदा हुआ है, जो तेरा बेटा है, ज़ुरारा ने कहा या रसूलुल्लाह! अबलक़ होने के क्या मअ़ना हैं?

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया, क़रीब आओ, फिर आहिस्ता से पूछा क्या तेरे जिस्म पर बर्स के दाग़ हैं जिसे लोगों से छिपाते रहे हो?

ज़ुरारा ने कहा क़सम है उस ख़ुदा की जिसने आपको रसूल बनाकर भेजा है कि आज तक मेरे इस राज़ की किसी को इत्तिला न थी।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया बच्चा पर यह उसी का असर है।

ज़ुरारा ने दूसरा ख़्वाब सुनाया कि मैंने नोअ़्मान बिन

मुंज़िर को देखा कि गोशवारे बाजू बंद, ख़लख़ाल पहने हुए है।

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया इसकी तावील मुल्के अरब है, जो अब आसाइश व आराइश हासिल कर रहा है।

ज़ुरारा ने अर्ज़ किया मैंने देखा कि एक बुढ़िया है, जिसके कुछ बाल सफ़ेद, कुछ सियाह हैं और ज़मीन से बाहर निकली है।

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया: यह दुन्या है जिस क़दर बाक़ी रह गई है।

ज़ुरारा ने अर्ज़ किया मैंने देखा कि एक आग ज़मीन से नुमूदार हुई, मेरे और मेरे बेटे के दर्मियान आ गई, और वह आग कह रही है, झुलसो झुलसो बीना हो कि नाबीना हो, लोगो! अपनी ग़िज़ा, अपना कुंबा, अपना माल मुझे खाने के लिये दो।

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया, यह एक फ़साद है जो आख़िर ज़माने में ज़ाहिर होगा, ज़ुरारा ने अर्ज़ किया कि यह कैसा फ़ित्ना होगा?

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया लोग अपने इमाम को क़त्ल कर देंगे, आपस में फूट पड़ जाएगी, एक दूसरे से ऐसे गुत्थ जाएंगे जैसे हाथों की उंगलियां पंजा डालने में गुत्थ जाती हैं, बदकार उन दिनों अपने आपको नेकूकार समझेगा, मोमिन का ख़ून पानी से बढ़कर ख़ुशगवार समझा जाएगा, अगर तेरा बेटा मर गया, तब तू इस फ़ित्ना को देख लेगा,

तू मर गया तो तेरा बेटा देख लेगा।

जुरारा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0 दुआ कीजिये कि मैं इस फ़ित्ना को न देखूं,

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने दुआ फ़रमाई इलाही! यह इस फ़ित्ना को न पाए।

जुरारा का इंतिक़ाल हो गया और उसका बेटा बच रहा, उसने सय्यदना उस्माने ग़नी की बैअ़त को तोड़ दिया था।[1]

हज्जतुल वदाअ़

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ، وَرَاَیْتَ النَّاسَ یَدْخُلُوْنَ فِیْ دِیْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا، فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّکَ وَاسْتَغْفِرْهُ، اِنَّهٗ کَانَ تَوَّابًا.

"जब खुदा की मदद आ गई और मक्का फ़त्ह हो चुका और आपने देख लिया कि लोग खुदा के दीन में फौज दर फौज दाख़िल हो रहे हैं तो खुदा की तस्बीह पढ़िये और इस्तिग़फ़ार कीजिये, खुदा तौबा कबूल करने वाला है।" (सूरए नस्र, प0 30)

बज़ाहिर यह ख़्याल होता है कि नुस्रत और फ़त्ह के मुकाबला में शुक्र की हिदायत होनी चाहिये थी, तस्बीह व इस्तिग़फ़ार को फ़त्ह से क्या मुनासबत है? इसी बिना पर एक सोहबत में हज़रत उमर रज़ि0 ने सहाबा से मअ़्ना पूछे, लोगों ने मुख़्तलिफ मअ़्ना बताए, हज़रत उमर रज़ि0 ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 की तरफ़ देखा, वह कम्सिन

(1) ज़ादुल मआद 3-686, 687, इब्ने सअ़द 1-346

थे और जवाब देते झिझकते थे, हज़रत उमर रज़ि० ने उनकी ढारस बंधाई तो उन्होंने कहा "यह आयत आंहज़रत सल्ल० के कुर्बे वफ़ात का एलान है कि इस्तिग़फ़ार मौत के लिये मख़्सूस है।"[1]

इस सूरत के नाज़िल होने के बाद आप सल्ल० को मअ़लूम हो गया था कि रहलत का वक़्त क़रीब आ गया है, इसलिये अब ज़रूरत थी कि तमाम दुन्या के सामने शरीअ़त और अख़्लाक़ के तमाम उसूले असासी का मज्मए आ़म में एलान कर दिया जाए, आंहज़रत सल्ल० ने हिज्रत के ज़माने से अब तक फ़रीज़ए हज अदा नहीं फ़रमाया था।[2]

एक मुद्दत तक तो कुरैश सद्दे राह रहे, सुलह हुदैबिया के बाद मौक़ा मिला, लेकिन मसालेह इसके मुक़्तज़ी थे कि यह फ़र्ज़ सबसे आख़िर में अदा किया जाए,

बहरहाल ज़ुलक़अ़्दा में एलान हुआ कि आंहज़रत सल्ल० हज के इरादा से मक्का तशरीफ़ ले जा रहे हैं, यह ख़बर दफ़अ़तन फैल गई और शर्फ़े हमरिकाबी के लिये तमाम अरब उमंड आया।[3] (सनीचर के दिन) ज़ुलक़अ़्दा की 26/ तारीख़ को आप सल्ल० ने गुस्ल फ़रमाया और चादर और तहमद बांधी, नमाज़े ज़ुहर के बाद मदीना से बाहर निकले।[4] तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात को साथ ले चलने का हुक्म दिया।[5] मदीना से छः मील के फ़ासिला पर ज़ुल-

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर, बाब तफ़सीर "इज़ा जाअ नस्रुल्लाहि" (2) सहीहुल बुख़ारी, बाब हज्जतुल वदाअ़ (3) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल० (4) ज़ादुल मआ़द 2-102 (5) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़

हुलैफ़ा एक मक़ाम है, जो मदीना की मीक़ात है, यहां पहुंच कर शबे इक़ामत फ़रमाई,[1] दूसरे दिन दोबारा गुस्ल फ़रमाया, इसके बाद आप सल्ल0 ने दो रकअ़त नमाज़ अदा की फिर कुस्वा पर सवार होकर एहराम बांधा और बुलंद आवाज़ से यह अलफ़ाज़ कहे:-

"لَبَّیْکَ اللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ اِنَّ
الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ۔"

"ऐ खुदा हम तेरे सामने हाज़िर हैं, ऐ खुदा तेरा कोई शरीक नहीं, हम हाज़िर हैं, तअ़रीफ़ और नेअ़्मत सब तेरी है और सलतनत में तेरा कोई शरीक नहीं"।

हज़रत जाबिर रज़ि0 जो इस हदीस के रावी हैं, उनका बयान है कि मैंने नज़र उठा कर देखा तो आगे, पीछे, दाएं, बाएं, जहां तक नज़र काम करती, आदमियों का जंगल नज़र आता था, आंहज़रत सल्ल0 जब "लब्बैक" फ़रमाते थे तो हर तरफ़ से इसी सदाए ग़लग़ला अंगेज़ की आवाज़े बाज़गश्त आती थी और तमाम दश्त व जबल गूंज उठते थे।[2]

फ़त्हे मक्का में आपने जिन मनाज़िल में नमाज़ अदा की थी, वहां बरकत के ख़्याल से लोगों ने मस्जिदें बना ली थीं, आंहज़रत सल्ल0 उन मसाजिद में नमाज़ अदा करते जाते थे, मक़ामे सरफ़ पहुंच कर गुस्ल फ़रमाया, दूसरे दिन (इतवार के रोज़ ज़ुल हिज्जा की चार तारीख़ को सुब्ह के वक़्त)

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब मिन बात बज़िल हुलैफ़ा
(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी व बाबुत्तलबिया

मक्का मुअज़्ज़मा में दाख़िल हुए, मदीना से मक्का तक यह सफ़र नौ दिन में तैय हुआ,[1] ख़ानदाने हाशिम के लड़कों ने आमद की ख़बर सुनी तो ख़ुशी से बाहर निकल और, आपने फ़र्ते मुहब्बत से ऊंट पर किसी को आगे और किसी को पीछे बिठा लिया।[2] कअ्बा नज़र पड़ा तो फ़रमाया कि "ऐ ख़ुदा इस घर को और ज़्यादा इज़्ज़त और शर्फ़ दे"[3] फिर कअ्बा का तवाफ़ किया, तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर मक़ामे इब्राहीम में दोगाना अदा किया और यह आयत पढ़ी:

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرَاهِيْمَ مُصَلّٰى.

"और मक़ामे इब्राहीम को सज्दा गाह बनाओ"

सफ़ा पर पहुंचने तो यह आयत पढ़ी:

اِنَّ الصَّفَاوَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ

"सफ़्फ़ा और मरवह ख़ुदा की निशानियां हैं।"

(यहां से) कअ्बा नज़र आया, तो यह अलफ़ाज़ फ़रमाए:

"لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَه اَنْجَزَ وَعْدَه، وَنَصَرَ عَبْدَه وَهَزَمَ الْاَحْزَاب وَحْدَهٗ."[4]

"अल्लाह के सिवा कोई ख़ुदा नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, उसके लिये सलतनत और मुल्क और

(1) सीरतुन्नबी सल्ल० 2-252 (2) सुनन नसाई, किताबुल मनासिक, बाब इस्तिकबाले हज (3) सुनन बैहक़ी 5-73 (4) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुल वदाअ्

हम्द है, वह मारता और जिलाता है और वह तमाम चीज़ों पर क़ादिर है, कोई ख़ुदा नहीं मगर वह अकेला ख़ुदा, उसने अपना वादा पूरा किया और अपने बंदे की मदद की और अकेले तमाम कबाइल को शिकस्त दी।"

सफ़ा से उतर कर मरवह तशरीफ़ लाए, यहां भी दुआ व तहलील की, अह्ले अरब अय्यामे हज में उम्रा नाजाइज़ समझते थे, सफ़ा व मरवह के तवाफ़ व सई से फ़ारिग़ होकर आपने लोगों को जिनके साथ कुर्बानी के जानवर नहीं थे, उम्रा तमाम करके एहराम उतार देने का हुक्म दिया,[1] बअ्ज़ सहाबा रज़ि० ने गुज़श्ता रुसूमे मालूफ़ा की बिना पर इस हुक्म की बजाआवरी में मअ्ज़रत की, आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया "अगर मेरे साथ कुर्बानी के ऊंट न होते तो मैं भी ऐसा ही करता।[2] हज़रत अली रज़ि० हज्जतुल वदाअ् से कुछ पहले यमन भेजे गए थे, उसी वक़्त वह यमनी हाजियों का काफ़िला लेकर मक्का में वारिद हुए, चूंकि उनके साथ कुर्बानी के जानवर थे इसलिये उन्होंने एहराम नहीं उतारा, जुमेरात के रोज़ आठवीं तारीख़ को आपने तमाम मुसलमानों के साथ मिना में क़्याम फ़रमाया, दूसरे दिन नवीं ज़िल हिज्जा को जुमुआ के रोज़ सुब्ह की नमाज़ पढ़ कर मिना से रवाना हुए।[3]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ्, सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुल वदाअ् व बाब बयान वुजूहुल एहराम। (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनासिक, बाब तक़्ज़ी अल हाइज़ अल मनासिक कुल्लहा (3) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०

कुरैश का मअमूल था कि जब मक्का से हज के लिये निकलते थे, तो अरफ़ात के बजाए मुज़दल्फ़ा में मक़ाम करते थे, जो हरम के हुदूद में था, उनका ख़्याल था कि कुरैश ने अगर हरम के सिवा और मक़ाम में मनासिके हज अदा किये तो उनकी शाने यक्ताई में फ़र्क़ आ जाएगा, लेकिन इस्लाम को जो मुसावाते आम क़ाइम करनी थी, उसके लिहाज़ से यह तख़्सीस रवा नहीं रखी जा सकती थी, इसलिये ख़ुदा ने हुक्म दियाः

ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ. (1)

आप भी आम मुसलमानों के साथ अरफ़ात में आए, और यह एलान करा दियाः

"قِفُوا عَلٰى مَشَاعِرِكُمْ فَاِنَّكُمْ عَلٰى اِرْثٍ مِنْ اِرْثِ اَبِيْكُمْ اِبْرَاهِيْمَ." (2)

"अपने मुक़द्दस मक़ामात में ठहरे रहो, कि तुम अपने बाप इब्राहीम की वरासत पर हो।"

यअ़नी अरफ़ा में हाजियों का क़याम, हज़रत इब्राहीम अलै० की यादगार है और उन्हीं ने इस मक़ाम को इस ग़र्ज़े ख़ास के लिये मुतअ़य्यन किया है, अरफ़ात में एक मक़ाम नम्रा है, वहां आप सल्ल० ने (एक) कम्बल के ख़ेमा में क़याम फ़रमाया, दोपहर ढल गई तो नाक़ा पर (जिसका नाम कुसवा था) सवार होकर मैदान में आए और नाक़ा के ऊपर

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाबुल वुक़ूफ़ बिअ़रफ़ा

(2) सुनन तिर्मिज़ी, किताबुल हज, बाब मा जाअ़ फ़िल वुक़ूफ़ बिअरफ़ात, अबू दाऊद, किताबुल मनासिक, बाब मौज़ूउल वुक़ूफ़ बिअरफ़ा

ही से खुत्बा पढ़ा।[1]

आज पहला दिन था कि इस्लाम अपने जाह व जलाल के साथ नुमूदार हुआ और जाहिलीयत के तमाम बेहूदा मरासिम को मिटा दिया, इसलिये आप सल्ल0 ने फ़रमायाः

"اَلَا كُلُّ شَيْءٍ مِنْ أَمْرِ الْجَاهِلِيَّةِ تَحْتَ قَدَمَيَّ مَوْضُوعٌ."[2]

"हां जाहिलीयत के तमाम दस्तूर मेरे दोनों पांव के नीचे हैं।"

तक्मीले इंसानी की मंज़िल में सबसे बड़ा संगे राह इम्तियाज़े मरातिब था, जो दुन्या की क़ौमों ने, तमाम मज़ाहिब ने, तमाम मुमालिक ने, मुख़्तलिफ़ सूरतों में क़ाइम कर रखा था, सलातीन सायए यज़्दानी थे, जिनके आगे किसी को चूं व चरा की मजाल न थी, अइम्मए मज़ाहिब के साथ कोई शख़्स मसाइले मज़हबी में गुफ़्तगू का मजाज़ न था, शुरफ़ा रज़ीलों से एक बालातर मख़्लूक़ थी, गुलाम आक़ा के हमसर नहीं हो सकते थे, आज यह तमाम तफ़र्के, यह तमाम इम्तियाज़ात, यह तमाम हदबंदियां दफ़अ़तन टूट गईं।

"لَيْسَ لِلْعَرَبِيِّ فَضْلٌ عَلَى الْعَجَمِيِّ وَلَا لِلْعَجَمِيِّ فَضْلٌ عَلَى الْعَرَبِيِّ، كُلُّكُمْ أَبْنَاءُ آدَمَ وَآدَمُ مِنَ التُّرَابِ."[3]

"अ़रबी को अ़जमी पर और अ़जमी को अ़रबी पर कोई फ़ज़ीलत, नहीं तुम सब आदम (अलै0) की औलाद हो और आदम अलै0 ख़ाक से बने थे।"

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0 (2) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0 (3) अलइक़दुल फ़रीद 2-149

अरब में किसी ख़ानदान का कोई शख़्स किसी के हाथ क़त्ल होता तो उसका इंतिक़ाम लेना ख़ानदानी फ़र्ज़ हो जाता था, यहां तक कि सैकड़ों बरस गुज़र जाने पर भी यह फ़र्ज़ बाक़ी रहता था और इसी बिना पर लड़ाइयों का ग़ैर मुन्क़तेअ् सिलसिला क़ाइम हो जाता था और अरब की ज़मीन हमेशा ख़ून से रंगीन रहती थी, आज यह सब से क़दीम रस्म, अरब का सबसे मुक़द्दम फ़ख़्र, ख़त्म किया जाता है, इसके लिये नुबूव्वत का मुनादी सबसे पहले अपना नमूना पेश करता है:

"وَدِمَاءُ الْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوعَةٌ وَإِنَّ أَوَّلَ دَمٍ أَضَعُ مِنْ دِمَائِنَا دَمُ ابْنِ رَبِيعَةَ بْنِ الْحَارِثِ."[1]

"जाहिलीयत के तमाम ख़ून (यअ्नी इंतिक़ामे ख़ून) बातिल कर दिये गए और सबसे पहले मैं (अपने ख़ानदान का ख़ून) रबीआ़ बिन हारिस के बेटे का ख़ून बातिल कर देता हूं।"

तमाम अरब में सूदी कारोगार का एक जाल फैला हुआ था, जिससे गुरबा का रेशा रेशा जकड़ा हुआ था और हमेशा के लिये अपने क़र्ज़ख़्वाहों के गुलाम बन गए थे, आज वह दिन है कि इस जाल का तार तार अलग होता है इस फ़र्ज़ की तक्मील के लिये मुअल्लिमे हक़ सबसे पहले अपने ख़ानदान को पेश करता है:

"وَرِبَا الْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوعٌ وَأَوَّلُ رِبًا أَضَعُ رِبَا عَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ."[2]

(1) सहीहु मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०
(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०

"जाहिलीयत के तमाम सूद भी बातिल कर दिये गए और सबसे पहले अपने ख़ानदान का सूद, अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद बातिल करता हूं।"

आज तक औरतें एक जाइदाद मन्कूला थीं जो क़िमार बाज़ियों में दांव पर चढ़ा दी जा सकती थीं, आज पहला दिन है कि इस गिरोहे मज़लूम को, इस सिन्फ़े लतीफ़ को, इस जौहरे नाज़ुक को, क़द्र दानी का ताज पहनाया जाता है, इर्शाद होता है:

"فَاتَّقُو اللّٰهَ فِى النِّسَاءِ". [1]

"औरतों के मुआमला में ख़ुदा से डरो।"

अरब में जान व माल की कुछ क़ीमत न थी जो शख़्स जिसको चाहता था क़त्ल कर देता था और जिसका माल चाहता था छीन लेता था, आज अम्न व सलामती का बादशाह तमाम दुन्या को सुलह का पैग़ाम सुनाता है।

"اِنَّ دِمَائَكُمْ وَاَمْوَالَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هٰذَا، فِىْ شَهْرِكُمْ هٰذَا، فِىْ بَلَدِكُمْ هٰذَا، اِلٰى يَوْمِ تَلْقَوْنَ رَبَّكُمْ". [2]

"बेशक तुम्हारा ख़ून और तुम्हारा माल ता क़्यामत उसी तरह हराम है, जिस तरह यह दिन, यह महीना और यह शहर, हराम है।"

---

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़, सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0

इस्लाम से पहले बड़े बड़े मज़ाहिब दुन्या में पैदा हुए, लेकिन उनकी बुन्याद खुद साहिबे शरीअ़त के तहरीरी उसूल पर न थी, उनको खुदा की तरफ़ से जो हिदायतें मिली थीं बंदों की हवस परस्तियों ने उनकी हक़ीकत गुम कर दी थी, अबदी मज़हब का पैग़म्बर ज़िंदगी के बाद हिदायाते रब्बानी का मज्मूआ खुद अपने हाथ से अपनी उम्मत को सिपुर्द करता है और ताकीद करता है:

"وَاِنِّی تَرَکْتُ فِیْکُمْ مَا لَنْ تَضِلُّوْا بَعْدَہٗ اِنِ اعْتَصَمْتُمْ بِہٖ کِتَابُ اللّٰہِ"[1]

"मैं तुम में एक चीज़ छोड़ जाता हूं अगर तुमने उसको मज़बूत पकड़ लिया तो गुमराह न होगे, वह चीज़ क्या है? किताबुल्लाह!"

"اَنْتُمْ مَسْئُوْلُوْنَ عَنِّی فَمَا اَنْتُمْ قَائِلُوْنَ.؟"

"तुमसे खुदा के यहां मेरी निस्बत पूछा जाएगा, तुम क्या जवाब दोगे?"

सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ की "हम कहेंगे आप सल्ल० ने खुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया और अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया" आप सल्ल० ने आसमान की तरफ़ उंगली उठाई और तीन बार फ़रमाया, اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ[2] (ऐ खुदा तू गवाह रह।)

ऐन उसी वक़्त जब आप यह फ़र्ज़े नुबूव्वत अदा कर रहे थे, यह आयत उतरी:[3]

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०
(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०
(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ
وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا.

"आज मैंने तुम्हारे लिये दीन को मुकम्मल कर दिया और अपनी नेअ्मत तमाम कर दी और तुम्हारे लिये मज़्हबे इस्लाम को मुंतख़ब किया"

(माइदा)

निहायत हैरत अंगेज़ और इबरत ख़ेज़ मंज़र यह था कि शाहंशाहे आलम जिस वक़्त लाखों आदमियों के मज्मा में फ़रमाने रब्बानी का एलान कर रहा था उसके तख़्ते शाही का मस्नद व बालीन (कजावा और अ़र्क़ गीर) एक रूपया से ज़्यादा क़ीमत का न था।[1]

ख़ुत्बा से फ़ारिग़ होकर आप सल्ल0 ने हज़रत बिलाल रज़ि0 को अज़ान का हुक्म दिया और ज़ुहर व अस्र की नमाज़ एक साथ अदा की, फिर नाक़ा पर सवार होकर मौक़फ़ तशरीफ़ लाए और वहां खड़े होकर देर तक क़िब्ला रू दुआ में मसरूफ़ रहे।[2] जब आफ़ताब डूबने लगा तो आप सल्ल0 ने वहां से चलने की तैयारी की, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 को ऊंट पर पीछे बिठा लिया,[3] आप सल्ल0 नाक़ा की ज़िमाम खींचे हुए थे यहां तक कि उसकी गर्दन कजावे में आकर लगती थी,[4] लोगों के हुजूम से एक इज़्तिराब सा पैदा हो गया था, लोगों को दस्ते मुबारक से

(1) सीरतुन्नबी सल्ल, अल्लामा शिब्ली नोअ्मानी 2-154 ता 159 (2) ज़ादुल मआ़द 2-254 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाबुन्नुज़ूल बैना अरफ़ा वल हज (4) ज़ादुल मआ़द 2-246

और बुख़ारी में है कि कोड़े से इशारा करते जाते थे कि आहिस्ता! और ज़बाने मुबारक से इर्शाद फ़रमा रहे थे:

"السكينة ايها الناس!"

लोगो! सुकून के साथ!

"السكينة ايها الناس!"[1]

लोगो सुकून के साथ!

अस्नाए राह में एक जगह तहारत की, हज़रत उसामा रज़ि0 ने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल0! नमाज़ का वक़्त तंग हो रहा है, फ़रमाया नमाज़ का मौक़ा आगे आता है, थोड़ी देर के बाद आप सल्ल0 तमाम क़ाफ़िला के साथ मुज़्दल्फ़ा पहुंचे, यहां पहले मग़रिब की नमाज़ पढ़ी, इसके बाद लोगों ने अपने अपने पड़ाव पर जाकर सवारियों को बिठाया, अभी सामान खोलने भी न पाए थे कि फ़ौरन ही नमाज़े इशा की तक्बीर हुई।[2] नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आप सल्ल0 लेट गए और सुब्ह तक आराम फ़रमाया, बीच में रोज़ाना के दस्तूर के ख़िलाफ़ इबादते शबाना के लिये बेदार न हुए, मुहद्दिसीन ने लिखा है कि यही एक शब है जिसमें आप सल्ल0 ने तहज्जुद अदा नहीं फ़रमाई, सुब्ह सवेरे उठकर बाजमाअ़त फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी,[3] कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मुज़्दल्फ़ा से उस वक़्त कूच करते थे, जब आफ़ताब पूरा निकल आता था, और

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0, सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब अम्रुन्नबी सल्ल0 बिस्सकीना

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब अल जम्अु बैनस्सलातैन बिल मुज़्दल्फ़ा

(3) सीरतुन्नबी सल्ल0 2-160

आसपास के पहाड़ों की चोटियों पर धूप चमकने लगती थी, उस वक़्त बाआवाज़े बुलंद कहते थे "कोहे सबीर! धूप से चमक जा" आंहज़रत सल्ल० ने इस रस्म के इब्ताल के लिये सूरज निकलने से पहले यहां से कूच किया।[1] यह ज़िल हिज्जा की दसवीं तारीख़ और सनीचर का दिन था।

हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि० आप सल्ल० के बिरादरे अम्मज़ाद नाक़ा पर सवार थे, अहले हाजत दाएं बाएं हज के मसाइल दरयाफ़्त करने के लिये आ रहे थे, आप सल्ल० जवाब देते थे।[2] और ज़ोर ज़ोर से मनासिके हज की तअ़लीम देते जाते थे, वादिये महसर के रास्ता से आप सल्ल० जम्रह के पास आए, इब्ने अब्बास से जो उस वक़्त कम्सिन थे फ़रमाया मुझे कंकरियां दो, आप सल्ल० ने कंकरियां फेंकीं और लोगों को ख़िताब करके फ़रमायाः

إِيَّاكُمْ وَالْغُلُوَّ فِي الدِّيْنِ فَإِنَّمَا أَهْلَكَ قَبْلَكُمُ الْغُلُوُّ فِي الدِّيْنِ[3]

"मज़हब में ग़ुलू और मुबालग़ा से बचो, क्योंकि तुमसे पहले कौमें इसी से बर्बाद हुईं"

इसी अस्ना में आप सल्ल० यह भी इर्शाद फ़रमाते,

"لِتَأْخُذُوا مَنَاسِكَكُمْ فَإِنِّي لَا أَدْرِي لَعَلِّي لَا أَحُجُّ بَعْدَ حَجَّتِي هٰذِهِ"[4]

---

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब मता यद्फ़उ़ मिन जम्उ़

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़

(3) सुनन नसाई, किताबुल मनासिक, बाब इल्तिक़ातुल हसा, सुनन इब्ने माजा, किताबुल मनासिक, बाब क़द्रो हिसर्रम्य

(4) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब इस्तिहबाबु रम्ये जम्रतिल उक़्बा

"हज के मसाइल सीख लो, मैं नहीं जानता शायद कि इसके बाद मुझे दूसरे हज की नौबत न आए।"

यहां से फ़ारिग़ होकर मिना के मैदान में तशरीफ लाए, दाहने बाएं आगे पीछे तक़रीबन एक लाख मुसलमानों का मज्मा था, मुहाजिरीन क़िब्ला के दाहने, अंसार बाएं, और बीच में आम मुसलमानों की सफ़ें थीं, आंहज़रत सल्ल० नाक़ा पर सवार थे, हज़रत बिलाल रज़ि० के हाथ में नाक़ा की महार थी, हज़रत उसामा बिन ज़ैद पीछे बैठे कपड़ा तान कर साया किये हुए थे, आप सल्ल० ने नज़र उठाकर उस अज़ीमुश्शान मज्मा की तरफ देखा तो फ़राइज़े नुबूव्वत के 23/ साला नताइज निगाहों के सामने थे, ज़मीन से कबूल व एतिराफ़े हक़ का नूर ज़ू फ़शां था, दीवाने क़ज़ा में अंबिया साबिक़ीन के फ़राइज़े तबलीग़ के कारनामों पर ख़त्मे रिसालत की मुहर सब्त हो रही थी और दुन्या अपनी तख़्लीक़ के लाखों बरस के बाद दीने फ़ितरत की तक्मील का मुज़दा काइनात के ज़र्रा ज़र्रा की ज़बान से सुन रही थी, ऐन उसी आलम में ज़बाने हक़ मुहम्मद सल्ल० के काम व देहन में ज़मज़मा पर्दाज़ हुई।[1] अब एक नई शरीअत, एक नए निज़ाम और एक आलम का आग़ाज़ था, इस बिना पर इर्शाद फ़रमायाः

"إِنَّ الزَّمَانَ قَدِ اسْتَدَارَ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ"[2]

(1) सीरतुन्नबी सल्ल० 2-161 (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़, सहीह मुस्लिम, किताबुल क़सामा, बाब तग़लीज़ुद्दिमाअ़ वलअअ़राज़

"इब्तिदा में खुदा ने जब ज़मीन व आसमान को पैदा किया था, ज़माना फिर फिरा के आज उसी नुक्ता पर आ गया।" (बरिवायत अबू बक्रह)

इब्राहीम ख़लील अलै० के तरीके इबादत हज का मौसम अपनी जगह से हट गया था, इसका सबब यह है कि उस ज़माना में किसी किस्म की खून रेज़ी जाइज़ न थी, इसलिये अरबों के खून आशाम जज़्बात हीलए जंग के लिये इसको कभी घटा कभी बढ़ा देते थे, आज वह दिन आया कि इस इज्तिमाए अज़ीम के लिये अशहुरे हुरुम तअ़यीन कर दिये जाएं, आप सल्ल० ने फ़रमायाः

"السَّنَةُ اثنا عَشَرَ شَهْراً مِنْهَا اَرْبَعَةٌ حُرم، ثَلاثَةٌ متواليات ذُوالقَعْدة وذُو الحجة ومحرّم وَرَجَبُ شَهْرُ مُضَرَ الَّذى بين جُمادى وَشَعْبَانَ."[1]

"साल में बारह महीने जिनमें चार महीने काबिले एहतिराम हैं, तीन तो मुतवातिर महीने हैं, ज़ुलक़अ़दा, ज़ुल हिज्जा, और मुहर्रम, और चौथा रजब मुज़र का महीना, जो जुमादियुस्सानी और शअ़बान के बीच में है।"

दुन्या में अद्ल व इंसाफ़ और जौर व सितम का मेहवर सिर्फ़ तीन चीज़ें हैं, जान, माल, और आबरू, आंहज़रत सल्ल० कल के खुत्बा में गो उनके मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फरमा चुके थे, लेकिन अरब के सदियों के ज़ंग दूर करने के लिये

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़

मुकर्रर ताकीद की ज़रूरत थी, आज आप सल्ल0 ने इसके लिये अजीब बलीग़ अंदाज़ इख़्तियार फ़रमाया, लोगों से मुख़ातब होकर पूछा-

"कुछ मअ़लूम है, आज कौनसा दिन है? लोगों ने अ़र्ज़ किया कि ख़ुदा और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है, आप सल्ल0 देर तक चुप रहे, लोग समझे कि शायद आप सल्ल0 इस दिन का कोई और नाम रखेंगे, देर तक सुकूत के बाद फ़रमाया "क्या आज कुर्बानी का दिन नहीं है? लोगों ने कहा हां बेशक है, फिर इर्शाद हुआ, यह कौनसा महीना है? लोगों ने फिर उसी तरीक़े से जवाब दिया, आप सल्ल0 ने फिर देर तक सुकूत किया, और फ़रमाया कि यह ज़ुल हिज्जा नहीं है? "लोगों ने कहा हां बेशक है, फिर पूछा "यह कौनसा शहर है"? लोगों ने बदस्तूर जवाब दिया, आप सल्ल0 ने उसी तरह देर तक सुकूत के बाद फ़रमाया "क्या यह बलदतुल हराम नहीं है"? लोगों ने कहा हां बेशक है, जब सामईन के दिल में यह ख़्याल पूरी तरह जागुज़ीं हो चुका कि आज का दिन भी, महीना भी और ख़ुद शहर भी मोहतरम है, यअ़नी इस दिन इस मक़ाम में जंग और ख़ूंरेज़ी जाइज़ नहीं, तब फ़रमायाः

فَإِنَّ دِمَائَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ وَأَعْرَاضَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هٰذَا، فِيْ شَهْرِكُمْ هٰذَا، فِيْ بَلَدِكُمْ هٰذَا. [1]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़, किताबुल हज, बाबुल ख़ुत्बा अय्यामन्नास

"तो तुम्हारा ख़ून, तुम्हारा माल और तुम्हारी आबरू (ता क़्यामत) उसी तरह मोहतरम है जिस तरह यह दिन, इस महीना में और इस शहर में मोहतरम है।"

क़ौमों की बर्बादी हमेशा आपस के जंग व जिदाल और बाहमी ख़ूंरेज़ियों का नतीजा रही है, वह पैग़म्बर जो एक लाज़वाल क़ौमियत का बानी बन कर आया था, उसने अपने पैरुओं से बाआवाज़े बुलंद कहा:

أَلَا لَا تَرْجِعُوا بَعْدِي ضُلَّالًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ وَسَتَلْقَوْنَ رَبَّكُمْ فَيَسْأَلُكُمْ عَنْ أَعْمَالِكُمْ."[1]

"हां! मेरे बाद गुमराह न हो जाना कि ख़ुद एक दूसरे की गर्दन मारने लगो, तुम को ख़ुदा के सामने हाज़िर होना पड़ेगा और वह तुमसे तुम्हारे अअ़माल की बाज़ पुर्स करेगा।"

ज़ुल्म व सितम का एक आलमगीर पहलू यह था कि अगर ख़ानदान में किसी एक शख़्स से कोई गुनाह सरज़द हो जाता तो उस ख़ानदान का हर शख़्स उस जुर्म का क़ानूनी मुज्रिम समझा जाता था, और अक्सर मुज्रिम के रूपोश या फ़िरार हो जाने की सूरत में बादशाह का उस ख़ानदान में से जिस पर क़ाबू चलता था, उसको सज़ा देता था, बाप के जुर्म में बेटे को सूली दी जाती थी, और बेटे के जुर्म का ख़मियाज़ा बाप को उठाना पड़ता था, यह सख़्त

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़, किताबुल हज, बाबुल ख़ुत्बा अय्यामे मिना

ज़ालिमाना क़ानून था, जो मुद्दत से दुन्या में हुक्मरां था अगर्चे क़ुर्आन मजीद ने "لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ" के वसीअ़ क़ानून की रू से इस ज़ुल्म की हमेशा के लिये बेख़ कनी कर दी थी, लेकिन उस वक़्त जब दुन्या का आख़िरी पैग़म्बर एक निज़ामे सियासत तरतीब दे रहा था, इस उसूल को फ़रामोश नहीं कर सकता था, आप सल्ल0 ने फ़रमाया:

"أَلَا لَا يَجْنِي جَانٍ إِلَّا عَلَىٰ نَفْسِهِ أَلَا لَا يَجْنِي جَانٍ عَلَىٰ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ عَلَىٰ وَالِدِهِ." (1)

"हां! मुज्रिम अपने जुर्म का आप ज़िम्मादार है, हां! बाप के जुर्म का ज़िम्मादार बेटा नहीं और बेटे के जुर्म का जवाब देह बाप नहीं।"

अरब की बद अम्नी और निज़ामे मुल्क की बेतरतीबी का एक सबब यह था कि हर शख़्स अपनी ख़ुदावंदी का आप मुद्दई था, और दूसरे की मातहती और फ़रमांबरदारी को अपने लिये नंग और आ़र जानता था, इर्शाद हुआ:

"إِنْ أُمِّرَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ مُجَدَّعٌ أَسْوَدُ يَقُودُكُمْ بِكِتَابِ اللّٰهِ فَاسْمَعُوا لَهُ وَأَطِيعُوا." (2)

"अगर कोई हब्शी, कान कटा ग़ुलाम भी तुम्हारा अमीर हो, और वह तुमको ख़ुदा की किताब के मुताबिक़ ले चले तो उसकी इताअ़त और फ़रमांबरदारी करना।"

(1) सुनन तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन, बाब मा जाअ् दिमाउकुम व अमवालुकुम अलैकुम हरामुन, सुनन इब्ने माजा, किताबुल मनासिक, बाबुल ख़ुत्बा यौमुन्नह्र
(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब इस्तिबाबु रम्ये जम्रतिल अ़क़्बा

रेगिस्ताने अरब का ज़र्रा ज़र्रा उस वक़्त इस्लाम के नूर से मुनव्वर हो चुका था और ख़ानए कअ़बा हमेशा के लिये मिल्लते इब्राहीम अलै0 का मर्कज़ बन चुका था, और फ़ित्ना पर्दाज़ाना कूव्वतें पामाल हो चुकी थीं, इस बिना पर आप सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः

"اَلَا اِنَّ الشَّيْطَانَ قَدْ أَيِسَ اَنْ يُعْبَدَ فِي بَلَدِكُمْ هٰذَا اَبَداً وَلٰكِنْ سَتَكُوْنُ لَهُ طَاعَةٌ فِيْمَا تَحْتَقِرُوْنَ مِنْ اَعْمَالِكُمْ فَيَرْضٰى بِهٖ"[1]

"हां! शैतान इस बात से मायूस हो चुका कि अब तुम्हारे इस शहर में उसकी परस्तिश क़यामत तक न की जाएगी, लेकिन छोटी छोटी बातों में उसकी पैरवी करोगे और वह उस पर ख़ुश होगा"

सबसे आख़िर में आप सल्ल0 ने इस्लाम के फ़र्ज़े अव्वलीन याद दिलाएः

"اُعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَصَلُّوْا خَمْسَكُمْ وَصُوْمُوْا شَهْرَكُمْ وَاَطِيْعُوْا ذَا اَمْرِكُمْ تَدْخُلُوْا جَنَّةَ رَبِّكُمْ"[2]

"अपने परवरदिगार को पूजो, पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ो, महीना का रोज़ा रखा करो, और मेरे अहकाम की इताअ़त करो, ख़ुदा की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।"

यह फ़रमा कर आप सल्ल0 ने मज्मा की तरफ़ इशारा किया और फ़रमायाः

(1) तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन

(2) सुनन तिर्मिज़ी, किताबुस्सलात, बाब फ़ी फ़ज़्लिस्सलात, मुस्नद अहमद 5-251

اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ، "ऐ खुदा तू गवाह रहना।"

फिर लोगों की तरफ मुखातब होकर फरमायाः

فَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ،[1]

"जो लोग इस वक़्त मौजूद हैं वह उनको सुना दें जो मौजूद नहीं हैं।"

खुत्बा के इख़्तिताम पर आप सल्ल0 ने तमाम मुसलमानों को अलवदाअ़ कहा।

इसके बाद आप सल्ल0 कुर्बान गाह की तरफ तशरीफ ले गए और फ़रमाया कि "कुर्बानी के लिये मिना की कुछ तख़्सीस नहीं, बल्कि मिना और मक्का की एक एक गली में कुर्बानी हो सकती है" आप सल्ल0 के साथ कुर्बानी के सौ ऊंट थे, कुछ तो आप सल्ल0 ने खुद अपने हाथ से ज़िब्ह किये और बाक़ी हज़रत अली रज़ि0 के सिपुर्द कर दिये कि वह ज़िब्ह करें।[2] और हुक्म दिया, कि गोश्त पोस्त जो कुछ हो सब ख़ैरात कर दिया जाए, यहां तक कि कस्साब की मज़दूरी भी उससे अदा न की जाए, अलग से दी जाए।[3]

कुर्बानी से फ़ारिग़ होकर आप सल्ल0 ने मुअम्मर बिन अब्दुललाह को बुलवाया और सर के बाल मुंडवाए,[4] और फर्ते मुहब्बत से कुछ बाल खुद अपने दस्ते मुबारक से अबू तल्हा अंसारी और उनकी बीवी उम्मे सुलैम और बअ़ज़ उन

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाबुल खुत्बा अय्यामे मिना

(2) ज़ादुल मआ़द 2-59

(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब युतसदक बिजुलूदिल हदी

(4) मुस्नद अहमद 6-100

लोगों को जो पास में बैठे, इनायत फ़रमाए, और बाक़ी अबू तलहा रज़ि0 ने अपने हाथ से तमाम मुसलमानों में एक एक दो दो करके तक़सीम कर दिये[1] इसके बाद आप सल्ल0 मक्का मुअज़्ज़मा तशरीफ़ लाए, ख़ानए कअ़बा का तवाफ़ किया, इससे फ़ारिग़ होकर चाहे ज़मज़म के पास आए।

चाहे ज़मज़म से हाजियो को पानी पिलाने की ख़िदमत ख़ानदाने अब्दुल मुत्तलिब से मुतअ़ल्लिक़ थी, चुनांचे उस वक़्त इसी ख़ानदान के लोग पानी निकाल निकाल कर लोगों को पिला रहे थे, आप सल्ल0 ने फ़रमाया, या बनी अब्दुल मुत्तलिब अगर मुझे यह ख़ौफ़ न होता कि मुझको ऐसा करते देख कर और लोग भी तुम्हारे हाथ से डोल छीन कर अपने हाथ से पानी निकाल कर पियेंगे, तो मैं अपने हाथ से पानी निकाल कर पीता,[2] हज़रत अब्बास रज़ि0 ने डोल में पानी निकाल कर पेश किया, आप सल्ल0 ने क़िब्ला रुख़ होकर खड़े खड़े पानी पिया[3] फिर यहां से मिना वापस तशरीफ़ ले गए और वहीं नमाज़े ज़ुहर अदा की[4] बक़िया अय्यामे तशरीक़ यअ़नी 12/ ज़िल हिज्जा तक आप सल्ल0 ने मुस्तक़िल इक़ामत मिना ही में फ़रमाई, हर रोज़ ज़वाल के बाद रम्ये जिमार की ग़र्ज़ से तशरीफ़ ले जाते और फिर वापस आ जाते,[5] 13/ ज़िल हिज्जा को सेह शंबा के दिन

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल वुज़ू, बाब अल माउल्लज़ी युग़सल बिही शअ़रुल इंसान, सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब बयानुस्सुन्नति यौमुन्नहर ऐ यरमी सुम्म यन्हर, (2) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0, सहीहुल बुख़ारी, बाबुस्सक़ाया, (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुश्शुर्ब, बाबुश्शुर्ब क़ाइमन (4) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब इस्तिहबाब अबवाबुल इफ़ाज़ा यौमुन्नहर (5) ज़ादुल मआ़द 2-290, सहीहुल बुख़ारी, बाब रम्य जम्रतुल उक़्बा

ज़वाल के बाद आप सल्ल0 ने यहां से निकल कर वादिये मुहस्सब में क़याम किया, और शब को उसी मक़ाम पर आराम फ़रमाया।[1] पिछले पहर उठकर मक्का मुअ़ज़्ज़मा तशरीफ़ ले गए और ख़ानए कअ़्बा का आख़िरी तवाफ़ करके वहीं सुब्ह की नमाज़ अदा की,[2] इसके बाद क़ाफ़िला उसी वक़्त अपने अपने मक़ाम को रवाना हो गया, और आप सल्ल0 ने मुहाजिरीन व अंसार के साथ मदीना की तरफ़ मुराजअ़त फ़रमाई, मदीना के क़रीब पहुंच कर ज़ुल हुलैफ़ा में शब बसर की, सुब्ह के वक़्त एक तरफ़ से आफ़ताब निकला और दूसरी तरफ़ कौकबए नबवी मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुआ, और मदीना पर नज़र पड़ी तो यह अलफ़ाज़ फ़रमाए:[3]

"اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ، لَهُ الملك ولهُ الحمد، وهو على كل شيء قدير، اٰئِبُونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ سَاجِدُونَ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ صَدَقَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ،"[4]

"ख़ुदा बुज़ुर्ग व बरतर है, उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं, कोई उसका शरीक नहीं, बस उसी की सलतनत है, उसी के लिये हम्द व सताइश है, वह

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब तवाफ़ुल वदाअ़, व बाब मन सल्लल अस्र यौमन्नह्र बिल अब्तह

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाबुल हज

(3) तलख़ीस अज़ सीरतुन्नबी सल्ल0 2-159 ता 169

(4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाबुन्नुज़ूल बिज़ी तुवा, सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब मा यक़ूलु इज़ा क़फ़ला मिन सफ़रिल हज्जि व बाबुत्तअ़रीस बिज़िल हुलैफ़ा

हर बात पर क़ादिर है, लौटे आ रहे हैं, तौबा करते हुए, फ़रमांबरदाराना, ज़मीन पर पेशानी रखकर, अपने परवरदिगार की हम्द व सताइश में मसरूफ़ होकर, खुदा ने अपना वादा सच किया, अपने बंदे की नुस्रत की और तमाम मुक़ाबिल को तन्हा शिकस्त दी।"

वफ़ात

اِنَّکَ مَیِّتٌ وَّاِنَّھُمْ مَّیِّتُوْنَ (ज़ुमर)

रूहे क़ुद्सी को आलमे जिस्मानी में उसी वक़्त तक रहने की ज़रूरत थी कि तकमीले शरीअ़त और तज़्कियए नुफ़ूस का अज़ीमुश्शान काम दर्जए कमाल तक पहुंच जाए, हज्जतुल वदाअ़ में यह फ़र्ज़े अहम अदा हो चुका, तौहीदे कामिल और मकारिमे अख़्लाक़ के उसूल अमलन क़ाइम करके अरफ़ात के मज्मए आम में एलान कर दिया गया कि:[1]

اَلْیَوْمَ اَکْمَلْتُ لَکُمْ دِیْنَکُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَیْکُمْ نِعْمَتِیْ،

"आज के दिन मैंने तुम्हारे दीन को कामिल कर दिया और अपनी नेअ़मत पूरी कर दी।"

सूरए नस्र का नुज़ूल ख़ास ख़ास सहाबा को आंहज़रत सल्ल0 ने क़ुर्बे वफ़ात की इत्तिलाअ़ दे चुका था, और आप सल्ल0 हुक्मे रब्बानी "فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّکَ وَاسْتَغْفِرْهُ۔" (नस्र) के मुताबिक़ ज़्यादा औक़ात तस्बीह व तहलील में

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़, सीरतुन्नबी सल्ल0 2-170

बसर फ़रमाते थे।[1] आप सल्ल0 उमूमन हर साल रमज़ान मुबारक में दस दिन एतिकाफ़ में बैठते थे, लेकिन रमज़ान 10 हि0 में बीस दिन एतिकाफ़ में बैठे, साल में एक दफ़ा माहे रमज़ान में आप सल्ल0 पूरा कुर्आन नामूसे अक्बर की ज़बानी सुनते थे, लेकिन वफ़ात के साल दो दफ़ा यह शर्फ़ हासिल हुआ[2] हज्जतुल वदाअ़ के मौक़ा पर मनासिके हज की तअ़लीम के साथ साथ आप सल्ल0 ने यह एलान भी फ़रमाया कि मुझे उम्मीद नहीं कि आइंदा साल तुमसे मिल सकूं, बअ़ज़ रिवायतों में यह अलफ़ाज़ इस तरह वारिद हुए हैं: शायद इसके बाद हज न कर सकूं[3] हज्जतुल वदाअ़ के मौक़ा पर तमाम मुसलमान को अपने फ़ैज़े दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमाया, और उनको हसरत के साथ वदाअ़ किया, शुहदाए उहुद जो "بَلْ هُمْ أَحْيَاءٌ" के मुज़दए जांफ़ज़ा से फ़ैज़याब थे, आठ बरस के बाद आख़िरी दफ़ा आप सल्ल0 ने उनको भी अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ करना ज़रूरी समझा, चुनांचे उसी ज़माना में उनकी क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और उनके लिये दुआए ख़ैर फ़रमाई और इस रिक्क़त अंगेज़ तरीक़ा से उनको विदाअ़ किया कि जिस तरह एक मरने वाला अपने अइज़्ज़ाअ़ को वदाअ़ करता है, इसके बाद एक ख़ुत्बा दिया, जिसमें फ़रमाया:

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर, बाब तफ़सीर "इज़ा जाअ़ नसरुल्लाहि"

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल कुर्आन, बाब काना जिब्रईलु यअ़रुज़ुल कुर्आन अलन्नबी सल्ल0

(3) सहीह मुस्लिम किताबुल हज, बाब इस्तिहबाबु रम्ये जम्रतिल उक़्बा

"मैं तुमसे पहले हौज़ पर जा रहा हूं, उसकी वुस्अत इतनी है जितनी अब्ला से जुह्फ़ा तक, मुझको तमाम दुन्या के ख़ज़ानों की कुंजी दी गई है, मुझे ख़ौफ़ नहीं कि मेरे बाद तुम शिर्क करोगे, लेकिन इससे डरता हूं कि दुन्या में न मुब्तला हो जाओ। और इसके लिये आपस में कुश्त व ख़ून न करो तो फिर उसी तरह हलाक हो जाओ, जिस तरह तुमसे पहली क़ौमें हलाक हुई।"

रावी का बयान है कि यह आख़िरी दफ़ा मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को ख़ुत्बा देते हुए सुना।

18/या 19/सफ़र 11 हि० में आधी रात को आप सल्ल० जन्नतुल बक़ीअ़ में जो आम मुसलमानों का क़ब्रस्तान था तशरीफ़ लाए, तो मिज़ाज नासाज़ हुआ,[1] यह हज़रत मैमूना रज़ि० की बारी का दिन था, पांच दिन तक आप सल्ल० इस हालत में अज़राहे अद्ल व करम बारी बारी एक एक बीवी के हुज्रा में तशरीफ़ ले जाते रहे, दो शंबा के दिन मर्ज़ में शिद्दत हुई तो अज़्वाजे मुतह्हरात से इजाज़त ली कि हज़रत आइशा रज़ि० के घर क़्याम फ़रमाएं, ख़ुल्क़े अ़मीम की बिना पर इजाज़त भी साफ़ और एलानिया नहीं तलब की बल्कि पूछा कि कल मैं किस के घर रहूंगा, दूसरा दिन (दो शंबा) हज़रत आइशा रज़ि० के यहां क़्याम फ़रमाने का था, अज़्वाजे मुतह्हरात ने मर्ज़िये अक़्दस समझ कर अ़र्ज की कि आप सल्ल० जहां चाहें क़्याम फ़रमाएं,

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-57

ज़ुअफ़ इस क़दर हो गया कि चला नहीं जाता था, हज़रत अली रज़ि० और हज़रत अब्बास रज़ि० दोनों बाज़ू थाम कर बमुश्किल हज़रत आइशा रज़ि० के हुज्रे में लाए।[1]

आमद व रफ़्त की क़ूव्वत जब तक रही आप सल्ल० मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने की ग़र्ज़ से तशरीफ़ लाते रहे, सबसे आख़िरी नमाज़ जो आप सल्ल० ने पढ़ाई वह मग़रिब की नमाज़ थी, सर में दर्द था, इसलिये सर में रूमाल बांध कर आप सल्ल० तशरीफ़ लाए और नमाज़ अदा की, जिसमें सूरए "والمرسلات عُرفاً" किराअत फ़रमाई।[2] इश का वक़्त आया तो दरयाफ़्त फ़रमाया कि नमाज़ हो चुकी? लोगों ने अर्ज़ की कि सबको हुज़ूर सल्ल० का इंतिज़ार है, लगन में पानी भरवा कर ग़ुस्ल फ़रमाया, फिर उठना चाहा कि ग़श आ गया, इफ़ाक़ा के बाद फिर फ़रमाया कि नमाज़ हो चुकी? लोगों ने फिर वही पहला जवाब दिया, आप सल्ल० ने फिर ग़ुस्ल फ़रमाया, और फिर जब उठना चाहा तो ग़श आ गया, इफ़ाक़ा हुआ तो फिर दरयाफ़्त फ़रमाया, और लोगों ने वही जवाब दिया, तीसरी मर्तबा जिस्म मुबारक पर पानी डाला, फिर जब उठने का इरादा किया तो फिर ग़शी तारी हो गई, जब इफ़ाक़ा हुआ तो इर्शाद फ़रमाया कि अबू बक्र नमाज़ पढ़ाएं, हज़रत आइशा रज़ि० ने मअ़ज़रत की कि या रसूलुल्लाह सल्ल०! अबू बक्र रज़ि० निहायत रक़ीकुल क़ल्ब हैं, आप की जगह उनसे खड़ा न हुआ जाएगा, आप सल्ल० ने फिर यही हुक्म दिया कि अबू बक्र रज़ि० नमाज़

(1) व (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्ज़ुन्नबी सल्ल० व वफ़ातुहू

पढ़ाएं, चुनांचे कई दिन तक हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने नमाज़ पढ़ाई।

वफ़ात से चार दिन पहले ज़ुहर की नमाज़ के वक़्त आप सल्ल० की तबीअत कुछ सुकून पज़ीर हुई, आप सल्ल० ने हुक्म दिया कि पानी की सात मशकें आप पर डाली जाएं, गुस्ल फ़रमा चुके तो अली रज़ि० और हज़रत अब्बास रज़ि० थाम कर मस्जिद में लाए, जमाअत खड़ी हो चुकी थी और हज़रत अबू बक्र रज़ि० नमाज़ पढ़ा रहे थे, आहट पाकर हज़रत अबू बक्र रज़ि० पीछे हटे आप सल्ल० ने इशारा से रोका और उनके पहलू में बैठ कर नमाज़ पढ़ाई, आप सल्ल० को देख कर हज़रत अबू बक्र रज़ि० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० को देखकर और लोग अरकान अदा करते जाते थे।[1]

नमाज़ के बाद आंहज़रत सल्ल० ने एक ख़ुत्बा दिया, जो आप सल्ल० की ज़िंदगी का सबसे आख़िरी ख़ुत्बा था, आप सल्ल० ने फ़रमाया:

> "ख़ुदा ने अपने एक बंदा को इख़्तियार अता फ़रमाया है कि ख़्वाह दुन्या की नेअ़मतों को क़बूल कर ले या ख़ुदा के पास (आख़िरत) में जो कुछ है उसको क़बूल कर ले, लेकिन उसने ख़ुदा ही के पास की चीज़ें क़बूल कीं" यह सुन कर अबू बक्र रज़ि० रो पड़े, लोगों ने उनकी तरफ़ तअ़ज्जुब से देखा कि आप सल्ल० तो एक शख़्स का वाक़िआ

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब इस्तिख़्लाफ़ुल इमाम, सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्ज़ुन्नबी सल्ल० व वफ़ातुहू

बयान करते हैं, यह रोने की कौनसी बात है, लेकिन राज़दारे नुबूव्वत समझ चुका था कि वह बंदा खुद मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल0 हैं, आप सल्ल0 ने अपनी तक़रीर का सिलसिला आगे बढ़ाया और फ़रमायाः "सबसे ज़्यसादा मैं जिसकी दौलते सोहबत का मम्नून हूं, अबू बक्र रज़ि0 हैं, अगर मैं दुन्या में किसी को अपनी उम्मत में से अपना दोस्त बना सकता तो अबू बक्र रज़ि0 को बनाता, लेकिन इस्लाम का रिशता दोस्ती के लिये काफ़ी है, मस्जिद के रुख़ कोई दरीचा अबू बक्र रज़ि0 के दरीचा के सिवा बाक़ी न रखा जाए,[1] हां तुम से पहले क़ौमों ने अपने पैग़म्बरों और बुज़ुर्गों की क़ब्र को इबादत गाह बना लिया है, देखो! तुम ऐसा न करना।"[2]

ज़मानए अ़लालत में अंसार आप सल्ल0 की इनायात और मेहरबानियों को याद करके रोते थे, एक दफ़ा इसी हालत में हज़रत अबू बक्र रज़ि0 और हज़रत अब्बास रज़ि0 का गुज़र हुआ, उन्होंने अंसार को रोते देखा तो वजह दरयाफ़्त की उन्होंने बयान किया कि हुज़ूर की सोहबतें याद आती हैं, उनमें से एक साहब ने जाकर आंहज़रत सल्ल0 से वाक़िआ बयान किया, आज उसकी तलाफ़ी का मौक़ा था, इसलिये

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब क़ौलुन्नबी सल्ल0, सुद्दुल अबवाब इल्ला बाब अबी बक्र रज़ि0

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्ज़ुन्नबी सल्ल0, सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाबुन्नह्ये अन बिनाइल मसाजिद अलल क़ुबूर

इसके बाद आप सल्ल0 ने अंसार की निस्बत लोगों की तरफ़ ख़िताब करके फ़रमाया:

"يَا أَيُّهَا النَّاسُ" (ऐ लोगो!) "मैं अंसार के मुआमला में वसीयत करता हूं, आम मुसलमान बढ़ते जाएंगे, लेकिन अंसार इस तरह कम होकर रह जाएंगे, जैसे खाने में नमक, वह अपनी तरफ़ से अपना फ़र्ज़ अदा कर चुके, अब तुम्हें उनका फ़र्ज़ अदा करना है, वह मेरे जिस्म में बमंज़िला मेअ्दा के हैं, जो तुम्हारे नफ़ा व नुक़सान का मुतवल्ली हो (यअ्नी जो ख़लीफ़ा हो) उसको चाहिये कि इनमें जो नेकूकार हों उनको क़बूल करे और जिनसे ख़ता हुई हो उनको मुआफ़ करे।"[1]

ऊपर गुज़र चुका है कि रूमियों की तरफ़ जिस फ़ौज का भेजना आंहज़रत सल्ल0 ने तज्वीज़ किया था, उसकी सरदारी उसामा रज़ि0 बिन ज़ैद को तफ़वीज़ फ़रमाई थी, इस पर लोगों ने (इब्ने सअ्द ने तस्रीह की है कि वह मुनाफ़िक़ीन थे) शिकायत की कि बड़े बूढ़ों के होते हुए जवानों को यह मंसब क्यों अता हुआ, आंहज़रत सल्ल0 ने इस मस्अला की निस्बत इर्शाद फ़रमाया:

"अगर उसामा की सरदारी पर तुमको एतिराज़ है तो उसके बाप ज़ैद की सरदारी पर भी तुम मोअ्तरिज़ थे, ख़ुदा की क़सम वह इस मंसब का मुस्तहिक़ था और वह मुझे सबसे ज़्यादा महबूब था

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबुल अंसार

बुला भेजा, तशरीफ़ लाईं तो उनसे कान में कुछ बातें कीं, वह रोने लगीं, फिर बुला कर कान में कुछ कहा तो हंस पड़ीं, हज़रत आइशा रज़ि० ने दरयाफ़्त किया तो कहा पहली दफ़ा आप सल्ल० ने फ़रमया कि इसी मर्ज़ में इंतिक़ाल करूंगा, जब मैं रोने लगी तो फ़रमाया कि मेरे ख़ानदान में सबसे पहले तुम्हीं मुझसे आकर मिलोगी तो हंसने लगीं।[1]

यहूद व नसारा ने अंबिया के मज़ारात और यादगारों की तअ़ज़ीम में जो इफ़्रात की थी, वह बुत परस्ती की हद तक पहुंच गई थी, इस्लाम का फ़र्ज़े अव्वलीन बुत परस्ती की रग व रेशा का इस्तीसाल करना था, इसलिये हालते मर्ज़ में जो चीज़ सबसे ज़्यादा पेशे नज़र थी यही थी, इत्तिफ़ाक़ से बअ़ज़ अज़्वाजे मुतह्हरात ने जो हब्शा हो आई थीं, उसी हालत में वहां के ईसाई मअ़बूदों का और उनके मुजस्समों और तस्वीरों का तज़किरा किया, आप सल्ल० ने फ़रमाया इन लोगों में जब कोई नेक आदमी मर जाता है तो उसके मक़बरा को इबादत गाह बना लेते हैं और उसका बुत बनाकर उसमें खड़ा करते हैं, क़्यामत के रोज़ अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की निगाह में यह लोग बदतरीन मख़्लूक़ होंगे।[2] ऐन कर्ब की शिद्दत में जबकि चादर कभी मुंह पर डाल लेते थे और कभी गर्मी से घबरा कर उलट देते थे। हज़रत आइशा रज़ि० ने ज़बाने मुबारक से यह अलफ़ाज़ सुनेः

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्ज़ुन्नबी सल्ल० व वफ़ातुहू
(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाबुन्नह्ये अन बिनाइल मसाजिद अलल क़ुबूर

"لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْيَهُوْدِ وَالنَّصَارٰى اتَّخَذُوْا قُبُوْرَ اَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ."[1]

"यहूद व नसारा पर खुदा की लअ़नत हो, उन्होंने अपने पैग़म्बरों की क़ब्रों को इबादतगाह बना लिया।"

इसी कर्ब व बेचैनी में याद आया कि हज़रत आइशा रज़ि० के पास कुछ अशरफ़ियां रखवाई थीं, दरयाफ़्त फ़रमाया कि वह अशरफ़ियां कहां हैं? मुहम्मद (सल्ल०) खुदा से बद गुमान होकर मिलेगा? जाओ उनको खुदा की राह में ख़ैरात कर दो।[2]

मर्ज़ में इश्तिदाद और तख़्फ़ीफ़ होती रहती थी, जिस दिन वफ़ात हुई (यअ़नी दो शंबा के रोज़) बज़ाहिर तबीअ़त को सुकून था, हुज्रए मुबारक मस्जिद से मिला हुआ था, आप सल्ल० ने (सुब्ह के वक़्त) पर्दा उठाकर देखा तो लोग (फ़ज्र की) नमाज़ में मशगूल थे, देखकर मुसर्रत से हंस पड़े, लोगों ने आहट पाकर ख़्याल किया कि आप सल्ल० बाहर आना चाहते हैं, फ़र्ते मुसर्रत से तमाम लोग बेक़ाबू हो गए और करीब था कि नमाज़ टूट जाए, हज़रत अबू बक्र रज़ि० जो इमाम थे चाहा कि पीछे हट जाएं, आप सल्ल० ने इशारा से रोका और हुज्रए शरीफ़ में दाख़िल होकर पर्दे डाल दिये।[3]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्ज़ुन्नबी सल्ल० व वफ़ातुहू

(2) मुस्नद अहमद 6-49

(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्ज़ुन्नबी सल्ल० व वफ़ातुहू

यह सबसे आख़िरी मौक़ा था कि सहाबा रज़ि० ने जमाले अक़्दस की ज़ियारत की, हज़रत अनस रज़ि० बिन मालिक कहते हैं कि आप सल्ल० का चेहरा यह मअ़लूम होता था कि मुस्हफ़ का कोई वरक़ है।[1] यअ़नी सफ़ेद हो गया था।

दिन जैसे जैसे चढ़ता जाता था, आप सल्ल० पर ग़शी तारी होती थी और फिर इफ़ाक़ा हो जाता था, हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि० यह देखकर बोलीं "वा कर्बा अबाह" (हाए मेरे बाप की बेचैनी,) आप सल्ल० ने फ़रमाया तुम्हारा बाप आज के बाद बेचैन न होगा।[2] हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि आप सल्ल० जब तंदुरुस्त थे तो फ़रमाया करते थे कि पैग़म्बर को इख़्तियार दिया जाता है कि वह ख़्वाह मौत को क़बूल करें या हयाते दुन्या को तर्जीह दें, उस हालत में अक्सर आप सल्ल० की ज़बाने मुबारक से यह अलफ़ाज़ अदा होते थेः

"مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ" "उन लोगों के साथ जिन पर ख़ुदा ने इन्आ़म किया"

और कभी फ़रमातेः

"اَللّٰهُمَّ فِى الرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى" "ख़ुदावंद बड़े रफ़ीक़ हैं।"

वह समझ गईं कि अब सिर्फ़ रिफ़ाक़ते इलाही मतलूब है।[3]

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब इस्तिख़्लाफ़ुल इमाम
(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्ज़ुन्नबी सल्ल० व वफ़ातुहू
(3) ऐज़न

वफ़ात से ज़रा पहले हज़रत अबू बक्र रज़ि० के साहबज़ादे हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ख़िदमते अक़्दस में आए, आप सल्ल० हज़रत आइशा रज़ि० के सीना पर सर टेक कर लेटे थे, हज़रत अब्दुर्रहमान के हाथ में मिस्वाक थी, मिस्वाक की तरफ़ नज़र जमा कर देखा, हज़रत आइशा रज़ि० समझीं कि आप सल्ल० करना चाहते हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान से मिस्वाक लेकर दांतों से नर्म की, और ख़िदमते अक़्दस में पेश की, आप सल्ल० ने बिल्कुल तंदुरुस्तों की तरह मिस्वाक की,[1] आप सल्ल० की वफ़ात का वक़्त क़रीब आ रहा था, सेहपहर थी,[2] सीना में सांस की घर घराहट महसूस होती थी, इतने में लब मुबारक हिले तो यह अलफ़ाज़ सुने।[3]

"الصَّلوٰةَ وَمَا ملكتْ أيمانكم" "नमाज़ और ग़ुलाम"

पास पानी की लगन थी, उसमें बार बार हाथ डालते और चेहरा पर मलते, चादर कभी मुंह पर डाल लेते और कभी हटा देते थे, इतने में हाथ उठाकर फ़रमायाः اَللّٰهُمَّ الرفيق الأعلى "और अब वह बड़ा रफ़ीक़ दरकार है।"

यही कहते कहते रूहे पाक आलमे क़ुद्स में पहुंच गई।[4]

---

(1) ऐज़न (2) इब्ने इस्हाक़ ने सीरत में लिखा है कि वफ़ात दोपहर को हुई, लेकिन हज़रत अनस बिन मालिक से बुख़ारी व मुस्लिम में रिवायत है कि अग़लाम यअ़नी दो शंबा के आख़िर वक़्त वफ़ात फ़रमाई, हाफ़िज़ इब्ने हजर ने दो रिवायतों में इस तरह तत्बीक़ दी है कि दोपहर ढल चुकी थी। (3) मुस्तदरक हाकिम 3-59 (4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्ज़ुन्नबी सल्ल० व वफ़ातुहू

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ صَلٰوةً كَثِيْرًا كَثِيْرًا

तज्हीज़ व तक्फ़ीन

अकीदतमंदों को यक़ीन नहीं आता था कि हुज़ूर सल्ल0 ने इस दुन्या को अलवदाअ् कहा, चुनांचे हज़रत उमर रज़ि0 ने तलवार खींच ली कि जो कहेगा कि आंहज़रत सल्ल0 ने वफ़ात पाई उसका सर उड़ा दूंगा।[1]

लेकिन हज़रत अबू बक्र रज़ि0 आए और उन्होंने तमाम सहाबा रज़ि0 के सामने ख़ुत्बा दिया कि हुज़ूर सल्ल0 का इस जहां से तशरीफ़ ले जाना यक़ीनी था, और क़ुर्आन मजीद की आयतें पढ़ कर सुनाईं, तो लोगों की आंखें खुलीं और इस नागुज़ीर वाक़िआ का यक़ीन आया[2] तज्हीज़ व तक्फ़ीन का काम सेहशंबा को शुरू हुआ, यह ख़िदमते ख़ास अइज़्ज़ाअ् व अक़ारिब ने अंजाम दी, हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि0, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 ने पर्दा किया, और हज़रत अली रज़ि0 ने ग़ुस्ल दिया, हज़रत अब्बास रज़ि0 भी मौक़ा पर मौजूद थे।[3]

ग़ुस्ल व कफ़न के बाद यह सवाल पैदा हुआ कि आप सल्ल0 को दफ़्न कहां किया जाए? हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने कहा, नबी जिस मक़ाम पर वफ़ात पाता है, वहीं दफ़्न भी होता है, चुनांचे नअ्श मुबारक उठाकर और बिस्तर उलट कर हुज्रए आइशा रज़ि0 में उसी मक़ाम पर क़ब्र खोदना तज्वीज़ हुआ।[4]

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-655 (2) सीरत इब्ने हिशाम 2-662 (3) सीरत इब्ने हिशाम 2-662 (4) सुनन इब्ने माजा, किताबुल जनाइज़, बाब वफ़ातुन्नबी सल्ल0

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि आप सल्ल० को किसी मैदान में इसलिये दफ़्न नहीं किया गया कि आख़िरी लम्हों में आप सल्ल० को यह ख़्याल था कि लोग फ़र्ते अक़ीदत से मेरी क़ब्र को भी इबादत गाह न बना लें, मैदान में इसकी दार व गीर मुश्किल थी।[1]

हज़रत अबू तल्हा रज़ि० ने मदीना के रिवाज के मुताबिक़ क़ब्र खोदी, जो लहदी बग़ली थी।[2]

जनाज़ा तैयार हो गया तो लोग नमाज़ के लिये टूटे, जनाज़ा हुज्रे के अंदर था, बारी बारी से लोग थोड़े थोड़े करके जाते थे, पहले मर्दों ने फिर औरतों ने फिर बच्चों ने नमाज़ पढ़ी, लेकिन कोई इमाम न था,[3]

जिस्म मुबारक को हज़रत अली रज़ि०, हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि०, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने क़ब्र में उतारा।[4]

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ صَلَاةً وَسَلَامًا دَائِمَيْنِ مُتَلَازِمَيْنِ إِلَىٰ

يَوْمِ الدِّيْنِ وَعَلَىٰ آلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِيْنَ.

☆☆☆

☆☆

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब वफ़ातुन्नबी सल्ल०

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-663

(3) सीरत इब्ने हिशाम 2-664

(4) अबू दाऊद, किताबुल जनाइज़

और अब उसके बाद यह सबसे ज़्यादा महबूब है।"(1)

इस्लाम और दीगर मज़ाहिब में एक दकीक फ़र्क़ यह है कि इस्लाम शरीअ़त के तमाम अहकाम का वाज़ेअ़ और हाकिम बराहे रास्त ख़ुदाए पाक को क़रार देता है, पैग़म्बर का सिर्फ़ इसी क़दर फ़र्ज़ है कि अहकामे इलाही को अपने क़ौल व अमल के ज़रीआ़ से बंदों तक पहुंचा दे, चूंकि दूसरे मज़ाहिब में यह ग़लत फ़ह्मी शिर्क व कुफ़्र तक हो चुकी थी, और उसके नताइज पेशे नज़र थे, इसलिये इर्शाद फ़रमाया:

"हलाल व हराम की निस्बत मेरी तरफ़ न की जाए, मैंने वही चीज़ हलाल की है जो ख़ुदा ने अपनी किताब में हलाल की है और वही चीज़ हराम की है जो ख़ुदा ने हराम की है।"

इंसान की जज़ा व सज़ा की बुन्याद ख़ुद उसके ज़ाती अमल पर है, आप सल्ल0 ने फ़रमाया:

"ऐ पैग़म्बरे ख़ुदा की बेटी फ़ातिमा! और ऐ पैग़म्बरे ख़ुदा की फूफी सफ़ीया! ख़ुदा के यहां के लिये कुछ कर लो मैं तुम्हें ख़ुदा से नहीं बचा सकता।"

ख़ुत्बा से फ़ारिग़ होकर आप सल्ल0 हुज्रए आइशा रज़ि0 में तशरीफ़ लाए, आप सल्ल0 को हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि0 से बेहद मुहब्बत थी (अस्नाए अलालत) उनको

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब बअ़्सु उसामा रज़ि0

जब लोगों ने छोड़ दिया तो हमने पनाह दी, आप (सल्ल0) मुफ़्लिस आए थे हमने हर तरह की मदद की।''

यह कहकर आप सल्ल0 ने फ़रमाया ''तुम यह जवाब देते जाओ और मैं यह कहता जाऊंगा कि तुम सच कहते हो, लेकिन ऐ अंसार! क्या तुमको यह पसंद नहीं कि और लोग ऊंट और बकरियां ले जाएं और तुम मुहम्मद (सल्ल0) को अपने घर ले आओ।''

अंसार बेइख़्तियार चीख़ उठे कि ''हमको सिर्फ़ मुहम्मद सल्ल0 दरकार हैं'' अक्सरों का यह हाल हुआ कि रोते रोते दाढ़ियां तर हो गईं, आप सल्ल0 ने अंसार को समझाया कि मक्का के लोग जदीदुल इस्लाम हैं, मैंने इनको जो कुछ दिया हक़ की बिना पर नहीं, बल्कि तालीफ़े क़ल्ब के लिये दिया।[1]

हुनैन के असीराने जंग अब तक जिइर्राना में महफ़ूज़ थे, एक मुअ़ज़्ज़ज़ सफ़ारत आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुई कि असीराने जंग रिहा कर दिये जाएं, यह क़बीला वह था कि आप सल्ल0 की रज़ाई वालिदा हज़रत हलीमा उसी क़बीला की थीं, रईसे क़बीला ने तक़रीर की और आप सल्ल0 की तरफ़ मुख़ातब होकर कहा ''जो औरतें छप्परों में महबूस हैं उन्हीं में आप सल्ल0 की फूफियां और आप सल्ल0 की ख़ालाएं हैं, ख़ुदा की क़सम सलातीने अरब में से किसी ने हमारे ख़ानदान का दूध पिया होता तो उनसे बहुत कुछ उम्मीदें होतीं और आप से तो और भी ज़्यादा

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुत्ताइफ़ व किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबुल अंसार